भजन संहिता
भाग दो

इस्राएल के भजनों की 3-5 पुस्तकों पर एक आराधनात्मक दृष्टि

एफ. वायन मैक लियोड

HARVEST MISSION PUBLICATIONS
V-82, SECTOR-12, NOIDA (U.P.)

Psalms (Hindi) Volume - 2

Copyright @ F. Wayne Mac Leod

First Edition : April 2013

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Published in Hindi by **Harvest Mission Publishers** with permission.

Contact Address:
V – 82 Sector- 12, NOIDA, UP- 201301
Tel : 0120- 2550213, 4264860, 6417828, 9811373357
bijujo@bijujohn.com, bijujohn@roadrunnerworldmission.com
website: www.harvestpublishers.org

Printed at : **New life Printers (P) Ltd,** Delhi

विषय-सूची

भजन संहिता 1
भाग दो 1
परिचय 5
प्रस्तावना 7
68. घमण्डी की संपन्नता 8
69. उठ अपना मुकद्दमा आप ही लड़ 13
70. घमण्डी लोग 17
71. मैंने दोहाई दी 21
72. अगली पीढ़ी के लिए वचन 25
73. हमें पुनर्जीवित कर 31
74. यदि तू सुने 37
75. सर्वोच्च परमेश्वर 41
76. परमेश्वर में आनन्द मनाना 45
77. मुझ पर दया कर 51
78. परमेश्वर का नगर 57
79. मुझे बचानेवाला परमेश्वर 61
80. तेरा पहलेवाला प्रेम कहाँ है? 65
81. हम को आनन्द दे 72
82. प्रभु के नाम का भजन गाना भला है 78
83. पलटा लेनेवाला ईश्वर 82
84. आनन्द से ऊँचे स्वर से गाना 86
85. हमारा राज्य करनेवाला प्रभु 93
86. अद्वितीयता और घनिष्टता 98
87. बुराई से अलग होना 103
88. यरूशलेम का टूटना और पुनर्गठन 108
89. उसके किसी उपकार को न भूलें 114
90. हमारे सृष्टिकर्त्ता और पोषणकर्त्ता की स्तुति हो 120
91. वाचा पूरी करने वाले परमेश्वर की स्तुति हो 126
92. आज्ञाकारिता, संपन्नता, आनन्द और धन्यवादी 132
93. भलाई और प्रेम 139
94. सहायता की पुकार 144
95. विजय की प्रतिज्ञा 151
96. धर्मी की आशीषें 156
97. जातियों का परमेश्वर 161

98. प्रभु का उद्धार 168
99. पकड़े रखें 175
100. दुख में शांति 183
101 मैंने अपने हृदय को स्थिर किया है 191
102. मुझे तेरे उद्धार की प्रतीक्षा है 198
103. परमेश्वर की दृष्टि आप पर है 204
104. शांति की पुकार 207
105. आँसू बहाते हुए बोना जयजयकार करते हुए लवना 213
106. सिय्योन में यहोवा का वास 220
107. स्तुति करना और धन्यवाद देना 226
108. बेबीलोन की नदियों से 231
109. सुरक्षित न्याय 235
110. फुर्ती से आ 240
111. चौकसी करनेवाला प्रभु 249
112. परमेश्वर की आशीषें 255
113. प्रभु की स्तुति करो 262
'लाईट टू माय पाथ' पुस्तक वितरण 268

परिचय

भजन संहिता की पुस्तक बहुत से लेखकों द्वारा लिखित भजनों का एक संग्रह है। इन्हें कई वर्षों की अवधि में एकत्रित कर एक संग्रह में रखा गया है। इस संग्रह में पाए जानेवाले दो तिहाई भजनों को लिखने का श्रेय दाऊद को जाता है। अन्य लेखक निम्नलिखित हैं।

लेखक	**भजन**
सुलैमान	72, 127
आसाप	50; 73-83
मूसा	90
हेमान एज्राहवंशी	88
एतान एज्राहवंशी	89
कोरह के पुत्र	42; 44-49; 84-85; 87-88

पृष्ठभूमि

भजनों को पांच पुस्तकों में बांटा गया है। इन पुस्तकों का विभाजन स्पष्टतया चिन्हित है।

पुस्तक	**पुस्तक में पाए जाने वाले भजन**
पुस्तक 1	भजन 1-41
पुस्तक 2	भजन 42-72
पुस्तक 3	भजन 73-89
पुस्तक 4	भजन भजन 90-106
पुस्तक 5	भजन भजन 107-150

इन पांच पुस्तकों में इस विशिष्ट विभाजन का कोई स्पष्ट कारण नहीं है। यह संभव है कि आज हमारे पास जो संग्रह है वह समय के साथ साथ इसमें जुड़ता चला गया है। भजनों का प्रयोग दाऊद के बाद से परमेश्वर की आराधना में किया जाता था। कुछ मामलों में इन्हें एक विशिष्ट अवसर पर मन्दिर के संगीतकारों द्वारा गाए जाने को लिखा जाता था। कुछ भजनों में भजन के गाए जाने के समय में बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों को बजाने के निर्देश भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, भजन 5 को बांसुरी

के लिए लिखा गया था। दूसरी ओर भजन 6 को तारवाले वाद्ययंत्रों के लिए लिखा गया था।

कुछ भजनों को सामान्य धुनों के लिए लिखा गया था। उदाहरण के लिए भजन 9 को 'एक पुत्र की मृत्यु' की धुन पर लिखा गया था, जबकि भजन 22 को 'प्रात:काल की हरिणी' की धुन पर लिखा गया था। निस्संदेह इन धुनों से आज हर कोई परिचित है। इस संग्रह में बहुत सी संगीत प्रणालियों का भी प्रयोग हुआ है। कुछ भजनों के आरम्भ में पाए जानेवाले संगीत शब्द उस संगीत का संकेत देते हैं जिनका प्रयोग विशिष्ट भजनों में हुआ है।

आज के लिए पुस्तक का महत्व

भजनों की पुस्तक बाइबल की सबसे पसंदीदा पुस्तकों में से एक है। इसका कारण भजनकारों की सादगी है। उन्होंने अपने संघर्षों और दुखों को बताया है। उन्होंने अपनी विजयों और प्रभु में अपनी आशा के बारे में भी बताया है। ये संघर्ष करनेवालों को सांत्वना देते तथा जीवन की परीक्षाओं का सामना करनेवालों को निर्देश देते हैं। ये हमें उस प्रभु की ओर संकेत देते हैं जो सभी दुख और दर्द से ऊपर है और जिसके उद्देश्य सदैव सफल होंगे।

भजनकार स्वयं को परमेश्वर के सामने निष्कपट व खुले तरीके से व्यक्त करते हैं। वे उसे अपने संघर्षों के बारे में बताते हैं। वे हमें दिखाते हैं कि जीवन की समस्याओं के सदैव जवाब न मिलने पर भी हम अपना भरोसा प्रभु परमेश्वर पर रख सकते हैं।

भजनों के विषय में एक महान विषय यह है कि प्रभु अपने लोगों की चिंता व देखभाल करता है। प्रभु उन सभी के लिए एक चरवाहा, योद्धा, गढ़ और चट्टान है जो उसके पास आते हैं। भजनों का परमेश्वर स्तुति पाने के योग्य है। वह अपने बच्चों की पुकार को सुनता है। वह एक ऐसा परमेश्वर नहीं है जो बहुत दूर रहता है परन्तु वह ऐसा है जो उनके निकट रहने वाला परमेश्वर है जो उससे प्रेम करते और उसके नाम पर भरोसा रखते हैं। वह अपने बच्चों को अपनी सहभागिता में लाने को उन्हें क्षमा व पुनर्गठित करता है।

भजनों की पुस्तक उस घनिष्ठता पर विचार करती है जो परमेश्वर हमसे रखना चाहता है। परमेश्वर की संतानों के निष्कपट प्रश्न उसे आंतकित नहीं करते हैं। उसके बच्चों की असफलता उनके लिए उसके प्रेम मे बदलाव नहीं लाती। परमेश्वर अपने लोगों के पश्चात्तापी व समर्पित हृदयों से प्रसन्न होता है। भजनों की पुस्तक स्तुति और शुक्रगुज़ारी की पुस्तक है। यह इस पृथ्वी पर एक प्रेमी व करुणामयी परमेश्वर के प्रबन्धन व देखभाल में जीवन के उतार चढ़ाव को दिखती है।

प्रस्तावना

भजनों की पुस्तक पर इस वृत्तांत का उद्देश्य स्वभाव में आराधनात्मक होना है। अर्थात्, मेरा लक्ष्य जीवन और परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध पर पुस्तक की व्यावहारिकता को दिखाना है। मैं इस पुस्तक में दार्शनिक या शैक्षिक होने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ। इसे मैं अपने से अधिक शिक्षितों पर छोड़ देता हूँ। तौभी, मैं यह चाहता हूँ कि पाठक बाइबल के इस अनिवार्य भाग से दृढ़ व प्रोत्साहित होने के साथ-साथ शांति भी प्राप्त करें।

प्रत्येक भजन को पढ़ने के लिए समय निकालें। यह वृत्तान्त-बाइबल नहीं है। तौभी इसे पाठक के बाइबल व इसकी व्यावहारिकता को समझने के लिए तैयार किया गया है। इस पुस्तक में बाइबल संदर्भों और टिप्पणियों को पढ़ने पर पवित्र आत्मा से आपको उन सच्चाइयों को दिखाने को कहें जो वह आपको दिखाना चाहता है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिये गए प्रश्नों पर विचार करने के लिए समय निकालें और जो कुछ भी आप पढ़ते हैं उसके लिए प्रार्थना करें। मैं यह मानता हूँ कि पवित्र आत्मा उन लोगों को दृढ़ व प्रोत्साहित करने में अपने वचन के स्पष्टीकरण का प्रयोग कर सकता है जो इसके सत्यों को पढ़ने व उन पर विचार करने को समय देते हैं।

भजनों की पुस्तक पढ़ने पर परमेश्वर आपके व्यवहार को चुनौती देने पाए। उसे आप पर एक नये व ताज़े तरीके से प्रगट करने दें। मेरी प्रार्थना है कि पवित्र आत्मा इस वृत्तान्त का प्रयोग अपने लोगों को अपने निकट लाने और जीवन के तूफानों और परीक्षाओं के बीच उसके प्रति किये उनके समर्पण में दृढ़ बनने को करें

एफ. वायन मैक लियोड

68. घमण्डी की संपन्नता

पढ़ें भजन संहिता 73:1-28

इस भजन को आसाप नामक व्यक्ति ने लिखा था। वह एक लेवी था जो दाऊद के दिनों में रहता था। वह उन पुरुषों में से एक था जिन्हें दाऊद ने मन्दिर के संगीत का अधिकारी ठहराया था (इतिहास 6:39)। 2 इतिहास 29:30 उसे एक दर्शी बताता है। दर्शी परमेश्वर की ओर से सुननेवाला या दर्शन देखने वाला हुआ करता था। आसाप जो कुछ भी देखता था उसे वह भजनों में व्यक्त कर देता था।

क्या आपको कभी इस पर आश्चर्य हुआ है कि धर्मी दुख उठाते हैं जबकि दुष्ट संपन्न होते हैं? आसाप इस भजन में इस प्रश्न के साथ अपने संघर्ष को बताता है। वह प्रभु परमेश्वर और इस्राएल के प्रति उसकी भलाई के बारे में एक सामान्य कथन के साथ आरम्भ करता है विशेष रूप से उनके लिए जिनके मन शुद्ध हैं। उसने अपनी युवावस्था से ही इस सच्चाई को जाना था। निस्संदेह वह इन अद्‌भुत कहानियों से परिचित था कि प्रभु परमेश्वर ने वर्षों से अपने लोगों के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को कैसे प्रमाणित किया था।

जबकि भजनकार इस सिद्धान्त को जानता था कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए भला है, उसके व्यक्तिगत अनुभव ने उसके विश्वास पर कुछ संदेह उत्पन्न कर दिया था। यहां भजनकार का संघर्ष उससे मेल कराने को है जो वह परमेश्वर के बारे में जानता है और जो कुछ वह अपने जीवन के चारों ओर देखता है। पद 2 में वह अपने पाठकों को बताता है कि उसके डग (पांव) तो उखड़ना चाहते थे और वह अपने सिद्धान्त को खोने को था और वास्तविक जीवन के अनुसार वह आरम्भ करना चाहता था। मुख्य विचार परमेश्वर की भलाई से सत्य पर संदेह करने का संघर्ष है।

सत्य से जुड़े रहने के बजाय, आसाप घमण्डी से ईर्ष्या करने लगा। अपने चारों ओर दृष्टि करने पर भजनकार ने ऐसे बहुत से लोगों को देखा जो परमेश्वर के मार्ग पर नहीं चलते थे। वे लोग सफल थे। वे विश्वासी के समान संघर्ष का सामना नहीं कर रहे थे। वे पूर्ण रूप से स्वस्थ व अटूट बल वाले थे (पद 4)। उन पर जीवन का बोझ नहीं था और न ही वे किसी बीमारी से ग्रस्त थे (पद 5)।

भजन 6 में भजनकार हमें बताता है कि इन दुष्ट लोगों ने अहंकार को गले में हार

के समान पहना है तथा स्वयं को हिंसा के वस्त्रों से संवारा है। अन्य शब्दों में, उनके जीवनों में अहंकार और हिंसा थी। पद 7 से हम समझ पाते हैं कि इन दुष्ट लोगों के हृदय कठोर हो गए थे। इन कठोर हृदयों से पाप और बुराई के फल निकलते थे। उनके दुष्ट मनों के अहंकार की कोई सीमा नहीं। वे दुष्टता से अंधेर की बातें बोलते हैं (पद 8)। पद 9 हमें बताता है कि वे अपने मुंह से स्वर्ग में रहने का दावा करते और अपनी जीभ से वे पृथ्वी भर में बड़ी-बड़ी बातें बोलते फिरते हैं। उनका मानना है कि कोई भी चीज़ उनसे बड़ी नहीं है। वे अपनी शक्ति और सम्पत्ति पर डींग मारते और संसार को अपने अधिकार में मानते हैं। पद 10 में ध्यान दें कि उनके पीछे चलने वाले बहुत से थे। उन दिनों के स्त्री पुरुषों ने उनके अहंकार की बातों को सुना। 'भरे हुए प्याले का जल मिलेगा' वाक्यांश अस्पष्ट है। ऐसा हो सकता है कि आसाप दुष्टों की संपन्नता के बारे में कह रहा हो। जल के बहुतायत की सच्चाई सपन्नता का संकेत देती है। ऐसी स्थिति में इन बुरे अगुवों के पास आनेवाले इनकी बुराई के मार्गों पर चलते हुए बहुत सी आशीषों व संपन्नता का अनुभव करते थे।

इस पर ध्यान देना चाहिए कि इन लोगों को यह पता था कि जो कुछ भी ये कर रहे थे वह बहुत गलत था परन्तु तौभी वे ऐसा करते रहे। पद 11 में वे कहते हैं, ''ईश्वर कैसे जानता है? क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है?'' ये लोग समझ गए थे कि प्रभु परमेश्वर उनके कार्यों से प्रसन्न नहीं होगा, परन्तु वे यह भी मानते थे कि या तो वे अपने पापों को अच्छी तरह से ढांक सकते हैं या जो कुछ भी वे कर रहे थे परमेश्वर उससे अपनी आंखों को बन्द रखेगा। अपने दुष्ट मार्गों के लिए वे परमेश्वर द्वारा न्याय किये जाने की आशा नहीं करते थे।

अपने दिनों के दुष्ट लोगों की ओर दृष्टि करने पर भजनकार ने उन्हें निश्चिंत व संपन्न देखा। उन्होंने अपने जीवन परमेश्वर के मार्गों की कोई चिन्ता न करते हुए बिताए और ऐसा लगता था कि वे अपनी बुराई के कारण दुख भी नहीं उठा रहे थे। यही भजनकार का संघर्ष का विषय है। अपने मन को शुद्ध रखने का क्या लाभ? क्या अपने हाथों को बुराई से निर्दोष रखने का कोई लाभ था? धर्मी के दुख उठाने और दुष्ट के सम्पन्न होने पर प्रभु के पीछे चलने का क्या लाभ था? क्या वह स्वयं को बेकार ही शुद्ध रखे थे? आसाप के मन को इन चीज़ों से दुख पहुँचा था। उसे लगा कि मानो परमेश्वर उसे भला रहने व उसके मार्गों पर चलने के कारण दण्डित कर रहा था।

पद 15 में भजनकार का संघर्ष इस सच्चाई में भी देखा जा सकता है कि उसे सार्वजनिक रूप से अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता नहीं है। उसे पता था कि इन विचारों को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने पर वह परमेश्वर की सन्तान के साथ विश्वासघात करेगा। परमेश्वर की सन्तान ने वर्षों से इस सच्चाई को जाना था कि

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है और कि वह उन्हें सम्मान देता है जो उसकी सेवा करते हैं। भजनकार अब स्वयं को इन सच्चाइयों पर प्रश्न करते पाता है।

इसे समझने का बोझ कि दुष्ट क्यों संपन्न होते हैं जबकि परमेश्वर के लोग दुख उठाते हैं, यातनादायक हो जाता है। जो कुछ भी उसने देखा था वह परमेश्वर की सन्तान की गवाही को देता प्रतीत नहीं होता था।

इन प्रश्नों का जवाब उस दिन मिला जब भजनकार ने परमेश्वर के पवित्रस्थान में प्रवेश किया। हमें यह नहीं बताया गया कि उस दिन विशिष्ट रूप से क्या हुआ था, परन्तु इसमें उसके मन और मस्तिष्क के लिए एक प्रकाशन था। पवित्रस्थान में भजनकार दुष्ट की अन्तिम नियति को समझ सका। यह सच है कि उन्हें इस जीवन में संपन्नता मिली थी परन्तु वे फिसलनेवाली भूमि पर चल रहे थे। उनके गिरने और नाश होने का दिन आ रहा था। तत्काल ही वे उस सब के साथ नाश हो जाएंगे जो कुछ भी उन्होंने जोड़ा था। जैसे सोकर उठने के बाद सपना समाप्त हो जाता है वैसे ही दुष्टों के लिए होगा। उनका सपना सुन्दर था, परन्तु परमेश्वर के द्वारा उनका न्याय किये जाने पर वे अपनी संपन्नता और घमण्ड के सपने के साथ घृणित ठहरेंगे। उनका सारा धन और संपत्ति उन्हें बचा नहीं पाएगी। अन्त में ये उसे आशाहीन छोड़ देंगे।

इस समय पर भजनकार को अपनी मूर्खता के विचार का बोध हुआ। उसने मन को दुखी व अपने प्राण को कड़वा होने दिया था। तौभी, वह जान गया था कि वह असंवेदी व आज्ञानी हो गया था। वह एक पशु के समान विचार कर रहा था जिसमें आत्मा नहीं होती। वह इस संसार की चीज़ों पर ध्यान दे रहा था और अनन्तकाल की ओर देख पाने में असफल रहा था।

उसकी मूर्खता के बावजूद, परमेश्वर ने आसाप को छोड़ा नहीं था। इसके विपरीत, परमेश्वर ने उसके दाहिने हाथ को पकड़कर सम्मति देते हुए उसकी अगुवाई की थी (पद 23-24)। परमेश्वर ने उसका मन अस्थायी चीज़ों से हटाकर उसे अनन्तकालीन चीज़ें दिखाई। इस पृथ्वी पर भजनकार ने जो कुछ देखा था जीवन में उससे भी अधिक बहुत कुछ था।

यह सच है कि दुष्ट लोग इस पृथ्वी पर संपन्न हो सकते हैं। विश्वासी दुष्ट के हाथों दुख भी उठा सकते हैं। तथापि, विश्वासियों को इस संसार की चीज़ों पर केन्द्रित नहीं रहना है। इसके विपरीत उन्हें अनन्तकाल की ओर देखना है।

भजनकार अपने विचार की गलती को जान गया था। पद 25 में उसने कहा: ''स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।'' उसकी आँखें इसे संसार की अस्थायी चीज़ों से हटाकर अनन्तकालीन चीज़ों पर लगा दी गई थीं। उसे स्वर्ग की आशा थी और वह यह जान गया था कि बड़ा खज़ाना

नाशवान चीज़ों में नहीं परन्तु स्वयं प्रभु परमेश्वर में था।

वह अब अंगीकार कर सका कि उसका हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं परन्तु परमेश्वर उसका बल और भाग बना था। इन कठिनाई और संदेह के समयों में परमेश्वर उसका बल था। परमेश्वर भी उसका भाग था। विचार यह है कि उसकी आत्मा जिसकी इच्छा करती है परमेश्वर वही है। उसकी इच्छा संसार में चीज़ों को पाने की नहीं रही परन्तु परमेश्वर को जानने की है। परमेश्वर को जानना इस संसार की उस प्रत्येक चीज़ से बड़ा है जिसे वह प्राप्त कर सकता है। अब उसके लिए यह कोई अर्थ नहीं रखता कि उसका हृदय और मन हार गए हैं। वह सांसारिक चीज़ों से जुड़ा नहीं है। उसे सांसारिक चीज़ों की तुलना में महानतम् चीज़ मिल गई है। उसे प्रभु मिल गया था।

भजनकार अपने पाठकों को स्मरण कराते हुए अपने चिंतन का परिणाम निकालता है कि परमेश्वर से दूर रहने वाले नाश होंगे। वे यहां के अपने खुशहाल और संपन्न जीवन के बावजूद नाश होंगे। वे इस संसार द्वारा दी जाने वाली आशीषों का आनंद उठा सकते हैं परन्तु, अन्त में, परमेश्वर से अलग होंगे।

भजनकार अब परमेश्वर के निकट रहने में खुश है। उसने प्रभु को अपना शरणस्थान माना है, जिससे वह उसके सब कामों का वर्णन करें? (पद 28)।

भजनकार के हृदय में परिवर्तन आ गया है। एक समय वह इस सच्चाई के साथ संघर्षरत् था कि दुष्ट लोग संपन्न और निश्चिंत जीवन जीते हैं। अब उसने देखा कि उनके जीवन कितने खोखले थे। यदि उनके पास परमेश्वर नहीं था, तो वास्तव में उनके पास कुछ नहीं था। हमारे लिए भजन की चुनौती जीवन में अपनी प्राथमिकताओं की जांच करने की है। भजनकार अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर आ गया था जहां वह यह जान गया था कि परमेश्वर का ज्ञान इस संसार द्वारा दिये जाने वाले किसी भी अस्थायी आनन्द से बड़ा था। काश कि हम प्रभु परमेश्वर को भजनकार के समान जान सकें व उसका आनन्द ले सकें।

विचार करने के लिए

- क्या आप कभी आत्मिक चीज़ों की तुलना में सांसारिक चीज़ों पर केन्द्रित हुए हैं? स्पष्ट करें।
- जब हम अपना ध्यान सांसारिक चीज़ों की तुलना में आत्मिक चीज़ों पर लगाना सीखते हैं तो इसमें क्या अन्तर होता है?
- इस संसार की कोई भी चीज़ हमारे पास न होने पर परमेश्वर में आनन्दित रहने की किस संभावना के बारे में भजनकार हमें सिखाता है? क्या आप अभी परमेश्वर को जानने का आनन्द ले रहे हैं? आज आपको परमेश्वर का गहरा

अनुभव पाने से क्या चीज़ रोके रखती है?

- हम यहां इस पृथ्वी की मूर्खतापूर्ण और खोखली चीज़ों के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से आपको उसके निकट लाने को कहें।
- क्या इस संसार में ऐसी चीज़ें हैं जो आपको आकर्षित करती हैं? प्रभु से आपको यह दिखाने को कहें कि वह उन चीज़ों से कितना बड़ा है।
- प्रभु से अनन्त चीज़ों के लिए आपकी आँखों को खोलने को कहें।
- कुछ समय एक ऐसे मित्र या प्रियजन के लिए प्रार्थना करें जिसने अभी तक व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को जानने की सुन्दरता के लिए अपनी आँखों को नहीं खोला है।

69. उठ अपना मुकद्दमा आप ही लड़

पढ़ें भजन संहिता 74:1-23

मसीही जीवन कई बार बहुत सी कठिनाइयों से भरा होता है। ऐसे भी समय होते हैं जब विश्वासी दुख और शोक से भर जाता है। शत्रु विश्वासी का सामना कर उस पर विजयी भी हो जाता है। भजन 74 इसी विषय को बताता है।

भजन के आरम्भ में भजनकार आसाप परमेश्वर से एक कठिन प्रश्न करता है, ''हे परमेश्वर, तू ने हमें क्यों सदा के लिए छोड़ दिया है?'' (पद 1)। इससे हमें यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि परमेश्वर ने अपने लोगों को वास्तव में सदा के लिए छोड़ दिया था। भजनकार परमेश्वर को पुकारते हुए इसी का अनुभव कर रहा था। उसे कोई सहायता नहीं दिख रही थी। उसका दुख बढ़ गया था और ऐसा लगता था कि परमेश्वर का इस पर कोई ध्यान नहीं है। ''तेरी कोपाग्नि का धुआं तेरी चराई की भेड़ों के विरुद्ध क्यों उठ रहा है?'' उसने पूछा (पद1)। उसे पता था कि परमेश्वर उनकी चरवाहा था। इसी विशेष संबन्ध के कारण भजनकार को ऐसा लगता है कि उसका परमेश्वर के सम्मुख मुकद्दमा है। यदि परमेश्वर उनका चरवाहा था तो उसने उन्हें उनके दुख के समय में क्यों छोड़ दिया था?

यह स्पष्ट है कि भजनकार को यह विश्वास था कि परमेश्वर अपने लोगों की सहायता के लिए आएगा। पद 2 में उसने परमेश्वर से उन लोगों को स्मरण करने की विनती की जिन्हें उसने प्राचीनकाल में खरीदा था। परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से छुड़ाकर अपना बनाया था। परमेश्वर अब उन्हें क्यों छोड़ देगा जिन्हें छुड़ाने के लिए उसने इतनी अधिक कीमत चुकाई थी?

पद 2 में इस पर भी ध्यान दें कि भजनकार ने परमेश्वर को स्मरण कराया कि उसने उनके बीच वास करने का चुनाव किया था। पुराने नियम के संदर्भ में इस्राएल के लोग पवित्रस्थान में परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में जानते थे कि यह वाचा के सन्दूक पर ठहरी रहती थी। उन्होंने उस उपस्थिति की सामर्थ और महिमा का अनुभव अपने युद्धों में किया था। परमेश्वर ने उन पर स्वयं को प्रगट करने का चुनाव किया था। अब वह उनसे अपना मुँह क्यों फेर सकता है?

उनका नगर अब खण्डहर हो गया है। यहां तक कि वह पवित्रस्थान जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था उसे भी शत्रु ने नाश कर दिया है। यह सब

होते समय परमेश्वर कहां था? पद 3 में भजनकार परमेश्वर को खण्डहर की ओर लौट आने और अपने लोगों को स्मरण करने को कहता है। उसने प्रभु को स्मरण कराया कि शत्रु ने उनके साथ क्या किया था। शत्रु परमेश्वर के पवित्रस्थान में घमण्डी सिंह की नाईं गरजा था। उस पवित्रस्थान में उन्होंने अपनी ध्वजाओं को परमेश्वर पर अपनी विजय के चिन्ह के रूप में लगाया था, वहां वास करनेवाले प्रभु के नाम की निन्दा करते हुए। शत्रु हाथ में कुल्हाड़ा लेकर आया था। भजनकार उनकी तुलना उन व्यक्तियों से करता है जो घने वन के पेड़ों पर कुल्हाड़े चलाते हैं (पद 5)। वे उस भवन की नक्काशी को कुल्हाड़े से तोड़ डालते हैं। उनमें न तो पवित्रस्थान की सुन्दरता के प्रति कोई आदर है और न ही उन्हें उस परमेश्वर की कोई चिन्ता है जो वहां वास करता है। उन्होंने पवित्रस्थान में आग लगा कर उसे जला डाला है। घमण्ड में आकर शत्रु ने अपने मनों में कहा, ''हम इनको एकदम दबा दें!'' (पद 8)। उन्होंने देशभर में जाकर उस प्रत्येक स्थान को जला डाला जहां परमेश्वर की आराधना की जाती थी।

परमेश्वर की चुप्पी ने विश्वासियों की दशा को और भी बुरा बना दिया था। न तो उन्हें कोई चमत्कारिक चिन्ह दिया गया और न ही भविष्यवाणी का कोई वचन। परमेश्वर चुप था और शत्रु का क्रोधावेश बढ़ता जा रहा था। परमेश्वर के लोगों का प्रश्न था कि परमेश्वर कब तक चुप रहेगा। पद 10-11 में हम उनके क्रोध को समझ सकते हैं:

हे परमेश्वर द्रोही कब तक नामधराई करता रहेगा? क्या शत्रु तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा? तू अपना दहिना हाथ क्यों रोके रहता है?

परमेश्वर की चुप्पी विश्वास द्वारा अनुभव की जानेवाली सबसे डरा देनेवाली चीज़ हो सकती है। परमेश्वर की ओर से सुनने पर हमें साहस मिलता है। परमेश्वर की ओर से सुननेवालों ने स्वेच्छा से सताव और मृत्यु का सामना किया है। स्तिफनुस ने अपने पत्थरवाह किये जाने का सामना उस समय अपने मन में शांति और आनन्द के साथ किया जब उसने स्वर्ग में पिता के दहिने हाथ पर प्रभु यीशु को खड़े देखा (प्रेरित. 7)। तथापि, यहां परमेश्वर के लोगों ने चुप्पी के साथ सामना किया था। उन्होंने परमेश्वर से उस चुप्पी को तोड़ने और उनकी सहायता के लिए आने की विनती की। ''उसे अपने पांजर से निकालकर उनका अन्त कर दे,'' उन्होंने परमेश्वर से विनती की (पद 11)। हमें अपनी उपस्थिति को दिखा।

संदेह ओर प्रश्नों के बावजूद, भजनकार को अपने प्रभु परमेश्वर पर पूरा भरोसा है। उसने जान लिया था कि परमेश्वर से अलग कोई उद्धार नहीं था। परमेश्वर उनका राजा था। वह सदा से ही उनका सच्चा राजा रहा था। केवल वही पृथ्वी पर उद्धार को लेकर आया था (पद 12)। उसने अतीत में अपनी सामर्थ का प्रदर्शन किया था। उसने

अपनी सामर्थ से समुद्र को सुखा दिया था जिससे उनके पूर्वज उसे पार कर प्रतिज्ञा की भूमि तक जा सके। परमेश्वर के लोगों के परमेश्वर की सुरक्षा में होकर पार होने उन दानवों के सिर को कुचल दिया था जो उनका पीछा कर रहे थे। यह इसका एक उद्धरण हो सकता है कि इस्राएल की संतान का पीछा करते हुए मिस्री कैसे पानी में डूब मरे थे (देखें उत्पत्ति 14:21-28)।

पद 14 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर ने ही लिब्यातान के टुकड़े टुकड़े कर जंगली जन्तुओं को खिला दिया था। यह इस बात का उद्धरण हो सकता है जिसमें मिस्र सेना इस्राएलियों का पीछा करते हुए मरुभूमि में मारी गई थी। पवित्रशास्त्र में लिब्यातान एक विशाल समुद्री जीव को बताता है जिसे अक्सर एक डरा देने वाली सेना के रूप में चित्रित किया जाता है। यह बहुत स्पष्टता से मिस्र को उद्धरित कर सका। इस चुप्पी के समय में भजनकार उस समय की ओर पलटकर देखता है जब प्रभु परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए उन तक सामर्थी ढंग से पहुंचा था। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए समुद्र की लहरों को सुखा दिया था कि वे वहां से पार होकर जा सकें। क्या अब भी वह वैसा ही नहीं कर सकता है? भजनकार अपना भरोसा उस प्रभु पर रखता है जिसने स्वयं को उनके पूर्वजों पर एक सामर्थी परमेश्वर के रूप में प्रगट किया था।

दिन और रात इस सामर्थी परमेश्वर के ही हैं। उसने निर्धारित किया कि कब दिन होगा और कब रात। सूर्य और चन्द्रमा उसकी आवाज़ को सुनते हैं। वह पृथ्वी की सीमाओं को ठहराता है। उसने निर्धारित किया कि कब गर्मी होगी और कब सर्दी। उसने बुरे समयों के साथ-साथ भले समयों को भी बनाया है। सभी उसके प्रतापी नियंत्रण में हैं।

पद 18 में भजनकार ने प्रभु से यह स्मरण करने की विनती की कि कैसे शत्रु ने पवित्रस्थान को जलाकर उसकी हंसी उड़ाई थी। उन्होंने उसके नाम की निन्दा की थी।

अपनी पिण्डुकी के प्राण को वनपशु के वश में न कर; अपनी दीन जनों को सदा के लिए न भूल।

'पिण्डुकी' शब्द लाड़-प्यार का शब्द है। पिण्डुकी शांतिपूर्ण शब्द है। परमेश्वर के लोगों को उसकी पिण्डुकी कहते हुए, भजनकार उन्हें बता रहा है कि परमेश्वर ने उनसे बहुत प्रेम किया था। उसके आस-पास विनाश और सत्यानाश है। शत्रु ने प्रभु के नगर का नाश कर दिया था। उन्होंने पवित्रस्थान को जला डाला था। परमेश्वर चुप था। अभी भी, भजनकार अपने लोगों से कहता है कि इस्राएल परमेश्वर की पिण्डुकी था। परमेश्वर अभी भी उनसे प्रेम करने के साथ-साथ उनकी चिन्ता करता था।

आसाप परमेश्वर से अपनी वाचा को आदर देने की विनती करता है। मुझे विवाह का चित्र देखना पसंद है। भजनकार ने परमेश्वर को बताया, ''स्मरण कर कि तेरी

वाचा सहभागी शत्रु के द्वारा दूषित की गई हैं। अपने लोगों के साथ ऐसा न होने दे। में अपमान में न पड़ने दो, ''हे परमेश्वर उठ अपना मुकद्दमा आप ही लड़, तेरी जो नाम-धराई मूढ़ से दिन भर होती रहती है, उसे स्मरण कर'' (पद 22)।

भजनकार न्याय की पुकार करता है। पद 23 में वह परमेश्वर को पुकारते हुए यह निष्कर्ष निकालता है कि शत्रु के बड़े बोल और कोलाहल की उपेक्षा न कर जो उसके लोगों और उसके उद्देश्यों के विरुद्ध हो रहा है।

ऐसे भी समय होते हैं जब परमेश्वर हमें इस पृथ्वी पर परीक्षाओं में से जाने देता है। मेरे जीवन में ऐसे भी समय रहे हैं जब परमेश्वर खामोश प्रतीत हुआ था। ये हमारे लिए विकास के समय रहे होंगे। भजनकार हमें स्मरण कराता है कि चीज़ों के कठिन होने पर भी परमेश्वर का नियंत्रण उन पर रहता है। उसके चुप होने पर भी वह अब भी हमारा उद्धार और आशा है। परीक्षाएं उसकी सामर्थ को मिटा नहीं सकतीं। बाधाएं हमारे प्रति उसके प्रेम को समाप्त नहीं कर सकती। चुप्पी और विनाश के बावजूद भजनकार परमेश्वर की ओर देखता रहता है। समय आने पर वह अपना उद्धार दिखाएगा।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी अपने को भजनकार के समान स्थिति में पाया है? उस समय आपको कैसा लगा था?
- आपके विचार से परमेश्वर हमें कठिन समयों से होकर क्यों जाने देता है?
- क्या परमेश्वर की चुप्पी का अर्थ यह है कि उसने हमें भुला दिया है? स्पष्ट करें।
- इस भजन में परमेश्वर के प्रति भजनकार के विश्वास और भरोसे का हमें क्या प्रमाण मिलता है?
- अतीत में परमेश्वर ने आपको कौन सी विजय दी हैं? ये विजयें आपके विश्वास में आपको कैसे प्रोत्साहित करती हैं?

प्रार्थना के लिए:

- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जो अपने जीवन में इस समय कठिनाई का सामना कर रहा है? कुछ समय उन्हें प्रभु के लिए समर्पित करने को निकालें।
- अतीत की विजयों को लिए परमेश्वर की स्तुति करें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि यद्यपि वह हमें दुखों में से जाने देता है, तब भी वह हमारा प्रभु रहता है और उसका प्रेम कभी हारता नहीं है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि ऐसी कोई भी बाधा या परीक्षा नहीं है जिस पर वह विजयी नहीं हो सकता हो। अपनी वर्तमान समस्याओं को उसके हाथों में रखें।

70. घमण्डी लोग

पढ़ें भजन संहिता 75:1-76:12

भजन 75 और 76 उन सभी लोगों के लिए चुनौती हैं जो अपने को परमेश्वर से ऊँचा करते हैं।

आरंभ करते हुए, आसाप अपने पाठक का ध्यान प्रभु परमेश्वर की ओर लगता है (75:1)। वह स्तुति और शुक्रगुज़ारी के साथ आरम्भ करता है क्योंकि प्रभु का नाम निकट था। यह उस घनिष्ठता व सहभागिता के बारे में बोलता प्रतीत होता है जो हम प्रभु परमेश्वर के साथ रख सकते हैं। वह दूर नहीं परन्तु निकट है। वह अपने लोगों के निकट आने का चुनाव करता है।

प्रभु की 'निकटता' का प्रमाण 75:1 में दिखता है। भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु के अद्‌भुत कार्य उसके मुख से निकलने वाले शब्दों से होते हैं। इस्राएलियों ने कई भिन्न तरीकों से प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव किया था। परमेश्वर असंख्य अवसरों पर अपने लोगों की ज़रूरत के समय में उन्हें बचाने को उनके पास आया था।

इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर ने न्याय करने के समय का चुनाव किया था (75:2)। यद्यपि उस समय के लोग उसके विरुद्ध घमण्ड में कार्य कर रहे थे, तौभी न्याय का दिन आ रहा था। समस्त मानवता परमेश्वर के सम्मुख न्याय किये जाने को खड़ी होगी।

पहले दो पदों से हम देखते हैं कि प्रभु परमेश्वर अपने लोगों के निकट था और कि वह उन सभी का न्याय धार्मिकता के साथ करेगा। भजन 75:3 में हम परमेश्वर की अपने लोगों के लिए अद्‌भुत देखभाल को देखते हैं। भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि चाहे पृथ्वी जल रही है, तौभी परमेश्वर ने उसके खम्भों को स्थिर किया है। इस पृथ्वी के डगमगाने और मानवजाति के मनों में भय आ जाने पर भी हम यह भरोसा रख सकते हैं कि परमेश्वर अपनों की चिन्ता करेगा। वह खम्भों को स्थिर रखेगा ताकि हम नाश न हों।

भजन 75:4 में आसाप घमण्डियों के बारे में बताता है। उन्हें स्वयं पर और अपनी उपलब्धियों पर बड़ा घमण्ड था। वे सब का ध्यान अपनी ओर दिलाना चाहते थे।

भजन 75:4 में भजनकार घमण्डियों को घमण्ड न करने की आज्ञा देता है। न ही उन्हें अपने सींगों को ऊँचा करना है। जानवर के लिए सींग हथियार और शक्ति का प्रतीक होता है। भजनकार घमण्डी को बता रहा है कि उन्हें अपनी बड़ी शक्ति पर अब और घमण्ड नहीं करना है। भजन संहिता 75:5 से हम देखते हैं कि इन लोगों ने अपने सींग स्वर्ग के विरुद्ध ऊँचे किये थे। अर्थात, उन्होंने स्वयं परमेश्वर को चुनौती दी थी।

घमण्डियों को सिर उठाकर ठिढाई की बातें बोलना बंद करना था। सामान्यता ऐसा माना जाता है कि यहां विचार यह है कि वे घमण्ड में होकर अपने बारे में डींगे मार रहे थे। भजन 75:6 इसका समर्थन करता प्रतीत होता है जब भजनकार अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि कोई भी चीज़ न तो पूरब से, न पश्चिम से और न ही जंगल से मानवजाति को ऊँचा उठा सकती है। मनुष्य होने के कारण हमारे पास घमण्ड करने को क्या है? हम अपनी महान तकनीकी व वैज्ञानिक उपलब्धियों पर घमण्ड कर सकते हैं परन्तु हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि यह सब परमेश्वर की ओर से आता है। वह समस्त ज्ञान और शक्ति का स्त्रोत है। उसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते हैं।

आसाप 75:7 में अपने पाठकों को परमेश्वर के न्याय के बारे में स्मरण कराना जारी रखता है। परमेश्वर ही एक को घटाता व दूसरे को बढ़ाता है। इस संसार में हमें स्वयं और हमारी उपलब्धियों व धन की तुलना में परमेश्वर और हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्यों हेतु बहुत कुछ करना है। परमेश्वर ही नीचा करता और परमेश्वर ही ऊँचा उठाता है।

प्रभु परमेश्वर के हाथ में झाग व मसाला मिला दाखमधु का कटोरा है (75:8)। यह न्याय का कड़वा कटोरा था। सही समय पर परमेश्वर इस कटोरे को पृथ्वी के दुष्टों पर उण्डेलगा और उन पर इसकी तलछट तक को पी जाने का दबाव डालेगा। वह कितना ही भयानक दिन होगा।

हमारे सामने ऐसे घमण्डी स्त्रीयाँ व पुरुषों का चित्र है जो अपने धन व उपलब्धियों पर डींग मारते हैं। वे अपने लिए न तो परमेश्वर की ज़रूरत को देखते और न ही वे उसके मार्गों पर चलते हैं। वे यह नहीं जान पाते कि यदि यह प्रभु परमेश्वर की आरे से न होता तो उनके पास कुछ भी नहीं होता। वे सारा श्रेय स्वयं लेते हैं। यह उस प्रभु को क्रोध दिलाने वाला है जो उनका न्याय करने को आता है। भजन 75:10 हमें बताता है कि प्रभु दुष्टों के सब सींगों को काट डालेगा। अर्थात् वह उनकी शक्ति और धन का नाश करेगा। वे गिरेंगे क्योंकि उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के ऊपर उठाया था।

75:10 में इस पर भी ध्यान दें कि जबकि दुष्टों के सींग काट डाले जाएंगे, प्रभु धर्मी के सींगों को ऊंचा करेगा तथा उन्हें सामर्थ व अधिकार देगा। इस पर विचार करते हुए भजनकार 75:9 वे घोषणा करता है कि वह सदा याकूब के परमेश्वर का

भजन गाता रहेगा।

भजन 76 में आसाप फिर से प्रभु के नाम को लेता है। भजन 75:1 में हमें बताया गया था कि प्रभु का नाम प्रगट हुआ है यहां भजन 76:1 में उसका नाम इस्राएल में महान के रूप में बताया गया है।

इस महान और अद्वितीय परमेश्वर ने यरूशलेम में अपना तम्बू लगाने का फैसला किया है (76:2)। उसने सिय्योन को अपना निवास-स्थान बनाया है। परमेश्वर ने स्वयं को यरूशलेम पर प्रगट करने का चुनाव किया है। उस नगर में परमेश्वर ने अपनी सामर्थ को प्रगट करने का चुनाव किया है। उसने न केवल यरूशलेम में अपनी उपस्थिति को प्रगट किया परन्तु उसने उस नगर में अपने लोगों को बचाने का फैसला भी किया। भजन 76:3 हमें बताता है कि परमेश्वर वें चमचमाते तीरों, ढालों और तलवारों को तोड़ डाला है ताकि शत्रु उनकी हानि न कर सके। अपनी समस्त शक्ति के बावजूद, शत्रु परमेश्वर के लोगों को हरा नहीं पाया है।

परमेश्वर को न केवल 'महान' बताया गया है, परन्तु भजन 76:4 में हमें यह बताया गया है कि वह ज्योति से ज्योतिर्मय और अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक उत्तम और महान है। महानता इस विशिष्टता है कारण हम आश्चर्य और प्रशंसा में जुड़े रहते हैं। उसकी महानता का सामना कर, शूरवीर लोग भी लूट लिये गए हैं। वे प्रभु के सामर्थी हाथ से नष्ट हो गए हैं। अधिक सामर्थी होने पर भी, किसी भी योद्धा का हाथ इस अद्‌भुत और प्रतापी परमेश्वर के विरुद्ध न उठ सका (76:5)। वे उसके प्रताप के नीचे असहाय खड़े रहे। उसकी उपस्थिति ने ही उन्हें तोड़ डाला था।

प्रभु की घुड़की से रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े हैं (76:6)। इस महान और प्रतापी परमेश्वर से उनका कोई मेल नहीं था। उसके मुख से निकले शब्द से उनकी सारी शक्ति चली जाती है।

उन दिनों की सेना चाहे कितनी भी शक्तिशाली थी, इस्राएल के प्रभु परमेश्वर से उनका कोई मेल नहीं था। वह भय योग्य परमेश्वर है। कोई भी सेना उसके विरुद्ध खड़ी नहीं हो सकती। प्रभु द्वारा स्वर्ग से न्याय सुनाए जाने पर पृथ्वी डर गई और चुप रही (76:8)। उनके पास कहने को कुछ नहीं था। उसका निर्णय अंतिम था। परमेश्वर घमण्डी लोगों के विरुद्ध परन्तु पृथ्वी के नम्र लोगों को बचाने के लिए उठा (76:9)।

मानवता के घमण्ड के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध उसकी स्तुति का कारण हो जाएगा (76:10)। लोग प्रभु के क्रोध में उसकी सच्चाई की महानता को देखेंगे। वे नम्र लोगों के प्रति उसकी करुणा और अनुग्रह को भी देखेंगे। वे उसकी महान और प्रतापी परमेश्वर के रूप में आराधना करेंगे। घमण्डी लोग डींग मारते हैं परन्तु इस्राएल का परमेश्वर उन्हें नम्र करेगा। देश और राज्य डींग मारते हैं परन्तु उन सभी को यह

जानना है कि वे परमेश्वर के बिना कुछ नहीं हैं। केवल वही महान, प्रतापी और प्रशंसा के योग्य है।

भजन 76:10 में ध्यान दें कि न केवल मानवता के घमण्ड के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय उसकी स्तुति का कारण है परन्तु उसके क्रोध से बचे हुए बने रहते हैं। इन लोगों ने संभवत: स्वयं के बारे में बड़ी-बड़ी बातें की हों परन्तु प्रभु के द्वारा अनुशासित किये जाने पर उन्होंने देखा कि वे कितने कमज़ोर हैं। अपनी शक्ति और बुद्धि पर बड़ी-बड़ी बातें करने से अब ये रुके रहते हैं। भजन 76:12 के अनुसार परमेश्वर घमण्डी शासकों की आत्मा को तोड़ता और पृथ्वी के राजाओं को भय योग्य जान पड़ता है जो यह मानते हैं कि उनकी शक्ति का एकमात्र स्त्रोत वही है।

भजनकार अपने पाठक को प्रभु के लिए मन्नते मानने और पूरा करने की चुनौती देते हुए परिणाम निकालता है। ये बलिदान और आज्ञाकारिता की मन्नते हैं। वह देश के आस-पास के लोगों की उस परमेश्वर के लिए भेंट लाने को चुनौती देता है जिसका सबसे अधिक भय माना जाना चाहिए। इस तरह के अद्‌भुत और पवित्र परमेश्वर के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? हम केवल इतना ही कर सकते हैं कि स्वयं को उसके चरणों में उसकी नम्र सेवा व भेंट के रूप में डाल दें।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी अपनी उपलब्धियों पर डींग मारी है। यह भजन इस बारे में क्या कहता है?
- आपके जीवन में परमेश्वर के 'प्रगटीकरण' का क्या प्रमाण है?
- प्रभु एक महान न्यायी है। आपके लिए इसका व्यक्तिगत रूप से क्या अर्थ है?
- प्रताप क्या है? परमेश्वर कैसे प्रतापी है?
- परमेश्वर भययोग्य परमेश्वर क्यों है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर के 'प्रगटीकरण' तथा उस तरीके के लिए धन्यवाद दें जिसके द्वारा उसने अपने प्रगटीकरण को आपको दिखाया है?
- प्रभु से आपके जीवन में पाए जाने वाले किसी भी घमण्ड को दूर करने को कहें।
- प्रभु से प्रतिदिन आपकी यह जानने में सहायता करने को कहें कि अपने जीवन का लेखा देने के लिए आप एक पवित्र परमेश्वर के सामने खड़े होंगे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि यद्यपि वह एक भययोग्य परमेश्वर है, तौभी प्रभु यीशु में, हम उसके सामने साहस के साथ खड़े हो सकते हैं। परमेश्वर के इस अनुग्रह और करुणा के लिए उसे धन्यवाद दें।

71. मैंने दोहाई दी

पढ़ें भजन संहिता 77:1-20

भजनों को पढ़ना और सामान्य लोगों के वास्तविक जीवन के संघर्षों को न देखना कठिन है। जीवन कठिनाइयों से भरा है। तथापि, इसी के साथ-साथ, विश्वासी इन दिनों में शांति और शक्ति के लिए हमेशा प्रभु की ओर फिर सकता है।

भजन 77 में भजनकार अपने को संकट में पाता है। अपने आस-पास वालों की परीक्षाओं के कारण अपने संकट में वह प्रभु परमेश्वर से सहायता पाने को अपना ध्यान उसकी ओर लगता है। अपनी निराश में वह प्रभु को खोजता है। रात के समय में भी वह परमश्वेर के सामने अपने हाथ फैलाता था। मन की चिन्ताओं के कारण भजनकार सो भी नहीं पाता। उसकी आत्मा में शान्ति नहीं है। इस समय में, वह परमेश्वर की सहायता के लिए दोहाई देता है। पद 3 में ध्यान दें कि वह अपने आस-पास वालों की परीक्षाओं के कारण कहरता और उसकी आत्मा मूर्छित हो चली है। इस पर भी ध्यान देना विशिष्ट रूप से रोचक है कि परमेश्वर को स्मरण करने के कारण उसकी आत्मा कहरती है और परमेश्वर पर मनन करने के कारण वह मूर्छित हो चला है। कोई भी यह सोच सकता है कि परमेश्वर को स्मरण करने व उस पर मनन करने से भजनकार को शक्ति मिलनी चाहिए थी परन्तु पद 3 में तो इसका विपरीत ही प्रमाण देखने को मिलता है। इसका कारण संभवत: परमेश्वर की चुप्पी भी हो सकता है। परमेश्वर और उसके काम करने के ढंग पर विचार करके कि कैसे उसने उसके पूर्वजों के हृदयों और जीवनों में कार्य किया था इससे उसका हृदय थक गया था। परमेश्वर उसके दिनों में ऐसा ही क्यों नहीं कर रहा था? उसे दुख क्यों उठाना पड़ा था? अब परमेश्वर कहां था? ये कुछ ऐसे प्रश्न थे जिन्होंने उसकी आत्मा को व्याकुल कर दिया था और जिसके कारण वह मूर्छित हो गया था।

भजनकार की थकान इतनी अधिक थी कि उसकी आँखे तो बन्द होना चाहती थीं लेकिन वह सो पाने में असमर्थ था। उसके संकट उसे सोने नहीं दे रहे थे। इस संकट के समय में भजनकार पिछले वर्षों पर विचार कर रहा था। उसे वे दिन याद आए जब नींद न आ पाने के कारण उसे स्तुति और शुक्रगुज़ारी करने का अवसर मिला था। 7-9 पदों में भजनकार हम पर उन प्रश्नों को प्रगट करता है जो उसके मन में उसके संकट के समय में थे।

1. क्या प्रभु युग युग के लिए छोड़ देगा?

2. क्या वह फिर कभी प्रसन्न न होगा?

3. क्या उसकी करुणा सदा के लिए जाती रही है?

4. क्या उसका वचन पीढ़ी-पीढ़ी के लिए निष्फल हो गया है?

5. क्या ईश्वर अनुग्रह करना भूल गया है?

6. क्या उस ने क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है?

ये कठिन प्रश्न हैं? हममें से ऐसा कौन है जिसके अपनी निराशा के समय में इस तरह के प्रश्न न किये हों? हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं तो याद हैं परन्तु वे पूरी होती नहीं दिखतीं। हमें अपने चारों ओर कठिनाई और परीक्षा के सिवाय और कुछ नहीं दिखता। हमें पता है कि परमेश्वर दया और करुणा का परमेश्वर है परन्तु तौभी हम इस करुणा को कार्यरत् होते नहीं देखते। इस भजन में भजनकार का यही संघर्ष है।

अपनी परीक्षा और प्रभु की चुप्पी के प्रति भजनकार की क्या प्रतिक्रिया है? हमें इसका उत्तर पद10-12 में मिलता है।

मैं विचार करूंगा (पद 10)

पद 10 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया है कि संकट की रोशनी में, वह 'परमप्रधान के दहिने हाथ के वर्षों को विचरेगा। अन्य शब्दों में, वह अपने मुकद्दमें को उस परमेश्वर के पास लेकर जाएगा जिसके दहिने हाथ ने वर्षों तक अपने लोगों के लिए कार्य किया है इन सभी वर्षों में प्रभु अपने लोगों के लिए भला रहा था। भजनकार प्रभु के दहिने हाथ की भलाई को अनुभव करना चाहता था वैसे ही जैसे उसके पूर्वजों ने बीते वर्षों में उस भलाई को अनुभव किया था। उसने परमेश्वर से दया व करुणा की विनती की थी। उसने ऐसा इसलिए किया था क्यों कि वह अपने लोगों के इतिहास से जानता था कि परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर था जिसने उन्हें बचाया था जिन्होंने उससे प्रेम किया था। वह परमेश्वर से उसके अतीत के कार्य के आधार पर विनती करता है।

मैं स्मरण रखूंगा (पद 11)

दूसरा, ध्यान दें कि भजनकार ने प्रभु ने कार्यों और उसके प्रचीनकाल के कार्यों को स्मरण रखने का फैसला किया था। अर्थात् वह उस परमेश्वर पर अपनी आशा और भरोसा रखेगा जिसने उसके पूर्वजों के जीवनों में चमत्कार और अद्‌भुत कार्य किये थे। उससे इस परमेश्वर में साहस मिलेगा जो कभी बदलता नहीं है। जो उसने अतीत में किया था उसे वह फिर से करेगा। उसे इस पर कोई संदेह नहीं है कि परमेश्वर उस

पर अपनी दया और करूणा को वैसे ही दिखाएगा जैसा उसने प्राचीनकाल में उसके पूर्वजों के साथ किया था। परमेश्वर द्वारा अतीत में किये गए कार्यों को स्मरण करके उसे बहुत साहस मिलता था।

मैं ध्यान करूंगा (पद 12-15)

पद 12 में भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि संकट के इस समय में वह परमेश्वर के कार्यों पर ध्यान करेगा तथा उसके बड़े कामों पर विचार करेगा। इन पर ध्यान करने पर उसने पाया कि परमेश्वर के उद्देश्य पवित्र थे। वह यह जान गया था कि उसके समान और कोई महान ईश्वर नहीं था (पद 13)। उसके परमेश्वर ने चमत्कार किये और लोगों में अपनी सामर्थ को दिखाया (पद 14)। उसकी सामर्थी भुजा ने उसके लोगों को छुड़ाया था (पद 15), शत्रु के हाथ से हाथ उन्हें बचाते हुए। इन सामर्थी कार्यों पर विचार करना भजनकार को आशीष व प्रोत्साहन देनेवाला था। इसने उसके विश्वास को मज़बूत करने के साथ-साथ इस कठिन समय में परमेश्वर पर उसके विश्वास को बढ़ाया था।

हमारे लिए यहां पर यह समझना ज़रूरी है कि कई बार हमारे लिए उस समस्या पर से दृष्टि हटाना बहुत कठिन हो जाता है जिसका हम काफी लम्बे समय से सामना कर रहे होते हैं कि परमेश्वर के सामर्थी कार्यों पर विचार करें। अपनी परीक्षा के समय में भजनकार ने परमेश्वर द्वारा की गई बड़ी चीज़ों पर ध्यान देने का चुनाव किया, न कि उन समस्याओं पर जिनसे होकर वह गुज़र रहा था। परमेश्वर में उसके लिए आशा थी।

16-20 पद हमें परमेश्वर की प्रतिक्रिया को दिखाते हैं। भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि समुद्र (जल) ने परमेश्वर को देखा और वह डरकर कांप उठा। पवित्र-शास्त्र में समुद्र (जल) का प्रयोग प्राय: पीड़ा को बताने के लिए किया जाता है (देखें भजन. 18:16-17; भजन. 32:6)। भजनकार यहां यह कहना चाह रहा है कि पीड़ा का जल परमेश्वर को देखकर उसकी सामर्थ के आगे हार गया।

उसके पीड़ित दास की प्रार्थना के जवाब में स्वर्ग के बादलों ने बड़ी वर्षा की और आकाश से बड़ा शब्द हुआ। परमेश्वर के बिजली के तीर आकाश में इधर-उधर चले। बवण्डर में उसके गरजने का शब्द सुन पड़ा था। जगत बिजली से प्रकाशित हुआ और पृथ्वी कांपी व हिल गई। यहां प्रभु द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाए जाने पर लाल समुद्र से ले जाने के संदर्भ पर ध्यान दें (पद 19, 20)। प्रभु ने मूसा और हारुन के द्वारा अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी की उसने समुद्र में मार्ग निकाला और अपने लोगों को उसमें से लेकर गया। भजनकार को यह निश्चय था कि मूसा के दिनों का परमेश्वर उसे भी इसी तरह से छुड़ाएगा।

अपनी कठिनाई में भजनकार ने प्रभु और उसके द्वारा अतीत में किये सामर्थी कार्यों पर ध्यान देने का विचार किया। यद्यपि उसने परमेश्वर को देखा नहीं था, उसने तौभी उससे विनती करने का चुनाव किया, उसके कार्यों को स्मरण करके तथा जो कुछ उसने अतीत में अपने लोगों को लिए किया था उस पर विचार करने के द्वारा। ऐसा करने पर उसका विश्वास बढ़ा। वह भजन का समापन इस विश्वास के साथ करता है कि जिस परमेश्वर ने अतीत में अद्‌भुत कार्य किये थे वह फिर से आकाश को हिलाकर हमारी सहायता के लिए आएगा।

विचार करने के लिए:

- क्या आप किसी ऐसे संघर्ष में रहे हैं जब आप यह नहीं समझ पाए थे कि प्रभु क्या कर रहा था या वह कहां था? स्पष्ट करें।
- क्या आपने स्वयं को किसी विशिष्ट समस्या में पड़े पाया है? भजन 77 में भजनकार हमें क्या करने की चुनौती देता है?
- क्या परमेश्वर बदल गया है? क्या वह आपको वैसे ही बचा सकता है जैसा उसने प्राचीन काल में किया था?
- क्या आप व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपके लिए आकाश और पृथ्वी को हिला सकता है जैसा उसने दूसरों के लिए किया था? इस संबन्ध में इस परिच्छेद से हमें क्या प्रोत्साहन मिलता है।

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय परमेश्वर के सामर्थी कार्यों पर विचार करें। प्रभु को उसकी सामर्थ और चमत्कारी कार्यों को लिए धन्यवाद दें।
- आज अपनी समस्या का प्रभु को सौंप दें। उससे स्वर्ग और पृथ्वी को हिलाने और आपके लिए जल्दी विजय देने को कहें।
- प्रभु से आपकी समस्या पर से आपकी आँखों को हटाने और उसकी महानता व प्रेमी देखभाल पर लगाने को कहें।

72. अगली पीढ़ी के लिए वचन

पढ़ें भजन संहिता 78:1-72

भजन 78 इसका एक स्पष्ट उदाहरण है कि एक भजन का प्रयोग शिक्षा देने के उपकरण के रूप में कैसे किया जा सकता है। यह भजन वास्तव में दाऊद के समय से परमेश्वर के लोगों का एक संक्षिप्त इतिहास है। भजनकार की इच्छा युवा पीढ़ी की परमेश्वर के साथ उनकी चाल में निर्देश देने की है। वह युवा पीढ़ी को प्रभु परमेश्वर से दूर होने के बारे में चेतावनी देने को अपने लोगों के इतिहास का प्रयोग करता है।

भजनकार अपने लोगों को उस शिक्षा को सुनने की चितौनी देने के द्वारा आरम्भ करता है जो वह उन्हें सुनाने को है। पद 2 में वह उन्हें बताता है कि पुरानी चीज़ों को बताने के लिए वह दृष्टांतों का प्रयोग करेगा। विचार यह है कि सीखने के लिए आत्मिक शिक्षा है परन्तु वह आत्मिक शिक्षा कविता के रूप में छिपी है। सत्य यह है कि भजनकार अपने पाठकों को उन सत्यों को बताने जा रहा था जिन्हें वर्षों पूर्व उसके माता व पिता ने सुना था।

पद 4 में, भजनकार ने अपने पाठकों को अपनी संतान से प्रभु के प्रशंसनीय कार्यों, उसके द्वारा किये गए आश्चयकर्मों के प्रदर्शन को गुप्त न रखने की चितौनी दी। परमेश्वर ने जो किया है उसे हमें अपनी संतान को बताना है। हमारा विश्वास हमारे बच्चों तक आगे जानेवाला हो। यह प्रत्येक माता-पिता का दायित्व है।

भजनकार पद 5 में पुरानी पीढ़ी को स्मरण करते हुए आगे कहता है कि कैसे प्रभु ने इस्राएल में एक चितौनी ठहराई और व्यवस्था को कार्यरत् किया। इसके बाद वह प्रत्येक पीढ़ी को अपने बच्चों को उन चितौनियों और व्यवस्था को सिखाने की आज्ञा देता है जिससे वे प्रभु और उसके मार्गों को जान सकें। प्रत्येक पीढ़ी का यह उत्तरदायित्व है कि वह अपने विश्वास को अगली पीढ़ी तक बढ़ाए।

पद 8 से हम देखते हैं कि भजनकार यह चाहता है प्रत्येक पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी की गलातियों से शिक्षा ले। इस्राएली हठीले और झगड़ालू थे। उनके हृदय प्रभु के प्रति निष्कपट नहीं थे और न ही उनकी आत्मा उसके प्रति विश्वासयोग्य थी। हर तरह से पहले की पीढ़ियां नई पीढ़ी के लिए एक बुरा उदाहरण थीं। तथापि, विषय की वास्तविकता यह है कि कई बार हम बुरे उदाहरणों से भी सीख सकते हैं। पुरानी

पीढ़ी की असफलताओं को नई पीढ़ी को बताने पर पुरानी पीढ़ी उनके लिए यह चेतावनी थी कि वे इस फंदे में न पड़ें। भजनकार परमेश्वर को आदर देने के लिए अतीत की पीढ़ियों की बहुत सी असफलताओं के परिणाम को बताता है। यह युवा पीढ़ी को उसी फंदे में गिरने के खतरे से सावधान करने का उसका तरीका है।

आरम्भ में ही भजनकार ने अपने पाठकों को एप्रैमी पुरुषों का स्मरण कराया है जिन्होंने शस्त्रधारी और धनुर्धारी होने पर भी युद्ध के समय पीठ दिखा दी थी (पद 9)। इस पद के अर्थ को लेकर बाइबल विद्वानों के अलग अलग विचार हैं।

कुछ एक विशिष्ट युद्ध को देखते हैं जिसमें एप्रैम लगा था और पीठ दिखाकर असफल हुआ था। अन्य एप्रैम को संपूर्ण राष्ट्र के लिए एक चिन्ह के रूप में देखते हैं। एप्रैम यूसुफ का पुत्र था जिसने इस्राएल की उनकी बंधुआई के समय में मिस्र में अगुवाई की थी। यहोशू, एक सामर्थी योद्धा था जिसने परमेश्वर के लोगों की अगुवाई प्रतिज्ञा के देश में जाने की थी, वह भी एप्रैम का वंशज था। इस तरह से एप्रैम ने परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की और राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका को पूरा किया। ऐसा भी हो सकता है कि 'एप्रैम' शब्द का प्रयोग समस्त इस्राएल राष्ट्र को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है।

हम यहां यह देखते हैं कि परमेश्वर के लोगों ने (चाहे वे विशिष्ट रूप से एप्रैमी थे या संपूर्ण देश) शत्रु को पीठ दिखाई थी। उनके पीठ दिखाने के कारण पर ध्यान दें। पद 10 हमें बताता है कि उन्होंने परमेश्वर की वाचा को पूरा नहीं किया और उन्होंने व्यवस्था के अनुसार जीवन बिताने से इन्कार कर दिया था। परमेश्वर ने जो कुछ उनके लिए किया था और जो आश्चर्यकर्म उसने उन्हें दिखाए थे उन्होंने उस सब को भुला दिया था। यदि वे उस सब को याद रखते जो परमेश्वर ने किया था, तो संकट के समय में वे अपने विश्वास को नहीं खोते। इसके विपरीत वे परमेश्वर पर भरोसा करते और उसे विजय में उनकी अगुवाई करने की अनुमति देते।

ध्यान दें कि इस्राएल देश यह भूल गया था कि परमेश्वर ने मिस्र में उनके माता-पिता के जीवन में कैसे कार्य किया था (पद 12)। वे यह भी भूल गए थे कि कैसे उसने समुद्र को विभाजित कर दिया था और उन्हें सुरक्षित लेकर आया था। वे इस पर विचार नहीं कर पाए कि कैसे परमेश्वर ने जंगल में अपनी संतान की अगुवाई दिन में बादल के खम्भे और रात में अग्नि के प्रकाश द्वारा की थी।

इस्राएल के जंगल में भटकने के समय में परमेश्वर ने उनके लिए चट्टान को फाड़कर उन्हें इतना पानी दिया कि वे अपने साथ-साथ अपने पशुओं की भी प्यास को बुझा सके। भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को जंगल में भटकने के समय में नदियों सा बहुत सा जल दिया (पद 16)।

परमेश्वर के अपने लोगों के लिए इतना सब करने के बावजूद वे उसके विरुद्ध विद्रोह करते रहे। उन्होंने अपनी चाह के अनुसार भोजन मांगकर परमेश्वर की परीक्षा की। उन्होंने परमेश्वर पर तथा उसकी योग्यता पर विश्वास नहीं किया। उसके प्रबन्ध को देखने पर उन्होंने कहा: ''क्या ईश्वर जंगल में मेज़ लगा सकता है? (पद 19)। उन्होंने उसके प्रबन्ध व देखरेख पर संदेह किया। उन्होंने परमेश्वर द्वारा उनकी ज़रूरत के अनुसार उन्हें पानी दिये जाने को देखा था परन्तु उन्होंने उसके उन्हें भोजन देने पर संदेह किया (पद 20)।

प्रभु ने उनके विश्वास की कमी को और जो वे कह रहे थे उसे देखा और वह अपने लोगों पर क्रोधित हुआ। याकूब के बीच आग लगी और इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़का। कुछ 11:1-3 के संदर्भ को देखते हैं जिसमें परमेश्वर ने अपने क्रोध में आग से छावनी के आंगन को जला डाला। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया और न ही उसके छुटकारे पर भरोसा किया।

हमारा अविश्वास परमेश्वर को क्रोधित करता है। परमेश्वर यहां इतना क्रोधित था कि उसने छावनी के एक हिस्से को आग से जला दिया। हमारी ज़रूरत के समय में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और प्रबन्ध पर भरोसा व विश्वास न कर पाने पर हमने कितनी बार उसे दुख पहुँचाया है?

उनके विश्वास व भरोसे की कमी के बावजूद उसने आकाश और स्वर्ग के द्वार को खोलकर अपने लोगों के प्रति अपनी दया को दिखाया। उसने उनके खाने के लिए मन्ना बरसाया (पद 23-24)। इस्राएली लोगों ने कई वर्षों तक इस मन्ना (यहां स्वर्गदूतों की रोटी बताया गया है) को खाया। परमेश्वर ने उन्हें मनमाना भोजन दिया। उनमें से कोई भी भूखा नहीं रहा। न केवल परमेश्वर ने अपने लोगों को स्वर्गीय रोटी दी परन्तु उसने दक्षिणी और पूर्वी हवा चलाकर समुद्र के बालू के समान अनगिनत पक्षी भेजे। परमेश्वर के लोगों को ज़रूरत से अधिक मांस मिला। उन दिनों में उन्होंने ज़रूरत से अधिक मांस खाया। वे खाकर अति तृप्त हुए।

परमेश्वर का क्रोध उन पर फिर से भड़का। वह उनके विरुद्ध उठा और उसने उनके हृष्ट पुष्ट पुरुषों को घात किया (पद 30)। परमेश्वर के लोगों ने इस चेतावनी पर मन नहीं लगाया परन्तु पाप करते रहे। उन्होंने तब भी परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा नहीं किया।

न्याय और पश्चात्ताप का यह चक्र कई वर्षों तक चलता रहा। परमेश्वर के लोग उससे फिर गए। परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया और अपने दुख में इस्राएल ने परमेश्वर को पुकारा। अनुशासित किए जाने पर उन्होंने याद किया कि परमेश्वर उनकी चट्टान

और छुड़ाने वाला था। परन्तु उनका मन उससे नहीं लगा था। वे बाहर से विश्वास दिखाते और अपने होठों से परमेश्वर की चापलूसी करते परन्तु उनका हृदय उसकी ओर दृढ़ न था और न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे (पद 37)।

परमेश्वर अपनी संतान के प्रति दयालु बना रहा। उसने उनके पापों और गलातियों को क्षमा किया। बार-बार वह अपने क्रोध को रोके रहा। उसने अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं दिया। परमेश्वर ने स्मरण किया कि उसके लोग केवल मांस और लहू ही थे। भजनकार उनकी तुलना उस वायु से करता है जो लौटती नहीं। एक तरह से उनके जीवन समाप्त हो चले थे।

इस्राएल ने कितनी ही बार जंगल में परमेश्वर से बलवा किया। वे बार-बार उसकी परीक्षा करते थे। उन्होंने न तो उसका भुजबल स्मरण किया और न उस दिन को जब उसने उनको द्रोही के वश से छुड़ाया था। परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्रियों के हाथों अद्‌भुत चिन्ह और चमत्कार करके छुड़ाया था। (पद 43)। उन दिनों में परमेश्वर ने नदियों को लहू में बदल दिया था जिससे मिस्री अपनी नदियों से पानी पी न सकें। उसने डांसो के झुण्ड भेजे जिन्होंने उन्हें काट खाया। मेढ़कों ने उनके देश को बिगाड़ दिया। उसने उनकी भूमि की उपज कीड़ों और टिड्डियों को दे दी। ओलों ने उनकी दाखलताओं को और बड़े-बड़े पत्थरों ने उनके गूलर के वृक्षों को नाश किया। उसने उनके पशुओं को ओलों से और बिजलियों से मिटा दिया। मिस्र के विरुद्ध अपने अत्यंत क्रोध में, परमेश्वर ने एक नाश करने वाले दूत को भेजा कि प्रत्येक मिस्री परिवार के पहलौठे को मारे।

इन सभी न्यायों का परिणाम यह हुआ कि मिस्र में परमेश्वर के लोगों को गुलामी से मुक्ति मिली। परमेश्वर ने जंगल में उनकी अगुवाई भेड़ों की सी की। उसने उनकी चिंता की और उनकी ज़रूरत की प्रत्येक चीज़ उन्हें दी। परमेश्वर के लोगों के पास डरने का कोई कारण नहीं था। जब परमेश्वर ने समुद्र के पानी को पहले के समान कर दिया तब उनके शत्रु उसमें डूब मरे। परमेश्वर के हाथों मिस्र की शक्ति को तोड़ डाला गया।

परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिज्ञा देश की सीमा पर लेकर आया। यहोशू जैसे लोगों के द्वारा परमेश्वर ने देश को चलाया और भूमि को इस्राएल को उनकी मीरास के रूप में दिया।

फिर से परमेश्वर के लोगों ने उसकी परीक्षा की। इस नये देश में उन्होंने परमेश्वर चितौनियों को नहीं माना और न उसकी व्यवस्था पर चले। वे अपने पितरों के समान विश्वासघाती व बेईमान थे। भजनकार ने उनकी तुलना एक निकम्मे धनुष से की है। हर बार इस धनुष से तीर छोड़े जाने पर वह गलत स्थान पर ही लगता। ऐसे धनुष पर

भरोसा नहीं किया जा सकता। यह निशाना लगाने वाले के लिए किसी काम का नहीं है।

जिस भूमि को परमेश्वर ने इस्राएल को दिया था उन्होंने वहां ऊँचे स्थान बनाकर अन्य देवताओं की आराधना की। परमेश्वर ने उसकी दूसरे देवताओं से की जाने वाली प्रार्थना को सुना और क्रोधित हुआ। पद 59 हमें बताता है कि परमेश्वर इन लोगों से इतना अधिक क्रोधित था कि उसने इनको बिल्कुल तज दिया। हमें यहां यह नहीं देखना है कि परमेश्वर ने इस्राएल देश को तज दिया परन्तु इसके विपरीत उन विशिष्ट लोगों को जो दूसरे देवताओं और मूर्तियों की ओर फिर गए थे। परमेश्वर ने उस तम्बू को छोड़ दिया था जो शीलो में था। उसने तम्बू से अपनी उपस्थिति को हटाने का चुनाव किया। वाचा का सन्दूक भी बन्धुआई में ले जाया गया (1शमू. 5:1)। इस्राएल के शत्रुओं को परास्त करने के बजाय परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को दृढ़ किया। उसने अपने लोगों पर तलवार चलने दी। उनके जवान आग से भस्म हुए और उनकी कुमारियों के विवाह के गीत न गाए गए। याजकों ने भी प्रभु को त्यागने के कारण दुख उठाया। पद 64 हमें बताता है कि वे तलवार से मारे गए परन्तु उनकी विधवाएं रोने न पाईं। इसका कारण यह हो सकता है कि उनके पति संभवत: इसी योग्य थे। परमेश्वर का क्रोध अपने लोगों के विरुद्ध अत्यंत भड़क उठा था।

पद 65 हमें बताता है कि प्रभु मानो नींद से जाग उठा। नींद शब्द यहां इस तरह से लागू होता है प्रभु परमेश्वर ने अपनी आंखें अपने लोगों पर से हटा ली थीं और उनके बीच कार्य करना बन्द कर दिया था। तथापि, निष्क्रियता का यह समय सदा के लिए नहीं था। परमेश्वर ने अपने लोगों के दुख पर अपनी आंखें खोलीं। उसने उनके शत्रुओं को पीछे हटाकर उनकी नामधराई कराई।

उस दिन प्रभु ने यहूदा के गोत्र में कुछ विशेष करने का चुनाव किया। उसने उनके वंश को चुना कि यरूशलेम में उसके लिए पवित्रस्थान को बनाएं। उसने दाऊद नामक एक चरवाहे को चुना और उसे अपने लोगों पर राजा होने को बुलाया। उसे उनकी ज़रूरत के समय में उनकी चरावाही करनी थी। दाऊद ने निष्ठापूर्ण हृदय और निपुण हाथों से इस्राएल की अगुवाई की। उसने अपना मन प्रभु पर लगाया और उन कार्यों को स्मरण किया जो उसने अतीत में किये थे। दाऊद अपने लोगों को परमेश्वर तथा उनके जीवनों के लिए उसके उद्देश्यों की ओर फिर से लाया। चूंकि परमेश्वर उसके साथ था इस कारण वह संपन्न हुआ।

परमेश्वर के लोगों के लिए इस भजन की चुनौती यह थी कि वे अपने पाप को जानकर परमेश्वर की ओर लौट आएं। भजनकार ने विशिष्ट रूप से युवा पीढ़ी को उनके पितरों की गलतियों और असफलताओं से सीख लेने की चुनौती दी। उसने

अपने पाठकों को देश के इतिहास की जांच करने और एक व्रिदोही के साथ परमेश्वर के धीरज को देखने की चुनौती दी। अनाज्ञाकारिता के कारण उन्हें न्याय का सामना करना पड़ा। परमेश्वर के पास लौट आने में अभी देरी नहीं हुई थी। वह अभी धीरज रखने के साथ-साथ उन्हें क्षमा करने को तैयार था जो उसकी ओर लौट आए थे।

विचार करने के लिए:

- अपने परिवार के इतिहास को देखें। अपने माता-पिता की असफलताओं और सफलताओं से आपको क्या शिक्षा लेने की ज़रूरत है?
- अतीत की असफलताओं और विजयों से आपने व्यक्तिगत रूप से क्या सीखा है? यह आपके आज समस्याओं का सामना करने को कैसे प्रभावित करता है?
- इस भजन में हम परमेश्वर के अपने लोगों के साथ धीरज रखे जाने के संबन्ध में क्या सीखते हैं?
- हम यहां उन पर परमेश्वर का न्याय आने और उसकी आशीषों के हटाए जाने के बारे में क्या सीखते हैं जो अनाज्ञाकारिता में बने रहते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से दूसरों की असफलताओं और विजयों से आपकी सीखने में सहायता करने को कहें। इस संबन्ध में वह आपको जो कुछ सिखा रहा है उसके लिए उससे आपकी आंखों को खोलने को कहें।
- उन अधिकांश समयों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें जब वह आपके प्रति धीरजवंत रहा और आपका न्याय नहीं किया जिसके आप योग्य थे।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपका प्रबन्धक और बल है। जो शिक्षा वह आपको देता है उसमें आगे बढ़ने के लिए उससे आपको बल देने को कहें।
- कुछ समय प्रार्थना करें कि प्रभु स्वयं को अगली पीढ़ी पर प्रगट करे जिससे उनके बीच उसके नाम को महिमा मिलने पाए।

73. हमें पुनर्जीवित कर

पढ़ें भजन संहिता 79:1-80:19

परमेश्वर के लोग दुख उठा रहे हैं। शत्रु उनकी भूमि में घुस आए हैं और उन्हें इस आश्चर्य में छोड़ दिया कि उनके संकट के समय में परमेश्वर कहा था। इन परदेसियों ने परमेश्वर के मन्दिर को दूषित किया। उन्होंने यरूशलेम को खंडहर कर दिया (79:1)। भजन 79:2 हमें बताता है कि शत्रुओं ने परमेश्वर के दासों की लोथों को आकाश के पक्षियों का आहार बनने को दे दिया और धर्मी जनों का मांस वन पशुओं को दे दिया। यरूशलेम लहू से भर गया और मृतकों को मिट्टी देनेवाला कोई नहीं था। परमेश्वर की संतानों की देह शहर में आकाश के पक्षियों और जंगल के जानवरों के खाने को पड़ी है।

शारीरिक मृत्यु और विनाश के अलावा परमेश्वर के लोगों की उनकी आस-पास के देश निन्दा कर रहे थे (79:4)। उन पर लोग हंसते व ठट्टा करते हैं। उनके पड़ोसियों के लिए उनका कोई गवाह न रहा। अपने शत्रु के सामने वे शक्तिहीन थे। हम यहां परमेश्वर के लोगों के कितने भयानक चित्र को देखते हैं। हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि इस चित्र का हमारे दिनों में दोहराया जाना संभव है। इस तरह से, विनाश का कारण परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता है। परमेश्वर के लोगों ने अपने बीच में उसकी उपस्थिति को अनाज्ञाकारिता और उसके पवित्र वचन का अनादर करने के कारण हटा दिया था।

भजन 79:5 में यह प्रश्न जाता है: ''हे यहोवा, तू कब तक लगातार क्रोध करता रहेगा। तुझ में आग की सी जलन कब तक भड़कती रहेगी?'' इस पद से हम दो चीज़ों को सीखते हैं। पहली, परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित था। दूसरी, परमेश्वर की जलन आग की नाईं भड़की थी। यह चित्र उस पति की पवित्र जलन का है जिसकी पत्नी विश्वासघाती हो। इस्राएल दूसरे देवताओं की ओर फिरकर अपने घुटने उनके सामने झुकाने लगा था। परमेश्वर खड़े होकर इसे देखने वाला नहीं था। उसने अपने लोगों से इतना अधिक प्रेम किया था कि वह उनके साथ और किसी को नहीं बांट सकता था। उसका क्रोध उचित है। परमेश्वर के लोगों ने उसके साथ अपनी वाचा को तोड़ा था।

इस्राएल देश की गलती पर ज़ोर देते हुए भजनकार परमेश्वर से उन देशों पर अपने

क्रोध को उण्डेलने को कहता है जिन्होंने न तो उसे जाना था और न ही उससे प्रार्थना करते थे। ऐसा करते हुए भजनकार इस्राएल को अन्य देशों से पृथक कर रहा है। यह सच है कि इस समय में परमेश्वर के लोग अनाज्ञाकारी होने के साथ-साथ परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में रह रहे थे परन्तु वे अब भी उसके चुने हुए लोग थे। इस्राएल अन्य देशों के समान नहीं था। उनका प्रभु के साथ एक लम्बा इतिहास रहा था। भजनकार इस संबन्ध के आधार पर उन पर से शत्रु की सामर्थ को तोड़ने की विनती करता है।

हमारे अनाज्ञाकारी संतान होने पर भी हम परमेश्वर की संतान हैं। परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूलता। भजनकार को पता था परमेश्वर ने उन्हें एक जाति के रूप में चुना था और उसके हृदय में उनका सदा एक विशेष स्थान रहेगा।

चुने हुए लोग होने के कारण इस्राएल को निगल लिया गया था। भजनकार उनके पुरखाओं के पापों को उनके विरुद्ध स्मरण न रखने की विनती करता है। उनकी अनाज्ञाकारिता का एक लम्बा इतिहास रहा था। भजन 79:8 में भजनकार परमेश्वर से विनती करता है कि उसकी दया उन पर शीघ्रता से हो क्योंकि वे दुर्दशा में थे।

इस परिच्छेद में भजनकार को परमेश्वर की दोहाई देते हुए देखना मुझे अद्‌भुत लगता है। इस परिच्छेद की विशेष बात यह है कि इसमें गलती के लिए दया करने की मांग की गई है। भजनकार को इसमें कोई संदेह नहीं है कि देश परमेश्वर के क्रोध को पाने के योग्य था। तौभी वह परमेश्वर से दया करने को कहता है। यह भटकनेवाले को आशा देता है। चाहे हम परमेश्वर से भटकर कितनी ही दूर क्यों न चले गए हों, हम उसके पास आकर उससे दया की मांग कर सकते हैं।

भजन 79:9 में ध्यान दें कि भजनकार न केवल देश के लिए सहायता की मांग करता है परन्तु प्रभु परमेश्वर की महिमा के लिए भी। परमेश्वर की महिमा खतरे में थी। उसके लोग नाश हो गए थे तथा उनकी भूमि उजड़ गई थी। ऐसे परमेश्वर के लिए देशों की क्या प्रतिक्रिया होगी? निश्चय ही वे इस्राएल के परमेश्वर की हंसी उड़ाते। वे उसे एक शक्तिहीन परमेश्वर के रूप में देखते। वे स्वयं को उससे ऊपर रखते। वे इस्राएल के बारे में कहते: ''उनका परमेश्वर कहां रहा?'' (भजन. 79:10)।

भजनकार परमेश्वर से इन दुष्ट जातियों के हाथों हुई उसके दासों की मृत्यु का पलटा लेने की विनती करता है। उसने प्रार्थना की कि प्रभु परमेश्वर अपने कान बन्धुओं के कराहने की ओर खोले और उन लोगों के जीवनों को बचाए जिन्हें अन्य देशों ने मरने को छोड़ दिया था (भजन. 79:11) भजनकार परमेश्वर से यह कहने में बहुत निर्भीक है कि परमेश्वर इन देशों को उसकी निन्दा करने के कारण सात गुणा बदला दे। 7 की संख्या बाइबल में संपूर्णता और सिद्धता को बताती है। यहां विचार यह है कि परमेश्वर का बदला पूरा होगा।

भजनकार 79वें भजन का समापन परमेश्वर को यह बताते हुए करता है कि उसके लोगों का बदला लिये जाने और शत्रु को पीछे हटाने पर वे पीढ़ी से पीढ़ी तक उसका गुणानुवाद करते रहेंगे। वे इस कहानी को स्मरण रखेंगे कि कैसे उसने उन्हें शत्रु के हाथ से छुड़ाया था।

भजन 80:1 में भजनकार परमेश्वर को इस्राएल का चरवाहा कहकर पुकारता है। एक चरवाहे के रूप में प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों की देखभाल की और उनकी पहरेदारी की। तथापि, चरवाहे के रूप में वह करुबों के बीच बैठा। यह वाचा के सन्दूक के संदर्भ में है जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को सन्दूक के ढक्कन पर दो करुबों के बीच प्रगट किया था। इसने लोगों का याद दिलाया कि उनका चरवाहा उनका परमेश्वर था। भजनकार परमेश्वर से अपनी महिमा को उनके बीच प्रगट करने की विनती करता है। चरवाहे और पवित्र परमेश्वर का मेल किसी के लिए भी समझना बहुत कठिन है। एक पवित्र परमेश्वर होने के कारण वह हमसे और हममें पाई जानेवाली प्रत्येक पापी चीज़ से अलग है। तथापि, एक चरवाहे के रूप में परमेश्वर अपने लोगों की चिन्ता करता। व उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह पवित्र होने के साथ-साथ दयालु भी है और सिद्ध होने के साथ-साथ घनिष्ठ भी है।

भजन 80:2 में भजनकार परमेश्वर से अपने पराक्रम को जगाने की विनती करता है। काफी समय से उसे ऐसा लग रहा था, परमेश्वर का पराक्रम सो गया है। इस्राएल अपने बीच में उसके सामर्थ और पराक्रम का प्रमाण नहीं देख रहा था। भजन 79 में हमने देखा कि शत्रु ने देश को कैसे उजाड़ दिया था और परमेश्वर के लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया था। भजनकार ने परमेश्वर से अपने पराक्रम को जगाने, पुनर्गठित करने, बचाने और उन पर अपने मुख के प्रकाश को चमकाने की विनती की (80:2-3)।

ध्यान दें कि 79:4 में जो प्रश्न किया गया था वही 80:4 में भी पूछा गया है:

हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा तू कब तक अपनी प्रजा की प्रार्थना पर क्रोधित रहेगा?

इस समय में परमेश्वर खामोश दिख रहा था। भजनकार उसे फिर से सामर्थ में होकर कार्य करते देखना चाहता था। वह परमेश्वर से नींद से जाग उठने और अपनी संतान के दुख पर अपनी आँखों को खोलने की विनती करता है।

80:5-6 में उस दशा पर ध्यान दें जिसमें परमेश्वर के लोगों ने स्वयं को पाया था। परमेश्वर ने उन्हें आंसुओं की रोटी को खिलाया था। और उसने ''मटके भर-भर के उन्हें आंसू पिलाए थे।'' उनका दुख बहुत था। उनकी पीड़ा वास्तविक थी। परमेश्वर ने अपने लोगों को उनके पड़ोसियों से झगड़ने का कारण बनाया था। इन

पड़ोसियों ने परमेश्वर के लोगों का ठट्ठा करने के साथ-साथ उनकी हंसी उड़ाई थी।

भजनकार परमेश्वर से अपने लोगों को पहले के समान करने और उन पर फिर से अपने मुख की रोशनी को चमकाने की विनती करता है ताकि उनका उद्धार हो सके (80:7)। उसने प्रभु को याद दिलाया कि वह कैसे उन्हें मिस्र से बाहर लेकर आया था। और जिस देश की प्रतिज्ञा उसने उनसे की थी उसने वहां से अन्य जातियों को निकाल कर उन्हें दाखलता के समान लगाया था। एक कुशल माली के रूप में प्रभु ने भूमि को साफ कर दाखलता की देखभाल की। उसकी दयालु देखभाल में दाखलता ने जड़ पकड़ी और फैलकर उस देश को भर दिया जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनके पितरों से की थी। दाखलता बढ़ी और उसकी छाया पहाड़ों पर फैल गई और उसकी डालियां ईश्वर के देवदारों के समान हुई। इस्राएल देश (दाखलता) संपन्न हो गया। परमेश्वर के लोग अपने प्रभु परमेश्वर की आशीषों के आधीन संपन्न हुए। उन्होंने अपने व्यापार को भूमध्य सागर और फरात नदी तक बढ़ाया।

अदभुत संपन्नता पाने के बाद चीज़ें तेज़ी से बदलीं। उस दाखलता के चारों ओर की शहरपनाह गिर गई; और उसके पास से गुज़रनेवाले सभी उसके फलों को तोड़ते थे। इस्राएल को लूट लिया गया था। वनसूअर ने दाखलता को नाश कर डाला और मैदान के सब पशुओं ने उसे उसे चर डाला था। अपनी ज़रूरत के समय में भजनकार भजन. 80:14-15 में प्रभु को पुकारता है:

हे सेनाओं के परमेश्वर, फिर आ! स्वर्ग से ध्यान देकर देख और इस दाखलता की सुधि ले, यह पौधा तू ने अपने दहिने हाथ से लगाया, और जो लता की शाखा तू ने अपने लिए दृढ़ की है।

पुकार निराशाजनक होने पर भी आशापूर्ण है। भजनकार जान गया था कि इस्राएल जाति स्वयं को नहीं बचा सकती। उसे प्रभु की ज़रूरत थी। बेशक वह दण्ड पाने के योग्य थी, भजनकार ने परमेश्वर को इस्राएल के साथ उसके विशेष संबन्ध को स्मरण कराया। उसने उन्हें लगया और उनकी देखभाल की थी। अब जो दाखलता उसने लगाई थी वह कट गई व आग से जल गई है (80:15)।

भजनकार को पता था कि यह भयानक अनुशासन प्रभु की ओर से था। भजन 80:16 में उसने कहा: ''तेरी घुड़की से वे नाश होते हैं।'' यह सत्य था कि शत्रु ने यरूशलेम को फूंक डाला था। यह सत्य था कि शत्रु ने परमेश्वर के लोगों को घात किया व पकड़ा था परन्तु भजनकार इन सबसे आगे देखने के योग्य हो सका और जाना कि यह परमेश्वर था जिसने इन ''बुरी'' चीज़ों को होने दिया था। उनके संघर्ष भी परमेश्वर द्वारा निर्धारित थे कि उनके जीवनों में उसके उद्देश्यों की पूर्ति हो।

भजन 80:17-19 में भजन का समापन भजनकार की प्रार्थना के साथ होता है

कि उसका हाथ उसके लोगों पर बना रहे। भजन 80:17 में प्रयुक्त वाक्यांश पर विशिष्ट रूप से ध्यान दें।

तेरे दहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रखा रहे।

'तेरे दहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष' आरम्भ में परमेश्वर के उन लोगों के बारे में बताता है जिनका समर्थन परमेश्वर ने किया था। ''दहिना हाथ'' समर्थन और आशीष का स्थान था। इस्राएल परमेश्वर के दहिने हाथ पर बैठा क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपने लोगों के रूप में जाना था। इस पद का और ''तेरे दहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष' का एक भविष्य सूचक पहलू भी हो सकता है। रोमियों 8:34 में पौलुस हमें बताता है कि यीशु स्वयं पिता के दहिने हाथ बैठकर हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है। अन्ततः यह प्रभु यीशु के द्वारा ही होगा कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वही समर्थन फिर से बनेगा।

भजन 80:17–18 में भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर का हाथ उसके लोगों पर बना रहे ताकि वे उससे फिर कभी फिरने न पाएं। केवल परमेश्वर ही हमें गिरने से बचाए रख सकता है। भजनकार की प्रार्थना यह है कि प्रभु अपने लोगों को गिरने से बचाए। वह समझ गया था कि वे कितने चंचल हैं। वह जानता था कि उसके लोगों का प्रलोभन में पड़ना कितना आसान है। केवल परमेश्वर का हाथ ही उन्हें पुनर्गठित कर विश्वासयोग्य बनाए रख सकता है।

इस भजन को लेखक प्रभु परमेश्वर को उसके देश में एक जागृति लाने के लिए कहता है। उसने ऐसे लोगों को देखा था जो सत्य से भटक गए थे और अब अपने शत्रु के विरुद्ध शक्तिहीन थे। वे परमेश्वर द्वारा उनके लिए ठहराए गए मानदण्ड से बार–बार गिरे थे। उन्हें नया बनने की ज़रूरत थी ताकि वे फिर से प्रभु के नाम को ले सकें। यह प्रार्थना आज उतनी ही वास्तविक है जितनी कि उस दिन थी जब इसे लिखा गया था। हम भी जल्द गिर जाते हैं और हमें भी इस जागृति और पुनःस्थापन को अपने देश में देखने की ज़रूरत है।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर के लोग शत्रु के हाथों कैसे दुख उठा रहे थे? इसकी तुलना आज कलीसिया से कैसे की जाती है?
- इन भजनों में आप परमेश्वर की जलन के बारे में क्या सीखते हैं? इससे आपको क्या प्रोत्साहन और चेतावनी मिलती है?
- क्या परमेश्वर अपनी संतान को सदा के लिए छोड़ देगा? किस आधार पर भजनकार इन भजनों में परमेश्वर को पुकारता है? क्या परमेश्वर के लोग उसका समर्थन पाने के योग्य हैं?

- हम ''बुरे'' के साथ-साथ अच्छे में परमेश्वर के हाथ के बारे में क्या सीखते हैं?
- हम हमारे लिए परमेश्वर की ज़रूरत के बारे में क्या सीखते हैं यदि हमें परमेश्वर के प्रति और उसके साथ अपनी चाल में विश्वासयोग्य होना है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि जैसे वह अच्छे समयों का प्रभु है वैसे ही ''बुरे'' समयों का भी है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसने हमें अपनी संतान के रूप में ग्रहण किया है। उसे धन्यवाद दें कि हम हमेशा उसके पास इस आधार पर आ सकते हैं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसने आपकी ज़रूरत के समय में आपकी देखभाल की। उसे धन्यवाद दें कि कैसे उसने आपको पाप में गिरने से बचाए रखा।
- प्रभु से उसके लोगों को पुनगर्ठित करने और नया बनाने को कहें ताकि वे ऐसे बन सकें जो वह उनके बनने की आशा करता है।

74. यदि तू सुने

पढ़ें भजन संहिता 81:1-16

भजन 81 का आरम्भ एक बहुत सकारात्मक टिप्पणी के साथ होता है। इसका आरम्भ परमेश्वर के लोगों को आनन्द के साथ उसका गीत गाने की मांग के साथ होता है। भजनकार की उसके लोगों से यह मांग करने पर भी ध्यान दें कि याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो। शांति से की जानेवाली प्रार्थना आदरनीय और भली है परन्तु भजनकार के लिए यह शांति का समय नहीं था। वह ज़ोर से आवाज़ करने को कहता है। यह सभी के लिए इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की स्तुति को सुनने का समय था।

2-3 पदों में संगीत और आराधना के बीच के मेल पर ध्यान दें। भजनकार संगीत बजाने को कहता है। परमेश्वर के लोगों को भजन गाने, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा को सारंगी को बजाने, नये चांद के दिन और पूर्णमासी के पर्व के दिन नरसिंगा फूंकने को कहा गया। नये चांद का पर्व प्रत्येक नये चांद पर मनाया जाता था जिसमें मेढ़े के सींग या तुरही से ध्वनि निकालते हुए विशेष बलिदान चढ़ाए जाते थे। (देखें गिनती 28:11-15; गिनती 10:10)।

पद 3 में पूर्णमासी के पर्व पर भी ध्यान दें। टिंडेल बाइबल शब्दकोश, पूर्णमासी के पर्व के बारे में बोलते हुए निम्नलिखित कहता है:

प्राचीन इब्री कैलेण्डर अर्धचन्द्राकार था, महीनों का आरम्भ नये चांद से होता था, विशेष रीति-रिवाज़ों द्वारा चिन्हित। दो महान पर्व, फसह और तम्बूओं के पर्व का आरम्भ महीने के बीच में होता है। जब पूरा चांद होता था।"

"पर्व" का सन्दर्भ चांद पूरा होने के संबंध में है, यह या तो फसह के संदर्भ में हो सकता है या तम्बू के पर्व के संदर्भ में। आराधना और इन बाधयत्रों की ध्वनि को परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था (पद 4)। परमेश्वर ने ही यह आज्ञा दी थी कि उसके नाम से की जानेवाली आराधना में संगीत वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाए।

पद 5 हमें बताता है कि फसह के पर्व को मनाने की आज्ञा को यूसुफ में चितौनी के रूप में चलाया गया "जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला, वहां मैंने एक अनजानी भाषा सुनी।" इस पद को समझना कठिन हो सकता है। यूसुफ को परमेश्वर के लोगों

के प्रतीक के रूप में देखना अच्छा हो सकता है। यूसुफ मिस्र में अपने लोगों का अगुवा था। उसकी मृत्यु पश्चात्, मिस्रियों ने इस्राएल की संतान पर अत्याचार किये। वे उनकी भाषा को समझ नहीं पाते थे। परमेश्वर ने सहायता के लिए की जानेवाली उनकी पुकार को सुना और मिस्र में उन्हें उनकी बंधुआई से आज़ाद किया। उस दिन वे यूसुफ को देह को लेकर मिस्र से चले गए।

इस अवसर को प्रतिवर्ष फसह के रूप में मनाया जाता था। यह उत्सव आनन्द का उत्सव होता था। यह इस बात का चिन्ह था कि परमेश्वर ने ''उनके कन्धों पर से बोझ को उतार दिया'' था और उनका टोकरी ढोना छूट गया था (पद 6)। मिस्र में परमेश्वर के लोगों को गुलामी करनी पड़ती थी। उन पर कन्धों पर भारी बोझ को उठाने का दबाव डाला जाता था। वे उनकी टोकरियों को उन ईंटों से भर देते थे जिनका प्रयोग फिरौन की निर्माण योजना में किया जाता था। परमेश्वर ने उन्हें इन बोझों से छुड़ाया था।

अपनी निराशा में परमेश्वर के लोगों ने उसे पुकारा और उसने बादल के गरजने के स्थान में से उन्हें उत्तर दिया (पद 7)। निर्गमन 9:23-24 में हम पढ़ते हैं:

तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया; और यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाए। जो ओले गिरते थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी, और वे ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी न गिरे थे।

गरजनवाले बादलों के द्वारा जोकि ओलों से भरे थे, परमेश्वर ने अपने लोगों की छुटकारे के लिए की गई प्रार्थना का जवाब दिया। परमेश्वर ने मिस्र देश का नाश कर अपने लोगों को मुक्त किया। उत्सव मनाने का यह एक बड़ा कारण था।

परमेश्वर के लोगों के मिस्र से चले जाने पर, परमेश्वर ने उन्हें इस परीक्षा में रखा कि क्या वे अपनी आराधना के प्रति ईमानदार थे। पद 7 हमें बताता है कि परमेश्वर ने मरीबा नाम सोते के पास उनकी परीक्षा ली। यह निर्गमन 17:1-7 का सन्दर्भ है। परमेश्वर के लोग जंगल में आ गए थे। जंगल में उन्हें प्यास लगी और वे मूसा तथा उस स्थिति के विरुद्ध कुड़कुड़ाए जिसमें वे थे। ऐसा करते हुए उन्होंने प्रमाणित किया कि उन्होंने वास्तव में परमेश्वर पर और उनके लिए उसके द्वारा किये जाने वाले प्रबन्ध पर भरोसा नहीं किया था।

परमेश्वर ने अपने लोगों के जंगल में भटकने के समय में मूसा के द्वारा अपनी आज्ञाओं को दिया। इन आज्ञाओं में उसने कहा कि तुम्हारे बीच में पराया ईश्वर न हो और न ही किसी पराए देवता को दण्डवत् करना। परमेश्वर के लोगों ने उसकी नहीं

सुनी। इसके विपरीत उन्होंने पराये ईश्वरों की आराधना करने का चयन किया। उन्होंने दूसरे देवताओं की स्तुति और आराधना की।

एक अन्य अवसर पर प्रभु ने अपने लोगों से अपने मुंह खोलने को कहा कि वह उसे भर दे (पद 10)। उसने उनकी ज़रूरत के समस्त भोजन को देने की प्रतिज्ञा की, जब वे जंगल में भटक रहे थे। तथापि, पद 11 हमें बताता है कि उसके लोगों ने उसकी नहीं सुनी और न उसके प्रति समर्पण किया। वे अपने मन से उसके प्रबन्ध पर भरोसा न कर सके। जिसके परिणाम में परमेश्वर ने उनको उनके मन के हठ पर छोड़ दिया कि ''अपनी ही युक्तियों'' के अनुसार चलें (पद 12)।

अपने लोगों के लिए यह परमेश्वर की मनसा नहीं थी। परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग आनन्द करनेवाले और उत्सव मनाने वाले लोग हों। वह उन्हें आराधना में आनन्द से भरना चाहता था कि उसकी भलाई का उत्सव मनाएं। वह उन्हें इसका एक कारण देना चाहता था कि वे उसके नाम का उत्सव मनाएं। तौभी उन्होंने किसी और की आराधना करने का चुनाव किया। पद 13 में भजनकार ने प्रभु के भटकते लोगों के लिए उसकी मनसा को व्यक्त किया है। यदि मेरे लोग मेरी सुनें, यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊं और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊँ।

परमेश्वर अपने लोगों पर अनुग्रह करना चाहता था। वह उनका दमन करना चाहता था जो उनके साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे और उनके शत्रुओं को भगा देना भी। पद 15 में उसने प्रतिज्ञा की कि प्रभु के बैरी उसके वश में होंगे और सदाकाल तक दण्डित होंगे।

यदि परमेश्वर के लोग उसकी सुनें और उसके मार्गों पर चलें तो परमेश्वर उनकी ओर फिरेगा। उनकी अनाज्ञाकारिता ने उनके परमेश्वर की आराधना को नाश किया था। उनका अविश्वास उनके और उनके लिए किये गए परमेश्वर के अद्‌भुत कार्य के बीच खड़ा था। यदि वे उसकी ओर लौट आए तो वह उनको उत्तम से उत्तम गेहूँ खिलाएगा और चट्टान में मधु के से तृप्त करेगा। यदि परमेश्वर के लोग केवल उसकी ओर लौट आएं तो अद्‌भुत आशीषें उनकी प्रतीक्षा में हैं।

भजनकार ने इस भजन का आरम्भ परमेश्वर के लोगों को उसकी आराधना संगीत और उत्सव मनाने की बुलाहट देने के द्वारा किया था। भजन में आगे हम पाते हैं कि परमेश्वर के लोग इस अद्‌भुत आराधना का अनुभव नहीं कर रहे थे। वे अन्य ईश्वरों की आराधना कर रहे थे। वे सच्चे परमेश्वर और उसकी आशीषें से फिर गए थे। परमेश्वर का मन आराधना करनेवाले लोगों पर था जो उसकी सुनें और उसके वचन का पालन करें। उसे ऐसे लोगों को आराधना के कारण को देने में खुशी होती है कि

उसकी भलाई का उत्सव मनाएं।

हो सकता है कि आज आप भी अन्य ईश्वरों की ओर फिर गए हों। परमेश्वर अपने नया बनाने और पुनर्गठन के प्रस्ताव सहित धीरज से प्रतीक्षा करता है। यदि आप उसकी ओर आएंगे तो वह आपको कारण देगा कि आप उत्सव मनाएं और उसके महान नाम की महिमा करें।

विचार करने के लिए:

- आनन्दमयी आराधना और उसके नाम की प्रशंसा किये जाने के बारे में हम परमेश्वर की इच्छा के संबद्ध में क्या सीखते हैं?
- आराधना आनन्दमयी क्यों होनी चाहिए?
- यह भजन हमें बताता है कि परमेश्वर उत्सव मनाने व आराधना करनेवाले लोगों की ओर देख रहा है। इसके मार्ग में आज क्या चीज़ आती है?
- अपने लोगों के जीवनों में परिपूर्णता और आशीष के लिए परमेश्वर की क्या मनसा है? क्या आप अपने जीवन में इसका व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर रहे हैं।

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से आपको एक आराधना करनेवाला व्यक्ति बनाने को कहें।
- प्रभु को उन बहुत से कारणों को देने के लिए धन्यवाद दें जो उसने आपको आराधना करने और उसके नाम का उत्सव मनाने को दिये।
- प्रभु से आपको और अधिक भरने को कहें। प्रभु से आपकी सेवकाई में और भी आशीष देने को कहें।
- प्रभु से आप पर किसी भी ऐसी चीज़ को प्रगट करने के लिए कहें जो आपके एक महान आराधक बनने के मार्ग में आती है।

75. सर्वोच्च परमेश्वर

पढ़ें भजन संहिता 82:1-83:18

भजन 82:1 में हम परमेश्वर के एक बड़ी सभा में अध्यक्षता करने के द्वारा आरम्भ करते हैं। विषय-वस्तु न्यायालय को दिखाती है। परमेश्वर न्यायी के रूप में बैठा है। उसके साथ छोटे ईश्वर हैं। विषय-वस्तु हमें पुनः बताती है कि ये छोटे ईश्वर अगुवे और न्यायी हैं। वे सांसारिक अगुवे हैं जिन्हें इस संसार में अधिकार दिया गया है।

इन शासकों के प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने पर प्रश्न किया जाता है: ''तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे?'' (भजन. 82:2)। ऐसा लगता है मानो परमेश्वर उन दिनों के शासकों से प्रश्न कर रहा है। सांसारिक शासकों के रूप में वे अपने न्याय के कार्य में प्रभु परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहे थे। उन्होंने अन्याय का बचाव किया और दुष्ट का पक्ष लिया था। परमेश्वर इस अन्याय के लिए उन्हें दोषी ठहराता है।

भजन 82:3-4 में उन दिनों के शासकों का चुनौती दी जाती है कि कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ, दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो। उन्हें दुष्टों के हाथों से कमज़ोर और ज़रूरतमंद को बचाना था। सांसारिक शासकों को ऐसा करना चाहिए था परन्तु वे ऐसा कर नहीं कर रहे थे। भजन. 82:5 में भजनकार इन सांसारिक शासकों के वारे में बोलता है: वे न तो कुछ समझते और न कुछ बूझते हैं, परन्तु अंधेरे में चलते-फिरते रहते हैं।

वे दूसरों को ज्योति में कैसे लेकर जा सकते हैं जबकि वे उस ज्योति के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। उन्होंने स्वयं सत्य और न्याय का अभ्यास नहीं किया इसी कारण वे दूसरों को सत्य और न्याय के मार्ग पर ले जा सकते थे।

''पृथ्वी की पूरी नींव हिल जाती है'' भजन 32:5 में भजनकार ने कहा। सत्य और धार्मिकता, ईमानदारी और भलाई की नीवों को हिलाया गया। इस पृथ्वी की नींव सिद्धान्तों की इन सांसारिक अगुवों ने उपेक्षा की। उन्होंने वही किया जो उनकी दृष्टि में सही था परन्तु वे सत्य और न्याय के बारे में कुछ नहीं जानते थे।

इन लोगों को ईश्वर के रूप में देखा जाता था। इस पृथ्वी पर उन्हें अधिकार व शक्ति प्राप्त थी। तथापि, वास्तव में वे केवल मनुष्य ही थे जो अपने से पहले के

किसी बुरे शासक के समान गिरे थे (82:7)। उन्हें परमेश्वर को लेखा देना होगा और वह सत्य व धार्मिकता से उनका न्याय करेगा।

भजनकार परमेश्वर को पृथ्वी का न्याय करने को कहता है (82:8)। ये दुष्ट सांसारिक शासक अपने उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर रहे थे। तौभी, एक सर्वोच्च अधिकारी है जो कभी भ्रष्ट नहीं होता। प्रभु परमेश्वर सभी न्यायियों का न्यायी है। वह उठेगा और धार्मिकता व सत्य का बचाव करेगा।

भजन 83 में प्रभु परमेश्वर से चुप न रहने को कहा जाता है (83:1)। भजन 82 में हमने देखा कि इस पृथ्वी के शासक अनुचित न्याय कर रहे थे। कुछ समय तक परमेश्वर ने इस बारे में कुछ नहीं किया। तौभी, इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर उठकर इस अन्याय के विरुद्ध नहीं बोलेगा। भजनकार परमेश्वर से इस चुप्पी को तोड़ने को कहता है।

विशिष्ट रूप में, भजनकार परमेश्वर को देखने के लिए कहता है कि कैसे उनके शत्रु अपना सिर उठा रहे थे (83:2)। वे परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध हानि की सम्मति करते और उनके विरुद्ध युक्तियां निकालते जो परमेश्वर के प्रिय हैं। ये शत्रु कह रहे थे: ''आओ, हम उनको ऐसा नाश करें कि राज्य भी मिट जाए; और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे'' (53:4)।

इन शत्रुओं ने परमेश्वर और उसके लोगों के विरुद्ध युक्ति निकाली। एदोमी इश्माइली, मोआबी और हुग्री, गबाली, अम्मोनी, अमालेकी, पलिश्ती, सोर, अश्शूरी परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध एक हो गए हैं। भजन 83:8 में ध्यान दें कि कैसे इन देशों ने अपनी शक्ति से लोतवंशियों को सहारा दिया है। उत्पत्ति 19:36-38 से हम यह समझ पाते हैं कि लूत के वंशज मोआबी और अम्मोनी थे:

इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं। और बड़ी एक पुत्र जनी, और उसका नाम मोआब रखा; वह मोआब नाम जाति का जो आज तक है मूल पिता हुआ। और छोटी भी एक पुत्र जनी और उसका नाम बेनम्मी रखा; वह अम्मोनवंशियों का जो आज तक है मूल पिता हुआ।

परमेश्वर के लोग संघर्ष कर रहे थे। उस समय के सांसारिक अगुवे अनुचित रूप से उन्हें निशाना बना रहे थे। उनकी योजना उन्हें नाश करने की थी। भजनकार ने प्रभु परमेश्वर को सहायता के लिए पुकारा। भजन 82 में हमने देखा, यद्यपि सांसारिक ''ईश्वर'' अन्यायी और अधर्मी थे, तथापि परमेश्वर के लोगों के लिए एक सर्वोच्च अधिकारी था। उन्होंने परमेश्वर को अपनी नींद से जाग उठने और इन दुष्ट शासकों का न्याय करने को कहा।

इस भजन को लिखने वाला भजनकार, आसाप, परमेश्वर से वैसा करने को कहता है जैसा उसने मिद्यानियों के साथ किया था (83:9)। यह इसका एक संदर्भ हो सकता है कि गिदोन ने कैसे न्यायियों 7 में केवल तीन सौ पुरुषों के साथ मिद्यानियों की सर्वोच्च सेना को हराया था। आसाप परमेश्वर से उनके शत्रुओं के विरुद्ध वैसा करने को भी कहता है जो उसने कीशोन नाले में सीसरा और याबीन से किया था। यह कहानी न्यायियों 4 में मिलाती है। याबीन एक कनानी राजा था। सीसरा उसका सेनापति था। उन्होंने परमेश्वर के लोगों को सताया था परन्तु दबोरा और बाराक की अगुवाई में वे एन्दोर में नाश हुए (83:10)। सीसरा पांव पांव भागा और उसे एक तम्बू में शरण मिली जहां याएल नामक एक स्त्री ने उसकी हत्या कर दी। उन दिनों की संस्कृति में सीसरा का एक स्त्री के हाथों मारा जाना उसके और उसकी सेना के लिए अपमान का कारण बना।

भजन 83:11 में आसाप परमेश्वर से उनके शत्रुओं के रईसों को ओरेब और आएब के समान करने और उनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर देने को कहा है। ओरेब और जाएब मिद्यानी सेनापति थे जिन्हें गिदोन ने हराया था (न्यायियों 7:25)। जेबह और सल्मुन्ना मिद्यान के राजा थे जिनका पीछा करके गिदोन ने मार डाला था (न्यायियों 8:5-21) इन पुरुषों ने गर्व किया था कि वे परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी हो जाएंगे (83:12) परन्तु एक छोटी सी सेना से ही परास्त हो गए थे।

आसाप ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उनके शत्रुओं को बवण्डर की धूलि वा पवन से उड़ाए भूसे के समान कर दे। उसने परमेश्वर से इन द्रोहियों को वैसे भस्म करने को कहा जैसे आग वन को भस्म करती और पहाड़ों को जला देती है। आसाप ने परमेश्वर से विनती की कि तू इन्हें अपनी आंधी से भगा दे और अपने क्रोध के बवण्डर से घबरा दे (83:15)। वह चाहता था कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध जिन चीज़ों को किया था उनके कारण उनके मुंह लज्जित हों (83:16)।

आसाप ने प्रार्थना की कि परमेश्वर के शत्रुओं के मुँह लज्जित हों ताकि ये लोग उसके नाम को ढूंढे। अन्य शब्दों में, वह परमेश्वर के बदले को देखना चाहता था। वह यह देखना चाहता था कि परमेश्वर उठे और बुराई का न्याय करे। केवल तब ही लोग देख पाएंगे कि परमेश्वर इन छोटे 'ईश्वरों' से महान था। वह समस्त पृथ्वी पर सर्वोच्च परमेश्वर, सत्य और न्याय का परमेश्वर था।

हम सर्वोच्च परमेश्वर और उस समय के छोटे सांसारिक 'ईश्वरों' के बीच की तुलना को देखने में असफल नहीं हो सकते। यही तुलना आज भी की जा सकती है। चाहे हमारे सांसारिक अगुवे कितने भी शक्तिशाली हों उन सभी को सर्वोच्च परमेश्वर

को लेखा देना होगा। हमारा एक ऐसा परमेश्वर है जो हमसे प्रेम करता है। वह हमारा रक्षक है और धार्मिकता व निष्कपटता से हमारा न्याय करेगा।

धार्मिकता और सत्य के लिए आसाप का उत्साह इस भजन में दिखता है। वह परमेश्वर को न्याय करने के लिए कहता है। परमेश्वर इस विनती का जवाब देगा।

विचार करने के लिए:

- आपको इस सच्चाई से क्या प्रोत्साहन मिलता है कि परमेश्वर इस संसार के सभी अगुवों से ऊपर है?
- इन भजनों में आज के अगुवों के लिए क्या चेतावनी है?
- हमारे दिनों में किन नीवों को हिलाया जाना है?
- क्या परमेश्वर की चुप्पी का अर्थ यह है कि उसने हमें भुला दिया है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह सभी सांसारिक अगुवों से ऊपर है कि सभी को उसके प्रति उत्तरदायी ठहराया जाएगा।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि यद्यपि वह कुछ समय के लिए चुप हो सकता है तौभी वह न्याय करने को आएगा।
- परमेश्वर से आपके हृदय की खोज करने और उस किसी भी चीज़ को प्रगट करने के लिए कहें जो उसे इसमें सही नहीं दिखती।
- परमेश्वर को उसके प्रेम और उस आश्वासन के लिए धन्यवाद दें जो आपके पास है उसके उद्धार और विजय का।

76. परमेश्वर में आनन्द मनाना

पढ़ें भजन संहिता 84:1-85:13

भजन 84-85 में हम प्रभु की अपने लोगों के लिए इस मनसा को देखते हैं कि वे उसमें आनन्द मनाएं। भजन 84:1-2 में भजनकार प्रभु के घर में पाए जाने की अपनी खुशी को बताता है।

हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं! मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला।

भजनकार के हृदय की पुकार पर ध्यान दें। उसे परमेश्वर के निवास-स्थान में रहना अच्छा लगता है। ''निवास'' के द्वारा हम परमेश्वर के मन्दिर को समझते हैं। यह वह स्थान था जहां प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों पर अपनी उपस्थिति को प्रगट करने का चुनाव किया था। भजनकार द्वारा प्रयोग किये जाने वाले शब्दों पर विशिष्ट रूप से ध्यान दें जिनके द्वारा उसने परमेश्वर की उपस्थिति में रहने की अपनी खुशी को व्यक्त किया है। उसका प्राण यहोवा के आंगनों की इच्छा करते-करते मूर्छित हो चला था। भजनकार के हृदय में परमेश्वर के आंगनों के प्रति गहरा आकर्षण था। उसका उत्साह इतना अधिक था कि उसकी देह के लिए इसे सहना कठिन था। भजन 84:2 में भी हम देखते हैं कि भजनकार का तन और मन दोनों परमेश्वर को पुकार रहे थे। अन्य शब्दों में, प्रभु परमेश्वर के लिए उसकी चाह इतनी अधिक थी कि इसका प्रभाव उसके मन के साथ-साथ उसके तन पर भी हुआ था।

उत्साह की इस गहराई की कल्पना करना हमारे लिए कठिन है। भजनकार प्रभु के साथ एक संबन्ध को बताता है जिसके होने का हममें से अधिकांश केवल स्थपना ही ले सकते हैं। वह परमेश्वर की लालसा एक भूखे व्यक्ति के भोजन की लालसा करने या एक प्यासे व्यक्ति के पानी की लालसा करने के समान करता है। अपने प्रभु परमेश्वर की भूख में उसका प्राण पुकार उठता है। हम अपनी आराधना-सेवाओं की कल्पना ही कर सकते हैं, जब इसमें आनेवाले लोग परमेश्वर के लिए इस लालसा और उत्साह के साथ आएं।

भजन 84:3 में भजनकार बोल उठता है कि कैसे प्रभु की वेदी के निकट गौरैया ने अपना बसेरा और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है। यह कहना कठिन है कि भजनकार ने इस उदाहरण को क्यों दिया। संभवत: उसने मन्दिर में इस पर ध्यान दिया

हो कि पक्षी परमेश्वर उसकी वेदी के निकट कैसे बेखटके आ सकते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि उसने मन्दिर में पक्षी के घोंसल को देखा हो और यह इच्छा करने लगा हो कि वह भी वेदी के निकट अपना घर बना पाता ताकि उसे वहां से कभी जाना नहीं पड़ता।

मंदिर में गोरैया और शूपाबेनी के घोंसला बनाने के इस विचार से, भजनकार का ध्यान उन सेवकों पर जाता है जो प्रतिदिन मन्दिर में रहते और कार्य करते हैं। उसके मन में इन व्यक्तियों की एक महत्वपूर्ण स्थिति थी। वे प्रभु की उपस्थिति में रहने और सारा दिन उसकी आराधना करने के योग्य थे।

जबकि मन्दिर में परमेश्वर की उपस्थिति का एक बहुत विशेष अहसास था, भजनकार ने यह जान लिया था कि परमेश्वर केवल मन्दिर तक ही सीमित नहीं था। भजन 84:5 में वह अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि परमेश्वर से शक्ति पाने वाले सभी मनुष्य धन्य हैं चाहे वे कहीं वे रहें। परमेश्वर की शक्ति केवल उनके लिए ही थी जिन्होंने अपने मन को तीर्थ की ओर लगाया था। अर्थात्, जिन्होंने प्रभु और उसके मार्गों का अनुसरण करने का समर्पण किया था वे ही अपने जीवनों में उसके कार्य को देख पाएंगे। इस तीर्थ में उन्हें जीवन के कठिन समयों से होकर जाना होगा। उनमें से कुछ को बिकार की तराई में से होकर जाना होगा (84:6)। बाका शब्द का हिन्दी में अनुवाद ''रोने'' से किया जा सकता है। यह तीर्थ सदैव सरल नहीं होता परन्तु परमेश्वर की शक्ति उन सभी को मिलेगी जो परमेश्वर और उसके उद्देश्यों की खोज में स्वेच्छा से रोने की तराई में से होकर जाना चाहते हैं। परमेश्वर बाका (रोने) की तराई को नदी व तलाब का स्थान बनाएगा (84:6)।

बाका की तराई सूखा और बंजर स्थान था। यह रोने का स्थान है जिससे हममें से बहुतों को एक या दूसरी बार होकर जाना पड़ता है। तथापि, परमेश्वर की उपस्थिति, उस समय पर हमें ताज़गी देने वाली होगी। सूखी तराई उसकी अद्भुत आशीषों के जल से भर जाएगी। प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति उस तराई में होगी और उनके पास आनन्द करने का बड़ा कारण होगा।

इस तीर्थ में प्रभु के पीछे चलनेवाले बल पर बल पाते जाएंगे जब तक कि वे सिय्योन में प्रभु परमेश्वर को अपना मुख न दिखा लें (84:7)। अन्य शब्दों में, प्रभु का बल उनके सारे जीवन में उनके साथ होगा।

भजनकार परमेश्वर से उसके हृदय की पुकार को सुनने और इस्राएल की ढाल पर दृष्टि करने को कहता है (84:8-9)। ढाल'' उनके सांसारिक राजा के संदर्भ में है जिसने उन्हें बचाया था।

इस संदर्भ में भजनकार प्रभु परमेश्वर को उनका बल बनने के लिए कह रहा है।

तथापि, उसने यह जान लिया था कि परमेश्वर उनका प्रयोग कर सकता है जिन्हें उसने उनकी रक्षा करने के अधिकार में रखा था। भजनकार परमेश्वर को श्रेय देता है जो राजा, 'अभिषिक्त' का बल था (84:9)।

भजनकार के विचार प्रभु के घर पर लौट आते हैं जहां परमेश्वर की उपस्थिति बहुत विशिष्ट रूप से प्रगट हुई थी। ''तेरे आंगनों में का एक दिन और कहीं के हज़ार दिन से उत्तम है,'' उसने प्रभु से कहा (84:10)। प्रभु के मन्दिर में उसकी आराधना करते हुए उसने जिस खुशी को अनुभव किया था वह कहीं और बिताए समय से बहुत अधिक थी। भजनकार भजन 84:10 में आगे कहते हैं कि उसे दुष्टों के डेरे में रहने से परमेश्वर के भवन में छोटे से छोटा काम करना भी अच्छा लगेगा। दुष्टों के ऐशो आराम में रहने की तुलना में उसे परमेश्वर के भवन का द्वारपाल बनना अच्छा लगेगा। परमेश्वर के पास आनेवाले सभी लोगों के लिए परमेश्वर सूर्य और ढाल था (84:11)। सूर्य होने के कारण वह ज्योति और गर्मी को लाया। ढाल होने के कारण वह उनका रक्षक था। इस्राएल के परमेश्वर ने अपना समर्थन और आदर उन्हें दिया जो उससे प्रेम करते थे। वह उनसे कुछ भी अच्छी चीज़ न रख छोड़ेगा जो खरी चाल चलते हैं। इस जीवन की वो कौन सी अच्छी चीज़ें हैं जिनकी तुलना प्रभु को जानने और उसकी आशीष की सुन्दरता के साथ की जा सकती है? इस पृथ्वी पर ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जिसकी तुलना परमेश्वर को जानने और उसकी सेवा करने से की जा सकती है। प्रभु पर भरोसा करने वाले धन्य हैं। परमेश्वर उन देशों को अपना समर्थन देगा जो उसके मार्गों पर चलें। वह उनके भविष्य को पुनगर्ठित करेगा (85:1)। भजनकार की इच्छा परमेश्वर में अपने खज़ाने को पाने की थी, क्योंकि इस संसार की किसी भी चीज़ की तुलना उससे नहीं की जा सकती जो परमेश्वर उसे देना चाहता था।

प्रेमी और क्षमा करनेवाला परमेश्वर होने के कारण, वह अपने लोगों के पाप क्षमा कर देगा (85:2)। वह अपने रोष और भड़के हुए कोपे को उन पर से हटा लेगा जो उसके पीछे चलते हैं।

परमेश्वर को जानने और उसमें बने रहने की बहुत सी आशीषें थी। भजनकार यह जान गा या था कि परमेश्वर के लोगों ने सदा उसके द्वारा दिये अदभुत सुअवसरों की सराहना नहीं की थी। इसी कारण 84:5 में वह परमेश्वर से अपने लोगों को पुनर्गठित करने और उन पर अपने क्रोध को हटाने को कहता है। प्रभु परमेश्वर में आनन्दित होने के बजाय, उसके लोग संसार की ओर मुड़ गए थे। परमेश्वर उन पर क्रोधित था। भजन 85:6 में भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने लोगों पर करुणा करे ओर उन्हें नया बनाए जिससे वे उसमें फिर से आनन्द मना सकें। यह संभवत: पवित्रशास्त्र में नया बनाने या जागृति की सबसे शक्तिशाली परिभाषाओं में से एक है। जागृति तब आती है जब परमेश्वर के लोग उसमें फिर से आनन्द मनाना सीखते हैं। कितनी ही बार

हमारा विश्वास धर्म की मशीनी या पारम्परिक रीति बन जाता है? भजन 84 में हम भजनकार की मनसा को जान पाते हैं। हम यहां उसके मन को प्रभु परमेश्वर में अत्यंत उत्साह के साथ आनन्द मनाते देखते हैं। कई बार हम परमेश्वर को जानने के आनन्द को खो देते हैं। जागृति हमें परमेश्वर में आनन्द मनाने के स्थान पर वापस लेकर आती है।

भजन 85:7 में भी ध्यान दें कि भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने लोगों को कभी न समाप्त होने वाले अपने प्रेम को दिखाए और उन्हें उद्धार दे। यहां भजनकार ने जिस प्रेम के बारे में बताया वह वो प्रेम है जो अपने लोगों के पाप को स्वेच्छा से क्षमा कर देता है। न केवल भजनकार यह चाहता है कि उसके लोग यह सीखें कि प्रभु में कैसे आनन्द मनाया जाता है, परन्तु वह यह भी चाहता है कि वे व्यक्तिगत रूप से उसके अचूक प्रेम और पाप के लिए उसकी क्षमा का अनुभव करें। यह बहुत ही व्यक्तिगत विषय है। ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के प्रेम के बारे में बहुत ही सामान्य ढंग से बोलते हैं। हमारे लिए ऐसा कहना एक चीज़ है: ''परमेश्वर संसार से प्रेम करता है'' और यह कहना दूसरी: ''परमेश्वर विशिष्ट रूप से मुझ से प्रेम करता है।'' भजनकार यहां लोगों के लिए परमेश्वर के इस विशिष्ट प्रेम के बारे में बताता है। वह एक व्यक्ति के विशिष्ट पापों की क्षमा के आश्वासन के बारे में बोलता है। इसी प्रेम के बारे में भजनकार व्यक्तिगत रूप से जानता था जब वह मन्दिर में परमेश्वर की उपस्थिति में रहने को गया था।

भजन 85:8 में भजनकार ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि न केवल वे आनन्द और प्रेम के बारे में जान सकते हैं, परन्तु परमेश्वर अपने लोगों के लिए शांति की भी प्रतिज्ञा करता है। यदि वे फिर से मूर्खता न करने लगें तो वे इस शांति को जान सकते हैं। अन्य शब्दों में, यदि वे संसार की मूर्खतापूर्ण चीज़ों की ओर न लौटें तो वे प्रभु की अद्‌भुत शांति को अनुभव कर सकते हैं। इसके लिए विश्वासी और संसार की मूर्खतापूर्ण चीज़ों के बीच एक अलगाव करना ज़रूरी है। संसार या संसार के तरीके कभी भी परमेश्वर की शांति को नहीं दे सकते। केवल परमेश्वर में और उसके मार्गों की आज्ञाकारिता में ही हम इस शांति को जान सकते हैं।

प्रभु का भय मानने वाले और उसके मार्गों पर चलने वाले ही उसके उद्धार और छुटकारे को जान पाएंगे (भजन 85:9)। अर्थात्, परमेश्वर उन्हें संभालेगा और उनकी रक्षा करेगा जो उसका भय मानते हैं। वह उनके देश में अपनी महिमा को निवास करने देगा। देश से परमेश्वर की उपस्थिति के चले जाने के बाद लोग स्वाभाविक रूप से पापी जीवन-शैली में चले गए। नैतिकता और ईश्वरीय सिद्धान्त का स्थान लालच, स्वार्थ और लालसा ने ले लिया। अपमान और बदनामी परमेश्वर की महिमा के चले जाने के बाद देश में भर गई। अपनी महिमा के देश में बने रहने के द्वारा परमेश्वर उस

देश को बहुतायत से आशीषित कर रहा था। सत्य और अनुग्रह जीते। आज्ञाकारिता और आनंद फलवंत हुए।

भजन 85:10-11 में भजनकार बहुत ही काव्यात्मक शब्दावली में प्रभु के उद्धार को बताता है। वह प्रभु के उद्धार का वर्णन प्रेम और विश्वासयोग्यता के रूप में करता है। अर्थात् प्रभु का उद्धार परमेश्वर की विश्वासयोगयता और प्रेम का मिश्रण है। अपनी विश्वासयोग्यता में वह अपनी प्रतिज्ञाओं को स्मरण करता है। प्रेम में होकर वह क्षमा करता और दया को दिखाता है।

85:10 में भी उद्धार के बारे में बताया गया है जब धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है। उद्धार, अन्य शब्दों में, धार्मिकता और शान्ति के साथ होकर आता है। अपनी धार्मिकता में परमेश्वर को पाप से निपटना था। धार्मिकता दण्ड के चुकाए जाने की मांग करती है। परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता में उस दण्ड को स्वयं पर लिया जिससे हमारे पापों की क्षमा के द्वारा हम उसके साथ शांति से रह सकें। धार्मिकता और शांति उद्धार से जुड़े हैं।

धार्मिकता को इस तरह से भी बताया गया है- पृथ्वी में से सच्चाई उगती और स्वर्ग से धर्म झुकता है (85:11)। विश्वासयोग्यता में प्रभु यीशु पृथ्वी पर आया और उसने मानव रूप धारण किया। उसने एक सिद्ध जीवन जीया, मृत्यु तक विश्वासयोग्य। जबकि उद्धार पृथ्वी से उगता है यह स्वर्ग से धर्म को झुकते भी देखता है। मैं पिता के स्वर्ग पर से धार्मिकता की सारी मांगों को पूरा करने को नीचे अपने पुत्र की ओर देखते चित्र को देखना पसंद करता हूँ जो पृथ्वी में से हमारे जैसे मनुष्यों के समान उगा। पिता स्वर्ग से नीचे देखने पर अपने पुत्र द्वारा व्यवस्था की सभी धार्मिक ज़रूरतों के पूरा किये जाने पर प्रसन्न होता है। यही उद्धार है (पुत्र का कार्य और पिता की स्वीकृति)।

भजनकार 85:12-13 में अपने पाठकों को यह बताने के द्वारा समापन करता है कि प्रभु उत्तम पदार्थ देगा जिससे उनकी भूमि उपज दे। परमेश्वर द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ सिद्ध धार्मिकता में होकर की गई। धर्म उसके आगे-आगे चला और उसके पांवों के लिए मार्ग को बनाया (85:13)। परमेश्वर के शक्ति में होकर कार्य करने से पहले तो धर्म या धार्मिकता की मांगों को पूरा करना ज़रूरी होगा। केवल पाप की क्षमा और उसके लोगों के उसके पीछे चलने का संकल्प लेने के द्वारा ही इन आशीषों को अनुभव किया जा सकता है।

इन दोनों भजनों की जांच करने पर हम एक केन्द्रीय विषय-वस्तु को पाते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों की चाह करता है जो उसे उत्साह से ढूंढें। उसका हृदय ऐसे स्त्री पुरुषों को पुकारता है जो एक आत्मिक तीर्थ में उसके पीछे-पीछे चलें। ऐसा करने का चुनाव करने वाले उसके आनन्द, शांति और शक्ति को अनुभव करेंगे। यह तीर्थ सदैव

सरल नहीं होगा। कई बार वे बाका (रोने) की तराई से होकर जाएंगे, परन्तु वहां पर भी परमेश्वर का अद्‌भुत हाथ उनकी अगुवाई करेगा। भजनकार की प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर उसके लोगों को नया बनाए। वह चाहता था कि परमेश्वर उसके लोगों को लौटा ले आए जिससे वे अपने परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों को फिर से देखने पाएं और उसमें आनंद करें।

वह उनके लिए अद्‌भुत उद्धार और छुटकारे का वर्णन करता है जिसे परमेश्वर ने उनके लिए रखा था। परमेश्वर उन तक विश्वासयोग्यता और प्रेम में होकर पहुंचेगा। वह उन्हें फिर से घनिष्ठता और उत्साह के संबन्ध में लौटा ले आएगा।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर के लिए भजनकार के उत्साह का वर्णन करें। क्या यह इसी तरह से उसके प्रति आपके उत्साह को भी बताता है?
- उनके लिए प्रभु परमेश्वर की क्या प्रतिज्ञा है जो उसके साथ चलने में अपना मन लगाते हैं?
- बाका की तराई क्या है? हमारे जीवनों में परमेश्वर हमसे इन स्थानों पर कैसे मिलता है?
- यह संसार हमें ऐसा क्या देता है जो प्रभु परमेश्वर में हमें बड़ी मात्रा में नहीं मिल सकता?
- क्या आप परमेश्वर में पूरी तरह से संतुष्ट हैं? हम संसार की ओर देखने की परीक्षा में क्यों पड़ते हैं?
- भजन 85:6 के अनुसार पुनर्जीवित करना क्या है? क्या आपको व्यक्तिगत रूप से इस पुनरूज्जीवन की ज़रूरत है?
- भजनकार भजन 85 में उद्धार के बारे में कैसे बताता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से उसके और उसकी उपस्थिति के लिए आपके उत्साह को बढ़ाने को कहें।
- कुछ समय के लिए उस क्षण को याद करें जब प्रभु ने आपको शक्ति दी थी। उस शक्ति के लिए उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपकी आंखों को संसार पर से हटाने को कहें। उससे आपको उसके और उसके वचन के लिए एक बड़ी इच्छा देने को कहें।
- परमेश्वर से आपको व्यक्तिगत रूप से पुनरूज्जीवित करने को कहें ताकि आप उसमें नई तरह से आनन्द मना सकें।
- प्रभु को उसके अद्‌भुत उद्धार के लिए धन्यवाद दें।

77. मुझ पर दया कर

पढ़ें भजन संहिता 86:1-17

भजन 86 दाऊद का भजन है। हमें भजन की परिस्थितियों को बताया नहीं गया है परन्तु संदर्भ स्पष्ट रूप से दाऊद के जीवन के ऐसे समय के बारे में बताता है जब उसके शत्रुओं ने उसे घेर लिया था। इस भजन में, दाऊद ने सहायता के लिए प्रभु को पुकारा। इस भजन में ध्यान दें कि इस संकट के समय में दाऊद उससे जुड़ा रहा जो वह परमेश्वर के बारे में जानता था और उस संबन्ध से जो उसका परमेश्वर के साथ था।

पद 1 में दाऊद अपनी ज़रूरतों का अंगीकार करते और यह जानते हुए आरम्भ करता है कि वह दरिद्र और ज़रूरतमंद था। हमें यह नहीं बताया गया है कि इस समय में दाऊद की क्या परिस्थितियां थीं। हम इतना जानते हैं कि इस समय में दाऊद यह जान गया था कि उसके शत्रु उससे शक्तिशाली हैं और यदि परमेश्वर उसकी सहायता को न आए तो निश्चय ही वे उसे परास्त कर देंगे। उसे अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं था। उसे पता था कि उसके शत्रु इतने अधिक थे कि उसके लिए उनका सामना करना कठिन था। अपनी ज़रूरत को जानते हुए वह प्रभु परमेश्वर के पास आता है।

पद 2 में ध्यान दें कि दाऊद प्रभु को उसके जीवन की रक्षा करने को कहता है क्योंकि वह उसका भक्त था। इब्री भाषा में 'भक्त' शब्द का अर्थ पवित्र, विश्वास-योग्यता और धर्मपरायण्ता है। अन्य शब्दों में, दाऊद ने स्वयं को प्रभु और उसके मार्गों के पीछे चलने को सौंप दिया था। इस संकट के समय में भी भजनकार की वचनबद्धता प्रभु के पीछे चलने और उसकी इच्छा को पूरा करने की है। इसी कारण दाऊद प्रभु के पास आकर इस समय में उसकी रक्षा करने को कह सका। यदि दाऊद पाप में रह रहा होता तो उसमें परमेश्वर के सामने खड़े होने का आत्म-विश्वास नहीं होता। वह एक साफ विवेक के साथ परमेश्वर के सामने आता है।

पद 2 में भी ध्यान दें कि दाऊद का भरोसा और विश्वास परमेश्वर में था। इस संकट के समय में उसने किसी और ईश्वर की ओर नहीं देखा था। उसका पूरा भरोसा और विश्वास परमेश्वर में था। उसने अपनी शक्ति पर यह विचार नहीं किया कि वह इससे अपने शत्रु पर विजयी हो सकता है। केवल परमेश्वर ही उसे विजय दे सकता है। कई बार दूसरी चीज़ों पर भरोसा करते रहने के कारण हम विजय का अनुभव नहीं

कर पाते। दाऊद का भरोसा केवल प्रभु में था।

ध्यान दें कि दाऊद कैसे दिन भर परमेश्वर को ही पुकारता रहता है (पद 3)। उसने उससे उस पर दया करने की विनती की। प्रभु की ओर से ज़रूरी उत्तर न मिल पाने तक दाऊद परमेश्वर की खोज को बन्द नहीं करने वाला था। वह प्रार्थना में बना रहा क्योंकि उसे पता था कि केवल प्रभु परमेश्वर ही उसे विजय दे सकता है। वह परमेश्वर को तब तक जाने नहीं देगा जब तक कि वह आशीष न दे और उसकी प्रार्थना का जवाब न दे।

दाऊद प्रार्थना करता रहा कि परमेश्वर उसे आनन्द दे क्योंकि उसने अपना मन उसकी ओर लगाया था। मैं दाऊद के शुष्क और खाली मन को परमेश्वर की ओर लगाने के चित्र को देखता हूँ कि वह उसे भरे। आनन्द उसके पास से चला गया था। उसकी पीड़ा और संघर्ष ने उसके आनन्द और खुशी को दूर कर दिया था। दाऊद ने अपना मन परमेश्वर की ओर उठाकर उससे इसे आनन्द से भरने को कहा था। वह इस आनन्द के लिए और कहीं नहीं देखता। वह प्रभु के पास इसलिए आया क्योंकि वह जानता था कि प्रभु आनन्द और संतुष्टि का स्त्रोत था। वह जानता था कि उसके संकट में भी प्रभु उसे वह आनन्द दे सकता था जिसकी ज़रूरत उसे प्रतिदिन का सामना करने को थी।

दाऊद परमेश्वर के पास यह विश्वास करते हुए नहीं आया था कि वह सिद्ध था। उसे पता था कि उसकी कुछ असफलताएं और कमियां रही थीं। तथापि, वह परमेश्वर के पास इस भरोसे के साथ आया कि वह एक क्षमा करनेवाला और भला परमेश्वर था जो उन सभी के लिए उपलब्ध था जितने उसे पुकारते थे (पद 5)। दाऊद धन्यवादी था कि परमेश्वर उसकी कमियों को क्षमा करने के लिए तैयार था। यदि परमेश्वर एक भला परमेश्वर नहीं होता, तो दाऊद उसके पास आने के योग्य नहीं हो पाता।

इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर उन सभी के लिए प्रेम से भरा था जितने उसे पुकारते थे (पद 5)। अन्य शब्दों में, परमेश्वर का प्रेमी हृदय उन सभी को ग्रहण करने को बुला था। जिन्होंने अपने संकट में उसे पुकारा था। इससे हमें आज कितनी सांत्वना मिलती है। परमेश्वर को अपने बच्चों की पुकार सुनने में खुशी मिलती है और वह अपने प्रेमी हृदय को उन सभी के लिए खोलेगा जो उसे पुकारेंगे।

परमेश्वर की क्षमा और प्रेम के आधार पर ही दाऊद परमेश्वर को पुकार सका। 6-7 पदों में दाऊद ने प्रभु को बताया कि संकट के दिन वह उनके पास आकर दया के लिए पुकारेगा। उसे पूरा भरोसा था कि परमेश्वर उसकी सुनकर उसे ज़रूर उत्तर देगा।

पद 8 में ध्यान दें कि दाऊद ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि कोई भी

देवता इस्राएल के परमेश्वर के समान नहीं था। और न किसी के कामों की तुलना परमेश्वर के कामों से की जा सकती है। इस्राएल के परमेश्वर ने पृथ्वी को बनाया। उसने दाऊद के पुरखाओं को इन अद्‌भुत कार्यों को दिखाया था। दाऊद को पता था कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं था। वह उसके पास इसलिए आया क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं था जो वह कर सकता जिसे इस्राएल का परमेश्वर कर सकता था। अन्य देशों ने इस्राएल के परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों को देखा था (पद 9)। जिस समय इस्राएल की संतान मिस्र के बंधन में थी, परमेश्वर ने फिरौन को अपनी अद्वितीय सामर्थ दिखायी थी। इस्राएलियों के कनान आने पर यहोशू की अगुवाई में परमेश्वर ने अपनी अद्‌भुत सामर्थ को उन सभी राष्ट्रों को परास्त करते हुए प्रगट किया जिन्होंने उसके लोगों का विरोध किया था। इन सभी देशों ने इस्राएल के परमेश्वर की सामर्थ को जान लिया था। इस्राएल का परमेश्वर ही अद्‌भुत कार्य कर सकता है। समस्त पृथ्वी पर आराधना किये जाने को केवल वही परमेश्वर था।

पद 11 में दाऊद की विनती है कि परमेश्वर उसे अपने मार्गों की शिक्षा दे जिससे वह उसके सत्य में चल सके। दाऊद यह मानने को दीन था कि वह परमेश्वर के मार्गों को समझा नहीं था। वह अपने जीवन में अभी संकट से होकर जा रहा था। वह नहीं जानता था कि उसे इस संकट का सामना क्यों करना था या इस संकट में परमेश्वर की उसके लिए क्या योजना व उद्देश्य था। उसने प्रार्थना की कि प्रभु उसे वह सिखाए जिसे सीखने की उसे ज़रूरत थी, जिससे अपने संकट में भी वह उसके सत्य में चल सके। अपने संकट में हमारे लिये उन चीज़ों को कहना या करना कितना सरल होता है जिन्हें हम सामान्यता न तो कहते या करते हैं। ऐसे भी समय होते हैं जब परमेश्वर हमें प्रशिक्षित करने या एक महत्वपूर्ण शिक्षा को सिखाने के लिए संकटों का सामना करने देता है।

दाऊद की प्रार्थना है कि इस संकट और परेशानी के समय में परमेश्वर उसे वह सिखाए जिसे सीखने की उसे ज़रूरत है।

पद 11 में भी ध्यान दें कि परमेश्वर उसे एक अविभाजित मन दे ताकि वह उसके नाम का भय माने। एक अविभाजित हृदय केवल परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पित होता है। हमारे संकटों में सत्य से भटकने की परीक्षा हो सकती है। जब अय्यूब इस व्यक्तिगत संकट से होकर गया तो शैतान ने चाहा कि वह परमेश्वर को श्राप दे (देखें अय्यूब 2:9)। हम निश्चित हो सकते हैं कि शैतान की हमारे लिए भी यही इच्छा है। शैतान हमें प्रभु और उसके उद्देश्यों से भटकाने का अपना भरसक प्रयास करेगा। एक चित्त या अविभाजित हृदय के लिए की गई दाऊद की प्रार्थना हमारी परीक्षा के समय में हम सभी के लिए एक कठिन प्रार्थना है। उसकी प्रार्थना है कि वह

केवल परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहे और कि उसकी आँखें किसी ओर पर न लगे।

इस संकट के समय में भी दाऊद की वचनबद्धता प्रभु के नाम की आराधना और स्तुति करने की थी। दाऊद यह नहीं जातना था कि चीज़ें कैसे बदलने वाली थीं। उसके मन में बहुत से प्रश्न थे परन्तु चाहे कुछ भी हो, दाऊद ने स्वयं को समर्पित किया कि प्रभु की स्तुति करे और उसके नाम को आदर दे। दाऊद नहीं चाहता था कि उसके संकट उसके और उसके परमेश्वर के बीच आएं। हम सभी को इस वचनबद्धता को करने की ज़रूरत है।

बहुत से कारणों से दाऊद प्रभु की आराधना और प्रशंसा करने की वचनबद्धता कर सका। उन कारणों में से पहला यह था कि परमेश्वर का प्रेम उस पर अधिक था (पद 13)। दाऊद ने सदा अपने जीवन में परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया था। विशिष्ट रूप में, दाऊद बताता है कि कैसे परमेश्वर ने उसे कब्र में जाने से बचाया था। यह स्पष्ट नहीं है कि दाऊद यहां अपने जीवन के किसी विशिष्ट समय के बारे में सोच रहा था या इस सच्चाई के बारे में कि यद्यपि उसके शत्रुओं ने उसे हमेशा संकट दिया था, परमेश्वर उसे बचाता रहा था। सच्चाई यह थी कि दाऊद जीवित था और उसके लिए प्रतिदिन किये जाने वाले प्रत्येक प्रभु के कार्य के लिए धन्यवादी था।

दाऊद द्वारा परमेश्वर की प्रशंसा किये जाने का दूसरा कारण यह था कि वह दयालु और अनुग्रहकारी था (पद 15)। दया और अनुग्रह उन लोगों तक जाते हैं जो इनके योग्य भी नहीं हैं। दाऊद जानता कि वह कई बार परमेश्वर के मानदण्ड से गिरा था परन्तु तौभी परमेश्वर ने उसे क्षमा किया और अपने प्रेमी हाथों को उसकी ओर बढ़ाया था। इसी कारण दाऊद परमेश्वर की प्रशंसा करता रहा था चाहे उसके जीवन में उसके साथ कुछ भी हुआ हो। दाऊद द्वारा इस भजन को लिखे जाने के समय में, निर्दयी और कठोर लोग उस पर प्रहार कर रहे थे (पद 14)। इसके बावजूद दाऊद की वचनबद्धता एक दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर की आराधना करने की थी। उसे उस पर पूरा भरोसा था।

दाऊद ने इसलिए भी परमेश्वर की आराधना की थी क्योंकि वह बिलम्ब से कार्य करनेवाला और अति करुणामयी था (पद 15)। अन्य शब्दों में, दाऊद को पता था कि ऐसे बहुत से समय रहे थे जब परमेश्वर उस पर कोपित हो सकता था परन्तु इसके विपरीत उसने उसे क्षमा किया और धीरज से उसकी प्रतीक्षा की।

अपनी प्रार्थना का अन्त करते हुए, दाऊद ने परमेश्वर से दो चीज़ों की मांग की। पद 16 उसने प्रभु से उस पर अनुग्रह करने और शक्ति देने को कहा। उसे नहीं पता था कि उसकी परीक्षा कब तक रहेगी। वह परमेश्वर के समय और उद्देश्य को नहीं समझ

पाया था। तौभी, वह यह जानता था कि इस संकट या परीक्षा से निकलने के लिए उसे प्रभु की शक्ति की ज़रूरत थी। उसने परमेश्वर से विनती की, कि अपनी दया में वह उसे वह शक्ति दे जिसकी ज़रूरत उसे संकट का सामना करने को थी जब तक कि परमेश्वर इसे उसके जीवन में बने रहने देता है।

दाऊद की दूसरी विनती यह थी कि परमेश्वर उसे भलाई का कोई लक्षण दिखाए (पद 17)। वह चाहता था कि यह लक्षण इतना स्वाभाविक हो जाए कि उसे देखकर उसके शत्रु निराश हों। वह चाहता था कि उसके शत्रु यह देखें कि वे केवल दाऊद से लड़ रहे थे बलिक इस्राएल के परमेश्वर से भी। अपने संकट के बीच में दाऊद प्रभु परमेश्वर की शक्ति के स्पष्ट प्रदर्शन को देखना चाहता था। यह उसके लिए नहीं परन्तु उसके शत्रुओं के लिए बहुत कुछ था। पद 17 में ध्यान दें कि दाऊद ने इसे स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने उसकी सहायता की और उसे शान्ति दी थी। विश्वास की कमी के कारण दाऊद ने लक्षण की मांग नहीं की थी। वह पहले ही परमेश्वर की आराधना करने और हर स्थिति में उस पर भरोसा करने को वचनबद्ध था। जिस लक्षण की मांग उसने की थी यह वह लक्षण था जो उसके अविश्वासी परामर्शदाताओं से बात करता। वह उन्हें दिखाना चाहता था कि परमेश्वर वास्तविक था ताकि वे उस पर भरोसा करें।

जबकि दाऊद यह नहीं समझ सका था कि इस संकट के समय में परमेश्वर क्या कर रहा था, वह प्रभु को अपने सारे मन से ढूंढने को वचनबद्ध था। उसने शत्रु को उससे उन सभी सत्यों को ले जाने से इन्कार कर दिया था जिन्हें उसने परमेश्वर से सीखा था। उसने अपने संकट में परमेश्वर से सीखने के लिए अपने मन को खोला था और चूंकि परमेश्वर उसका बल था इसलिए उसने विजयी होने की आशा की थी।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर के सम्मुख आने से पहले क्या हमें सिद्ध होने की ज़रूरत है? हम परमेश्वर और उसकी दया के बारे में दाऊद से क्या सीखते हैं?
- इस भजन में परमेश्वर के सामने दाऊद के भरोसे का क्या आधार है?
- अपने मन को आनन्द से रिक्त पाने पर दाऊद ने क्या किया? क्या आपने कभी अपना आनन्द खोया है?
- हमारे लिए अपने संकटों में परमेश्वर की शिक्षा के लिए खुलना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
- क्या परमेश्वर से लक्षण की मांग करना गलत है? दाऊद यहां लक्षण की मांग क्यों करता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को इस सच्चाई के लिए धन्यवाद दें कि हमारे उसके मानदण्ड से गिर

जाने के बाद भी वह हमें स्वीकार करने को तैयार है?

- क्या आप अपने मन को आनन्द से रिक्त पाते हैं? अभी अपने मन को परमेश्वर की ओर उठाएं और उससे इसे फिर से भरने को कहें।
- प्रभु से आपको आपके व्यक्तिगत संकटों द्वारा शिक्षा देने को कहें।
- आपके जीवन में चाहे कुछ भी हो परमेश्वर से आपको उसकी आराधना और प्रशंसा करने का प्रण लेने को शक्ति देने के लिए कहें।

78. परमेश्वर का नगर

पढ़ें भजन संहिता 87:1-7

भजन 87 को समझना कुछ कठिन है। इसका कारण सांस्कृतिक है। इस भजन को समझने के लिए एक व्यक्ति को इसकी जांच इस्राएली संस्कृति के दृष्टिकोण से करने की ज़रूरत होगी। इसे यरूशलेम नगर के बारे में लिखा गया है और नगर तथा इसके वासियों के लिए परमेश्वर की मनसा को व्यक्त करता है। इस भजन में भविष्यसूचक सामग्री भी है जो परमेश्वर के उसके लोगों के उद्देश्यों के बारे में बताती है।

भजन का आरम्भ प्रभु की यरूशलेम नगर के प्रति वचनबद्धता के कथन से होता है। जिसका विस्तार इसके लोगों तक होता है। पद 1 में भजनकार ने घोषणा की कि प्रभु परमेश्वर ने अपनी नींव पवित्र पर्वत पर रखी है।

परमेश्वर के लोगों के समस्त इतिहास में वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक भटकते रहे थे। उनके पास अपनी कहने को कोई भूमि नहीं थी। वे चार सौ वर्ष तक मिस्र देश में रहे थे। मिस्र की गुलामी से स्वतंत्र होने के बाद वे चालीस वर्ष तक जंगल में भटकते रहे थे। यहोशू की अधीनता में उन्होंने कनान को जीता और देश में उपस्थिति को बनाया। तौभी सुलैमान के समय तक, यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर को बनाया जाना था। परमेश्वर ने एक बहुत विशेष ढंग से उस मंदिर में अपनी उपस्थिति को प्रगट करने का चुनाव किया।

भजनकार इस पर विचार करता है कि परमेश्वर ने कैसे यरूशलेम में उस मन्दिर में वास करने का चुनाव किया था। भजनकार के लिए यह एक अद्‌भुत विचार था। परमेश्वर को अपने लोगों के बीच वास करना और यरूशलेम नगर से स्वयं को संसार पर प्रगट करना पसंद था। इस परमेश्वर को जानना और उसके समर्थन या पक्ष का अनुभव करना निश्चय ही बेजोड़ था। इसी तरह से हम विश्वासियों के रूप में अपने दिनों में इस सच्चाई के आश्चर्य के साथ खड़े हो सकते हैं कि प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्र उपस्थिति को प्रगट करने के लिए अपनी संतान के जीवनों को चुना है। अपने जीवनों और मनों में परमेश्वर की उपस्थिति को जानना कितनी अद्‌भुत चीज़ है। परमेश्वर ने हममें अपनी नींव को डाले जाने का चुनाव किया है।

नींव के बारे में हमें इसे समझना ज़रूरी है कि यह स्थायी होती है। तम्बू के सिरों को उखाड़ना सरल है। तथापि, एक नींव सदा बनी रहती है। शायद भजनकार हमें वचन की नींव के बारे में बताना चाहता है। यदि परमेश्वर ने अपनी नींव को अपने पवित्र पर्वत पर रखा है, तो हम निश्चित हो सकते है कि वहां रहना चाहता है। परमेश्वर की प्रत्येक संतान के मनों और जीवनों में प्रभु की उपस्थिति के लिए यही सत्य है।

पद 2 में भजनकार अपने पाठकों को यह बताना जारी रखता है कि यहोवा सिय्योन के फाटकों से याकूब के सारे निवासों से बढ़कर प्रीति रखता है। याकूब का संदर्भ संपूर्ण रूप में इस्राएल का प्रतीक है। भजनकार यहां यह कहता दिख रहा है कि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति और आशीष के साथ विशेष रूप से यरूशलेम नगर पर कृपा की थी। इस नगर को उसने इस्राएल के सभी गांवों और शहरों में से चुना था कि अपनी उपस्थिति को प्रगट करे।

परमेश्वर ने एक विशेष तरीके से इस नगर पर स्वयं को प्रगट करने का चुनाव क्यों किया था? इसका जवाब नहीं दिया गया है। मानवता के साथ व्यवहार करने के अपने इतिहास में परमेश्वर ने सदा चुने लोगों के द्वारा स्वयं को प्रगट करने का चुनाव किया था। विश्वास के ऐसे स्त्री और पुरुष हैं जो मसीही कलीसिया के इतिहास में खड़े दिखते हैं। परमेश्वर ने मुझे क्यों बचाया और स्वयं को मुझ पर विशेष ढंग से क्यों प्रगट किया जबकि मेरा पड़ोसी अभी भी पाप के अंधकार में है। हम कभी भी परमेश्वर के मन और उसके मार्गों को पूरी तरह से समझ नहीं पाएंगे। यह कहना प्रर्याप्त है कि परमेश्वर कुछ समयों में और कुछ व्यक्तियों पर स्वयं को विशिष्ट तरीके से प्रगट करने का चुनाव करता है। परमेश्वर ने यरूशलेम का विशिष्ट रूप से समर्थन किया था। यह सभी नगरों और शहरों से ऊपर एक ऐसे नगर के साथ में खड़ा हुआ था जहां परमेश्वर ने उपस्थिति को प्रगट करने का चुनाव किया था।

चूंकि परमेश्वर ने यरूशलेम में अपनी उपस्थिति को प्रगट करने का चुनाव किया था, इस नगर के बारे में महिमामयी चीज़ें कही गईं। ऐसा हमारे साथ विश्वासियों के रूप में होना चाहिए जिनमें परमेश्वर का पवित्र आत्मा वास करता है। हर कहीं स्त्री और पुरुष हम में परमेश्वर की सामर्थ के प्रमाण को देखें और आश्चर्य करें। जब पवित्र आत्मा प्रेरितों के काम की पुस्तक में आरम्भिक कलीसिया पर आया तब समाज के लोगों का ध्यान इस पर गया। उन्होंने विश्वासियों के जीवन में अन्तर देखा। भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि महिमा की बातें यरूशलेम के बारे में कही गई थीं क्योंकि परमेश्वर ने उस नगर में अपनी महिमा को प्रगट करने का चुनाव किया था। क्या लोग हमारे बारे में महिमा की चीज़ें कहते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के आत्मा की

उपस्थिति को हममें देखते हैं?

पद 4 में भजनकार रहब, बाबेल, पलिश्त, सोर और कूश के बारे में देशों के रूप में बोलता है जो परमेश्वर को जानते हैं। रहब का संदर्भ मिस्र के संदर्भ के समान है। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यशायाह 30:7 में मिस्र को ''रहब'' कहा है।

क्योंकि मिस्र की सहायता व्यर्थ और निकम्मी है, इस कारण मैंने उसको बैठी रहनेवाली रहब कहा है।

इस पद की महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि यह एक ऐसे समय की ओर संकेत करता है जब इन देशों ने परमेश्वर के बारे में जाना और परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे सिय्योन में उत्पन्न हुए थे। सिय्योन में उत्पन्न होने का अर्थ है कि ये देश परमेश्वर के चुने लोगों का भाग थे। चूंकि उन्होंने परमेश्वर को जाना था और उन्हें इस्राएल के नागरिकों के रूप में स्वीकार किया गया था वे उसकी सभी सन्तानों के समान आशीषित होंगे।

क्या ऐसा हो सकता है कि इन लोगों ने यरूशलेम में जो देखा वह इतना अद्‌भुत था कि वे स्वयं इसका भाग बनना चाहते थे? हम केवल इसकी आशा और प्रार्थना कर सकते हैं कि हमारे जीवनों का हमारे पास-पास के लोगों पर ऐसा प्रभाव पड़े जिन्होंने अब तक प्रभु परमेश्वर को नहीं जाना है।

यरूशलेम नगर और इसके वासियों पर परमेश्वर की आशीष का प्रभाव इतना अधिक था कि लोग यह जान सकते थे कि अमुक अमुक मनुष्य का जन्म कहां हुआ था (पद 5)। अविश्वासी परमेश्वर और उसकी आशीष के प्रमाण को उन लोगों पर देखने पाए जो उससे जुड़े थे। परमेश्वर के उद्धार की प्रकृति ऐसी होती है कि अविश्वासी भी उस अन्तर को जान लेगा।

पद 6 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि प्रभु ने अपने लोगों के नामों को अपने रजिस्टर पर लिखा है। उन लोगों के नाम लिखे जाने के बाद वह यह कहेगा ''यह वहां उत्पन्न हुआ था।'' इसी तरह से, वे जो परमेश्वर के परिवार में नया जन्म लेते हैं ''सिय्योन में उत्पन्न'' हुए हैं। सिय्योन में जन्म लेने के लिए परमेश्वर के आत्मिक परिवार में जन्म लेना होगा और उसकी संतान होने तथा उसकी आशीष के वारीस होने को। हम सभी के लिए यह जानना कितना महत्वपूर्ण है कि स्वर्ग में जीवन की पुस्तक में हमारे नाम के साथ साथ यह भी लिखा है: ''यह वहां (सिय्योन) उत्पन्न हुआ था।'' जब तक हमारा जन्म सिय्योन में न हो जाए तब तक अनन्त जीवन के लिए हमें कोई आशा नहीं है। काश कि परमेश्वर हम सभी को इस अद्‌भुत उद्धार के आश्वासन को दे।

ध्यान दें कि भजनकार पद 7 में अपने भजन का समापन करते हुए ऐसे समय की

भविष्यवाणी करता है जब सिय्योन में जन्म लेनेवाले एक गीत गाएंगे। उस गीत के शब्द होंगे, ''हमारे सब सोते (नीवें) तुझी में पाए जाते हैं।'' नींव पर हम घर का निर्माण कर सकते हैं। यह कठोर और स्थायी होती है। ये व्यक्ति यह कह रहे हैं कि उनकी सारी सुरक्षा प्रभु परमेश्वर में और उसके उद्देश्यों में थी। उनके जीवन प्रभु में एक स्थायी नींव के रूप में बने थे। कोई भी अनन्त और स्थायी चीज़ परमेश्वर की ओर से ही आती है।

परमेश्वर ने स्वयं को अपने लोगों पर प्रगट करने का चुनाव किया था। प्रभु से आशीष पाने के कारण उसके लोगों ने उसकी महिमा को प्रगट किया था। अन्य उनकी ओर देखने पर अन्तर को देख सके थे। परमेश्वर की यह आशीष इतनी बड़ी और आकर्षक थी कि अविश्वासी संसार स्वयं के लिए इसकी चाह करने लगा था। उन्होंने भी प्रभु परमेश्वर के पास आकर उसे अपने परमेश्वर के रूप में जाना।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर ने सिय्योन में नींव डाली है। इसका क्या अर्थ है? ''नींव'' शब्द का क्या महत्व है? आज इससे हमें क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- प्रभु परमेश्वर ने आपके जीवन में जो अन्तर किया है क्या लोग उसे देखते हैं? स्पष्ट करें।
- ''सिय्योन में उत्पन्न होने'' का क्या अर्थ है? क्या आपको ''सिय्योन में उत्पन्न होने'' का निश्चय है? आप कैसे जानते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसने आप पर स्वयं को प्रगट करने का चुनाव किया।
- प्रभु से आपकी उस अन्तर को देखने में सहायता करने को कहें जो उसने आपके जीवन में आपके आस-पास वालों के लिए किया है।
- प्रभु से आपको इस आश्वासन को देने को कहें कि आप ''सिय्योन में उत्पन्न'' हुए हैं।
- एक अविश्वासी मित्र या प्रिय जन के लिए कुछ समय प्रार्थना करें कि वे प्रभु परमेश्वर द्वारा किये महिमामयी अन्तर को देखने पाए और उसके पास आएं।

79. मुझे बचानेवाला परमेश्वर

पढ़े भजन संहिता 88:1-18

भजन 88 पढ़ने के लिए एक कठिन भजन है। तथापि, यह बहुत से विश्वासियों की पुकार है। भजन संकट के बीच भ्रम की एक निष्कपट प्रतिक्रिया है। यह पापी और बुरे संसार में परमेश्वर के मन और उद्देश्यों को समझने का प्रयास है।

भजनकार पद 1 से आरम्भ करने पर, हमें आशा के एक चिन्ह को देता है जो इस भजन में हमें मिलता है। इस पर ध्यान दें कि वह परमेश्वर के बारे में उस एक के रूप में बोलता है जो उसे बचाता है। अपने मन की गहराई से भजनकार यह जानता है कि परमेश्वर उसे बचाएगा। तथापि यह ज्ञान संकट और संघर्षों के समय में उसके भ्रम को दूर नहीं करता। जबकि भजनकार यह जानता है कि प्रभु परमेश्वर उसका उद्धार है, ध्यान दें कि यह उद्धार लिखने के समय में प्रमाण नहीं है। भजनकार दिन और रात प्रभु को पुकारता है। जवाब के आने में देरी होने पर भी वह अपनी प्रार्थना में दृढ़ बना रहता है। पद 2 में वह परमेश्वर से उसकी प्रार्थना को सुनने की विनती करता है।

ऐसा और कोई भी नहीं है जिसके पास भजनकार अपनी ज़रूरत के समय में जा सकता है। परमेश्वर द्वारा उत्तर देने में देरी किये जाने पर भी भजनकार ने उसमें अपनी आशा को नहीं खोया।

पद 3 में संघर्ष पर ध्यान दें। भजनकार ने परमेश्वर को बताया कि उसका प्राण क्लेश से भरा हुआ है। उसे अपने जीवन को खो देने का भय है। उसने प्रभु को बताया कि उसका जीवन अधोलोक के निकट पहुंच गया था। पद 4 से हम देखते हैं कि उसके आस-पास वाले उसके बारे में कैसा सोचते थे।

उसकी गिनती उनमें होती थी जो कब्र में चले गए थे और एक बलहीन पुरुष के समान थे। अन्य शब्दों में, उसके मित्रों और जान पहचानवालों ने उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जो मरनेवाला हो और जिसके जीने की कोई आशा न हो। यह चित्र निराशा का है।

भजनकार को ऐसा लगा कि परमेश्वर ने उसे उसके दुख और पीड़ा में छोड़ दिया था । पद 5 में उसने अपने पाठकों को बताया कि उसे उनके समान अलग कर दिया गया था जो मृतक थे और प्रभु की सुरक्षा से भी अलग कर दिये गए थे। ऐसा लगता

था कि परमेश्वर उसके दुख में उसकी सुन नहीं रहा था। यद्यपि वह दिन और रात पुकारता रहा था, ऐसा लगता था कि परमेश्वर उसके देख में उसकी सुन नहीं रहा था। यद्यपि वह दिन और रात पुकारता रहा था, ऐसा लगता था कि परमेश्वर बहुत दूर था। यदि ऐसा लगता था कि परमेश्वर ने ही उसे भुला दिया था तो वहां क्या आशा थी?

पद 6 में भजनकार और आगे तक जाता है। उसने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर ने उसे गड़हे के तल में अन्धेरे और गहरे स्थान में रखा है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने उसे अपने से दूर कर दिया था। तथापि इसके अतिरिक्त ने परमेश्वर अन्धेरे और गहरे गड़हे में रखा। भजनकार उस समय में चीज़ों को सबसे बुरी दशा में देख सका।

परमेश्वर का कोप भजनकार पर था। इस भारी बोझ को सहना कठिन था। परमेश्वर के क्रोध की लहरों से वह परास्त हो गया था। यह एक व्यक्ति के समुद्र में डूबने का चित्र है। ऐसा लगता था कि उस पर लहरों के बिना किसी रोक के थपेड़े पड़ रहे थे और इसने उससे उसकी शक्ति और जीने की इच्छा को चूस लिया था। भजनकार को परमेश्वर द्वारा ऐसा व्यवहार किये जाने का अहसास हुआ।

पद 8 में भजनकार इन मित्रों के बारे में बताता है जो उसके हुआ करते थे। उसने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर ने उसके सभी घनिष्ठ मित्रों को उससे अलग कर दिया है और उसे जीवन में अकेला छोड़ दिया है। उसका दुख और पीड़ा इतनी अधिक थी कि उसके घनिष्ठ मित्र उसे देखकर उससे दूर हो गए थे। भजनकार अपनी परिस्थिति में कोई बदलाव नहीं कर सकता था। उसे ऐसा लगा कि वह दुख व पीड़ा का कैदी हो गया था जिसके बचने की कोई आशा नहीं थी।

निराशा के संभावित चिन्हों के बावजूद भजनकार ने परमेश्वर को पुकारना बन्द नहीं किया। उसे ऐसा लगा कि परमेश्वर ने उसे दुख की पीड़ा की कैद में बन्द कर दिया था परन्तु वह यह भी जानता था कि उस द्वार को खोलने की चाबी केवल परमेश्वर के पास ही थी कि उसे आज़ाद करे। पद 9 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि उसकी आंखें दुख सहते सहते धुंधला गई थीं परन्तु वह प्रतिदिन परमेश्वर को पुकारता रहा। वह प्रतिदिन इस आशा में अपने हाथ प्रभु की ओर फैलाता कि उसे उसके निवेदनों का जवाब मिलेगा।

विषय की वास्तविकता यह है कि इस तरह की परिस्थितियों में बने रहना बहुत कठिन है। हमें इस भजनकार की प्रशंसा करनी है जो इस तरह की भयंकर परीक्षाओं में भी छुटकारे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।

उसने परमेश्वर पर से अपनी आँखें नहीं हटाई थीं। यद्यपि उसे ऐसा लगा था कि परमेश्वर ने उसे भुला दिया था, वह तब भी उसे सहायता के लिए पुकारता रहा।

कितने लोग कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर से मुँह मोड़ लेते हैं? क्या आपने कभी परमेश्वर को पुकारा और आपको जवाब नहीं मिला? आशा न छोड़ें। इस भजनकार के समान दृढ़ बने रहें।

भजनकार पद 10 में अपने संदेश को व्यक्त करता है। ''क्या तू मुर्दों के लिए अद्‌भुत काम करेगा? क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे?'' उसने पूछा। वह समझ नहीं पाया था कि परमेश्वर उसे दुख और शोक में क्यों मरने के लिए छोड़ देगा। वह परमेश्वर को चमत्कारी व अद्‌भुत कार्य करनेवाले परमेश्वर के रूप में जानता था। वे कार्य मृतकों पर व्यर्थ हो गए थे। परमेश्वर ने उसे चमत्कारिक ढंग से स्वतंत्र क्यों नहीं किया था ताकि वह उठकर उसके नाम की प्रशंसा कर सके?

पद 11 में वह कहता है: ''क्या कबर में तेरी करुणा का और विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा।'' पुन: ध्यान दें कि भजनकार यह जान गया था कि परमेश्वर विश्वासयोग्यता और प्रेम का परमेश्वर था। इस प्रेम और विश्वासयोग्यता को अभी तक मृतकों ने अनुभव नहीं किया था। केवल जीवित ही परमेश्वर के प्रेम के प्रति आभार व्यक्त कर सकते थे। परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों को मृतकों के स्थान में नहीं जाना जाता है न ही उसके ''धर्मी'' कार्यों को ऐसे स्थान पर जाना जाता है जहां सब कुछ भुलाया गया और खाली है (पद 12)। ध्यान दें कि भजनकार परमेश्वर को धर्मी कार्यों के परमेश्वर के रूप में जान गया था।

भजनकार परमेश्वर के बारे में जिस सत्य को जानता था वही इस भयंकर संदेह के समय में उसे आशा देता रहा था। ऐसे समयों में जब हम परमेश्वर के हाथ को कार्य करता नहीं देखते हैं हमारा उस सत्य के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना ज़रूरी होता है जो हम उसके बारे में जानते हैं। यह सच्चाई कि परमेश्वर तत्काल ही हमारी प्रार्थनाओं का जवाब नहीं देता इसमें कोई परिवर्तन नहीं लाता कि वह कौन है। भजनकार का विश्वास उसके जीवन में इस सीमा तक फैल गया है तथापि इस पर ध्यान दें, पुन: पद 13 में कि वह सहायता के लिए पुकारता रहता है। सुबह और शाम उसकी प्रार्थनाएं परमेश्वर तक पहुंची। उसने परमेश्वर के अनुग्रह और आशीष की खोज करने में हिम्मत नहीं छोड़ी।

भजनकार का पीड़ा और दुख थोड़े समय की चीज़ नहीं थी। पद 15 में ध्यान दें कि बचपन से ही वह दुखी और अधमुआ था। जहां तक वह याद कर सका उसने परमेश्वर के भय से दुख उठाया था। वह निराशा के स्थान में आ गया था। समझ नहीं सका था कि परमेश्वर ने उसे क्यों अस्वीकार किया था और उससे अपना मुख क्यों छिपा लिया था (पद 14)। इसने प्रार्थना में उसकी दृढ़ता को और भी सराहनीय बना दिया था। हममें से कौन इस समय में प्रार्थना में दृढ़ बना रह पाएगा?

परमेश्वर का क्रोध उस पर पड़ा था और उसके भय ने उसे मिटा दिया था। वह बाढ़ में डूबते एक मनुष्य के समान था। वह दिन प्रतिदिन और वर्ष प्रति वर्ष परमेश्वर के क्रोध में डूबा जा रहा था। उसके सभी मित्रों ने उसे छोड़ दिया था और उसके लिए कोई सहायता और समर्थन नहीं था। अभी वह मित्र के रूप में जिसे जानता था वह अन्धकार और मृत्यु थे। केवल मृत्यु ही उसे इस दुख और पीड़ा से मुक्ति दे सकती थी।

यह भजन निराशा में एक व्यक्ति द्वारा की जाने वाली असहाय पुकार है। तथापि, यह उस व्यक्ति की भी पुकार है जिसने परमेश्वर को नहीं छोड़ा था। यह उस व्यक्ति की पुकार है जो परमेश्वर के मार्गों को समझ नहीं सका था परन्तु विश्राम के लिए अभी भी उसकी ओर ही देख रहा था। यह एक ऐसे व्यक्ति की गवाही है जिसका एक ऐसी स्थिति में विश्वास और भरोसा है जिसमें हर चीज़ आशाहीन दिखती है। यह हम में से प्रत्येक के लिए प्रभु पर भरोसा रखने के लिए एक शक्तिशाली शिक्षा है।

विचार करने के लिए:

- भजनकार परमेश्वर के किन सत्यों से अपने भजन में जुड़ा रहता है? यह दुख और पीड़ा के साथ हमारे व्यवहार करने के बारे में हममें क्या सिखाता है?
- प्रार्थना में दृढ़ रहने और परमेश्वर के साथ हमारी चाल के बारे में भजनकार हमें क्या सिखाता है?
- क्या वास्तव में हमारे लिए परमेश्वर के मन और मार्गों को पूरी तरह से समझना संभव है?
- क्या आपने कभी स्वयं को भजनकार के समान स्थिति में पाया है? आज यह परिच्छेद आपको क्या चुनौती देता है?

प्रार्थना के लिए

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह कभी बदलता नहीं है और कि हम हमेशा उस पर निर्भर हो सकते हैं।
- आज आपके संकट में परमेश्वर से आपको भजनकार की दृढ़ता को देने के लिए कहें।
- कुछ समय प्रभु को अपने संकट सौंपने में बिताएं धन्यवाद दें कि उसे पता है कि वह क्या कर रहा है।
- आपके जीवन में चाहे जो कुछ भी हो, प्रार्थना में स्वयं को प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहने को समर्पित करें।

80. तेरा पहलेवाला प्रेम कहाँ है?

पढ़ें भजन संहिता 89:1-52

भजन 89 प्रशंसा और संघर्ष का मिश्रण है। भजनकार प्रभु की उसके प्रेम और विश्वासयोग्यता के कारण प्रशंसा करता है और ऐसा लगता है कि उसके जीवन में कोई संघर्ष नहीं है। यद्यपि वह परमेश्वर के मार्गों को समझ नहीं पाता तौभी वह उसकी आराधना करता रहता है।

भजनकार पद 1 में प्रशंसा और धन्यवाद की टिप्पणी के साथ आरम्भ करता है विशेष रूप से प्रभु परमेश्वर के प्रेम और विश्वासयोग्यता के लिए। ध्यान दें कि उसने अपने पाठकों को बताया कि वह यहोवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहेगा और उसकी सच्चाई को पीढ़ी से पीढ़ी तक जताता रहेगा। यहा हमें दो चीज़ों को देखने की ज़रूरत है। पहली, भजनकार ने स्वयं को प्रभु की करुणा के विषय गाने को सौंप दिया था। हम इस भजन में बाद में देखेंगे कि यह सरल नहीं था। भजनकार के जीवन में ऐसे समय रहे होंगे जब वह प्रभु के प्रेम के प्रमाण को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता था। ऐसे भी समय रहे होंगे जब उसने अपने जीवन में भयानक कष्टों का सामना किया था। तौभी, भजनकार जानता था कि परिस्थितियों ने परमेश्वर और उसके लोगों के प्रति उसके प्रेम को नहीं बदला था। परमेश्वर का प्रेम शर्तरहित और अनन्त था। कोई भी चीज़ उसे उस प्रेम से अलग नहीं कर सकती थी, जिससे वह ऐसे समयों में भी उसकी प्रशंसा कर सका जब उसके पास इस प्रेम का प्रमाण नहीं था। उसने सत्य के आधार पर आराधना की, हमेशा अनुभव के आधार पर नहीं।

पद 1 में जिस दूसरे विषय पर हमारा ध्यान देना ज़रूरी है कि भजनकार की इच्छा पीढ़ी से पीढ़ी तक प्रभु की सच्चाई को बताने की है। वह अगली पीढ़ी को वह समझाना चाहता था जो वह स्वयं अपने प्रभु परमेश्वर की सच्चाई के बारे में समझ पाया था। उसका विश्वास केवल उसके लिए नहीं था। वह इसे आगे तक बढ़ाना चाहता था।

पद 2 में भजनकार ने अपनी वचनबद्धता को बताया कि प्रभु का प्रेम सदा तक बना रहेगा। अन्य शब्दों में, ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो प्रभु परमेश्वर के अपने लोगों के लिए प्रेम में कोई परिवर्तन कर सकती थी। उसका प्रेम स्थिर और अपरिवर्तित था। कोई भी चीज़ प्रभु के लोगों के लिए उसके प्रेम को तोड़ नहीं सकती थी। हमारे दिनों

में भी इससे हमें कितना बड़ा आराम मिलता है।

इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर ने स्वयं स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर किया है। स्वर्ग में जब किसी चीज़ को स्थिर किया जाता है तो इस पृथ्वी की कोई भी चीज़ इसमें परिवर्तन नहीं कर सकती है। परमेश्वर की सच्चाई स्वर्ग में स्थिर की गई थी। इसका अर्थ था कि इस्राएल इस पर निर्भर हो सकता था। कोई भी चीज़ परमेश्वर को उसके लोगों के प्रति विशसयोग्य बने रहने से रोक नहीं पाएगी। जीवन की परिस्थितियों में परिवर्तन होने के साथ-साथ ये बहुत कठिन भी हो सकती हैं। एक चीज़ निश्चित है। चूंकि परमेश्वर ने स्वर्ग में अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य रहने का निश्चय किया है इसलिए इस पृथ्वी पर कोई भी चीज़ हमें उस प्रेम से कभी अलग नहीं कर पाएगी।

स्वर्ग के इस प्रभु परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा बान्धी अर्थात् वह दाऊद के साथ एक विशेष संबन्ध में आया। उसने उसके वंश को स्थिर रखने और पीढ़ी से पीढ़ी तक उसकी राजगद्दी को बनाए रखने की प्रतिज्ञा की। परमेश्वर का दाऊद और उसके परिवार के लिए एक विशेष उद्देश्य था। इस पद में मसीहा की प्रतिज्ञा छिपी है जो दाऊद के वंश में आकर हमारे र्स्वशक्तिमान प्रभु और राजा के रूप में सदा तक राज्य करेगा। प्रभु यीशु दाऊद का एक वंशज था और वह हमारा राजा बना है। उसका राज्य सदा तक का है।

दाऊद के लिए परमेश्वर के द्वारा की गई अद्भुत प्रतिज्ञा पर विचार करें, वह प्रशंसा करने लगा। हे यहोवा स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी।'' (पद 5)। अपने यह जाना कि स्वर्ग स्वयं प्रभु परमेश्वर की उसके लोगों के लिए अद्भुत योजना और उनके उद्धार के कार्य को देखकर आश्चर्य में था।

स्वर्ग में ऐसा कुछ नहीं था जिसकी तुलना परमेश्वर से की जा सकती हो। स्वर्ग में उसका भय माना जाता है क्योंकि वह अपने चारों ओर रहने वालों से अधिक भययोग्य है। वह सर्वशक्तिमान प्रभु है जो अपनी सृष्टि के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की प्रतिज्ञा करता है। वह गर्व करनेवाले समुद्र पर राज्य करता है। इस गर्व करनेवाले समुद्र की लहरें जब ऊंचाई तक उठती हैं, वही उन्हें शान्त कर देता है। पद 10 में ध्यान दें कि प्रभु ने रहब को कैसे घात किया था।

रहब का संदर्भ सागर के बड़े दानव का संदर्भ है यह मिस्र देश का भी संदर्भ हो सकता है (देखें यशायाह 30:7)। प्रभु इस महान दानव को परास्त कर सकता था। अपनी बलवंत भुजा से उसने अपने शत्रुओं को छितरा दिया था। कोई भी प्रभु परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता था। उसका सबसे बड़ा शत्रु भी

तितर-बितर होगा।

इस भजन में भजनकार एक ऐसे परमेश्वर के बारे में बताता है जिसका आकाश और पृथ्वी पर अधिकार है। जगत और जो कुछ उसमें है, उसे परमेश्वर ने ही स्थिर किया है। हमारे चारों ओर दिखनेवाली प्रत्येक चीज़ को उसने ही बनाया है। उसके बिना हम कुछ नहीं होंगे। हम प्रत्येक चीज़ को उससे लेते हैं। पद 12 में भजनकार हमें बताता है कि उत्तर और दक्षिण को परमेश्वर ने ही बनाया। ताबोर पर्वत और हेर्मोन पर्वत को प्रभु परमेश्वर के नाम में आनन्द से गाते हुए चित्रित किया गया है।

पद 13 में भजनकार प्रभु की भुजा के बारे में बताता है। ''भुजा शक्तिमान और प्रबल'' थी। उसका हाथ शक्तिशाली था और उसका दहिना हाथ प्रबल हुआ था। ऐसा कोई ईश्वर नहीं था जिस की शक्ति प्रभु परमेश्वर की शक्ति से मेल खा सकती हो।

पद 14 भजनकार के अनुसार धार्मिकता और न्याय, परमेश्वर के सिंहासन का मूल थे। अन्य शब्दों में, पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य मूल रूप से धार्मिकता और न्याय पर आधारित था। न्याय सभी को मिलेगा। उसका राज्य धार्मिकता का राज्य था। परमेश्वर पर कभी भ्रष्टाचार और अन्याय का दोष नहीं लगाया जा सकता। उसके सभी दास, निश्चित रूप से न्यायी और धर्मी हैं। ध्यान दें कि जबकि परमेश्वर का सिंहासन धार्मिकता और न्याय पर बना है, करुणा और सच्चाई उसके आगे-आगे चलते हैं। न्याय और धार्मिकता कई बार मृत्यु और गंभीर दण्ड की मांग कर सकते हैं, तौभी प्रेम और विश्वासयोग्यता परमेश्वर के राज्य का भाग होंगे। यह प्रेम और विश्वासयोग्यता परमेश्वर के लोगों की ओर जाते हैं। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते थे उसने उनके लिए भला किया। इस पद में पवित्रता और अनुग्रह का मेल होता है।

जिन लोगों ने अद्‌भुत परमेश्वर की आराधना करना सीखा वे धन्य लोग थे। वे उसके सत्य की ज्योति और उसकी उपस्थिति के ज्ञान में चले (पद 15)। वे दिन भर उसके नाम में मगन रहते और उसकी धार्मिकता में आनन्द करते हैं।

परमेश्वर पर भरोसा करनेवालों के लिए वह महिमा और बल है। उसके अनुग्रह से ही उसके लोगों ने शक्ति पाई थी। प्रभु पीढ़ियों से अपने लोगों के लिए ढाल रहा था। उसने उनकी रक्षा की और उन्हें शत्रु के हाथ से बचाए रखा था।

इस अद्‌भुत परमेश्वर के बारे में अद्‌भुत चीज़ यह थी कि उसने अपने लोगों के साथ एक विशेष संबन्ध में आने का चुनाव किया था। पद 19 में भजनकार एक विशिष्ट समय के बारे में बताता है जब-प्रभु परमेश्वर एक दर्शन के द्वारा अपने लोगों से बोला था। उस दर्शन में परमेश्वर ने उनसे कहा था कि उसने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा है और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है। वह वीर दाऊद था (पद 20)। परमेश्वर ने दाऊद को अपना सेवक होने के लिए बुलाया था। उसने

परमेश्वर के लोगों के राजा के रूप में उसका तेल से अभिषेक करने को चुनाव किया था। परमेश्वर ने दाऊद पर अपना हाथ बनाए रखने और अपनी भुजा से उसे दृढ़ रखने की प्रतिज्ञा की (पद 21)। शत्रु उस पर विजयी होने नहीं पाएगा और उसके अधीन रहेगा। उसके शासन काल में कुटिल जन दाऊद को दुख नहीं देने पाएगा (पद 22)। ये प्रभु परमेश्वर की अपने लोगों के लिए प्रतिज्ञाएं थीं जो उसके लोगों तक जाती थी।

परमेश्वर ने दाऊद के सारे शत्रुओं को नाश करने और उसके बैरियों पर विपत्ति डालने की प्रतिज्ञा की थी (पद 23)। परमेश्वर का विश्वासयोगय प्रेम दाऊद के साथ रहेगा। वह उसके सींग को ऊंचा करेगा। सींग शक्ति और ताकत को प्रस्तुत करता था। जिस तरह से जानवर अपने को बचाने के लिए सींग का प्रयोग करता और अपने शत्रु पर विजयी होता है, उसी तरह से दाऊद अपने शत्रुओं पर विजयी होने की शक्ति अपने प्रभु परमेश्वर से पाएगा।

परमेश्वर की दया और अनुग्रह से दाऊद का हाथ समुद्र और महानदों के ऊपर होगा। अन्य शब्दों में, उसका प्रभाव उसके देश की सीमा से आगे तक फैलेगा। इसे समुद्र और महानदों के आगे तक अनुभव किया जाएगा (पद 26)। दाऊद परमेश्वर के साथ एक विशेष संबन्ध का आनन्द लेगा। वह उसे अपना ''पिता'' अपनी ''चट्टान'' और अपना ''उद्धारकर्त्ता'' कहेगा। परमेश्वर दाऊद से दूर नहीं होगा बल्कि बहुत व्यक्तिगत और निकट होगा। पद 27 के अनुसार परमेश्वर दाऊद को अपने पहलौठे के रूप में नियुक्त करेगा। ''पहलौठे'' के रूप में दाऊद अपने जीवन पर परमेश्वर की विशेष आशीष का आनन्द लेगा। उसे पहलौठे के रूप में विशेष सुअवसर और उत्तर दायित्व दिये जाएंगे। उसे पृथ्वी के समस्त राजाओं के ऊपर उठाया जाएगा। दाऊद के वंशज के रूप में हम प्रभु यीशु के संदर्भ को देखने से चूक नहीं सकते हैं जो उद्धारकर्त्ता और राजा के रूप में विशेष अनुग्रह का आनन्द लेगा।

परमेश्वर ने दाऊद और उसके वंश के लिए सदा तक अपने प्रेम को बनाए रखने की प्रतिज्ञा की। अपने दास दाऊद के साथ की गई उसकी अटल वाचा सदा तक रहेगी। परमेश्वर उसके वंश को सदा तक बनाए रखेगा और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सदा बनी रहेगी। अन्य शब्दों में, वह राजगद्दी अनन्त राजगद्दी होगी। पुनः दाऊद के वंशज के रूप में यह प्रभु यीशु का स्पष्ट संदर्भ दिखता है जो सदा के लिए राज्य करेगा।

परमेश्वर को पता था कि दाऊद के सांसारिक वंशज सदा उसके मार्गों पर नहीं चलेंगे। पद 30 में उसने दाऊद को स्मरण कराया कि यदि उसके वंश के लोग उसकी व्यवस्था को छोड़ दें और उसके नियमों के अनुसार न चलें, यदि उसकी विधियों का उल्लंघन करें और उसकी आज्ञाओं को न मानें तो परमेश्वर उनके अपराध का दण्ड

सोंटे से और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से देगा, परन्तु वह उस पर से अपनी करुणा न हटाएगा और न ही उन पर से सच्चाई को हटाकर झूठा ठहरेगा। दाऊद परमेश्वर से की गई अपनी वाचा को न तोड़ेगा और जो उसके मुंह से निकल चुका है उसे न बदलेगा। दाऊद का वंश सुरक्षित था। परमेश्वर उनसे प्रेम करेगा और उनके लिए सदा तक कार्य करता रहेगा। परमेश्वर ने दाऊद के लिए अपनी पवित्रता भी शपथ खाई है कि वह उससे झूठ नहीं बोलेगा या उसमें कोई परिवर्तन नहीं करेगा जो वह अपने लोगों के लिए करने को सहमत था। दाऊद का वंश सर्वदा तक रहेगा (पद 36) और उसकी राजगद्दी सूर्य की नाईं ठहरेगी। स्पष्टतया आज प्रभु यीशु दाऊद की राजगद्दी पर सच्चा राजा है। परमेश्वर ने अपने लोगों- दाऊद के वंश- को न तो कभी भुलाया है और न ही वह कभी उन्हें भूलेगा। यद्यपि कुछ समय के लिए हम स्पष्ट रूप से देख नहीं पाते कि परमेश्वर इस्राएली लोगों के बीच क्या कर रहा है तथापि, हम निश्चित हो सकते हैं कि वे अभी भी उसके उद्देश्यों में है। ''वह चन्द्रमा की नाईं, और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी की नाईं सदा बना रहेगा'' (पद 37)।

इस विषय पर भजनकार ने जो कुछ भी कहा है वह पूर्णतया सत्य है। तौभी, विषय की वास्तविकता यह थी कि भजनकार अपने चारों ओर की चीज़ों के साथ संघर्ष कर रहा था। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों से की गई प्रतिज्ञाओं पर उसे संदेह नहीं था परन्तु ऐसा लगता था कि परिस्थितियां कुछ और ही कह रही थीं।

पद 38 में भजनकार ने कहा: ''तौभी तू ने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज दिया और उस पर अति क्रोध किया है।'' परमेश्वर दाऊद के वंश पर क्रोधित था और उन्हें उनके पाप के लिए दण्डित कर रहा था। भजनकार को ऐसे लगता था कि परमेश्वर ने दाऊद से की गई वाचा को याद किया था। शत्रु टूटे बाड़े से अन्दर आ गए थे और उन्होंने सब ओर उजाड़ कर दिया था। इस्राएल से गुज़रनेवाले उस लूट लेते हैं। पड़ोसियों में उनका ठट्ठा किया जाता और उनकी नामधराई होती है (पद 41)। परमेश्वर ने शत्रु के दहिने हाथ को प्रबल किया था जिस कारण वे इस्राएल पर विजयी हो सके। इस्राएल के शत्रुओं ने उसकी हार पर आनन्द मनाया था अपने लोगों का बचाव करने की बजाय परमेश्वर ने तलवार की धार को उनकी ओर मोड़ दिया था, और युद्ध में उनकी सहायता करने से इंकार कर दिया था। (पद 43) इस्राएल का तेज अब नहीं रह गया था। उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया गया था (पद 44)। इस्राएल के दिनों को घटाया गया था और उसे लज्जा से ढांप दिया गया था।

परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को अपने लोगों से छिपा लिया था। उसका क्रोध उनके विरुद्ध आग के समान भड़क रहा था (पद 46)। भजनकार ने परमेश्वर को याद दिलाया कि मनुष्य का जीवन कितना अनित्य है। वह उससे प्रश्न करता है कि

उसने सब मनुष्यों को व्यर्थ क्यों सिरजा है। उस समय में वे पड़ोसी देशों द्वारा सताव व अपमान का सामना कर रहे थे। ऐसा लगता था कि परमेश्वर दूर है। इन स्थितियों में बने रहने का क्या उद्देश्य था? क्या उन सभी को अपनी मृत्यु और कब्र की ओर देखना था (पद 48)।

भजनकार के लिए इसे समझना कठिन था कि परमेश्वर दाऊद से की गई अपनी वाचा-प्रतिज्ञा के प्रति इतना विश्वासयोग्य कैसे था। पद 49 में वह कह उठता है: ''हे प्रभु तेरी प्राचीनकाल की करुणा कहां रही, जिसके विषय में तूने अपनी सच्चाई की शपथ दाऊद से खाई थी?''

वह परमेश्वर से याद करने को कहता है कि कैसे उसके दासों का चारों ओर वालों ने ठठ्ठा और अपमान किया था (पद 50)। बहुत से संदेह में होने पर भी ध्यान दें कि भजनकार अपने भजन का समापन कैसे करता है। पद 52 में वह इन शब्दों के साथ समापन करता है: ''यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा। आमीन फिर आमीन।'' भजनकार ने स्वयं को परमेश्वर की आराधना करने को उसके विश्वासयोग्य प्रेम के कारण सौंपा था और वह आनेवाली पीढ़ी को भी इसके बारे में बताता है। परमेश्वर से की गई उस वचनबद्धता में कुछ बदलने वाला नहीं था। संदेह और अपने आस-पास की दुर्व्यवस्था के बावजूद भजनकार अभी भी अपने मन में प्रभु की प्रशंसा करता है।

हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि हमारे मार्ग परमेश्वर के मार्गों से बहुत भिन्न हैं। उसका समय हमारे समय के अनुसार नहीं है। यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर आने पर, बहुतों ने उससे भिन्न होने की आशा की थी। उसे क्रूस पर मरते देख उन्होंने उसी समय उसे अपने राजा के रूप में मानने से इंकार कर दिया था। वे समझ नहीं सके थे कि दुख और पीड़ा हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की प्रेमी प्रक्रिया का भाग थे। दुख का अर्थ यह नहीं होता कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है। इसका अर्थ किसी भी तरह से यह हो सकता है कि वह हमें शुद्ध करने के लिए हमारे जीवनों में कार्य कर रहा है। जब मानव तर्क काम नहीं करते, वहां विश्वास अटल बना रहता है। परमेश्वर के विश्वासयोग्य और प्रेमी उद्देश्य जीवन के संकटों में कार्य करते हैं। भजनकार समझ नहीं पाया था कि परमेश्वर क्या कर रहा था और यह परमेश्वर के समस्त उद्देश्य में कैसे सही बैठता था परन्तु उसने विश्वास और भरोसा करना नहीं छोड़ा कि परमेश्वर, एक विश्वासयोग्य और प्रेमी परमेश्वर के रूप में सदा विश्वासयोग्य रहेगा। काश कि परमेश्वर भयानक बाधाओं के बीच भी हमें आराधना करने का विश्वास दे।

विचार करने के लिए:

- भजनकार ने प्रभु परमेश्वर के लिए सदा तक गाने की वचनबद्धता की थी। आज आप जिन संघर्षों का सामना कर रहे हैं उसके बावजूद क्या आप ऐसी

वचनबद्धता कर सकते हैं?

- इस भजन में भजनकार की आराधना के कुछ कारण कौन से हैं?
- धार्मिकता और न्याय परमेश्वर के सिंहासन की नींव हैं। एक विश्वासी के रूप में आपको इससे क्या सांत्वना मिलती है? यह आपके संघर्षों को देखने के आपके दृष्टिकोण में कैसे परिवर्तन लाता है?
- क्या हमारी परिस्थितियों के बदलने पर परमेश्वर के प्रेम और विश्वासयोग्यता में परिवर्तन आता है? स्पष्ट करें।
- अभी आप किस संकट से होकर जा रहे हैं? क्या आपके मन में परमेश्वर की आराधना करने और उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने का भाव है?

प्रार्थना के लिए:

- आपके प्रति उसके प्रेम के गीत को गाने में प्रभु से आपकी सहायता करने की कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसका सिंहासन धार्मिकता और न्याय पर बना है। उससे आपके जीवन में इन विशेषताओं को एक भाग बनाने के लिए कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि जीवन में परिस्थितियों के बदलने पर भी वह सदा समान रहता है।
- कुछ समय प्रभु की आराधना करें। आपके वर्तमान संकट के लिए उसे धन्यवाद दें और उससे आपके संकट में भी उस पर भरोसा करने का अनुग्रह देने को कहें।

81. हम को आनन्द दे

पढ़ें भजन संहिता 90:1-91:16

भजन 90 और 91 के बीच एक सामान्य संबन्ध है। भजन 90 में भजनकार ने परमेश्वर के लोगों के जीवनों में उसकी सामर्थ को कार्य करते न देखने पर चिन्ता व्यक्त की है। अपनी सामर्थ को फिर से दिखाने की पुकार उसने परमेश्वर से की। भजन 91 दूसरी ओर, बहुत सकारात्मक ढंग से परमेश्वर की अद्‌भुत सामर्थ को बताता है जो उनके जीवनों में दिखती है जो प्रभु परमेश्वर को अपना शरणस्थान और गढ़ बनाते हैं। इस संक्षिप्त विचार-विमर्श में हम इन दोनों भजनों पर विचार करेंगे।

आरम्भ में, भजनकार यह अंगीकार करता है कि प्रभु पीढ़ी से पीढ़ी तक अपने लोगों के लिए धाम रहा है। धाम या निवास-स्थान के रूप में प्रभु शत्रु के विरुद्ध उनका शरण-स्थान रहा था। उसने अपने लोगों की सुरक्षा करने के साथ-साथ उनकी ज़रूरतों को पूरा किया था।

यह परमेश्वर, जो उनका शरण स्थान था, एक अनन्त परमेश्वर था। पहाड़ों के उत्पन्न होने से पहले या पृथ्वी की रचना होने से पूर्व यह परमेश्वर था। भजन 90:2 में ध्यान दें कि परमेश्वर आदिकाल से अनन्तकाल तक है। अन्य शब्दों में, वह सदा से ही परमेश्वर था और वह सदा ही परमेश्वर रहेगा। कोई भी चीज़ उसके अधिकार या शक्ति को छीन नहीं पाएगी।

परमेश्वर होने के कारण वह स्त्री और पुरुष को मिट्‌टी में मिलाता है। हम मिट्‌टी से ही बने हैं और फिर मिट्‌टी में ही मिल जाएंगे। यह सब प्रभु परमेश्वर के हाथ में है। उसका जीवन पर पूरा नियंत्रण है और प्रत्येक के जीवन और मृत्यु के समय को वही निर्धारित करता है।

चूंकि वह एक अनन्त परमेश्वर है इस कारण समय का उसके लिए उतना महत्व नहीं है जितना हम मनुष्यों के लिए है। भजनकार कहता है कि हज़ार वर्ष परमेश्वर के लिए एक दिन के बराबर हैं। एक अनन्त परमेश्वर होने के कारण उसका न तो कोई आरम्भ में है और न ही अन्त। तौभी, मनुष्यों के रूप में हम बिल्कुल अलग हैं। हम भोर में बढ़नेवाली घास के समान हैं जो शाम तक कटकर मुर्झा जाती है (90:5)।

भजन 90:7 में ध्यान दें जो लेखक अपने पाठकों को इस पृथ्वी के बहुत से स्त्री

पुरुषों के बारे में बताता है। वे परमेश्वर के क्रोध से नाश होंगे और उसकी जलजलाहट से घबरा जाएंगे। परमेश्वर एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर है। वह प्रत्येक व्यक्ति को उनके कामों के लिए उत्तरदायी ठहराता है। वह हमारे पापों की उपेक्षा नहीं करेगा। हमारे सभी पाप उसके सामने हैं। हमारे छिपे पाप भी परमेश्वर के सामने खुले हैं।

इतने अद्‌भुत और पवित्र परमेश्वर के सम्मुख मनुष्य के लिए क्या आशा है? हममें से ऐसा कौन है जो उसकी इन पवित्र अपेक्षाओं को पूरा कर सकता है? हममें से प्रत्येक परमेश्वर के मानदण्ड से गिरा है। हम सभी पापी हैं जो एक सिद्ध और पवित्र परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं। भजनकार भजन 90:9 में इसे इस तरह से रखता है ''क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं, हम अपने वर्ष शब्द की नाईं बिताते हैं।''

जबकि देखने में ये कथन नकारात्मक लगते हैं, सच्चाई यह है कि यह हर उस व्यक्ति के लिए वास्तविकता है जो प्रभु परमेश्वर की क्षमा को नहीं जानता। परमेश्वर एक पवित्र परमेश्वर है और हम पापी हैं। जैसा भजनकार कहता है: ''हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं, हम अपने वर्ष शब्द की नाईं बिताते हैं पाप की इस समस्या के समाधान के लिए हमें कितना धन्यवादी होने की ज़रूरत है। क्षमा और शुद्ध किये जाने के लिए प्रभु यीशु ने हमारे लिए एक मार्ग बनाया है। उसके जीवन और मृत्यु के द्वारा हमें एक नया अवसर दिया गया है। उसकी मृत्यु ने पाप के दण्ड को चुकाया और परमेश्वर के क्रोध को शांत किया। प्रभु यीशु की ओर आने वाले इस क्षमा और पुनरुद्धार को जान सकते हैं।

भजन 90:10 में भजनकार ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि हमारी आयु के सामान्य वर्ष सत्तर होते हैं। परमेश्वर द्वारा अतिरिक्त बल दिये जाने पर यह अस्सी भी हो सकते हैं। उन सत्तर या अस्सी वर्षों में हम अधिक संकट व दुख देखते हैं। इस जीवन में हम सामान्यता पाप में पड़ते और पृथ्वी पर इसके परिणाम को देखते हैं। मृत्यु, बीमारी, टूटे संबन्ध, निराशा ये सब इस जीवन का भाग और पाप की समस्या का परिणाम हैं। हममें से कोई भी जीवन में इनसे अनछुआ नहीं गुज़रेगा। हम एक पापी संसार में जन्म लेते हैं। सत्तर या अस्सी वर्ष तक हम संसार में पाप के परिणामों और इसके शाप को सहते तथा मर जाते हैं।

छोटे जीवन की रोशनी में, भजनकार ने 90:12 में प्रार्थना की कि हममें से प्रत्येक अपने दिनों को गिनने पाए और उनसे सीखने पाए जिससे हम बुद्धिमान हो जाएं। यह एक महत्वपूर्ण कथन है। परमेश्वर ने ये दिन हमें उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने की तैयारी किये जाने को दिये हैं। यदि हमें पाप से शापित पृथ्वी पर जीवन में किसी चीज़ को सीखने की ज़रूरत है, वह यह कि हमें एक पवित्र परमेश्वर की क्षमा

की ज़रूरत है। हमें परमेश्वर के बिना इन सत्तर या अस्सी वर्षों की व्यर्थता को देखने की ज़रूरत है। हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि हम अपनी आवश्यकता के लिए उसकी ओर फिरें।

भजनकार भजन 90 का समापन परमेश्वर से एक विनती के साथ करता है। वह उससे अपने क्रोध को ठण्डा करने और अपने दासों पर तरस खाने की विनती करता है। हमें इसके लिए कितना धन्यवादी होने की ज़रूरत है कि इस विशिष्ट प्रार्थना का उत्तर प्रभु यीशु के व्यक्तित्व में दिया गया है। उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध को शान्त किया गया और परमेश्वर ने अपने दासों पर तरस खाया है।

भजन 90:14 में भजनकार ने परमेश्वर से उन्हें अपनी करुणा से तृप्त करने की विनती की कि वे जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें। भजनकार के हृदय की पुकार यह है कि उसका हृदय आनन्दित और तृप्त रहे। पुन: यह केवल प्रभु यीशु मसीह और हमारे जीवनों में उसके पवित्र आत्मा के द्वारा ही संभव है। हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि निस्संदेह प्रभु की मनसा यह है कि उसकी संतान अपने जीवनों में तृप्त और आनन्दित रहे। एक तृप्त आनन्द के साथ इस पापी और दुष्ट संसार में रहना संभव है। अपने पास आनेवालों को परमेश्वर इसे देता है। भजनकार की यह प्रार्थना है कि वह और उसके लोग इस आनन्द का अनुभव लें।

भजन 90:15 में ध्यान दें कि भजनकार से प्रार्थना की कि जितने वर्ष उसने उन्हें दुख दिया था उतने ही वर्ष उन्हें आनन्द के दे। दुख और पीड़ा के प्रत्येक क्षण के लिए भजनकार ने परमेश्वर से उतनी ही मात्रा में प्रभु परमेश्वर में आनन्द मनाने की मांग की। मैं यह मानता हूं कि आज संसार को ऐसे स्त्री पुरुषों को देखने की ज़रूरत है जो प्रभु में इस आनन्द और आनन्द मनाने का अनुभव कर रहे हैं। आज बहुत से अपने जीवन ऐसे जी रहे हैं मानो परमेश्वर ने उनके जीवन को शोचनीय बनाया है। भजनकार की प्रार्थना हमारे लिए एक चुनौती होनी चाहिए।

भजन 90 में वह आगे कहता है भजनकार प्रभु से अपने दासों को अपने कामों को पुन: दिखाने को कहता है। उसने प्रभु से प्रार्थना की कि उसका अनुग्रह उसकी सन्तान पर हो और कि उसके हाथों के काम को दृढ़ करे। भजनकार परमेश्वर की सन्तान के जीवनों में उसके द्वारा पुन: अपनी अद्‌भुत सामर्थ को प्रगट करते हुए देखना चाहता है जिससे वे पाप कर विजय पाने के साथ-साथ उसके नाम का उत्सव मना सकें।

जबकि भजन 90 पापी पृथ्वी पर रहने के संघर्षों और पीड़ा पर केन्द्रित दिखता है, भजन 91 हमारा ध्यान विश्वासी के लिए विजय की सच्चाई पर लगाता है।

''जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा,'' भजनकार अपने पाठकों को बताता है (91:1)। अर्थात् परमेश्वर

को अपना शरण स्थान बनाने वाले सभी उसकी छाया में रहने की आशीष को जान पाएंगे। प्रभु की छाया सूर्य की गर्म और हानिकारक किरणों से बचने का स्थान है। जीवन में हानि पहुंचाने वाली बहुत सी चीज़ें हैं परन्तु प्रभु की छाया में रहने पर हम सुरक्षित बने रहते हैं।

भजनकार प्रभु को शरण स्थान और गढ़ कहता है (91:2)। प्रभु में वह शत्रु द्वारा उसके लिए लगाए फंदे से सुरक्षित था। प्रभु में वह इस पापी पृथ्वी की भयानक और बुरी महामारियों से सुरक्षित था (91:3)।

भजनकार प्रभु का वर्णन एक माँ पक्षी के रूप में करता है जो अपने छोटे बच्चों को अपने पंखों की आड़ में ले लेती है (91:4)। प्रभु के पंखों के नीचे उसके बच्चे सुरक्षित थे। उन्हें वहां शरणस्थान मिल पाया।

परमेश्वर विश्वासयोग्य परमेश्वर था। वह अपने बच्चों को गिरने नहीं देगा। वह उनके लिए एक ढाल और झिलम ठहरेगा। शत्रु की तलवार उन्हें भेद नहीं पाएगी और न ही उसके तीर से उन्हें हानि पहुंचेगी (91:4)।

चूंकि परमेश्वर एक गढ़ और ढाल था, इसलिए उसके लोगों को डरने की ज़रूरत नहीं थी। रात का भय उन्हें भयभीत नहीं कर पाएगा (91:5)। दिन में शत्रु द्वारा चलाए जाने वाले तीर से उन्हें कोई हानि न होगी क्योंकि प्रभु उनकी दृढ़ ढाल है। अन्धकार में फैलने वाली मरी और दिन दुपहरी में उजाड़ने वाला महारोग उनकी कोई हानि न कर पाएगा जिन्होंने प्रभु को अपना शरणस्थान बनाया था (91:6)। भजन 90 में हमने देखा कि विश्वासी एक पाप से शापित पृथ्वी पर रहता था। हमें बताया गया है कि प्रभु को अपना शरणस्थान बनाने वाले विजेता के रूप में रह सकते हैं। परमेश्वर की इच्छा न केवल हमारे व्यक्तिगत पाप पर विजय देने की है परन्तु उस पाप पर भी जिसने इस संसार में हमें चारों ओर से घेरा हुआ है।

भजनकार के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा यह है कि हज़ार और दस हज़ार हमारे एक ओर गिरेंगे परन्तु हमारा प्रभु परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा (91:7)। परमेश्वर का अनुग्रह हम पर होगा, हमें दुष्टता से सुरक्षा देते और बचाते हुए।

प्रभु में आशा रखनेवाले अपनी आँखों से दुष्टों के अन्त को देखेंगे (91:8)। अन्य शब्दों में, विश्वासी को उस दण्ड का अनुभव नहीं होगा क्योंकि उसके पाप क्षमा कर दिये गए हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम पाप और इस संसार की बुराई पर विजयी हों। हमारे मार्ग में आनेवाले किसी भी पाप से वह बड़ा है। यदि हम उस पर भरोसा करें तो उन पापों पर वह हमें विजयी करेगा।

भजन 91 के अन्तिम पदों में इस पाप से भरे संसार में रहनेवाले विश्वासियों के लिए एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा है। भजनकार यह प्रतिज्ञा करता है कि यदि हम परमप्रधान

को अपना शरणस्थान और धाम मान लें तो कोई विपत्ति हम पर नहीं पड़ेगी और न ही कोई दुख हमारे डेरे के निकट आएगा (91:10)। परमेश्वर अपने दूतों को आज्ञा देगा कि हमारे आने जाने में हमारी रक्षा करें (91:11)। ये दूत प्रभु को अपना शरण स्थान बनानेवालों की रक्षा करेंगे और उनके पांव में पत्थर से ठेस भी नहीं लगने देंगे (91:12)। प्रभु को अपना गढ़ बनानेवाले अपने जीवन की बाधाओं पर विजयी होंगे। वे नाग और सिंह को कुचलेंगे। पद 13 में विशेष बल ''जवान सिंह'' और ''अजगर'' पर दिया गया है। शैतान को सिंह (1पतरस 5:8) और अजगर (उत्पत्ति 3) दोनों ही बताया गया है। विश्वासी होने के कारण हम शैतान और उसके सभी प्रलोभन पर विजयी हो सकते हैं।

चूंकि विश्वासियों ने प्रभु परमेश्वर से प्रेम कर उसके नाम को जाना है, परमेश्वर उन्हें बचाने और उनकी रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है (91:14)। वह उससे प्रेम करनेवाले और उसे जाननेवाले विश्वासी की पुकार को सुनेगा। परमश्वेर उन्हें उनके संकटों से छुड़ाएगा और उनका आदर करेगा (91:15)। वह उन्हें दीर्घायु से तृप्त करेगा और अपने किये हुए उद्धार का दर्शन दिखाएगा (पद 16)।

हम यहां यह समझने की ज़रूरत है कि विश्वासी को एक पाप बुराई से भरी पृथ्वी पर रहने को बुलाया गया है। जबकि हमारे जीवन कभी भी पूर्णतया समस्याओं और संघर्षों से युक्त नहीं होंगे, प्रभु परमेश्वर को अपना शरण-स्थान बनाने वालों के लिए एक आशा है। प्रभु परमेश्वर की इच्छा है कि उसके लोग विजय में जीयें। वह हमें हमारे संकट के समय में उसे पुकारने और उसकी खोज करने को कहता है। हमें विजय और आनन्द देने में वह खुश होता है। संसार को उन विश्वासियों को देखने की ज़रूरत है जो विजय में रह रहे हैं। ऐसा केवल तब ही संभव है जब हम उसकी ओर फिरकर उसे अपना गढ़ और शरण-स्थान बनाते हैं। केवल वही हमें बचा सकता और हमें एक बुरे और पापी संसार में सुरक्षित रख सकता है।

विचार करने के लिए:

- प्रभु को अपना शरण-स्थान और धाम बनाने का क्या अर्थ है?
- भजन 90 में भजनकार परमेश्वर के बारे में कैसे बताता है? भजनकार परमेश्वर की किन विशेषताओं को अधोरेखित करता है?
- इन दो भजनों में हम प्रभु यीशु के बिना जीवन की व्यर्थता और उसके द्वारा दी जाने वाली क्षमा के बारे में क्या सीखते हैं?
- भजनकार हमें परमेश्वर की अपने लोगों को तृप्त करने और अपने आनन्द से भरने की इच्छा के बारे में क्या बताता है?
- क्या विश्वासी इस जीवन में दुख उठाएंगे? भजन 91 के अनुसार संकट के

समयों में हमारा भरोसा क्या होता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह एक पवित्र और अनन्त परमेश्वर है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि हमारे चारों ओर की बुराई के बावजूद, हम उसमें शरण पा सकते हैं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि आपके लिए उसकी इच्छा यह है कि आप पाप पर और इस पृथ्वी पर पड़ने वाले इसके प्रभाव पर विजय पाएं। प्रभु से आपको इस विजय को देने को कहें।
- कौन सी चीज़ आपको प्रभु की तृप्ति और आनन्द से दूर रखती है? प्रभु से आपको विजय देने को कहें।

82. प्रभु के नाम का भजन गाना भला है

पढ़ें भजन संहिता 92:1-93:5

भजनकार भजन 92 में अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि प्रभु का धन्यवाद करना और उसके नाम का भजन गाना भला है। संगीत और स्तुति के बीच हमेशा एक संबन्ध रहता है। ऐसा लगता है कि दाऊद विशिष्ट रूप में आराधना में संगीत का प्रयोग किये जाने के एक बड़े दर्शन को देखता है। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि स्वर्ग के दूत प्रभु परमेश्वर की स्तुति संगीत के साथ करते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9; 12, 14:3; 15:3)। इस्राएल की सन्तान ने जब सूखी भूमि पर से होकर समुद्र को पार किया और मिस्री सेना के नाश को देखा, मरियम ने प्रभु परमेश्वर द्वारा दिये छुटकारे के लिए प्रशंसा का गीत गाए जाने में स्त्रियों की अगुवाई की (निर्गमन 15:21)। बाइबल में हम बार-बार प्रभु परमेश्वर की आराधना किये जाने में संगीत के प्रयोग को देखते हैं। भजनकार हमें स्मरण कराता है कि प्रभु परमेश्वर के नाम का भजन गाना भला है। अन्य शब्दों में, यह ऐसी चीज़ है जो परमेश्वर के मन को आनन्द देती है।

भजन 92:2 में ध्यान दें कि लेखक अपने पाठकों को यह भी बताता है कि प्रात: काल को परमेश्वर की करुणा और प्रति रात दस तारवाले बाजे और सारंगी पर उसकी सच्चाई का प्रचार करना और वीणा पर गंभीर स्वर से गाना भला है। मैं यहां दो चीज़ों को बताना चाहता हूं। सबसे पहले, ध्यान दें कि प्रात:काल को करुणा या प्रेम का और रात को सच्चाई का प्रचार करना है। प्रत्येक दिन के अपने संघर्ष व पीड़ा होती हैं। सुबह उठने पर हमें परमेश्वर की करुणा या प्रेम के प्रति निश्चिंत होना है। प्रेम या करुणा का यह आश्वासन उस दिन के संघर्षों की ओर कदम बढ़ाने का हमें साहस देता है। हम जान पाते हैं कि हम अकेले नहीं हैं। रात में जब हम यह देख पाते हैं कि परमेश्वर ने कैसे हमें सुरक्षित रखा और हम पर अपने प्रेम व करुणा को दिखाया, तब हम उस दिन उसकी सच्चाई का प्रचार करने के योग्य हो पाते हैं।

इस पद में हमें जिस दूसरी चीज़ पर ध्यान देना है वह यह कि हम परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई का प्रचार संगीत के द्वारा कर सकते हैं। जिस संगीत के बारे में यहां बताया है वह उन स्त्री पुरुषों के मनों की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है जिन्होंने परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई का अनुभव किया होता है। वे प्रभु परमेश्वर की महिमा का गीतों

के द्वारा प्रचार करते हैं। गवाही के ये गीत ही व्यावहारिक उदाहरणों के द्वारा इसकी पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर अद्‌भुत प्रेम और सच्चाई का परमेश्वर है।

भजन 93 हमें बताता है कि प्रभु को उसके नाम से की जानेवाली आराधना में बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों से खुशी मिलती है। वाद्ययंत्र जबकि ज़रूरी नहीं हैं, वे परमेश्वर के मन को आनन्दित करनेवाले वैद्य रूपक हैं।

भजनकार के अपनी आराधना को संगीत के द्वारा व्यक्त किये जाने का कारण यह था कि प्रभु ने उसके लिए जो कुछ किया था उससे उसे आनंद मिला था। उसी आनन्द के कारण वह गाता है (92:4)। संगीत और गीत; आनन्द और खुशी की स्वाभाविक अभिव्यक्तियां हैं। जिनके मन में आनन्द व खुशी होती है वे गाना चाहते हैं। एक आभारी हृदय की अभिव्यक्ति के रूप में गीत के द्वारा उसे प्रगट करना परमेश्वर को अच्छा लगता है।

भजन 92:5 में भजनकार प्रभु परमेश्वर की स्तुति करता है। वह परमेश्वर को उसके कामों और उसके गहरे विचारों के लिए धन्यवाद देता है।

निर्जीव और मूर्ख व्यक्ति इसे नहीं समझता जबकि दुष्ट घास की नाईं फूलते हैं और सब अनर्थकारी प्रफुल्लित होते हैं, यह अस्थायी रूप से ही है (92:6-7)। परमेश्वर न्याय करेगा और बुराई का नाश होगा। परमेश्वर एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर है। जबकि बुराई को नाश किया जाएगा प्रभु सदा के लिए आदर पाएगा। उसके सभी शत्रु नाश होंगे। अनर्थकारी तितर-बितर हो जाएंगे। भजनकार परमेश्वर के न्याय और पवित्रता के कारण उसकी आराधना करता है। उसके मन को यह जानकर आनन्द मिला कि सत्य और धार्मिकता की अन्ततः जीत होगी।

भजन 92:10 में ध्यान दें कि भजनकार ने परमेश्वर की आराधना इसलिए की क्योंकि परमेश्वर ने उसके सींग को जंगली सांढ़ का सा ऊँचा किया था। सींग शक्ति का प्रतीक था। यह सांढ़ का हथियार होने के साथ-साथ उसकी शक्ति का भी प्रतीक था। परमेश्वर ने अपने दास के सामर्थ व बल को बढ़ाया और उसे विजय दी। भजन 92:10 में इस पर भी ध्यान दें कि भजनकार पर बढ़िया तेल उण्डेला गया है। यह इस बात का एक संकेत था कि प्रभु परमेश्वर ने उसे एक विशिष्ट सेवकाई या कार्य के लिए अभिषिक्त किया था। वह परमेश्वर का चुना हुआ था और एक विशेष पात्र के रूप में उसे परमेश्वर की सेवा करने और उसे आदर देने का मौका मिला था। इससे भजनकार के मन को भी आनन्द मिला था।

भजनकार को निश्चय था कि धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे या केदार के लाबानोन के समान बढ़ते रहेंगे (92:12)। प्रभु की आशीष धमियों पर थी। वे प्रभु के भवन में रोपे गए थे और हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले-फलेंगे (92:13)। वे

सभी जो प्रभु परमेश्वर के हैं एक दिन स्वर्ग में उसकी उपस्थिति में प्रवेश करेंगे और उसकी आशीष में सदा तक रहेंगे। तौभी, यह आशीष आनेवाले जीवन तक ही सीमित नहीं होगी। अब भी परमेश्वर की आशीष उन पर है जो उससे प्रेम करते और उसके मुख की खोज में रहते हैं। जो उसे आदर देते हैं वह उनका आदर करेगा। यदि आपको अपने जीवन की ओर देखने का समय दिया जाता, तो आप पर यह स्पष्ट हो जाता कि आप भी, परमेश्वर की सन्तान के रूप में, परमेश्वर की इस अद्‌भुत आशीष को अनुभव कर रहे हैं। यह प्रभु की स्तुति करने का कारण है।

भजन संहिता 92:14 में ध्यान दें कि जो प्रभु के हैं वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे। वे हमेशा ताज़े और हरे-भरे रहेंगे। परमेश्वर के साथ हमारा चलना कभी भी बासी नहीं होना चाहिए। यह सदा ताज़ा और नया रहना चाहिए। प्रभु के संबन्ध में हमारे अनुभव हमारे बुढ़ापे में भी बने रहेंगे। परमेश्वर जवान और शक्तिशाली लोगों का प्रयोग करने को ही सीमित नहीं है। वह हमारी मृत्यु के क्षण तक हमारा प्रयोग करना चाहता है। उसके प्रेम और सच्चाई के सदा नए और ताज़े अनुभव होंगे। हमें अपनी महिमा के लिए प्रयोग करने को उसकी सामर्थ के सदा नए प्रमाण होंगे। अपनी मृत्यु के अन्तिम दिन तक हम यह प्रचार करने पाएंगे ''यहोवा सीधा है; वह मेरी चट्टान है, और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं'' (92:15)।

भजन 93 में आगे बढ़ने पर भजनकार आराधना और स्तुति के इस विषय को जारी रखता है। चूंकि यहोवा राजा है और उसने माहात्मय का पहिरावा पहना है, इस कारण वह प्रभु को धन्यवाद देता है। वह सभी चीज़ों और सभी लोगों से ऊपर है। ध्यान दें कि राज्य करनेवाला प्रभु होने के कारण उसने महात्मय का वस्त्र पहना था। प्रताप या माहात्मय परमेश्वर का वह भाग है जो हमें आराधना में खड़े होने (या गिरने) के योग्य करता है। वह ऐसा परमेश्वर है जिसकी उपस्थिति ही हमें स्तुति और आराधना में गिर जाने के योग्य करती है।

प्रभु परमेश्वर ने न केवल माहात्मय के वस्त्र पहने हैं परन्तु सामर्थ का फेंटा भी बान्धा है। प्रभु परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। कोई भी चीज़ या व्यक्ति उस पर विजयी नहीं हो सकता। जिसे उसने स्थिर किया है उसे कोई हटा नहीं सकता। उसने अपनी आज्ञा से जो स्थिर किया है उसे न तो शैतान और न ही इस संसार के अगुवे कभी बदल सकते हैं। उसकी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है। कोई भी उसे उसके नियंत्रण और अधिकार से हटा नहीं पाएगा।

भजन 93:3 में भजनकार प्रभु की तुलना महासागर से करता है। इस महासागर ने बड़ा स्वर किया और अपनी शक्तिशाली लहरों से किनारों को तोड़ दिया है। तथापि प्रभु परमेश्वर महासागर द्वारा अपनी शक्तिशाली लहरों से किनारों को तोड़े जाने से भी

अधिक शक्तिशाली है। तूफान की गरजन और तूफान में होने वाली शक्तिशाली वर्षा से प्रभु अधिक सामर्थी है। प्रभु जिसकी आज्ञा दे देता है वह स्थिर रहता है और उसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। पवित्रता ने उसके घर को अनन्तकाल तक के लिए भर दिया है। पवित्रता का संबन्ध उससे होता है जो भला और उचित होता है। यह परमेश्वर की एक विशिष्टता है जिसमें कभी परिवर्तन नहीं होगा। वह जो कुछ भी करता है या कभी करेगा पवित्र और भला है।

प्रभु परमेश्वर और उसके कार्यों पर विचार करने पर भजनकार का हृदय स्तुति और आराधना करने को प्रेरित होता है। उसने परमेश्वर के प्रेम, न्याय, पवित्रता, प्रताप व शक्ति पर विचार किया। उसने याद कि कैसे परमेश्वर उसकी चट्टान, शरण और बल रहा था। उसने स्मरण किया कि कैसे परमेश्वर ने उसे अभिषिक्त किया और अपने दास के रूप में उसे बलवन्त किया था। उसका मन इस बारे में प्रभु के गीत गाने लगा जो वह था और जो उसने किया था। काश कि हममें भी ऐसा ही मन हो।

विचार करने के लिए:

- इन भजनों से हम परमेश्वर की आराधना में संगीत के स्थान के बारे में क्या सीखते हैं?
- भजनकार ने प्रभु की आराधना इसलिए की क्योंकि उसने जो भी किया वह भला और उचित था। क्या आप कभी ऐसे समय में रहे हैं जब आपको उस पर आश्चर्य हुआ हो जो परमेश्वर कर रहा था? इससे आपको आज क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- परमेश्वर आपका रक्षक कैसे रहा है?
- अन्तिम समय की कुछ घटनाओं पर ध्यान देने को कुछ समय निकालें। परमेश्वर ने आप पर अपनी सच्चाई को कैसे दिखाया है?
- इन भजनों में हम परमेश्वर की संतान के जीवनों में उसके उद्देश्यों के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- उनके लिए प्रभु को धन्यवाद दें जिनके संगीत के दान ने हमारी प्रभु के लिए की जाने वाली आराधना को बढ़ाया है।
- इन दो भजनों में पाए जाने वाले परमेश्वर के विविध गुणों पर कुछ समय के लिए विचार करें। परमेश्वर को उसके लिए धन्यवाद दें जो वह है।
- परमेश्वर कैसे आपकी चट्टान और बल रहा है? आपके प्रति उसकी सच्चाई और करुणा के प्रयोग के लिए कुछ समय उसे धन्यवाद देने को निकालें।

83. पलटा लेनेवाला ईश्वर

पढ़ें भजन संहिता 94:1-23

भजन 94 उस परमेश्वर के बारे में भजन है जो पाप का पलटा लेता है। विश्वासी के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब ऐसा लगता है कि बुरे लोगों के अपने अलग मार्ग हैं। कलीसिया के संपूर्ण इतिहास में सताव के कई समय रहे हैं। उन समयों में ऐसा लगता था मानो बुराई विजयी हो रही है। दुष्ट स्त्री और पुरुष परमेश्वर और उसके सिद्धान्तों के विरुद्ध निर्भीकता से खड़े रहे। ऐसा लगता था कि विश्वासी को निराशा में न्याय की पुकार करने को छोड़ दिया गया था। जिस समय भजनकार ने इस भजन को लिखा उसकी स्थिति ऐसी ही थी।

पद 1 में ध्यान दें कि निराशा में भी भजनकार को इस सच्चाई से आराम मिला कि प्रभु पाप का पलटा लेनेवाला परमेश्वर था। अन्य शब्दों में, इस बुराई के समय में जो हो रहा था परमेश्वर उससे अनजान नहीं था। दुष्ट लोग जो उसकी सन्तान के साथ कर रहे थे उसने उसे देखा था। वह दिन आ रहा था जब वह उन्हें उनके कामों का लेखा देने को बुलाएगा। परमेश्वर का समय हमारे समय के अनुसार नहीं है। उसके मार्ग कई बार सीमित मानव मन के लिए संदेह में डालनेवाले होते हैं। परमेश्वर एक पलटा लेनेवाला परमेश्वर है। वह उठेगा और उस समय के पाप और बुराई से निपटेगा।

भजनकार की पुकार प्रभु परमेश्वर के लिए इस बुरे समय में उठने को थी। वह उसे पृथ्वी के न्यायी के रूप में बुलाता है कि घमण्डियों को बदला दे। उन्होंने देश में बहुत बुराई की थी। ऐसा लगता था कि वे बिना रुके अपने बुरे मार्गों पर बने थे। उन्होंने बुराई में आनन्द किया और इससे बहुत लाभ कमाया। उन्होंने अपनी उपलब्धियों पर डींग मारी (पद 4)। उन्होंने परमेश्वर के लोगों को सताया व पीस डाला (पद 5)। उन्हें विधवा और परदेशियों की कोई चिन्ता नहीं थी। उन्होंने इन्हें घात किया और अनाथों को मार डाला (पद 6)। उन्हें लगा कि वे जो कुछ कर रहे थे परमेश्वर उसे नहीं देख रहा था। संभवत: इसका कारण यह भी हो सकता है कि वे जो कर रहे थे उससे अलग हो जाते थे।

हमारे समाज में आज बहुत से ऐसे हैं जो इसी तरह से सोचते हैं। वे अपनी अनाज्ञाकारिता और पाप को यह कहते हुए सही ठहराते हैं कि यदि प्रभु उन्हें रोकना चाहे तो वे रुक सकते हैं। भजनकार ने अपने दिनों के अनर्थकारियों को उनकी

विचारधारा पर चुनौती दी। उसने उन्हें याद दिलाया कि यह विचार करना कितना मूर्खतापूर्ण था कि परमेश्वर उनके पाप को नहीं देख रहा था। ''जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता? जिसने आँख रची, क्या वह आप नहीं देखता?'' पद 9 में वह पूछता है। यह सोचना कितना मूर्खतापूर्ण होगा कि हमारी आँखों और कानों का बनाने वाला स्वयं न तो देखता और न सुनता है। जो हो रहा है परमेश्वर उसे देखता है। उसे पता है कि हमें कैसे सताय जाता है। वह हमारे विरुद्ध बोले गए प्रत्येक शब्द को सुनता है।

पवित्रशास्त्र में इसका स्पष्ट प्रमाण था कि परमेश्वर देशों को उनके पाप के कारण दण्ड देता है। मूसा के दिनों में मिस्री जाति ने इस्राएलियों को सताया था। परमेश्वर ने मिस्र को दण्ड दिया। वह देश का उसके घुटनों पर ले आया। एक व्यक्ति के लिए ऐसा कहना कितना मूर्खतापूर्ण होगा कि परमेश्वर उसे उसकी बुराई के लिए दण्डित नहीं करेगा जबकि वह संपूर्ण राष्ट्र को उसके पाप के कारण नीचे ला रहा हो।

परमेश्वर असीमित बुद्धि का परमेश्वर है। मनुष्य परमेश्वर को किसी भी चीज़ के बारे में सिखा नहीं सकता है। हमारे द्वारा सीखी गई कोई भी चीज़ परमेश्वर की ओर से ही है। वह सभी बुद्धि और ज्ञान का स्त्रोत है। यह कहना कितना मूर्खतापूर्ण है कि जो हम कर रहे हैं परमेश्वर उसे नहीं जानता। परमेश्वर को प्रत्येक चीज़ का ज्ञान है। उससे कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता। हमारे समाज की समस्त बुराई उसके सम्मुख खुली है। एक सर्व-ज्ञानी परमेश्वर से हम कुछ नहीं छिपा सकते हैं।

विश्वासी भी पाप में गिरते हैं। परमेश्वर को यह पता है और वह अपनी संतान के सत्य में बने रहने को उन्हें अनुशासित करेगा। भजनकार हमें याद दिलाता है कि यदि प्रभु हमारी ताड़ना करता है या हमें अनुशासित करता है तो हम धन्य लोग हैं (पद 12)। प्रभु को अनुशासन हमें बुराई और हमारे जीवनों में इसके प्रभाव से बचाने के उद्देश्य से है। अपने बच्चों को अनुशासित करने पर हम उन्हें उस मार्ग पर चलने का प्रशिक्षण देते हैं जिस पर उन्हें चलना है। अनुशासन उन्हें पाप में गिरने से बचाए रहेगा। परमेश्वर अपने बच्चों को उस बुराई से बचाने के साथ-साथ जो उनका नाश कर सकती है उन्हें अनुशासित भी करेगा।

तथापि दुष्टों के लिए पद 13 हमें बताता है कि दुष्टों के लिए गड़हा खोदा जाएगा। अन्य शब्दों में, उनके विनाश का दिन आएगा। प्रभु का अनुशासन हमें अनर्थकारियों की नियति से बचाएगा। प्रभु का न्याय, तथापि, दुष्टों का नाश करेगा।

परमेश्वर उन्हें नहीं छोड़ेगा जो उसके हैं। वह अपनी मीरास को नहीं छोड़ेगा। प्रभु बुराई का न्याय करने को उठेगा। यद्यपि कुछ समय के लिए ऐसा लगता है कि बुराई जीत रही है इसका अन्त आ रहा है। एक धर्मी परमेश्वर होने के कारण हमारा परमेश्वर

उठकर बुराई पर विजयी होगा।

इस जीवन में ऐसे भी समय होंगे जब हम आस-पास की बुराई से स्वयं को पराजित अनुभव करेंगे। भजनकार स्वयं में ऐसा अनुभव करता है। 16-17 पदों में उसने अपने पाठकों को बताया कि अपने दिनों की बुराई में वह मर भी सकता था। उसे ऐसा लगा था उसका पांव फिसलने लगा है। बोझ इतना बड़ा था कि मानो वह इसके नीचे गिरने वाला था। तौभी, ऐसे समय में प्रभु ने उसके पास पहुंचकर उसे सहारा दिया ताकि वह दृढ़ खड़ा रह सके (पद 18)।

भजनकार के जीवन में ऐसे भी समय रहे थे जब उसके मन में बहुत सी चिन्ताएं होती थीं। जीवन का तनाव और संघर्ष इतना अधिक था कि ऐसा लगता था मानो पीड़ा व दर्द ने उसके मन को भर दिया है। उन दिनों में परमेश्वर ने उसे शान्ति दी और उसकी आत्मा को आनन्द दिया। परिस्थितियां बदली नहीं परन्तु भजनकार अपनी स्थिति में प्रभु के आनन्द को अनुभव करने के योग्य हो सका।

अपने चारों ओर की दुष्टता को देखने पर भजनकार को पता था कि यह शक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं थी। पद 20 में उसने अपने पाठकों को याद दिलाया कि दुर्दशा लानेवाली इन शक्तियों का परमेश्वर के साथ कोई मेल नहीं होगा। ये पीड़ा देने वाली शक्तियां थीं जिनकी इच्छा केवल अपनी बुरी योजनाओं को पूरा करने की थी। उन्हें परमेश्वर और उसके मार्गों की कोई चिन्ता नहीं थी। वे शत्रु थे। ये बुरी शक्तियां धर्मी के विरुद्ध एक हो गई थीं। वे निर्दोष की मृत्यु के दोषी थे। वे दुष्ट थे।

बुराई के राज्य करने पर धर्मी व्यक्ति कहां जा सकते हैं? भजनकार पद 22 में हमें बताता है कि दुष्ट शक्तियों का नियंत्रण होने पर परमेश्वर अपने लोगों के लिए गढ़ और चट्टान होता है। वह अपने प्रियों की रक्षा करने के साथ-साथ इन दिनों में उन्हें बचाकर रखेगा। वह बुरे अगुवों को उनके पाप का बदला देगा। वह उनके दुष्ट मार्गों के लिए उनका नाश करेगा।

इस भजन में हम यह पाते हैं कि ऐसे भी समय होते हैं जब देश में बुराई का राज्य दिखता है। परमेश्वर सदैव बुराई को नहीं रोकेगा परन्तु वह अपने लोगों को इससे बचाने के साथ-साथ उनकी रक्षा भी करेगा। वह दिन आ रहा है जब प्रभु परमेश्वर अपने लोगों का पलटा लेगा। जो उनके साथ किया जाता है उसके प्रति वह अन्धा नहीं है। उसने अपमान को सुना है। वह हमारे दर्द को अनुभव करता है। यद्यपि वह कुछ समय के लिए ठहर गया था लेकिन वह समय आ रहा है जब वह उठकर न्याय करेगा।

विचार करने के लिए:

- आज आपके समाज में पाप का क्या प्रमाण है?
- क्या परमेश्वर का समय हमारे समय के समान है? यह आपके व्यक्तित्व को कैसे प्रभावित करता है?
- क्या परमेश्वर हमेशा लोगों को पाप करने से रोकता है? स्पष्ट करें। क्या इसका अर्थ यह है कि वह न्याय नहीं करेगा।
- क्या परमेश्वर हमेशा पाप और बुराई को देखता है?
- प्रभु के अनुशासन का क्या उद्देश्य है? प्रभु का अनुशासन इससे प्रशिक्षण पानेवालों के लिए कैसे एक आशीष है?
- क्या विश्वासी बुरे लोगों के हाथों दुख उठाते हैं? इस भजन में आपको क्या शांति मिलती है?

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय अपने चारों ओर की बुराई के लिए प्रार्थना करने को निकालें। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह बुराई का न्याय करेगा?
- आज आपके संघर्ष में परमेश्वर से आपको उसके समय के लिए प्रतीक्षा करने का अनुग्रह देने को कहें।
- प्रभु से आपको अपने जीवन में उसके अनुशासन को लेने और उस शिक्षा को सीखने का अनुग्रह देने को कहें जो वह आपको सिखाना चाहता है।
- इस पृथ्वी पर आपके दुख और संकट के समय में परमेश्वर से आपको उस पर भरोसा करने का अनुग्रह देने को कहें।

84. आनन्द से ऊँचे स्वर से गाना

पढ़ें भजन संहिता 95:1-96:13

भजन 95 और 96 में भजनकार के हृदय की पुकार परमेश्वर के लोगों को उसकी सुन्दरता को जानते व एक अद्‌भुत और आनन्दपूर्ण आराधना में उसके सामने झुकते हुए देखने की है। ये दो भजन हमें हमारे अद्‌भुत परमेश्वर की आराधना करने को कहते हैं।

आरम्भ में ही भजनकार परमेश्वर के लोगों को आराधना करने के लिए कहता है (95:11)। ध्यान दें कि इस बुलाहट में वह स्वयं को कैसे जोड़ता है। ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के वचन पर विचार करने को उसकी सुनने के लिए ही चर्च जाते हैं। यह अच्छा है, परन्तु परमेश्वर के वचन पर विचार करने से अधिक आराधना में समय बिताना भी ज़रूरी है। भजनकार के लिए आराधना में संगीत और गाना आता था। तौभी, ध्यान दें कि भजनकार ने विशिष्ट रूप से बताया कि गाना आनन्दित होने के लिए था। बहुत से गाने गाए जाते हैं जो कि परमेश्वर की आराधना करना नहीं है। आराधना में मन का व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण है। भजनकार आनन्दित मनों के लिए कहता है। ये मन इसलिए आनन्दित थे क्योंकि इन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया था और उस आनन्द का अनुभव कर रहे थे जो प्रभु ने उनके प्राणों में दिया था। यहां बताया गया संगीत वह संगीत है जो प्रभु द्वारा की गई अदभुत चीज़ों को आनन्द से बढ़ाने पर केन्द्रित है।

भजन 95:1 में भी ध्यान दें कि प्रभु की आराधना में ऊंचे स्वर से गाने का भी एक स्थान है। पुन: मन का व्यवहार महत्वपूर्ण है। गाने के साथ-साथ ऊँचा स्वर करने की भी एक किस्म होती है जो कि परमेश्वर की आराधना करना नहीं है। ऐसे भी हैं जो दूसरों को सुनाने के लिए ऊँचा स्वर निकालते हैं। वे चाहते हैं कि लोग उनके बारे में उच्च विचार रखें इस तरह से ऊँचा स्वर निकालना आत्म-केन्द्रित और परमेश्वर को आदर न देनेवाला होता है।

हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि आराधना ऊँचे स्वर के साथ नहीं बढ़ती। ऊंची आवाज़ के साथ-साथ शांत विचार करने में भी परमेश्वर की आराधना होती है। भजनकार यहां जिस ऊंचे स्वर के बारे में बतता है वह इस इच्छा के साथ की जानेवाली आराधना है कि सभी हमारे परमेश्वर को एक अद्‌भुत परमेश्वर के रूप में

जानें। हमें अपने चारों ओर वालों को उसके महत्व के बारे में बताने को ऊंचा स्वर करना है। हम ऊँचे स्वर से इसलिए बोलते हैं क्योंकि हम उसे अपना परमेश्वर कहने से नहीं शर्माते। हम ऊंचा स्वर इसलिए करते हैं ताकि दूसरे उस पर ध्यान दें और उसे अपनी चट्टान व उद्धार के रूप में जानें।

भजनकार अपने लोगों को प्रभु के सामने धन्यवाद करते हुए आने का निमंत्रण देता है (95:2)। ऊंचे स्वर से गाना हमारे आस-पास वालों को उसके महत्व के बारे में बताता है। धन्यवाद देना अधिक व्यक्तिगत है। यह एक व्यक्ति के जीवन में परमेश्वर की भलाई को व्यक्तिगत रूप से जानना है। हमें परमेश्वर की आराधना उन अद्भुत चीज़ों के लिए धन्यवाद करते हुए करनी चाहिए जो उसने हमारे लिए की हैं।

भजन 95:2 में फिर से ध्यान दें कि भजनकार अपने लोगों को जयजयकार के साथ धन्यवाद देते हुए परमेश्वर के पास आने को कहता है। ''जयजयकार'' शब्द इब्री में ऊँचे स्वर या चिल्लाने को बताता है। यह एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग एक विजयी सेना के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय पाने पर ऊंचे स्वर से आनन्द सहित चिल्लाने के लिए किया जा सकता है। किंग जेन्स संस्करण ''जयजयकार करना'' वाक्यांश का प्रयोग करता है। यहां भाव यह है कि परमेश्वर के लोगों को विजयी योद्धा के समान आकर उन विजयों के लिए जयजयकार करना और धन्यवाद देना है जो उनके प्रभु परमेश्वर ने उन्हें दी थी। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि इस ''जयजयकार के संगीत और गीत'' के साथ किया जाना था।

भजन 95 के पहले दो पदों में भजनकार अपने लोगों को प्रभु की आराधना संगीत व ऊंचे स्वर से गाने और धन्यवाद के साथ करने को बुलाता है। आगे वह अपने पाठकों से यह भी चाहता है कि वे यह समझें कि उन्हें इतने उत्साह के साथ प्रभु की आराधना क्यों करनी थी।

भजन 95:3 में वह हमें बताता है कि चूंकि परमेश्वर एक महान परमेश्वर और सारे देवताओं के ऊपर राजा है, इसी कारण वह हमारी स्तुति के योग्य है। भजनकार के दिनों में बहुत से इधर-उधर के देवता थे। ये झूठे देवता थे परन्तु उनकी आराधना बहुतों द्वारा की जाती थी। इनमें से किसी भी देवता की तुलना इस्राएल के परमेश्वर से नहीं की जा सकती थी।

इस्राएल का परमेश्वर अन्य देशों के देवताओं से महान था, चूंकि पृथ्वी के गहरे स्थान उसके हाथ में थे और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की थीं। समुद्र उसका था क्योंकि उसी ने उसको बनाया और स्थल भी उसके हाथ से रचा गया था। प्रभु परमेश्वर पृथ्वी का बनानेवाला है जैसा हम जानते हैं। उसकी सामर्थ और बुद्धि को सृष्टि के विस्तार में देखा जा सकता है। किसी और देवता में इतनी सामर्थ और बुद्धि

नहीं है। सृष्टिकर्त्ता होने के कारण उसका समस्त संसार पर नियंत्रण है। उसे इसकी चिन्ता है और सभी का स्त्रोत वही है। जीवन का रचयिता और बनाए रखने वाला होने के कारण यह परमेश्वर अपने लोगों की प्रशंसा पाने के योग्य है।

भजन 95:6 में आराधना के दूसरे रूप पर ध्यान दें। भजनकार अपने लोगों को आराधना में झुकने और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकने को कहता है। हम उसके सामने झुकते या घुटने टेकते हैं जो हमसे बड़ा होता है। परमेश्वर की उपस्थिति में आने पर हम यह जान पाते हैं कि हम उसकी उपस्थिति में खड़े होने के योग्य भी नहीं हैं। बाइबल उन व्यक्तियों के बारे में बताती है जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने के योग्य नहीं थे (देखें प्रकाशितवाक्य 22:8 और यहेजकेल 3:23)। झुकना या घुटने टेकना आराधना की एक अभिव्यक्ति या उसके महत्व और महात्मय को जानना है। यह उसकी उपस्थिति में हमारे खड़े होने की अयोग्यता को भी जानना है।

हमने देखा कि प्रभु परमेश्वर पृथ्वी का रचयिता और शासक है। भजन 95:6-7 में आराधना के दूसरे कारण पर ध्यान दें। इन दो पदों में भजनकार ने अपने लोगों को स्मरण कराया कि यह महान और अद्वितीय परमेश्वर उनका चरवाहा भी था और वे उसकी चराई की भेड़े थे। कितना अद्‌भुत विचार है। इस पृथ्वी का रचयिता और बनानेवाला हमारी चिन्ता वैसे करता है जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों की करता है। इससे बड़ी शांति और सुरक्षा हमारे लिए और कोई नहीं हो सकती। कोई भी शत्रु हमें हरा नहीं सकता। कोई भी हथियार हमें नाश नहीं कर सकता। उसके बाड़े में हम सुरक्षित हैं। भजनकार इसी कारण स्तुति और आराधना करता है।

भजन 95 के अन्त में, भजनकार अपने लोगों को एक चेतावनी देता है। उसने उन्हें इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के अद्वितीय स्वभाव को स्मरण कराया और कि कैसे उसने अपनी भेड़शाला की भेड़ के समान उनकी निगरानी की थी। इस बात की सदा ही संभावना थी कि इस अद्‌भुत परमेश्वर के प्रति समर्पण करने या उसकी आराधना करने के बजाय उसके लोग उससे मुंह फेर लेंगे। इसी कारण भजनकार उनसे अपने मनों को वैसे कठोर न करने की चेतावनी देता है जैसे उन्होंने मरीबा में किया था। मरीबा का संदर्भ निर्गमन 17 का संदर्भ था जहां परमेश्वर के लोगों ने मूसा से शिकायत की जब उनके पीने को पानी नहीं था। यद्यपि परमेश्वर ने कई बार अपने को उन पर विश्वासयोग्य प्रमाणित किया था, तौभी उन्होंने उस पर भरोसा करने से इन्कार कर दिया था। परमेश्वर इससे क्रोधित था। जबकि परमेश्वर के लोगों को उसकी प्रशंसा करनी चाहिए थी, उन्होंने शिकायत की। शिकायत आराधना और स्तुति के प्रतिकूल है। शिकायत स्वाभाविक रूप से शत्रु की प्रशंसा करना है। प्रभु के चरित्र का जयजयकार करने के बजाय, शिकायत उसका अपमान करती और उसके मार्गों की

आलोचना करती है। जहां कहीं भी शिकायत होती है, वहां आराधना और स्तुति नहीं हो सकती। भजनकार ने अपने लोगों को शिकायत करने और अपने प्रभु परमेश्वर के लिए अपने मनों को कठोर करने के खतरे की चेतावनी दी।

ध्यान दें कि भजन 96 में आगे बढ़ने पर भजनकार अपने लोगों को यहोवा के लिए एक नया गीत गाने को कहता है। यहां ''नया'' शब्द महत्वपूर्ण है। पुराने गीतों में कोई खराबी नहीं है। वे हमारे आत्मिक पिताओं और माताओं के विश्वास की अभिव्यक्ति हैं। हम उनके साथ गा सकते और उनके विश्वास अनुभवों को जान सकते हैं। तौभी, एक नया गीत इस वर्तमान पीढ़ी की अभिव्यक्ति है। यह जाना जाता है कि परमेश्वर अब भी जीवित है और वर्तमान समय में काम कर रहा है। हमारे चारों ओर के संसार के लिए यह एक कथन है कि परमेश्वर हमारे पिताओं और माताओं के परमेश्वर से अधिक है। वह हमारा परमेश्वर भी है और हमारी स्तुति योग्य भी है। वह आश्चर्य और अद्वितीयता का भी परमेश्वर है। इन नये गीतों के द्वारा हम हमारे दिनों में उसके अद्‌भुत उद्धार के बारे में बताते हैं।

तथापि भजन 96:3 आराधना के अन्य रूप को प्रगट करता है। यहां भजनकार हमें जातियों में उसकी महिमा का और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करने को कहता है। वर्णन शब्द का ''बताना'' या ''बोलना'' भी अनुवाद किया जा सकता है। मुख्य विचार यहां यह है कि जहां भी हम जाते हैं वहां हमें परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों को बताना है। वर्णन करना इस बात को प्रमाणित करना है जो परमेश्वर कर रहा है। यह जारी रहनेवाले आधार पर लोगों के साथ हमारे संबन्ध में रूप लेता है। यह हमारे कार्य में या दूसरों के साथ हमारी बातचीत में रूप ले सकता है। भजनकार की इच्छा यह है कि सारा संसार यह जाने कि परमेश्वर एक अद्‌भुत परमेश्वर है। वह हमें बताता है कि जहां कहीं भी हम जाएं हम उसकी महिमा को 'बताएं' यह आराधना का एक कार्य है।

भजनकार ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि उन्हें परमेश्वर की महिमा को इसलिए बताना है क्योंकि वह एक महान परमेश्वर है जो सारी स्तुति या प्रशंसा पाने के योग्य है (96:4-6)। उसका सभी देवताओं से अधिक भय माना जाना चाहिए क्योंकि उसने ही स्वर्ग को बनाया है। सभी अन्य देवता मूरतें ही थे जिनमें कोई शक्ति या अधिकार नहीं था और भय माने-जाने के योग्य नहीं थे।

न केवल इस्राएल का परमेश्वर पृथ्वी का रचयिता था परन्तु भजन 96:6 के अनुसार वह विभव, ऐश्वर्य, सामर्थ और शोभा का भी परमेश्वर था। उसकी उपस्थिति ने आश्चर्य और आदर को प्रेरित किया था। उसकी उपस्थिति को अनुभव करने के लिए उसका भय मानना था।

भजनकार अपने पाठकों को प्रभु की महिमा और शक्ति के बारे में बताता है जारी रखता है (96:7-8)। वह अपने लोगों को परमेश्वर के चरित्र को जानने और उसके बारे में इसे बताने को बुलाता है। हम ऐसा लोगों के साथ उस समय करते हैं जब हम उन्हें उनके महत्व को स्मरण कराते हैं। हम अपने पतियों या पत्नियों से कह सकते हैं कि वे सुन्दर हैं। हम अपने मित्र को उसकी उदारता व दयालुता को स्मरण करा सकते हैं। परमेश्वर की आराधना में हम परमेश्वर को उसके महत्व व योग्यता के बारे में बताते हैं। परमेश्वर पहले से ही इन चीज़ों के बारे में जानता है परन्तु उसे हमसे इसे सुनने में खुशी मिलती है।

भजन 96:8 में भजनकार अपने लोगों को आराधना के अन्य रूप के लिए बुलाता है। वह उनसे भेंट लेकर उसके आंगनों में आने को कहता है। भेंट एक त्यागपूर्ण बलिदान होता है जो परमेश्वर पर यह व्यक्त करता है कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं। जैसे, हम अपने उपहार उन्हें देते हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं उन्हें हमारी भावनाओं की याद दिलाने को; वैसे ही परमेश्वर के साथ हमारी भेंट देने में होता है। हमें यहां यह स्मरण कराए जाने की ज़रूरत है कि सभी भेंटें आराधना की अभिव्यक्ति नहीं होती हैं। पुन: मन का व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण है।

भजन 96:9 में भजनकार आगे अपने लोगों को परमेश्वर उसके सामने कांपते रहने को कहता है। यहां बताए गए कांपने को परमेश्वर की पवित्रता के साथ करना है। कांपना भय के बारे में बताता है। परमेश्वर के सामने कांपते हुए आने पर हम यह जानते हैं कि हम पापी हैं। हम यह जानते हैं कि हम एक पवित्र और महिमामयी परमेश्वर के सामने आ रहे हैं। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हम हल्के रूप से नहीं ले सकते। उसकी क्षमा और अनुग्रह के बिना हम बिल्कुल नहीं आ सकते हैं। यहां जिस कांपने को बताया गया है वह स्वयं में आराधना का एक कार्य है। यह न केवल परमेश्वर की पवित्रता को मानता है परन्तु उसके अनुग्रह और दया को भी। ध्यान दें कि भजनकार हमसे परमेश्वर के ''सामने'' कांपने को कहता है। यह सच्चाई कि हमें इसे परमेश्वर के ''सामने'' करना है हमें दिखाती है कि हमें अपने कांपने को परमेश्वर से दूर नहीं रखना है। इसके विपरीत हमें कांपते हुए उसके सामने आना है यह जानते हुए कि हम उसकी दया और अनुग्रह के आधार पर उसके पास आ सकते हैं।

परमेश्वर के सामने कांपते हुए आने पर हमें यह मानना है कि प्रभु परमेश्वर राज्य करता है। अर्थात् वह सभी का प्रभु है। वह प्रशंसा और आदर के योग्य है क्योंकि वह इस सृष्टि पर राज्य करनेवाला प्रभु है। उससे बड़ा कोई भी अधिकार या शक्ति नहीं है। उसने जगत को ऐसा स्थिर किया कि वह टल नहीं सकता। सर्वशक्तिमान प्रभु होने के कारण उसके उद्देश्य दृढ़ रहेंगे। उसके विरुद्ध कोई भी शक्ति टिक नहीं सकती।

स्वर्ग या नर्क की ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है जो उसके उद्देश्यों में विघ्न डाल सके।

परमेश्वर के सामने कांपते हुए आने पर, हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि वह एक ऐसा परमेश्वर है जो सीधाई से न्याय करता है (96:10)। अन्य शब्दों में, उसके न्याय हमेशा सही और उचित होते हैं। वह कोई पक्षपात नहीं करेगा। समाज में हमारा चाहे कोई भी स्थान हो, उसके न्याय करने पर इसका कोई अर्थ नहीं रहता है।

भजनकार के अनुसार हमें प्रभु के सामने आनन्द के साथ भी आना है। उसने आकाश और पृथ्वी को प्रभु के सामने आनन्दित होने को बुलाया। मैदानों को प्रफुल्लित होना है। पेड़ों को आनन्द से जयजयकार करना है। उन्हें ऐसा इसलिए करना है क्योंकि परमेश्वर धार्मिकता और सच्चाई से पृथ्वी का न्याय करने को आ रहा है। बुराई कभी विजयी नहीं होगी। पाप और दुष्टता को तोड़ा जाएगा। धर्मी राज्य करेंगे। यह अद्‌भुत समाचार था। यह खुश होने और आनन्द से जयजयकार करने का कारण था।

इन दो भजनों में भजनकार हमें परमेश्वर भी आराधना करने को बुलाता है। वह हमें स्मरण कराता है कि आराधना एक बासी अभिव्यक्ति नहीं है परन्तु इसके बहुत से आयाम है। आराधना परमेश्वर के लोगों का उसके प्रति आभार प्रगट करना है। यह आनन्द, त्याग व भय की अभिव्यक्ति है, न केवल परमेश्वर के लिए परन्तु उनके लिए भी जो इसे सुनते हैं।

विचार करने के लिए:

- ये भजन आराधना की भिन्न अभिव्यक्तियों के बारे में हमें क्या सिखाते हैं? इन दो भजनों में आराधना की भिन्न अभिव्यक्तियां कौन सी हैं?
- परमेश्वर हमारी प्रशंसा पाने के योग्य क्यों है? इन भजनों में भजनकार द्वारा आराधना किये जाने के कुछ कारण कौन से हैं?
- शिकायत आराधना का शत्रु क्यों है? जो परमेश्वर कर रहा था क्या आप उसकी शिकायत करने के दोषी रहे हैं?
- आराधना में मन के व्यवहार का क्या महत्व है?

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय प्रभु से आपकी आराधना की अभिव्यक्तियों को विस्तृत करने को कहने के लिए निकालें। अन्य शब्दों में, उससे कहें कि वह आपको इन दो भजनों में बताई आराधना की विविध अभिव्यक्तियों को सिखाए।
- प्रभु से आराधना में आपके मन के व्यवहार की जांच करने को कहें। उससे आपको एक आनन्दित और समर्पित मन देने को कहें।
- प्रभु से आपको किसी भी उस शिकायत के लिए क्षमा करने को कहें जो

आपने अपने जीवन में उसके मार्गों और उद्देश्यों को लेकर की है। उससे कहें कि वह आपकी शिकायत को स्तुति और शुक्रगुज़ारी में बदल दे।

- कुछ समय प्रभु के लिए अपनी आराधना को व्यक्त करने के लिए निकालें, उसके लिए जो वह है और जो उसने किया है।

85. हमारा राज्य करनेवाला प्रभु

पढ़े भजन संहिता 97:1-98:9

भजन 97 और 98 प्रभु परमेश्वर की प्रशंसा के भजन हैं उसके लिए जो वह है और जिन महान चीज़ों को उसने किया है। भजनकार भजन 97 में स्पष्ट घोषणा के साथ आरम्भ करता है कि प्रभु राज्य करता है। वह प्रभुओं का प्रभु है। स्वर्ग और पृथ्वी की शक्तियां उसके आधीन हैं। इतिहास की सभी घटनाओं, परिस्थितियों और लोगों पर उसका नियंत्रण है। भजनकार के लिए यह एक महान समाचार था। इस्राएल के परमेश्वर के राज्य करना आनन्द मनाने का एक बड़ा कारण था। उससे महान कोई प्रभु नहीं हो सकता। उसमें वह सुरक्षित व आश्वस्त था। भजनकार पृथ्वी के दूरे के किनारों को आनन्द मनाने को कहता है, क्योंकि परमेश्वर, इस्राएल का प्रभु, राज्य करनेवाला राजा और प्रभु था।

भजन 97:2 में ध्यान दें कि परमेश्वर का राज्य सामान्य राज्य नहीं था। बादल और घने अन्धकार ने उसे चारों ओर से घेरा हुआ था। जबकि अन्धकार को सामान्य बुराई के साथ जोड़ा जाता है परन्तु यहां ऐसा नहीं है। वास्तव में, चारों ओर से घिरा होना हमारे लिए उसके लोगों के रूप में उसकी दया और करुणा का परिणाम है। उसकी पवित्रता और प्रताप हमें भस्म करनेवाला है, इस कारण वह अपने मुख को ढांकता है ताकि हम नाश न हों।

निर्गमन 33:18 में मूसा ने प्रभु से उसकी महिमा को दिखाने के लिए कहा। परमेश्वर ने उसे यदि दिलाया कि कोई भी उसके मुख को देखकर जीवित नहीं रह सकता है। परमेश्वर ने तौभी मूसा पर अपनी कुछ महिमा को प्रगट किया, उसने अपने को एक चट्टान के पीछे छिपा कर स्वयं को ढांक लिया ताकि महिमा को देखने पर मूसा भस्म न हो। भजनकार यहां इस बारे में बता रहा है। वह बताता है कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर इतना महिमामयी और पवित्र था कि उसे स्वयं को घने बादलों और अन्धकार में ढांकने की ज़रूरत थी ताकि उसे देखने वाले भस्म न होने पाएं।

भजन 97:2 में भी ध्यान दें कि परमेश्वर के सिंहासन का आधार धर्म और न्याय है। इसी तरह से परमेश्वर राज्य करता है। उसका राज्य एक ऐसा राज्य था जो इन दो सिद्धान्तों पर बना था: धर्म या धार्मिकता और न्याय। उसके सभी न्याय सच्चे और भले थे। उसने न्याय करने में कोई पक्षपात नहीं दिखाया था।

भजनकार अपने पाठकों को आगे बताता है कि परमेश्वर के आगे आगे चलते हुए उसके द्रोहियों को भस्म करती है (97:3)। वह सर्वशक्तिमान प्रभु है जिसकी पवित्रता और धार्मिकता बुराई को भस्म करते हैं। कोई भी बुराई उसके सामने टिक नहीं सकती। धार्मिकता और पवित्रता की क्रोधित अग्नि के समान, वह पाप और बुराई को भस्म करता है। उसके सभी शत्रु उसके पवित्र न्याय से नाश होंगे।

भजन बिजलियों के बारे में भी बताता है जो परमेश्वर की उपस्थिति में चमकती है जिससे जगत प्रकाशित हुआ। बिजली, न्याय की तलवार के रूप में पूरी पृथ्वी पर चमकी जिसके कारण परमेश्वर के शत्रु भयभीत हो गए। वह भय माने जाने व आदर पाए जाने के योग्य परमेश्वर है। उसकी बिजली की उपस्थिति में पृथ्वी थरथरा गई और पहाड़ मोम के समान पिघल गए। कोई भी चीज़ उसकी उपस्थिति में टिकी नहीं रह सकती। प्रकृति के गण उसकी शक्ति और प्रताप से भयभीत हैं।

आकाश ने प्रभु के धर्म की साक्षी दी (97:6)। आकाश की ओर देखने पर हम उसके विस्तार व क्रम को देखते हैं, क्या वे हमें एक अद्वितीय परमेश्वर के बारे में नहीं बताते? उस क्रम जटिलता और मेल को देखने पर जिसमें होकर तारे व ग्रह मिलकर कार्य करते हैं, क्या वे हमें उस परमेश्वर के बारे में नहीं बताते जिसने उन्हें उनके स्थान पर रखा है? दिन प्रतिदिन सूर्य निकलता और हमें रोशनी देता है। रात-प्रति-रात चांद और तारे हमें नीचे देखते हैं। वे अपने रचयिता की विश्वासयोग्यता को बताते हैं। वे उसे एक भले व धर्मी परमेश्वर के रूप में बताते हैं। न केवल स्वर्ग यह सच्चाई बताता है कि परमेश्वर धार्मिकता का परमेश्वर है, परन्तु भजनकार हमें 97:6 में बताता है कि पृथ्वी पर रहने वाले उसकी महिमा को देखेंगे। वे आकाश में उसकी महिमा को देखते हैं। वे महासागरों में उसकी महिमा को देखते हैं जो पृथ्वी के किनारों पर थाप देते और पहाड़ जो आकाश तक ऊपर उठे हैं। परमेश्वर को जानने वाले प्रतिदिन उसके साथ व्यवहार करने के आधार पर उसकी महिमा को देखते हैं।

इस्राएल के प्रभु परमेश्वर और उसके आश्चर्यकर्मों पर विचार करने पर भजनकार कुछ कर तो न सका परन्तु उन के बारे में बोला जो मूरतों की उपासना करते हैं। वह उन्हें स्मरण कराता है कि वे लज्जित होंगे। उनकी मूरते और झूठे देवता कुछ नहीं थे। वे सब इस्राएल के परमेश्वर के सामने दण्डवत् करेंगे। वे शक्तिहीन और प्रशंसा के अयोग्य हैं। वह दिन आ रहा था जब पृथ्वी इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की महिमा को देखेगी और उनकी मूरतों की उपासना करने की व्यर्थता को जानेगी।

वह दिन भी आ रहा था जब प्रभु परमेश्वर पृथ्वी का न्याय करेगा। प्रभु के न्याय धर्मी और उचित थे। उससे प्रेम करनेवाले सभी उसके मार्गों से प्रेम करते व उनमें बन रहते हैं।

प्रभु और उनके बीच एक विशेष संबन्ध होता है जो उससे प्रेम करते व उसके मार्गों पर बने रहते हैं। प्रभु उनकी सुरक्षा व देखभाल करता है जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं। वह उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है (97:10)। उसके अनुग्रह की ज्योति धर्मियों के लिए है (97:11)। उसका आनन्द सीधे मनवालों के लिए है (97:11)। धर्मियों के लिए प्रभु में आनन्द करने का बड़ा कारण है।

भजन 98 में भजनकार इस प्रशंसा करने और धन्यवाद देने के शीर्षक पर बना रहता है। उसने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि प्रभु ने महान चीजें की थीं। उसने उन्हें प्रभु के लिए एक नया गीत गाने को प्रोत्साहित किया। नया गीत प्रभु को धन्यवाद देने की एक ताज़ी अभिव्यक्ति है। यह सच है कि परमेश्वर के लोग उसकी आराधना उस कारण से कर सकते हैं जो उसने उनके माता-पिताओं के जीवनों में किया था, परन्तु प्रभु के अद्‌भुत कार्य उनके माता-पिता के साथ ही समाप्त नहीं हो गए थे। वे प्रत्येक दिन ताज़ा थे। आज गाने के लिए एक नया गीत था क्योंकि प्रभु के अद्‌भुत कार्य ताज़े रूप से प्रगट हुए थे।

उसके अद्‌भुत कार्यों को इसमें भी देखा जा सकता है कि कैसे प्रभु का दहिना हाथ और पवित्र भुजा उनके लिए उद्धार को लाए थे (98:1)। उन्हें स्वयं पर उसके द्वारा किये गये अनुग्रह की जानकारी थी। उनके द्वारा प्रभु ने समस्त संसार को दिखाया कि वह एक धर्मी परमेश्वर था (98:2)। परमेश्वर के लोग पृथ्वी की समस्त जातियों के लिए एक चमकनेवाली ज्योति थे, उसकी धार्मिकता को प्रगट करते हुए। परमेश्वर का मन सदा से ही समस्त संसार के लिए था। यहां हम देखते हैं कि उसने यहूदी जाति के द्वारा अपने उद्धार को प्रगट करने का चुनाव किया ताकि सारा संसार उसे और उसकी धार्मिकता को जान सके। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को सच्चाई व प्रेम दिखाने का स्मरण किया जिससे पृथ्वी के दूर-दूर के देश उसके उद्धार को देख सकें (98:3)।

इस भजन में हम कितनी अद्‌भुत योजना को देखते हैं। परमेश्वर ने संपूर्ण पृथ्वी के लिए अपने प्रेम का उदाहरण और गवाह बनने को इस्राएल जाति का प्रयोग किया। योजना बदली नहीं है। आज वह जातियों के लिए ज्योतिर्मय ज्योति होने को आपका और मेरा चुनाव करता है। वह हमें अपने उद्धार, प्रेम और विश्वासयोग्यता (सच्चाई) को दिखाना चाहता है जिससे दूसरे भी उसे देखें और जानें।

प्रभु की यह योजना इतनी अद्‌भुत थी कि (भजनकार इसके सिवाय कुछ और न कर सका कि अपने लोगों को आनन्द से जयजयकार करने के लिए बुलाए। उसने उन्हें संगीत के साथ आनन्द से गाने को बुलाया। उसने वीणा बजाने को कहा। उसने तुरहियां और नरसिंगे फूंक-फूंककर यहोवा राजा का जयजयकार करने को कहा। जो इस

परमेश्वर और इसकी योजना को जानते थे उसने उन्हें आनन्द से जयजयकार करने को कहा। यहां तक कि समुद्र, नदियां और पहाड़ भी उसका जयजयकार करें। भजनकार समुद्र और उसमें पाई जाने वाले सभी प्राणियों को उसका जयजयकार करने को कहता है। वह नदियों को अपने हाथों से ताली बजाने और पहाड़ों से प्रभु के लिए आनंद से जयजयकार के गीत गाने को कहता है (भजन. 98:4-9)।

उन्हें ऐसा इसलिए करना था क्योंकि परमेश्वर धर्म और सीधाई से पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला था। वह पृथ्वी पर अपने उद्धार को लाएगा। वह संसार को पाप, बुराई और अन्याय से छुड़ाने को आएगा। वह पृथ्वी पर धार्मिकता और पवित्रता के सिद्धान्तों को स्थिर करने के लिए आएगा। उसके सभी शत्रु नाश होंगे। परमेश्वर अपने सिंहासन पर से धार्मिकता से राज्य करेगा। उसके लोग उसके प्रेम व सच्चाई में सुरक्षित होंगे। कोई उन्हें हानि नहीं पहुंचा पाएगा।

यहां इन दो भजनों में अपने प्रभु परमेश्वर पर विचार करने पर भजनकार उसके ऐसा परमेश्वर होने के बारे में बताता है जिसने धर्म से राज्य किया था। वह एक अद्‌भुत परमेश्वर था जिसने भय और आतंक को दिखाया था, परन्तु वह विश्वासयोग्य परमेश्वर भी था जिसने अपने लोगों से प्रेम किया था और यह चाहता था कि जातियां उसके अनुग्रह को जानने पाएं। उसके कार्य अद्‌भुत थे और उसका उद्धार समस्त पृथ्वी के लिए था। इस्राएल के द्वारा, उसने अपनी सच्चाई और धार्मिकता को दिखाया जिससे सारी पृथ्वी उसे जाने और उसके धर्मी राज्य के अधीन आ जाए। भजनकार के लिए यह आनन्द मनाने और प्रशंसा करने का बड़ा कारण था।

विचार करने के लिए:

- भजनकार हमें प्रभु परमेश्वर के शासन के बारे में क्या सिखाता है? उस शासन का वर्णन करने को वह भजन 97 में किन उदाहरणों का प्रयोग करता है?
- जब कि परमेश्वर एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर है, इन भजनों में ऐसे कौन से प्रमाण मिलते हैं जो उसे अपने लोगों पर अद्‌भुत प्रेम और दया दिखानेवाले परमेश्वर के रूप में बताते हैं?
- जातियों के लिए परमेश्वर की मनसा क्या है? उसने इस्राएल पर अपने अनुग्रह और अद्‌भुत कार्यों को क्यों प्रगट किया था?
- किस सीमा तक आपका जीवन परमेश्वर के अद्‌भुत उद्धार और अनुग्रह को दिखाता है? क्या लोग आपके जीवन की ओर देखकर परमेश्वर के हाथ को देख सकते हैं? आप में उन्होंने परमेश्वर को जिस तरह से देखा क्या इससे वे आपके परमेश्वर की चाह करेंगे?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता के लिए कुछ समय प्रशंसा करने को निकालें। उसे धन्यवाद दें कि पवित्र होने पर भी वह आपके साथ व्यक्तिगत संबन्ध रखना चाहता है।
- परमेश्वर ने हाल ही में आपके लिए और आपके द्वारा क्या किया है? कुछ समय उसके अद्‌भुत कार्यों के लिए उसकी प्रशंसा करने को निकालें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह पृथ्वी का न्याय करने को आएगा और सभी तरह की बुराई और दुष्टता से निपटेगा। उससे आपके मन की खोज करने और उस किसी भी पाप से निपटने को कहें जिससे आज आप जुड़े हो सकते हैं।
- प्रभु से आपकी एक ज्योतिर्मय ज्योति और उसका एक उदाहरण बनने में सहायता करने को कहें जो वह उनमें और उनके द्वारा करना चाहता है जिनसे वह प्रेम करता है।

86. अद्वितीयता और घनिष्टता

पढ़ें भजन संहिता 99:1-100:5

भजनों की पुस्तक में हम बार-बार एक ऐसे परमेश्वर के बीच तुलना को देखते हैं जो स्वभाव में अद्वितीय और पवित्र है और जो प्रेम और व करुणा में होकर अपने लोगों के निकट आता है। यह मिश्रण एक ऐसी चीज़ है जो हमारी सर्वोच्च प्रशंसा और सराहना पाने के योग्य है। परमेश्वर हमारे निकट इसलिए नहीं आता कि हम इसके योग्य हैं। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह ऐसा करना चाहता है। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाएंगे, परन्तु हमें इसे आनन्द और धन्यवाद के साथ ग्रहण करना ज़रूरी है।

भजन 99:1 में आरम्भ करने पर भजनकार हमें बताता है कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर राज्य करता है। उससे ऊंचा कोई भी अधिकार या शक्ति नहीं है। उसका राज्य एक महिमामयी व अद्वितीय राज्य था। यहोवा स्वर्ग में करूबों पर बैठा है। ये करूब उसके दास थे जो उसकी इच्छा को आनन्द के साथ पूरा करते थे। इस पृथ्वी या आकाश में किसी भी चीज़ की तुलना ऐसे परमेश्वर से नहीं की जा सकती। राजाओं और शासकों में से ऐसा कौन था जिसके पास इस तरह के महिमामयी दास थे?

भजनकार जातियों को इस अद्वितीय परमेश्वर के सामने कांपने को कहता है। पृथ्वी ऐसी महिमा और प्रताप की उपस्थिति में डोल उठी। यह सभी देवताओं से महान परमेश्वर था, जो सर्वोच्च आदर और प्रशंसा पाने के योग्य था। वह सभी देशों और शक्ति के ऊपर महान था (99:2)।

प्रभु परमेश्वर पवित्र था (99:3)। देशों के शासकों से विपरीत परमेश्वर उन सबसे पूर्णतया अलग था जो अपवित्र और अशुद्ध थे। कोई भी बुरी आकांक्षा उसके न्याय को नहीं रोक सकती। कोई भी पापी प्रेरणा उसके कार्यों को प्रेरित नहीं करेगी। जो भी उसने किया वह पवित्र और शुद्ध था। उसका नाम (उसके चरित्र को प्रस्तुत करते हुए) महिमामयी और अद्वितीय था, उसकी प्रशंसा पाने के योग्य।

इस्राएल का परमेश्वर एक सामर्थी राजा भी था (99:3)। उसकी शक्ति की कोई

सीमा नहीं। इस पृथ्वी, नर्क या स्वर्ग में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है जो उसकी शक्ति से मेल खा सकती हो।

भजनकार को भजन 99:4 में इससे खुशी मिलती है कि प्रभु को न्याय से प्रेम था। उसके द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ उचित और भली थी। प्रत्येक के साथ समानता से व्यवहार किया गया था। धनी लोगों को उनके अधिक धन के कारण आदर नहीं दिया गया था। निर्धनों के कम धन के कारण उनके साथ अनादरपूर्ण व्यवहार नहीं किया गया था। कोई भी इस परमेश्वर के पास आने के साथ-साथ उचित न्याय का अनुभव ले सकता है। उसके पास आनेवाले सभी लोगों के साथ समान व्यवहार किया गया था। निर्धन और अधीनों को भी धनी और प्रसिद्ध होने का अधिकार है।

इस सच्चाई पर विचार करने पर भजनकार प्रशंसा करने को निकट आता है।'' ''हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो और उसके चरणों की चौकी के सामने दण्डवत् करो! वह पवित्र है!'' भजन 99:5 में वह अपने पाठकों से कहता है। इस तरह की पक्षपातहीनता शक्ति, अधिकार और न्याय महान प्रशंसा के योग्य थी।

भजन 99:6-7 में ध्यान दें कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर अपने दासों से बोला। इनमें मूसा, हारून और शमूएल थे जिन्होंने उसके नाम को पुकारा और उसने उन्हें उत्तर दिया। ये लोग कौन थे? मूसा का जन्म एक अधीन बच्चे के रूप में हुआ था जिसके लिए मिस्री तलवार निर्धारित थी। परमेश्वर ने उसे बचाया और उसे फिरौन की बेटी के घर में रखा। हारून मूसा का भाई था, जिसे एक धनी मिस्री घर में पालन-पोषण किये जाने को भाग्य नहीं मिला था। उसने मिस्री कोडों की मार को सहा और मिस्रियों का दास बनकर रहा। परमेश्वर ने उसे वहां से उठाकर अपने लोगों का याजक और अगुवा बनाया। शमूएल नि:संतान हन्ना की प्रार्थना का जवाब था। परमेश्वर ने उसकी बांझ माँ को एक बच्चा दिया और उसे उसके दिनों के महान भविष्यद्वक्ता के रूप में खड़ा किया। ये तीनों लोग परमेश्वर के द्वारा चुने गए थे कि उसके दासों के रूप में उसके साथ एक अद्‌भुत संबन्ध में आएं। वे नम्र व्यक्ति थे परन्तु उन्हें परमेश्वर के नाम का प्रचार करने को उसके द्वारा चुना गया था। परमेश्वर ने उनकी पुकार को सुनकर उत्तर दिया।

परमेश्वर ने मूसा, हारून और शमूएल को आज्ञा दी। वे नम्र लोग थे परन्तु वे परमेश्वर की आवाज़ को सुनने और उसके उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए उसके उपकरण थे। इस सृष्टि का महान परमेश्वर मूसा, हारून और शमूएल जैसे अधीन दासों से क्यों बोला? उसने उनकी पुकार को सुनकर उन्हें उत्तर क्यों दिया? वह ऐसा परमेश्वर है जिसे अपने लोगों में खुशी मिलती है। इस कारण वह हमारी प्रशंसा और शुक्रगुज़ारी के योग्य है।

परमेश्वर न केवल अपने चुने हुए दासों की आवाज़ को सुनने के लिए तैयार है परन्तु भजन 99:8 में हम पाते हैं कि प्रभु परमेश्वर क्षमा करनेवाला परमेश्वर भी है। यह सच है कि अपनी पवित्रता में वह पाप को दण्डित करेगा परन्तु वह ऐसा परमेश्वर भी है जो उन्हें क्षमा करेगा जो कि उसके अनुग्रह और दया की खोज करते हुए उसके पास आते हैं। एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर के सामने हमारे लिए क्या अवसर होगा? हम पापी लोग हैं और हमारा पाप हमें परमेश्वर से अलग करता तथा हमें उसके क्रोध और न्याय के स्थान पर रखता है। केवल उसकी दया, क्षमा और अनुग्रह ही उसके साथ हमारे संबन्ध को बना सकते हैं। चूंकि वह क्षमा करनेवाला परमेश्वर है इसलिए हमें आशा है। पुन: भजनकार अपने लोगों को यहोवा के पवित्र पर्वत (यरूशलेम के मन्दिर का संदर्भ) पर उसकी सराहना और आराधना करने को बुलाता है।

भजन 100 में भजनकार सारी पृथ्वी के लोगों को जयजयकार करने की चुनौती देता है। उनके पास जयजयकार करने का बड़ा कारण है। वह संपूर्ण पृथ्वी को आनंद के साथ परमेश्वर की आराधना करने और जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आने को कहता है (100:2)।

भजनकार यह चाहता था कि संपूर्ण पृथ्वी यह जानने पाए कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर ही परमेश्वर था। यह जानना कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर ही परमेश्वर है यह एक व्यक्ति के मन में इसकी जानकारी होने से अधिक है। यह जानना कि वह परमेश्वर है, उसके सामने आराधना और सराहना में दण्डवत् करना है। यह जानना कि वह परमेश्वर है आज्ञाकारिता और भय में उसके प्रति समर्पण करना है। यह एक व्यक्ति के जीवन को परमेश्वर के साथ पंक्तिबद्ध करना है क्योंकि वह प्रभु है। संपूर्ण पृथ्वी के लिए यह परमेश्वर के हृदय की पुकार थी। वह जान गया था कि यह परमेश्वर कौन था और उसने यह चाहा कि समस्त पृथ्वी उसे एक सच्चे और पवित्र परमेश्वर के रूप में जाने।

इस्राएल का परमेश्वर सृष्टि को बनाने वाला है (100:3)। भजनकार हमें यह बताना चाहता है कि हमारा अस्तित्व और जो कुछ भी हमारा है वह सब इस्राएल के परमेश्वर का है। इस जीवन में ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके प्रति हमें आभार प्रगट करना होता है। तौभी, ऐसा कोई भी नहीं है जिससे हमने इस्राएल के परमेश्वर की तुलना में कुछ अधिक लिया हो। उसने हमें बनाया और हमारी प्रत्येक आशीष का स्त्रोत वही है।

तथापि, हमारे बनानेवाले से अधिक, भजनकार हमें याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर हमारा चरवाहा भी है (100:3)। प्रभु परमेश्वर हमें बनाकर छोड़ नहीं देता है। वह हमारी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करता और हमारी देखभाल भी

करता है। परमेश्वर उनकी देखरेख करता है जिनको वह बनाता है। हमारे द्वारा ली जानेवाली प्रत्येक सांस और हमारे हृदय की प्रत्येक धड़कन इस अद्‌भुत चरवाहे की ओर से एक दान है। प्रभु स्वयं हमारी प्रत्येक ज़रूरत को व्यक्तिगत रूप से देखता है और हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करता है। वह स्वर्ग और पृथ्वी की समस्त शक्तियों पर एक पवित्र और अद्वितीय परमेश्वर है तौभी उसे व्यक्तिगत रूप से हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में वैसे ही खुशी मिलती है जैसे एक चरवाहे को अपनी भेड़ों की देखभाल करने में।

परमेश्वर के अपने लोगों के साथ इतने अद्‌भुत संबन्ध में आने का विचार भजनकार के मन को उसकी प्रशंसा और आराधना करने के लिए भर देता है। वह अपने पाठकों को परमेश्वर के फाटकों से धन्यवाद के साथ आने और उसके आंगनों में स्तुति के साथ प्रवेश करने को कहता है (100:4)। उनकी एकमात्र उचित प्रतिक्रिया इस परमेश्वर के सामने प्रशंसा और आराधना के साथ दण्डवत् करने की थी। किसी भी परमेश्वर की तुलना उससे नहीं की जा सकती।

अपने लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम और सच्चाई सदा तक बने रहते हैं। वह हमारे बच्चों के प्रति उतना ही विश्वासयोग्य रहेगा जितना वह हमारे प्रति रहा है। कोई भी चीज़ उसे हमसे और हमारे बच्चों के बच्चों से प्रेम करने से अलग नहीं कर सकती है।

परमेश्वर के लोगों के प्रति उसके अद्‌भुत प्रेम और विश्वासयोग्यता तथा उसकी अद्वितीयता के बीच की तुलना अनोखी है। इतना महान और पवित्र होने पर भी परमेश्वर हमारा चरवाहा बनने की इच्छा रखता है। इसी कारण वह हमारी प्रशंसा और शुक्रगुज़ारी पाने के योग्य है। हम उसके अत्यधिक ऋणी है, न केवल इसलिए कि जो वह है, परन्तु इसलिए भी जो उसने हमारे साथ व्यक्तिगत रूप से किया है।

विचार करने के लिए:

- ये दो भजन परमेश्वर के चरित्र के बारे में हमें क्या सिखाते हैं? भजनकार विशिष्ट रूप से किन विशेषताओं के बारे में बताता है?
- क्या हम ऐसे अद्वितीय परमेश्वर के पास जा सकते हैं? भजनकार परमेश्वर की अपने लोगों के साथ घनिष्ठता में रहने की इच्छा के बारे में हमें क्या बताता है?
- परमेश्वर को जानने का क्या अर्थ है? उसके सामने झुके बिना और उसे समर्पण किये बिना क्या हम सच में उसे जान सकते हैं? भजनकार उसके लोगों के साथ।
- कुछ समय इस पर विचार करें कि आप प्रभु परमेश्वर के किस चीज़ के ऋणी हैं। उसने आपके लिए क्या किया है?

- क्या आप प्रभु परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबन्ध में आए हैं? ये दो भजन हमें प्रभु परमेश्वर की हमारे साथ गहरे और धनिष्ठ संबन्ध में आने की इच्छा के बारे में क्या बताते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को इस बात के लिए धन्यवाद देने को समय निकालें जो वह है। उन विशिष्ट योग्यताओं की सूची बनाएं जिनके लिए आप उसे धन्यवाद देना चाहते हैं?
- प्रभु को इस सच्चाई के लिए धन्यवाद दें कि एक अद्वितीय परमेश्वर होने पर भी, उसे हमारे साथ उसकी एक भेड़ के रूप में संबन्ध रखने में खुशी मिलती है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसकी सच्चाई या विश्वासयोग्यता सदा के लिए है, न केवल आपके लिए, परन्तु आगे आनेवाली पीढ़ियों के लिए।
- प्रभु से आपकी उसके लिए प्रशंसा करने के योग्य बनने में सहायता करने को कहें उसके लिए जो वह है और जो उसने किया है।
- प्रभु से आपकी उसके साथ एक गहरी सहभागिता में आने में सहायता करने को कहें।

87. बुराई से अलग होना

पढ़ें भजन संहिता 101:1-8

पिछले कुछ भजनों में हमने भजनकार को प्रभु की उपस्थिति में आराधना करने और ऐसे अद्वितीय और पवित्र परमेश्वर के सामने दण्डवत् होने की पुकार करते सुना है। तौभी, हमें यह जानने की ज़रूरत है कि एक पवित्र परमेश्वर के पास आना ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम हल्के रूप से ले सकते हैं। भजन 101 में भजनकार हमें याद दिलाता है कि हम अपने पाप से निपटे बिना एक पवित्र परमेश्वर के निकट नहीं आ सकते हैं।

आरम्भ में भजनकार दृश्य को लगाता है। वह अपने पाठकों को बताता है कि वह प्रभु के प्रेम और न्याय के विषय में गाएगा। उसने परमेश्वर की दो विशिष्टताओं को जान लिया था। सर्वप्रथम भजनकार हमें परमेश्वर के प्रेम की याद दिलाता है। यह सच है कि प्रभु परमेश्वर एक पवित्र, प्रतापी, सर्वज्ञानी और अद्भुत परमेश्वर है। उसकी ये विशिष्टताएं हमें उससे अलग करतीं हैं? भजनकार हमें यहां यह बता रहा है कि परमेश्वर एक अद्भुत प्रेम का परमेश्वर भी है। यह प्रेम उसकी संतान के लिए है। प्रेम ही हमें परमेश्वर से जोड़ता है। प्रेम में ही परमेश्वर हम तक पहुंचकर हमें अपनी उपस्थिति में बुलाता है। भजनकार के लिए यही गाने का विषय था।

इस पर भी ध्यान दें कि भजनकार प्रभु परमेश्वर के न्याय के विषय में गाना चाहता था। न्याय एक डराने वाली चीज़ हो सकता है। क्योंकि परमेश्वर एक न्यायी परमेश्वर है, वह हमेशा पाप और बुराई से निपटता है। हम उसके सम्मुख इतने अधिक दोषी हैं कि उसका ईश्वरीय क्रोध हम पर पड़ा है। दूसरी ओर, परमेश्वर उस पीड़ा को जानता है जिसे हमें उनके हाथों सहना पड़ता है जो हमें सताते हैं। निर्धन और अप्रिय लोगों के साथ उचित न्याय किया जाएगा। पृथ्वी के अगुवों के विपरीत, यह महान न्यायी परमेश्वर पक्षपात नहीं करता। निर्धन के साथ धनी जैसा व्यवहार होगा। विख्यात लोगों का उनके समान ही न्याय होगा जो विख्यात नहीं हैं। भजनकार के आनन्दित होने का कारण यह था क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर उसके मामले को सुनकर वही करेगा जो सही था।

अपने प्रभु परमेश्वर के न्याय और प्रेम पर विचार कर भजनकार का मन स्तुति और धन्यवाद से भर गया था। विशिष्ट रूप से वह प्रभु के लिए गाना चाहता था। गीत

गाना आनन्द और धन्यवाद की अभिव्यक्ति था। वह गीत के द्वारा प्रभु को उसमें पाए जाने वाले अपने आनन्द के बारे में बताना चाहता था।

पद 2 में भजनकार ने प्रभु के प्रेम और न्याय को अन्य प्रतिक्रिया दी है। ध्यान दें कि वह प्रभु से कहता है कि वह खरा जीवन बिताने के प्रति सावधान रहेगा। परमेश्वर के प्रेम ने ही भजनकार में उसके लिए खरा जीवन बिताने की इच्छा डाली। ऐसे भी हैं जो इस प्रेम का फायदा उठाना चाहते हैं। वे कहते हैं कि चूंकि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है इसलिए वे जो चाहे वह कर सकते हैं। यह परमेश्वर के प्रेम का गलत अर्थ लगाना है। परमेश्वर का प्रेम और दया हमें जो चाहे वह करने की अनुमति नहीं देती है। इसके विपरीत जो सच में प्रभु के अनर्जित प्रेम को समझ जाते हैं वे उसे प्रसन्न करनेवाला जीवन जीकर उसका आदर करते हैं। यही भजनकार की प्रतिक्रिया है।

पद 2 के वाक्यांश पर भी ध्यान दें ''तू मेरे पास कब आएगा।'' इस वाक्यांश में भजनकार की इच्छा को बताना कठिन है। कुछ इसे सहायता की पुकार के रूप में देखते हैं। भजनकार को पता है कि खरा जीवन बिताने के लिए उसे परमेश्वर की सहायता की ज़रूरत होगी। कुछ केवल इसे एक सरल पुकार के रूप में देखते हैं। भजनकार परमेश्वर की उपस्थिति के लिए पुकारता है। उसे अपने लिए परमेश्वर के प्रेम के बारे में पता है। उसके मन की इच्छा अपने प्रभु परमेश्वर के साथ एक गहरे संबन्ध में आने की है। वह चाहता है कि प्रेम और न्याय का प्रभु उसके निकट आए।

पद 2 के दूसरे भाग पर ध्यान दें कि भजनकार परमेश्वर को केवल यह नहीं बताता कि वह खरा जीवन जीएगा, परन्तु यह भी कि वह अपने घर में मन की खराई के साथ चलेगा। इस पर टिप्पणी करना ज़रूरी होगा। खरा जीवन एक चीज़ है और खरे मन से जीना दूसरी। नये नियम के फरीसियों को मूसा की व्यवस्था को पूरा करने का घमण्ड था, परन्तु उनके मन प्रायः खरे नहीं रहते थे। यीशु ने उन्हें ''चूना फिरी कब्र'' कहा, जो बाहर से तो साफ दिखती है परन्तु भीतरी से मृत्यु और सड़न से भरी होती है (देखें मत्ती 23:27)।

भजनकार की इच्छा बाहर के समान भीतर से भी शुद्ध होने की थी। वह चाहता था कि प्रभु परमेश्वर उससे पूरी तरह से खुश हो। इसका अर्थ यह था कि उसे अपने मन के साथ-साथ अपने कार्य के रवैये को भी देखना था। वह चाहता था कि न केवल उसके काम खरें हों बल्कि उसका मन भी। यह प्रेम की प्रतिक्रिया है। प्रभु के प्रेम को समझने और अनुभव करनेवाले उसके सामने खरा जीवन जीने की इच्छा रखते हैं। यह आराधना की क्रिया है।

पद 3 में ध्यान दें कि भजनकार ने अपने मन में यह फैसला लिया कि उसकी आराधना और परमेश्वर के प्रति स्तुति इससे प्रभावित होगी कि उसने अपनी आंखों का

प्रयोग कैसे किया है। उसने प्रभु को बताया कि वह अपनी आंखों को किसी भी ओछी चीज़ पर नहीं लगाएगा। इब्रानी का यह शब्द जिसका अनुवाद ''ओछा'' किया गया है इसका अर्थ ''अधर्म, बुराई, अनुपयोगी, अलाभकारी'' हो सकता है। भजनकार हमें बता रहा है कि एक न्यायी और प्रेमी परमेश्वर की आराधना करने को वह अपनी आंखों के चारों ओर बाड़ा लगाने जा रहा है ताकि कोई भी अधर्मी, बुरी और अनुपयोगी चीज़ प्रवेश न करने पाए। उसकी आंखों से भीतर आने वाली चीज़ उसके मन को भ्रष्ट कर देगी। एक पवित्र परमेश्वर के सामने अपने मन को पवित्र रखने के लिए भजनकार ने ओछी व बुरी चीज़ से अपनी आँखों को हटाने का फैसला किया।

पद 3 में इस पर भी ध्यान दें कि उसने यह फैसला किया कि वह विश्वासहीन लोगों के कार्यों से जुड़ा नहीं रहेगा। अन्य शब्दों में, वह अपने जीवन पर विश्वासहीन लोगों को बुरे कार्यों को हावी नहीं होने देगा। वह अपने मार्गों की चौकसी करेगा और केवल उन्हीं चीज़ों को करेगा जिनसे उसके प्रभु परमेश्वर को आदर व खुशी मिलती है। प्रभु परमेश्वर के समान रवैया होने के कारण उसे दुष्टों के बुरे कार्यों से घृणा थी। वे उसके लिए घृणित थे और उसका उनके साथ कुछ लेना-देना नहीं था।

पद 4 में भजनकार इस विषय को आगे तक लेकर जाता है। उसने अपने पाठकों को बताया कि वह अपने को भ्रष्ट मन के लोगों से अलग रखेगा। वह इन लोगों से दूर ही रहेगा। वह उन लोगों के साथ नहीं रहेगा जिनकी जीवन-शैली से परमेश्वर को आदर नहीं मिलता। उसका उन लोगों से कुछ लेना देना नहीं होगा जिनका हृदय भ्रष्ट होने के साथ-साथ परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही था। परमेश्वर के लिए उसके प्रेम का प्रभाव इस पर भी पड़ा था कि उसके मित्र कैसे हों।

न केवल भजनकार उन लोगों से दूर रहा जो बुराई में रहते थे, परन्तु पद 5 में वह हमें बताता है कि वह इससे भी आगे तक चला गया था। ऐसे भी समय थे जब उसने उन्हें सत्यनाश करना चाहा जो अपने पड़ोसी की छिपकर चुगली करते थे। भजनकार यह मानता है कि ऐसे भी समय होते हैं जब हमें अपने धार्मिकता के बचाव में सक्रिय रहना है। यहां भजनकार उन लोगों को सत्यनाश करने के बारे में कहता है जिन्होंने अपनी जीभ से अपने पड़ोसी को हानि पहुंचाते हुए प्रभु का अनादर किया था। कई बार हमें बुराई के विरुद्ध सक्रिय कदम लेने की ज़रूरत होती है। ऐसा करना प्रभु को आदर देना है। हम उन लोगों के कार्यों का अन्त करने के द्वारा अपने परमेश्वर का आदर करते हैं जो उसकी निन्दा करते हैं। यहां भजनकार उन लोगों के बारे में बोल रहा है जो अपने पड़ोसी की चुगली करते हैं। आज हमारे समय में इसके बहुत से उदाहरण मिलते हैं। इसका अर्थ उस व्यक्ति की जीभ को बन्द करने से भी हो सकता है जो प्रभु का नाम व्यर्थ लेता रहता है। इसका अर्थ उस व्यक्ति से भी हो सकता है

जो ''गन्दे चुटुकले'' सुनाता रहता है। अपने आस-पास की बुराई को कई तरह से समाप्त किया जा सकता है। हमें यहां यह देखने की ज़रूरत है कि भजनकार ने स्वयं को वह करने को बाध्य पाया जिनसे वह उन लोगों को रोकने के द्वारा कर सकता था जो कि अपने कार्यों से प्रभु का अनादर कर रहे थे। न केवल उसने उनके साथ रहने से इन्कार किया परन्तु उसने अपने भाग को करने का भी चुनाव किया कि उनकी बुराई को शांत किया जाए।

पद 5 में वह अपने पाठकों को बताता है कि वह उन्हें सहन नहीं करेगा जिनकी आंखें और मन घमण्डी हैं। घमण्डी आंखों वाला व्यक्ति घमण्डी मन के चश्मे से चीजों को देखता है। वह केवल वही देखता है जो वह देखना चाहता है और जिससे उनसे स्वयं को लाभ मिलता है। जिससे उसका कोई लाभ नहीं होता वह उसकी परवाह भी नहीं करता। उसकी घमण्डी आँखें और मन उससे पक्षपात कराते हैं। वह लोगों के साथ समानता व उपयुक्त रीति से व्यवहार नहीं करता जैसा परमेश्वर करता है। इसके विपरीत वह आत्म केन्द्रित और अभिमानी होता है। भजनकार ऐसे व्यक्ति से कोई संबन्ध नहीं रखना चाहता। इसके विपरीत भजनकार उन लोगों के साथ रहने का चुनाव करता है जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे। यही लोग उसके मित्र और साथी होंगे। यही वे लोग होंगे जो उसे प्रोत्साहित करेंगे और उसकी ज़रूरत के समय में उसकी सहायता करेंगे (पद 6)।

भजनकार ने यह निर्णय ले लिया था कि कोई भी छल करनेवाला उसके घर के भीतर न रहने पाएगा। छल और झूठ के प्रति उसकी घृणा इतनी अधिक थी कि ऐसा करनेवालों के साथ उसका कोई लेना-देना नहीं होगा (पद 7)। उसने यह प्रण लिया कि प्रति प्रात: वह देश के सब दुष्टों का नाश किया करेगा (पद 8-9)।

भजनकार प्रभु के प्रेम और न्याय के कारण उसकी प्रशंसा करना चाहता था। उसने ऐसा गाकर किया परन्तु उसने ऐसा अपनी जीवन शैली के द्वारा भी किया। उसने एक ऐसा जीवन जीने का चुनाव किया जिसके द्वारा उसके प्रभु परमेश्वर को आदर मिले। उसने अपने मन के रवैये को देखने का चुनाव किया। उसने अपनी आँखों के चारों ओर सुरक्षा लगाई और उनके साथ न रहने का फैसला किया जो बुरा करते थे। वास्तव में, भजनकार ने बुराई के विरुद्ध सक्रिय कदम लिया और प्रभु के देश में इसके विरुद्ध सक्रिय रूप से लड़ा।

हमारे लिए यहां यह समझना ज़रूरी है कि प्रभु के प्रेम और न्याय को सच में समझनेवाले अपने कामों से उसे आदर देंगे। वे उसकी आराधना करेंगे न केवल अपने गीतों से परन्तु अपनी जीवन-शैली से भी।

विचार करने के लिए:

- हम परमेश्वर के बारे में जो सोचते हैं उसे हमारी जीवन-शैली कैसे दिखाती है? क्या हमारी जीवन शैली आराधना का एक कार्य हो सकती है?
- एक खरे जीवन और एक खरे मन के बीच क्या अन्तर है?
- भजनकार हमें बताता है कि उसने अपनी आँखों के चारों ओर सुरक्षा लगाई है। अपने को देखने से बचाने के लिए आपको किस चीज़ की ज़रूरत होगी? यह क्यों महत्वपूर्ण है?
- जिनके साथ हम रहते हैं वे कैसे हमारी गवाही और परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध पर प्रभाव डालते हैं? क्या आपके ऐसे साथी हैं जो परमेश्वर के साथ आपके संबन्ध में बाधक हैं या आप पर नकारात्मक रूप से प्रभाव डालते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से आपको एक ऐसी जीवन-शैली देने को कहें जो आराधना का कार्य हो।
- उन मित्रों के लिए प्रभु को धन्यवाद दें जो उसके साथ चलने में आपको प्रोत्साहित करते और आपकी ज़रूरत के समय में आपकी सहायता करते हैं।
- प्रभु से आपको आपके जीवन की किसी भी ऐसी चीज़ दिखाने को कहें, जिससे उसे आदर नहीं मिलता है। उससे इसे दूर करने को कहें जिससे आपके जीवन से प्रभु को वह आदर मिल सके जिसके वह योग्य है।
- प्रभु से आपको दिखाने को कहें कि आपके देश में किसी बुराई का नाश करने में क्या आपकी कोई विशिष्ट भूमिका है।

88. यरूशलेम का टूटना और पुनर्गठन

पढ़ें भजन संहिता 102:1-28

जबकि इस भजन की विषय-वस्तु पूरी तरह से निश्चित नहीं है, 14-16 पदों से हम यह जान पाते हैं कि भजनकार यरूशलेम शहर पर विचार करता है जिसे तोड़ा व उजाड़ा गया है। शत्रु ने शहर पर विजयी होकर उसे नाश कर दिया। इस पीड़ा और प्रश्न करने के समय में भजनकार ने इस विशिष्ट भजन पर अपनी चिन्ता या विचार को लिखा।

आरम्भ में भजनकार प्रभु से सहायता की मांग करता है।

पद 2 में हम देखते हैं कि प्रभु ने यरूशलेम शहर से अपने दुख को छिपा लिया था। परमेश्वर के लोग निराशा में थे और ऐसा लगता था कि परमेश्वर बहुत दूर है। नि:स्संदेह परमेश्वर इस्राएल के लोगों को अनुशासित कर रहा था। भजनकार ने विशिष्ट रूप से परमेश्वर की चुप्पी की पीड़ा को सहा था। अपने चारों ओर के विनाश को देखकर उसने सहायता के लिए प्रभु को पुकारा। उसने प्रभु परमेश्वर से विनती की कि वह उससे अपना मुख छिपाना बन्द कर दे, विशेष रूप से निराशा के इस समय में उसने सहायता के लिए की गई उसकी पुकार को सुनने और सहायता करने को कहा।

विश्वासी के लिए इससे बुरा और कुछ नहीं है कि प्रभु उससे अपना मुख छिपा ले। प्रभु की चुप्पी विश्वासी द्वारा जीवन में सामना की जानेवाली संभवत: सबसे भयानक चीज़ है।

मेरे जीवन में भी ऐसी चुप्पी के समय रहे हैं जब मैं परमेश्वर के साथ बातचीत नहीं कर सका था। उन समयों में ऐसा लगता है मानो हम अपनी शक्ति और प्रोत्साहन के स्त्रोत से अलग हो गए हैं। प्रभु को अपने संघर्ष में देखने पर ऐसा लगता है कि शत्रु का सामना करने को हमारे पास सारा बल है। हम सारी परेशानियों के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं क्योंकि हमें पता है कि वह हमारी ओर है। जब उसकी अनुपस्थिति की जानकारी नहीं रहती तब क्या होता है? इन समयों में मैं उस पर और उसके उद्देश्यों पर भरोसा करना जारी रख सकता हूँ। बेशक, मैं उसे देख और सुन नहीं पाता या उसकी उपस्थिति को अनुभव नहीं कर पाता, तौभी मैं उस पर भरोसा कर सकता हूं।

ऐसा कहते हुए भी विश्वासी के लिए परमेश्वर की चुप्पी डराने वाली चीज़ है।

इन समयों में हमारा विश्वास और भरोसा बढ़ता है। भजनकार के लिए यह बढ़ोत्तरी उससे अधिक थी जितना उसके अनुसार वह सहन कर सकता था। उसने अपने आस-पास विनाश को देखा। बहुत से प्रश्न थे। वह परमेश्वर से सुनना चाहता था इसलिए उसने दुख में उसे पुकारा।

3-11 पदों में उसने परमेश्वर को स्थिति की याद दिलाई पद 3 में वह हमें बताता है कि उसके दिन धुएं की नाईं उड़े जाते हैं और उसकी हड्डियाँ लुकटी के समान जल गई हैं। उसे ऐसा लगा मानो वह दुख और पीड़ा से झुलस गया है। हो सकता है कि आप भी अपने जीवन में ऐसे स्थान पर आए हों जब आपको आश्चर्य हुआ हो कि आप इन संकटों में से कैसे निकल पाएंगे जिनका सामना आप कर रहे हैं। ये संकट आपके जीवन को खाली कर देनेवाले वर्ष थे; आपकी विजय की आशा धुंधली पड़ रही थी। भजनकार इसका अनुभव कर रहा था। उसके संकट उसे भस्म कर रहे थे।

भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि कैसे उसका मन सूखी घास के समान मुरझा गया था (पद 4)। मन हमारे मनोभावों और भावनाओं का स्थान है। जिस संघर्ष का सामना भजनकार कर रहा था वह उस पर भावनात्मक रूप से प्रभाव डाल रहा था। उसका साहस समाप्त हो रहा था। तनाव और साहस खोने का एक लक्षण भूख न लगना है। इस पर ध्यान दें कि भजनकार भोजन खाना भूल जाता था। उसकी चिन्ता और भावनात्मक पीड़ा इतनी अधिक थी कि उसे अपने शारीरिक भोजन की भी परवाह नहीं रही।

भूख न लगने का परिणाम वज़न घटने के रूप में हुआ। तनाव और पीड़ा ने उसे शारीरिक रूप से प्रभावित किया। पद 5 में वह कहता है कि कराहते कराहते उसका चमड़ा हड्डियों से सट गया है।

भजनकार अपनी तुलना उजड़े स्थानों के उल्लू से करता है। यह अकेलेपन और निराशा का चित्र है। उसके चारों ओर उजाड़ है। एक अकेले उल्लू के समान वह उजाड़ में बैठता और अपनी निराशा पर विचार करता है। अपने चारों ओर देखने पर उसे केवल आशाहीनता ही दिखती है। पद 7 से हम देख सकते हैं कि इस सब का प्रभाव कैसे उसकी नींद पर भी पड़ा। वह रात को सो न सका। उसकी चिन्ताएं इतनी अधिक थीं कि वह रात में भी उनसे मुक्त न होने के कारण वह सो नहीं सकता था।

पद 7 में इस पर भी ध्यान दें कि इस पूरे समय में भजनकार अपने को ''छत पर बैठे पक्षी'' के समान अनुभव करता है। पुन: कल्पना अकेलेपन की है। परमेश्वर चुप था। उसके आस-पास ऐसा कोई नहीं था जिससे वह बोल सकता था, जो उसके दुख और पीड़ा को समझ पाता। बेशक यरूशलेम में और भी बहुत से लोग थे, तौभी वह

अपने को अकेला अनुभव कर रहा था।

भजनकार के शत्रु उसकी नामधराई करते रहते थे (पद 8)। निराशा और तनाव के इन समयों में शत्रु बहुत सक्रिय रहता है। हम निश्चित हो सकते हैं कि जब हम नीचे की ओर होते हैं तब शैतान को हम पर लात चलाने में मज़ा आता है। वह जानता है कि इस समय में हम भावुक होते हैं और वह हमें प्रभु और उसके उद्देश्यों से दूर लाने का भरसक प्रयास करेगा। यहां शत्रु भजनकार की नामधराई कर रहे हैं। हो सकता है कि वे यह पूछ रहे थे कि इस समय में उसका परमेश्वर कहां था। उन्होंने उसकी और प्रभु के प्रति उसके समर्पण की हंसी उड़ाई।

केवल उसके शत्रु उसकी नामधराई नहीं कर रहे थे परन्तु वे निराशा के इस समय में उसकी हंसी उड़ाने के साथ-साथ उसे शाप भी दे रहे थे। वे उसके विरोध में आए। अर्थात् उन्होंने उसके दुख के समय में उसकी निन्दा की। यहां मुख्य बात यह है कि वे उसके और उसके द्वारा लिए गए कदम के विरुद्ध सक्रिए रूप से बोले। उन्होंने न केवल उसकी हंसी उड़ाई परन्तु उसकी स्थिति का प्रयोग उसकी निन्दा करने को किया। भजनकार के लिए यह सब सहना सरल नहीं था। उसने अपने पाठकों को बताया कि वह रोटी के समान राख को खाता व आंसू मिलाकर पानी पीता था (पद 9)। भजनकार को ऐसा अनुभव हुआ कि उसे ऐसा कोई नहीं मिल पाएगा जो उसे समझ सके या उसके द्वारा अनुभव किये जा रहे दुख को समझ सके उसके आस-पास के लोगों ने उसके द्वारा सहन किये जा रहे दुख के प्रति उसकी प्रतिक्रिया को देखा और उसकी हंसी उड़ाई।

इन सब दुखों और संकटों में भजनकार को ऐसा लगा कि मानो परमेश्वर ने उसे एक ओर फेंक दिया है (पद 10)। ऐसे भी समय थे जब उसका विश्वास बढ़ा था और उसे हैरानी हुई थी कि क्या परमेश्वर उसके साथ ही समाप्त हो गया था। उसे अनुपयोगी होने की अनुभूति हुई। वह अपनी परिस्थितियों को बदलने या अपने आस-पास वालों की परिस्थितियों को बदलने के लिए कुछ न कर सका। कोई भी महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में वह स्वयं को असहाय अनुभव कर रहा था।

हम सभी को उपयोगी अनुभव करने की ज़रूरत है। हम सभी को यह अनुभव करना है कि हम समाज या हमारे प्रभु के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उपयोगी होने का यह भाव भजनकार से दूर हो गया था और वह निराश हो गया था। वह शाम की छाया और सूखी घास के समान मुरझा गया था। क्या इसी तरह से उसके दिनों का अन्त होना था? क्या उसके करने को वहां कुछ नहीं था? क्या परमेश्वर उसके साथ ही समाप्त हो गया था? क्या वह अपने दिनों का अन्त अनुपयोगी और असहाय अनुभव किये जाने से करेगा? उसके मन में ये निराशा के विचार भर गए थे।

जबकि भजनकार ने दुख और पराजय की निराशा को अनुभव किया था, वह भीतर गहराई में विश्वास की शक्ति से भी परिचित था। उसके आस-पास हर चीज़ गिर रही थी। उसकी भावनाएं और शारीरिक अस्तित्व देश पर परमेश्वर के विनाशकारी कार्य से प्रभावित हो रहे थे। इसके बावजूद, भीतर गहराई में विश्वास शांति से बढ़ रहा था। इस खामोशी पर ध्यान नहीं दिया गया था, विश्वास की नदी से उसे आशा मिल रही थी। तथापि, भावनात्मक और शारीरिक रूप से मुरझा जाने पर भी उसकी आत्मा इस जीवन देनेवाली विश्वास की नदी के कारण जीवित थी। इस शांत नदी की शक्ति में पद 12 में वह कह सका कि प्रभु सदा विराजमान रहेगा। उसके शत्रु उससे जो कह रहे थे उससे वह इस निष्कर्ष पर नहीं आया था। न ही वह अपने आस-पास के विनाश को देखकर इस निष्कर्ष पर आया था। वह निश्चय ही अपने मानवीय कारण से इस निष्कर्ष पर नहीं आया था। केवल विश्वास ही इस प्रशंसा की अभिव्यक्ति का स्त्रोत था। दुख और पीड़ा के इस घने संदेह के बीच विश्वास की एक घोषणा उसके होठों से आती है: ''परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान रहेगा; और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा'' (पद 12)

तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुंचा है'' (पद 13)।

भजनकार विश्वास से यह समझ गया था कि परमेश्वर अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा। उसने यह विश्वास किया कि परमेश्वर का फिर से अपनी कृपा को दिखाने का समय आ गया था। अपना हृदय प्रभु के सामने उण्डेल देने पर उसे ऐसा लगा कि परमेश्वर ने उसके विश्वास को बढ़ाना आरम्भ कर दिया था। परमेश्वर ने भजनकार को निश्चय कराया कि उसके कार्य करने का समय निकट आ रहा था। परमेश्वर अपने लोगों को और यरूशलेम नगर के विनाश को भूला नहीं था। उसे पता था कि उस नगर की हानि का उसकी संतान के लिए कितना अर्थ था। परमेश्वर अपने लोगों द्वारा अनुभव किये जा रहे दुख व पीड़ा को जानता था। वह उन्हें उनकी आशहीनता में नहीं छोड़ेगा। वह उनकी सहायता के लिए आएगा।

विश्वास की शक्तिशाली घोषणा में भजनकार ने पद 15 में कहा कि जातियां यहोवा के नाम का भय मानेंगी और पृथ्वी के सब राजा उसके प्रताप से डरेंगे। पुनः यह घोषणा उसकी परिस्थितियों की जांच करने से नहीं आई थी। शत्रु यरूशलेम नगर की हंसी उड़ा रहा था। यह घोषणा कि ये लोग उसके परमेश्वर के सामने झुकेंगे जिसकी उन्होंने हंसी उड़ाई थी, एक विश्वास की घोषणा थी।

वह दिन आ रहा था जब परमेश्वर सिय्योन का पुनर्निर्माण करेगा। वह सिय्योन में महिमा में दिखाई देगा। यरूशलेम फिर से शक्ति और महिमा का स्थान होगा। परमेश्वर

की महिमा फिर से यरूशलेम की गलियों में दिखेगी। संपूर्ण संसार इस महिमा को देखकर सिय्योन के परमेश्वर के सम्मुख झुकेगा। इससे भजनकार के मन व मस्तिष्क को कितना प्रोत्साहन मिलता होगा। उसे पता था कि परमेश्वर लाचार की प्रार्थना को सुनकर उसका जवाब देगा।

18–20 पदों में भजनकार भावी पीढ़ी के पढ़े जाने को एक रिपोर्ट लिखने को कहता है। वह चाहता था कि भावी पीढ़ी यह जाने कि परमेश्वर को अपने लोगों की चिन्ता थी। परमेश्वर ने अपने स्वर्गीय पवित्र स्थान से दृष्टि करके उनकी निराशा को देखा था। उसने कानों ने बन्धुओं के कराहने को सुना था। उसने उन्हें मृत्यु के बन्धन से आज़ाद किया था। भजनकार समझ गया था कि हतोत्साहित और निराश होने का क्या अर्थ था। उसने परमेश्वर की चुप्पी और शत्रु द्वारा ठट्ठा किये जाने का अनुभव किया था। उसे देह और मन के दुख का ज्ञान था। उसे यह भी पता था कि उसका परमेश्वर सदा तक सिंहासन पर रहेगा। उसे पता था कि जीवन की प्रत्येक घटना और परिस्थिति पर उसके परमेश्वर का नियंत्रण था। इसी कारण वह सभी पीढ़ियों के लिए एक लिखित रिकार्ड रखना चाहता था। जो उसके समान संकटों का सामना कर रहे थे वह उन्हें यह अनुभव कराना चाहता था कि उनका परमेश्वर सिंहासन पर था। उनका परमेश्वर उनकी चिन्ता करेगा।

भजनकार ने उसे दिन की ओर देखा जब प्रभु का नाम सिय्योन में फिर से लिया जाएगा और यरूशलेम नगर में उसकी स्तुति होगी (पद 21)। निराशा और उजाड़ में से स्तुति और धन्यवाद की आवाज़ आएगी। सारी जातियां इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की आराधना और स्तुति करने को एकत्रित होंगी। हम इसे प्रभु यीशु के सुसमाचार के प्रत्येक जाति और गोत्र तक पहुंचने के रूप में देख रहे हैं।

अपने आस-पास के दुख और पीड़ा पर विचार करने पर वह अपने जीवन के कुछ समय के होने की प्रकृति को जान गया। उसके दिन कम भी हो सकते हैं। जीवन और सांस के लिए वह परमेश्वर पर निर्भर था। दूसरी ओर परमेश्वर एक बड़ा परमेश्वर था। उसने पृथ्वी की नींव को डाला। आकाश उसके हाथों की रचना है। आकाश और पृथ्वी वस्त्र के समान बदल जाएंगे परन्तु परमेश्वर नहीं। समय का परमेश्वर पर कोई प्रभाव नहीं होगा। वह सदा तक एक सा ही रहेगा। तुलना भेदने वाली है। समय हमें बूढ़ा और कमज़ोर बनाता है। हम इस संसार से धूल के हवा से उड़ाए जाने के समान चले जाएंगे। केवल परमेश्वर की स्थायी है।

भजनकार बहुत ही अद्‌भुत विचार के साथ निष्कर्ष निकालता है। उसने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर की सन्तान उसकी उपस्थिति में रहेगी और उनका वंश उसके सामने बना रहेगा। दुख और संकट से भरे इस संसार में इस विचार से बड़ी

शांति मिलती है। प्रभु के लोग उसकी उपस्थिति के आनन्द को जानने पाएंगे। वे समस्त अनन्तकाल में उसके साथ चलेंगे। इससे इन अस्थायी संकटों का सामना करने का साहस मिलता है। जबकि संकट केवल इस जीवन में ही हैं, हमारे प्रेमी सृष्टिकर्त्ता और चरवाहे की उपस्थिति में हमारे पास अनन्तकाल की महान आशा है।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी परमेश्वर की चुप्पी का अनुभव किया है? विश्वासी के लिए यह चुप्पी इतनी कठिन क्यों है?
- अपने संकटों में भजनकार को कैसा लगता है? उसके भावनात्मक और शारीरिक लक्षण क्या है? क्या विश्वासी इन लक्षणों का अनुभव कर सकते हैं? स्पष्ट करें।
- भजनकार के जीवन में विश्वास की क्या भूमिका थी? क्या विश्वास हमारे दुखों और संकटों को हटाता है?
- अपने संकटों में क्या आप कह सकते हैं कि परमेश्वर सिंहासन पर है? क्या आपकी व्यक्तिगत स्थिति में वह सिंहासन पर है? आपको इससे क्या शांति मिलती है।
- परमेश्वर के अनन्त स्वभाव के साथ मनुष्य की नश्वरता की तुलना करें। आपको इस सच्चाई से क्या शांति मिलती है कि आपका परमेश्वर अनन्त है और कभी नहीं बदलता।

प्रर्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह सिंहासन पर है चाहे हमारे जीवन में कैसी भी परिस्थितियाँ या परीक्षाएं आएं।
- अपने व्यक्तिगत संघर्ष का सामना करने के लिए प्रभु से आपको भजनकार के विश्वास को देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि जब हम उसे देख भी नहीं पाते और बेचैनी और समस्याएं हमें रात भर जगा कर रखती हैं, तब भी वह हमारा परमेश्वर बना रहता है और हमारी सहायता के लिए आता है।
- प्रभु को उस आशा के लिए धन्यवाद दें जो आपको उसकी उपस्थिति में अनन्तकाल के लिए है। यदि आप आज उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हैं, तो उससे आपको क्षमा करने और अपनी संतान बनाने को कहें।

89. उसके किसी उपकार को न भूलें

पढ़ें भजन संहिता 103:1-22

क्या आपने कभी यह विचार किया है कि परमेश्वर की संतान होने के कारण आप कितने धन्य हैं? विश्वासी होने के कारण हमारे जीवनों में ऐसे कई समय आते हैं जबकि हम उन संघर्षों और परीक्षाओं में फंस जाते हैं जिनका हम सामना कर रहे होते हैं, और हम इस अद्‌भुत विशेषाधिकार के दृष्टिकोण को खो देते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं। इस भजन में भजनकार इस समस्या को जानकर अपने पाठकों को इस विशेषाधिकार पर विचार करने की चुनौती देता है कि उन्हें प्रभु से जुड़ना व उसकी आशीषों को जानना है।

भजन के आरम्भ में भजनकार की चुनौती प्रभु की स्तुति करने की है। वह अपने मन को प्रभु परमेश्वर के प्रति स्तुति और धन्यवाद में झुकने को कहता है। पद 1 में ध्यान दें कि यह स्तुति भीतरी है। अर्थात् यह उसके मन और आत्मा से है। यह उस स्थान से आती है जहां गहरा आभार और धन्यवाद वास करते हैं। यह स्तुति काल्पनिक नहीं है। यह मन से आनेवाली और निष्कपट है।

पद 2 में भजनकार अपने मन को प्रभु के किसी उपकार को न भुलाने की चुनौती देता है। ये उपकार प्रभु को जाननेवालों के लिए हैं। भजनकार पाठकों से कुछ क्षण के लिए उन सभी आशीषों पर विचार करने को कहता है जो उन्होंने प्रभु से पाई थीं। वह उन्हें न केवल इन आशीषों को कभी न भूलने की चुनौती देता है बल्कि इन्हें अपने प्रभु परमेश्वर की स्तुति का विषय बनाने को भी। इस कार्य में उनकी सहायता करने को भजनकार आगे के कई पदों में उन बहुत सी आशीषों की सूची देता है जो प्रभु को जाननेवालों के लिए सामान्य हैं। हम इन उपकारों पर बारी-बारी से विचार करेंगे।

पद 3 में इन उपकारों में से पहला पाप की क्षमा है। यदि पापों की क्षमा न होती तो आज हम कहां होते? हम प्रभु के शत्रु थे और हमारी सज़ा उससे सदा का अलगाव थी। अपने अनुग्रह में प्रभु परमेश्वर हम तक पहुंचा और हमारे पापों की क्षमा दी। इस पर ध्यान दें कि परमेश्वर हमारे 'सभी' पापों को क्षमा करने को तैयार है। हमें ऐसा लग सकता है कि हम अमुक पाप की क्षमा पाने के योग्य नहीं हैं, परन्तु भजनकार हमें स्मरण कराता है कि हमारे सभी पापों को परमेश्वर द्वारा ढांका व क्षमा किया जा

सकता है। ये पाप अब परमेश्वर और हमारे बीच में आने नहीं पाएंगे। हम परमेश्वर के साथ अभी और समस्त अनन्तकाल में अद्‌भुत सहभागिता में चल सकते हैं।

पद 3 में भी ध्यान दें कि प्रभु परमेश्वर हमारे सारे रोगों को चंगा करता है। हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि विश्वासी होने के कारण हमें कभी बीमारी का सामना नहीं करना पड़ेगा। सच्चाई यह है कि उनके चंगा होने की ज़रूरत इस बात का संकेत है कि ये विश्वासी इन बीमारियों से अपने आस-पास की जातियों के समान ही पीड़ित थे। हम पार्थिव देहों में एक पापी संसार में रहते हैं। ये पार्थिव देह नश्वर हैं और बीमारी व रोगों के आधीन हैं। विषय की सच्चाई यह है कि विश्वासी भी इस जीवन में बीमारी और रोगों से मरते हैं। कुछ सबसे शक्तिशाली विश्वासी जिनसे मैं मिला हूँ वे बीमारी व रोगों से बुरी तरह से ग्रस्त थे। मैंने हमेशा एक अन्धे मित्र और उसके अद्‌भुत विश्वास की प्रशंसा की है। परमेश्वर ने कभी उसे उसके अन्धेपन से आज़ाद नहीं किया। इस पद के बारे में मैं यहां तीन चीज़ें कहना चाहूंगा।

पहली, परमेश्वर हमारे सभी रोगों को चंगा करने में समर्थ है। इस पृथ्वी पर ऐसी बहुत सी गवाहियां देखने को मिलती हैं कि कैसे उसने अपने लोगों को प्रत्येक बीमारी व रोग से चंगाई दी। मुझे विश्वास नहीं है कि ऐसी कोई बीमारी नहीं जिससे परमेश्वर ने अपने लोगों को चंगाई न दी हो। उसने विश्वासी को प्रत्येक बीमारी से मुक्त किया है। वह सभी बीमारी और रोग के ऊपर का प्रभु है। उसने इसे प्रमाणित किया है। तौभी, ऐसे समय भी होते हैं जब परमेश्वर अपनी किसी एक सन्तान को अपने निकट लाने और कुछ अच्छा पूरा करने को उसके जीवन में रोग व बीमारी को आने देता है।

दूसरी, परमेश्वर का अनुग्रह सदैव किसी भी ऐसे रोग या बीमारी से बड़ा होता है जिससे मैं कभी पीड़ित हुआ हूं। मैं ऐसे लोगों के बीच रहा हूं जो भयानक दुख और पीड़ा में रहे हैं परन्तु उन्होंने अद्‌भुत विजय को दिखाया है। हो सकता है कि आप विश्वासियों से उनकी मृत्यु शय्या पर मिले हों जिन पर प्रभु का तेज चमकता था। वे दुख और रोग में रहते हुए भी एक अद्‌भुत विजय में रह रहे थे। शारीरिक रूप से पीड़ित होने पर भी उन्होंने आत्मिक रूप से बीमारी पर जय पाई थी।

अन्त में, परमेश्वर अपनी संतान पर से प्रत्येक बीमारी और रोग को हटाएगा। उसकी योजना हमारी शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक भलाई की है। वह दिन आ रहा है जब सभी रोगों और बीमारियों को हटा दिया जाएगा। हम सदा के लिए अपने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे जहां पाप, बीमारी और रोग हमें कभी भी नहीं पाएंगे। सभी रोग परास्त होंगे। प्रकाशितवाक्य 21:4 में यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है।

भजनकार इस भजन में जिस अगले उपकार के बारे में बताता है वह पद 4 में मिलता है। वह अपने पाठकों को याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर ने उनके जीवनों

को खाई में जाने से बचाया है। खाई से यहां अभिप्राय कब्र से है। भजनकार हमें यह बता रहा है कि मृत्यु, रोग के रूप में विश्वासी पर विजयी नहीं हो सकती है। परमेश्वर की सन्तान होने के कारण वे अपने परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रेम और दया में प्रत्येक संकट का सामना कर सकते हैं। वे यह जान सकते हैं कि वह उनकी अत्यधिक चिन्ता करता है। दुखों व सतावों में इससे कितनी सांत्वना मिलती है।

इस जीवन में परमेश्वर उनकी लालसा को तृप्त करता है (पद 5)। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे जो चाहे ले सकते हैं। परमेश्वर ने उनके मनों को संतुष्टि देने के लिए वह सब कुछ दिया है जिनकी उन्हें ज़रूरत है। उसके हाथ से वे जिन भली चीज़ों को प्राप्त करते हैं, उन्हें पूरी तरह से आशीषित और संतुष्ट करती है। कुछ क्षण के लिए इस पर रुककर हम अच्छा करेंगे। ऐसे भी समय होते हैं जब हम मसीही जीवन में संतुष्ट नहीं होते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमें वह सब कुछ नहीं दिया है जो आनन्द की भरपूरी और संतुष्टि की परिपूर्णता के लिए ज़रूरी है। सामान्यता हम इसलिए संतुष्ट नहीं होते हैं क्योंकि हमने उसक साथ खुश रहना नहीं सीखा होता जो परमेश्वर ने हमें दिया है। मेरे जीवन में ऐसे बहुत से समय रहे थे जब मैंने किसी चीज़ की इच्छा तो की थी परन्तु उसे प्राप्त करने पर मेरी उसमें रुचि नहीं रहती थी। जीवन में हम बहुत सी चीज़ों की इच्छा करते हैं। भजनकार हमें यह नहीं कह रहा है कि हमें सदा वही मिलेगा जो हम चाहेंगे। तथापि, वह हमें यह बता रहा है कि प्रभु परमेश्वर हमारी सभी इच्छाओं को भली चीज़ों से संतुष्ट करने में समर्थ है। हमें केवल उन चीज़ों को प्राप्त करना तथा उनमें आनन्दित रहना सीखना है।

पद 5 में भजनकार हमें याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर हमारी जवानी को उकाब की नाई नया बनाता है। उकाब शक्ति का प्रतीक है। परमेश्वर हमें वह सारी शक्ति देता है जिसकी हमें उसकी संतान के रूप में ज़रूरत है। वह हमें उसे करने को तैयार करेगा जिसकी हमें उसकी महिमा के लिए किये जाने की ज़रूरत है। उसकी शक्ति हमेशा कार्य के समानान्तर होगी। आज इस पर विचार करने पर परमेश्वर उस सारी चेतना व शक्ति को देने में समर्थ है जिसकी मुझे उस कार्य को करने की ज़रूरत होती है जिसे करने को उसने मुझे बुलाया है। हमारा इस सच्चाई के लिए उसकी प्रशंसा करना कितनी ज़रूरी है कि वह हमें उकाव के समान नया बनाता है। हमारे विरुद्ध आनेवाली हवा के बावजूद हम आकश में ऊंचाई पर उड़ सकते हैं। हम उसके द्वारा दिये जानेवाले जवानी के जोश से विजयी हो सकते हैं।

पद 6 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु सब पिसे हुओं के लिए धर्म और न्याय के काम करता है। अन्य शब्दों में, प्रभु परमेश्वर हमारी पुकार को सुनेगा। उसके पास हमेशा ज़रूरतमंदों के लिए समय होता है। इस जीवन में हमारे साथ सदैव अच्छा नहीं होता

है। कई बार धर्मी और निर्दोष लोग अधर्मी लोगों के हाथ दुख उठाते हैं। परमेश्वर इन चीज़ों के लिए अन्धा नहीं है। वह हमारे आस-पास के सारे अन्याय और अधार्मिकता को देखता है। हम निश्चित हो सकते हैं कि वह दिन आ रहा है जब वह बुराई पर विजयी होगा और न्याय को लौटा ले आएगा। हमारे पास कितनी अद्‌भुत आशा है। धार्मिकता और न्याय बने रहेंगे। परमेश्वर सहायता के लिए की जानेवाली हमारी पुकार को सुनेगा। वह हमारे साथ न्याय और धार्मिकता से व्यवहार करेगा।

पद 7 से हम सीखते हैं कि परमेश्वर अपने दासों पर अपने मार्गों और कार्यों को प्रगट करता है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर हमें उस मार्ग को दिखाएगा जिस पर हमें जाने की ज़रूरत है। वह जीवन में बिना किसी निर्देश के हमें नहीं छोड़ेगा। वह हमारे साथ चलेगा और सारे मार्ग में हमारा मार्गदर्शन करेगा। तथापि, इसके अतिरिक्त परमेश्वर हमें अपने कार्यों से भी अवगत कराएगा। वह हमें अपनी सामर्थ का स्पष्ट प्रदर्शन दिखाएगा। हम प्रतिदिन हम में उसके मार्गदर्शन और उसके शक्तिशाली कार्य किये जाने के बारे में जान सकते हैं।

प्रभु क्रोध में धीमा और प्रेम में असीमित है। विश्वास का जीवन जीने पर हम मार्ग में ठोकर खाकर गिरेंगे। ऐसे भी समय होंगे जब हम गिरेंगे। पद 8 से हमें शांति मिल सकती है। परमेश्वर उतावली से क्रोध नहीं करता। वह हमसे प्रेम और दया में होकर व्यवहार करता है। वह उस व्यक्ति के प्रति अनुग्रह से भरा रहता है जो ठोकर खाकर गिरता है। भजनकार पद 9 में हमें बताता है कि परमेश्वर सदा हमसे वाद-विवाद करता न रहेगा। अर्थात्, ऐसे भी समय होते हैं जब परमेश्वर हमारी असफलताओं को एक ओर रखकर अनुग्रहपूर्वक हमें प्रोत्साहित करता है। वह जानता है कि हम संपूर्ण नहीं हैं। वह हमारी कर्मियों और असफलताओं को सहता है। हम पर वह एक ऐसे स्वामी के रूप में चाबुक लेकर खड़ा नहीं होता है जो हमारे हर बार असफल होने पर हम पर चाबुक चलाता हो। इसके विपरीत एक प्रेमी पिता के समान वह हमें हमारे पैरों पर खड़ा कर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करता है।

उसका क्रोध सदा के लिए भड़का न रहेगा (पद 9)। हां, ऐसे भी समय होते हैं जब प्रभु परमेश्वर हम से क्रोधित होता है। तौभी, उसका क्रोध सदा तक नहीं रहेगा। परमेश्वर हमारी कमियों के लिए हमें क्षमा करेगा। वह हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं करता (पद 10)।

अपनी संतान के लिए परमेश्वर का प्रेम (उनकी सभी कमियों और अयोग्यताओं के बावजूद) आकाश के समान ऊंचा है। यह प्रेम इतना असीमित है कि इसे मापा नहीं जा सकता। वह स्वेच्छा से हमारे अपराधों और पापों को हम से अलग कर देता है। भजनकार हमें बताता है कि वह हमारे अपराधों को हमसे उतना ही दूर कर देता है

जितना कि पूर्व पश्चिम से दूर है। पूर्व पश्चिम से कितना दूर है? वे विपरीत दिशा में हैं। उनके बीच की दूरी को कभी भी मापा नहीं जा सकता क्योंकि पूर्व की दिशा अलग है और पश्चिम की अलग। भजनकार हमें बता रहा है कि हमारे और हमारे पापों के बीच की दूरी असीमित है जिसे कभी मापा नहीं जा सकता है। हम उन पापों को फिर कभी नहीं देख पाएंगे।

परमेश्वर हम से पिता के समान व्यवहार करता है। वह प्रेमी और दयालु है। हमारे ठोकर खाने पर वह हमें उठाता है। हमारे असफल होने पर वह हमें पुनर्गठित करता है। हमारे लिए उसका प्रेम वास्तविक है। वह हमारे प्रति धीरजवन्त बना रहता है। उसका ज्ञान शांति देनेवाला है।

परमेश्वर हमसे पूर्णतया भिन्न है। वह अनन्त है; हमें मिट्टी से बनाया गया है। उसका न आरम्भ है और न अन्त। हम घास के समान हैं जो बढ़ती व सूख जाती है या फूल के समान हैं जो कुछ समय के लिए खिलता है और उसके बाद मुरझा जाता है। हवा के चलने पर यह फूल अपने स्थान पर बना नहीं रह सकता। हम क्षण भर के लिए जीते और फिर मर जाते हैं और जल्द ही भुला दिये जाते हैं। परमेश्वर बिल्कुल अलग है। हमारी इन भिन्नताओं के बावजूद हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम स्थायी और बना रहनेवाला है। हमारे प्रति उसका प्रेम सदा के लिए बना रहता है। यही प्रेम आगे हमारी संतान तक भी जाता है और उन सभी तक भी जो उसकी आज्ञाकारिता में रहते हैं। इससे हमें कितनी शांति और प्रोत्साहन मिलता है।

यह अद्‌भुत प्रेम और दया का परमेश्वर स्वर्ग के सिंहासन पर बैठता है। वह सभी पर राज्य करता है। उससे बड़ा कोई भी अधिकार या शक्ति नहीं है। उसके सिवाय और कोई भी स्तुति और धन्यवाद पाने के योग्य नहीं है।

प्रभु के उपकारों पर अपने विचारों के अन्त में वह स्वर्ग के दूतों को उसकी स्तुति करने को कहता है। वह उन्हें इस पर विचार करने को कहता है कि उसके कार्य कितने अद्‌भुत हैं और उसके कार्य कितने चमत्कारी हैं तथा स्वर्ग में परमेश्वर की दया है। वह स्वर्ग के दूतों को परमेश्वर की सभी संतानों की ओर से जो कि धन्य हैं, परमेश्वर की आराधना करने को कहता है।

न केवल भजनकार मानवजाति के प्रति परमेश्वर के उपकारों के लिए स्वर्गदूतों को प्रभु की स्तुति करने को कहता है, परन्तु वह परमेश्वर के समस्त कार्यों के लिए उसके उपकारों की गवाही देने को अपनी आवाज़ ऊँची करने को कहता है। ये कार्य क्या हैं? ये सृष्टि के कार्य हैं जो उसकी सामर्थ और महिमा को दिखाते हैं। वे ज़रूरत को पूरा करने के कार्य हैं। वे शत्रु पर शक्ति के कार्य है। वे दुख के समयों में दया और करुणा के कार्य हैं। ये सभी कार्य परमेश्वर के बड़े अनुग्रह की गवाहियां हैं। वे उसकी

महिमा का प्रगटीकरण और स्तुति किये जाने योग्य हैं।

अन्त में भजनकार अपने मन को प्रभु के सभी उपकारों के लिए उसे महिमा देने और आनन्द मनाने को कहता है। यह बुलाहट व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए भी है। परमेश्वर की संतान के रूप में आपने किन उपकारों को पाया है? काश कि आपका मन इन अद्‌भुत उपकारों के लिए उसकी स्तुति और धन्यवाद करे। काश कि आप उन्हें कभी भुलाने न पाएं।

विचार करने के लिए:

- क्या आप कभी प्रभु और उसके प्रबन्ध के विरुद्ध कुड़कुड़ाए हैं? क्या प्रभु के उपकारों के लिए आनन्द मनाने का आपके पास कोई कारण है? स्पष्ट करें।
- क्या प्रभु के उपकारों को जानने का अर्थ यह है कि हम इस जीवन में कभी भी कठिनाई और संघर्ष का सामना नहीं करेंगे?
- क्या आप संतुष्ट हैं? हम जो चाहते हैं उसे पाने और जो परमेश्वर ने दिया है उसमें संतुष्ट रहने के बीच क्या अन्तर है?
- आप अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा समर्थ किये जाने और नया बनाने को कैसे अनुभव करते हैं?
- आपको इस सच्चाई से क्या शांति मिलती है कि परमेश्वर हम से पिता के समान व्यवहार करता है? उसके मानदण्ड से गिर जाने पर हमारे लिए इसका क्या अर्थ है?
- कुछ समय उन आशीषों पर विचार करने में बिताएं जो परमेश्वर ने आपको आपके जीवन में दी हैं।

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय प्रभु को उन बहुत से उपकारों के लिए धन्यवाद देने में बिताएं जो उसने आपको व्यक्तिगत रूप से दिये हैं।
- प्रभु से कहें कि आपके प्रति उसकी भलाई के लिए आपको पूर्ण रूप से संतुष्ट होना सिखाए।
- परमेश्वर से आपको आज्ञाकारिता में चलने का साहस देने को कहें। उससे आपको विश्वास के बड़े कदम लेने के योग्य करने यह जानते हुए कि वह आपसे कितना अधिक प्रेम करता है और आपकी किसी भी गलती को क्षमा कर देगा।
- क्या आज काम करने के लिए आपको शक्ति की ज़रूरत है? परमेश्वर से आपको उकाब के समान नया बनाने को कहें ताकि आप उसकी शक्ति में होकर ऊंचाईयों तक उड़ सकें।

90. हमारे सृष्टिकर्त्ता और पोषणकर्त्ता की स्तुति हो

पढ़ें भजन संहिता 104:1-35

भजन 103 में भजनकार अपने पाठकों को उन अद्‌भुत उपकारों पर विचार करने को कहता है जो प्रभु परमेश्वर ने अपने सभी प्रेम करनेवालों के लिए किए हैं। भजन 104 में वह अपना ध्यान परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि की रचना किये जाने और उसे संभालने के तरीके पर देता है।

1-2 पदों में वह प्रभु परमेश्वर के ऐश्वर्य पर संक्षिप्त रूप से विचार करने के द्वारा आरम्भ करता है। भजनकार हमें याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर एक महान परमेश्वर है जो विभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहने हुए है। ये परमेश्वर की योग्यताएं हैं जो उसे आदर और सराहना के योग्य बनाती हैं। परमेश्वर के विभव और ऐश्वर्य को देखकर हम चकित रह जाते हैं। हमारी इच्छा आराधना और स्तुति करने की होती है। भजनकार हमें बता रहा है कि परमेश्वर ने विभव और ऐश्वर्य के वस्त्र पहने हैं।

पद 2 में वह इस विभव और ऐश्वर्य को बताने का प्रयास करता है। वह हमें बताता है कि प्रभु उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है। यदि आपने कभी पूरी तरह से चमकते हुए सूर्य को देखने का प्रयास किया हो तो आप समझ पाएंगे कि भजनकार यहां क्या कहने का प्रयास कर रहा है। वह हमें बता रहा है कि प्रभु परमेश्वर की चमक और ऐश्वर्य इतना अधिक था कि उसकी ओर देखना कठिन था। उसकी उपस्थिति कोई सामान्य उपस्थिति नहीं थी। उसके दिखाई देने पर चीज़ें बदल जाती हैं। सभी विचार उसके होते हैं। इसके अलावा और कोई चीज़ महत्व नहीं रखती।

विभव और ऐश्वर्य का यह परमेश्वर एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर था। उसने आकाश को तम्बू के समान फैलाया था। सृष्टि के विस्तार और आकाश की विशालता पर विचार करने पर आप यह जान पाएंगे कि आकाश को फैलानेवाला परमेश्वर कितना अद्‌भुत और शक्तिशाली है।

न केवल परमेश्वर ने पृथ्वी के ऊपर आकाश को फैलाया परन्तु भजनकार अपने पाठकों को याद दिलाता है कि वह अपनी अटारियों की कड़ियां जल में धरता है। अर्थात् आकाश जल से भरा है। भजनकार असीमित मात्रा में जल की आपूर्ति की

कल्पना करता है जो कि जल का भण्डार है जिससे समस्त पृथ्वी को जल मिलता है। वह हमें बताता है कि परमेश्वर ने आकाश में वर्षा और बर्फ को रखने का एक कमरा बनाया है। हमें इसे काव्यात्मक भाव में देखने की ज़रूरत है।

आकाश के बादल रथ थे जिन पर होकर परमेश्वर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाता है। वह हवा के पंखों पर चलता है। पुनः हमें इस पद को काव्यात्मक भाव में देखने की ज़रूरत है। परमेश्वर अक्षरशः बादलों के रथ पर सवारी नहीं करता और न ही हवा के पंखों पर चलता है। भजनकार के मन का विचार यह है कि प्रभु परमेश्वर आकाश से ऊपर है। बादल और हवा उसके पास थे। वे उसकी आज्ञा के अनुसार ही कार्य करते थे। पद 4 में हमें बताते हुए वह इसे स्पष्ट करता है कि हवा उसके दूत और धधकती आग उसके सेवक थे। चूंकि भजनकार आकाश के बारे में बोल रहा है, हमारे लिए 'धधकती आग' को बिजली समझना सरल होगा। हवा और बिजली स्वर्ग के प्रभु परमेश्वर के आधीन हैं। वह उन पर नियंत्रण करता और सही तरह से उनका प्रयोग करता है।

आकाश पर विचार करने के बाद भजनकार पृथ्वी की ओर आता है। वह अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु ने पृथ्वी की नेव को स्थिर किया है ताकि वह कभी न डगमगाए। जैसा हम जानते हैं कि पृथ्वी हज़ारों वर्षों से है। तूफान, रोग और मानवजाति के पापी मनों की महामारी के बाद भी यह स्थिर है। परमेश्वर ने इसे इसके स्थान पर रखा है और यह तब तक ऐसे ही बनी रहेगी जब तक कि परमेश्वर इसके अन्त का निर्णय न ले लें।

परमेश्वर ने पृथ्वी को जल से ढांप दिया है। इस जल ने पृथ्वी को वस्त्र के समान ढांप लिया है। पद 6 में ध्यान दें कि भजनकार हमें बताता है कि कैसे जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया है। यह सागर के तल का चित्र हो सकता है। सागर तल के नीचे गहरी खाइयां और पहाड़ पाए जाते हैं। सागर के जल ने इन बड़े पहाड़ों को ढांप लिया है।

पद 7 से हम समझते हैं कि पृथ्वी का जल आकाश की सेना के समान है, जिस पर प्रभु परमेश्वर का नियंत्रण है। परमेश्वर की घुड़की से जल भाग जाता है। उसके गरजने का शब्द सुनकर वह बह जाता है। वह अपने सृष्टिकर्त्ता प्रभु परमेश्वर की योजना और उद्देश्य की आज्ञाकारिता में होकर पहाड़ों पर चढ़ गया और तराई में बह गया। परमेश्वर ने प्रत्येक तालाब और नदी के लिए एक स्थान निश्चित किया था। उसने एक सीमा रखी है जिसे वे पार नहीं कर सकते कि वे पूरी पृथ्वी को पानी से फिर कभी नहीं ढांपेंगे। यह नूह के दिनों में आनेवाली बाढ़ के संदर्भ में हो सकता है जब परमेश्वर ने समस्त पृथ्वी को पानी से ढांप कर नाश कर दिया था। भजनकार हमें बता रहा है कि प्रकृति की इस महान और शक्तिशाली शक्ति पर प्रभु का नियंत्रण है।

उसे उसकी आवाज़ सुनकर उसकी आज्ञा माननी है।

पानी के सोते जो पहाड़ों पर से बहते हुए निचले स्थानों की ओर जाते हैं; मैदान के जीव जन्तुओं को जल प्रदान करते हैं (पद 10-11)। उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करते और उसमें उन्हें जीवन मिलता है। वे उन वृक्षों पर बैठकर गाते हैं जो जल से पोषण पाते हैं जिसे परमेश्वर उनके लाभ के लिए उन तक बहाता है। यह सारा जल प्रभु परमेश्वर की ओर से आता है और उसकी अटारियों में संचित हो जाता है। यही जल पृथ्वी पर पोषण देने के साथ-साथ जीवन को बनाए रखता है। यह परमेश्वर का एक अद्‌भुत दान है और सृष्टि के लिए उसकी प्रेम व दया भी।

प्रभु परमेश्वर पशुओं के लिए पृथ्वी पर घास उपजाता है। वह पृथ्वी के पौधों से मानवजाति के हृदयों को आनन्द देता है। वह उनके मनों को आनन्द देने के लिए दाख, उनके मुख को चमकाने के लिए तेल और उनके मन को संभालने के लिए अन्न देता है। हमारे लिए इस पर विचार करना महत्वपूर्ण है। प्रभु परमेश्वर की रुचि न केवल संभालने में है परन्तु हमें एक अच्छा जीवन देने की भी है। ध्यान दें कि वह कैसे आनंद देने को दाखमधु और मुख चमकाने के लिए तेल देता है। परमेश्वर हमें जीवित रखने से अधिक कार्य करता है; वह हमें एक आनन्दायक व आशीषमय जीवन देता है। ऐसे भी समय होते हैं जब हम यह सोचते हैं कि प्रभु परमेश्वर हमें केवल वही देना चाहता है जिसकी हमें जीवित रहने के लिए ज़रूरत है। वास्तविकता यह है कि उसे हमें अधिक देने में खुशी मिलती है। उसके स्त्रोत सीमित नहीं हैं। वह हमारी सारी ज़रूरतों को पूरा करने के साथ-साथ हमें उससे अधिक देने के भी योग्य है।

16-17 पदों में भजनकार अपना ध्यान पृथ्वी के वृक्षों पर लगाता है। ध्यान दें कि वह कैसे उन्हें यहोवा के वृक्ष कहता है। वे सभी उसके हैं। पद 16 में, भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि इन पृक्षों को प्रभु ने लगाया और वही उन्हें जल देता है। यह एक माली की अपने कीमती वृक्षों की देखभाल किये जाने के रूप में कल्पना की गई है। इन वृक्षों में पक्षियों ने अपने घर बनाए हैं। वे परमेश्वर द्वारा लगाए व सींचे गए वृक्षों से खुश होते हैं।

ऊंचे पहाड़ जंगली बकरों के लिए हैं। ऊंचे पहाड़ों के इस एकान्त व खामोशी में ये जंगली जानवर रहते व खेलते हैं।

आकाश की ज्योतियों को उनके क्रम में रखा गया है। प्रभु परमेश्वर ने उन्हें बनाया है। दिन ढलने के बाद के समय के लिए उसने चांद को ठहराया। प्रतिदिन का आरम्भ सूर्य करता है। सूर्य को पता है कि कब निकलना और कब छिपना है। यह सब आश्चर्यजनक है। ये ज्योतियां जिस क्रम और मेल में होकर कार्य करती हैं वह अद्‌भुत है। हमारे परमेश्वर ने ही इस क्रम को बनाया है।

सूर्य के छिप जाने पर अंधकार पृथ्वी को ढांप लेता है। इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन समाप्त हो जाता है। यह जंगली जानवरों के घूमने फिरने का समय होता है। धरातल पर जहाज़ आते जाते हैं। सिंह दिन के समय अपनी गुफा में रहते हैं परन्तु सूर्य के छिप जाने पर वे अहेर के लिए गरजते हैं। दूसरी ओर मनुष्य सूर्य की रोशनी का आनन्द लेता और कार्य करने को उठ जाता है। यहां भी एक क्रम है शिकार करनेवाले जानवरों के लिए अन्धकार और काम करनेवाले मनुष्यों के लिए ज्योति।

भजनकार के अनुसार पृथ्वी परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों से भरपूर है। परमेश्वर ने अपनी अद्वितीय बुद्धि से प्रत्येक प्राणी को बनाया है। समुद्र बहुत से प्राणियों से भरा है। इसकी उपरी सतह पर जहाज़ आते जाते रहते हैं। सतह के नीचे बड़ा समुद्री जीव लिब्यातान खेलता है। प्रत्येक अपने स्थान पर है। हम सृष्टि में पाए जानेवाले मेल को फिर से देखते हैं।

परमेश्वर की समस्त सृष्टि अपने भोजन और जीविका के लिए उस पर निर्भर है। प्रत्येक को परमेश्वर से वही मिलता है जिसकी उसे ज़रूरत है। परमेश्वर अपनी समस्त जीवित सृष्टि की ज़रूरत को पूरा करता है। पुन: इस पर विचार करने पर हम परमेश्वर के अद्‌भुत प्रबन्ध और उसकी समस्त सृष्टि; चाहे बड़ी हो या छोटी पर केवल आश्चर्य ही कर सकते हैं।

यदि परमेश्वर अपनी सृष्टि से मुख फेर ले तो वे घबरा जाएंगे। उन्हें कोई आशा न रहेगी। वे उस मिट्‌टी में ही मिल जाएंगे जिससे उन्हें बनाया गया था। केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही वे जीवित रहते हैं। सभी चीज़ों के लिए हम परमेश्वर पर कितने अधिक निर्भर हैं। परमेश्वर द्वारा अपने आत्मा के भेजे जाने पर रचना होती है (पद 30)। उसके आत्मा के कार्य करने पर समस्त पृथ्वी नई हो जाती है और उसे जीवन मिलता है, परन्तु जब वह अपने आत्मा को हटाता है तब समस्त जीवन नाश हो जाते हैं। हम परमेश्वर और उसके आत्मा पर कितने अधिक निर्भर हैं हमारी प्रत्येक चीज़ उसकी ओर से आती है।

इसी कारण भजनकार यह कहते हुए समापन करता है: ''यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे।'' प्रभु के ये सभी कार्य महिमामयी और अद्‌भुत हैं। भजनकार को सृष्टि में परमेश्वर के मेल और जीवन देनेवाले कार्य को देखकर खुशी मिली। यह मेल और जीवन परमेश्वर की महिमा को दिखाता है। भजनकार चाहता है कि यह सदा तक बना रहे। परमेश्वर के इस महिमामयी कार्य के बिना कुछ नहीं होगा। परमेश्वर की महिमा के बने रहने को कहते हुए, भजनकार सभी चीज़ों के लिए परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को जान रहा है।

पद 31 में यह ध्यान दें कि यहोवा की इच्छा अपने कामों से आनन्दित होने की

है। हमारे लिए यहां यह समझना ज़रूरी है कि परमेश्वर को अपनी सृष्टि को जीवन देने में खुशी मिलती है। उसे उन्हें संभालने और उनकी रक्षा करने में खुशी मिलती है। प्रभु की इच्छा भी हममें, उसकी सृष्टि में, आनन्दित होने की है, जबकि हम उसके साथ विश्वासयोग्यता से चलते हैं।

भजनकार को इससे आश्चर्य होता है कि पृथ्वी को ऐसा जीवन और मेल देने वाला प्रभु एक ऐसा परमेश्वर है जिसकी दृष्टि से पृथ्वी कांप उठती है। उसके छूते ही पहाड़ों से धूआं निकलता है। यही परमेश्वर इतना दयालु था कि उसने अपनी सबसे छोटी सृष्टि को भी जीवन दिया। इस अद्‌भुत सच्चाई के कारण भजनकार अपने जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहेगा (पद 33)।

सृष्टिकर्त्ता और पोषणकर्त्ता के जीवन पर अपने विचार मनन का समापन करने पर भजनकार की इच्छा यह है कि यह परमेश्वर को भानेवाला हो। उसकी यह इच्छा थी कि परमेश्वर उसके ध्यान करने पर और उसके हृदय के विचारों पर ध्यान और उनमें आनंद करे। यह जानना कितना अद्‌भुत है कि हम अपनी आराधना और स्तुति के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। वह हमारे हृदय के रवैये पर ध्यान देता और हमारी स्तुति से खुश होता है।

परमेश्वर के प्रति उसकी भावनाएं इतनी मज़बूत थीं कि भजनकार यह चाहता था कि पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएं और दुष्ट लोग आगे को न रहें। प्रभु परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों और उसकी सृष्टि के लिए उसकी दयालु देखभाल पर विचार करने पर भजनकार यह सोचने को प्रेरित हुआ कि ऐसे लोग भी होंगे जो ऐसे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करेंगे। इससे उसके मन को दुख पहुंचा कि ऐसे लोग भी होंगे जिन्हें परमेश्वर और उसके मार्गों की कोई चिन्ता नहीं होगी। वह यह चाहता था कि पृथ्वी पर रहनेवाले सभी प्रभु की स्तुति करें। यही हमारी भी इच्छा होनी चाहिए।

विचार करने के लिए:

- विभव और ऐश्वर्य क्या है? परमेश्वर विभव और ऐश्वर्य का परमेश्वर कैसे है?
- सृष्टि के विस्तार पर विचार करें। यह परमेश्वर के बारे में क्या बताता है?
- भजनकार हमें याद दिलाता है कि समस्त सृष्टि पर प्रभु परमेश्वर का नियंत्रण है। इससे आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- यहां हम परमेश्वर की दया के बारे में सीखते हैं?
- आशीष देने में खुशी मिलती है? इससे आप को क्या शांति और चुनौती मिलती है?
- भजनकार यहां परमेश्वर के बारे में जो बताता है उस पर विचार करें। ऐसे परमेश्वर के विरुद्ध पाप और विद्रोह इस रोशनी में इतने विस्मयकारी क्यों हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह सृष्टि का सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्त्ता और पोषण कर्त्ता है।
- पिछले सप्ताह परमेश्वर ने आप पर अपनी दयालु देख-रेख को व्यक्तिगत रूप से कैसे दिखाया है? इसके लिए उसे व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपको ऐसे समयों के लिए क्षमा करने को कहेंगे जब आप सभी चीज़ों के लिए उसकी ज़रूरत को जानने में असफल हो गए थे।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि आपकी ज़रूरतों को पूरा करने और आपको व्यक्तिगत रूप से आशीष देने में उसे मिलती है।

91. वाचा पूरी करने वाले परमेश्वर की स्तुति हो

पढ़े भजन संहिता 105:1-45

भजन 105 की जांच करने पर हम देखते हैं कि परमेश्वर वाचा को पूरा करने वाला परमेश्वर है। भजन 103 में भजनकार प्रभु द्वारा अपने लोगों को दिये जानेवाले सामान्य लाभों या उपकारों के बारे में बताता है। भजन 104 में उसने अपने पाठकों को इस पर विचार करने की चुनौती दी थी कि परमेश्वर उनका सृष्टिकर्त्ता और पोषणकर्त्ता था। भजन 105 में भजनकार परमेश्वर के लोगों को अपने इतिहास की ओर देखने और यह देखने को भी बुलाता है कि प्रभु परमेश्वर उसके साथ एक बहुत विशिष्ट वाचा के संबन्ध में कैसे आया था।

इस भजन के प्रथम सात पदों में भजनकार अपने लोगों को प्रभु परमेश्वर की स्तुति करने और धन्यवाद देने को बुलाता है। वह उन्हें इसे कई तरह से करने की चुनौती देता है। पद 1 में उसने विश्वासियों को प्रभु को धन्यवाद देने की चुनौती दी। जबकि इस संदर्भ में इस धन्यवादी का कारण इस सच्चाई से संबन्धित था कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक विशेष संबन्ध में आया था। बहुत से कारणों से हमें प्रभु को धन्यवाद देने की ज़रूरत है। विश्वासियों को धन्यवाद देनेवाले लोग बनना है।

भजनकार की अपने लोगों के लिए प्रभु का नाम लेने की चुनौती के दिये जाने पर भी ध्यान दें। प्रभु का मान लेने का हमारे पास कितना अद्‌भुत विशेषाधिकार है। हम उसके पास किसी भी समय में आ सकते हैं। हम उसकी स्तुति के लिए उसे पुकारते और उसे धन्यवाद देते और हम अपनी ज़रूरत के समय में उसे हमारी सहायता करने को पुकारते हैं। प्रभु का नाम लेने पर हम यह स्वीकार करते हैं कि वही हमारी शक्ति का स्त्रोत है। वही हमारी आशा, आश्वासन और सांत्वना है। उसका नाम लेने पर हम उसे अपनी परिस्थितियों पर परम्‌प्रधान परमेश्वर के रूप में जानते हैं।

हमें परमेश्वर की आशीषों को अपने तक ही सीमित नहीं रखना है। भजनकार अपने पाठकों को जातियों के बीच प्रभु के कार्यों का वर्णन करने को कहता है। हम यह चाहते हैं कि हर कोई यह जानने पाए कि प्रभु ने हमारे लिए क्या किया है। प्रभु और उसके कार्यों के बारे में हमारी उत्तेजना इतनी अधिक है कि हम इसे अपने तक

सीमित नहीं रख सकते। हम यह चाहते हैं कि समस्त पृथ्वी हमारे प्रभु की सुन्दरता के बारे में जाने।

प्रभु के लिए हमारी स्तुति हमारे होठों से निकलने वाले गीतों में दिखती है। गीत और संगीत आनंद और खुशी की सामान्य अभिव्यक्तियां हैं। छोटे बच्चे भी अपने आनंद और संतुष्टि को गीत के द्वारा व्यक्त करते हैं। विश्वासी प्रभु की स्तुति के लिए गाए गीतों से आनंदित होता है। ये गीत प्रभु के कार्यों को व्यक्त करने के साथ-साथ सभी सुननेवालों के लिए इसकी घोषणा भी करते हैं (पद 2)।

पद 3 में भजनकार अपने पाठकों को प्रभु के पवित्र नाम की बड़ाई करने को कहता है। बड़ाई करने का अनुवाद ''डींग मारने'' वाक्यांश से हो सकता है। अन्य शब्दों में, प्रभु के नाम की बड़ाई करनेवाला व्यक्ति प्रभु और उसके कार्यों की डींग मारता है। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि उसका नाम पवित्र नाम है। अर्थात् यह संपूर्ण और किसी भी पाप से रहित है। यह कुछ ऐसी चीज़ है जिसकी डींगें मारी जा सकती हैं। हमारा एक पवित्र और सिद्ध परमेश्वर है जो पूरी तरह से पाप से अलग है। उसके समान कोई ईश्वर नहीं है। हमें अपने परमेश्वर द्वारा की जानेवाली अद्‌भुत चीज़ों को बताने के लिए बुलाया गया है।

पद 3 में इस पर भी ध्यान दें कि भजनकार अपने पाठकों को प्रभु में अपने मनों को आनंदित करने के लिए कहता है। आनंद करना विश्वासी की विशिष्टता है। यह स्तुति और धन्यवाद करने की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। विश्वासी बहुत सी चीज़ों के लिए आनंद कर सकता है। तौभी, हम प्रायः इस आनंद के बीच संसार की चिन्ताओं को आने देते हैं। हमें प्रभु में अपने मनों में आनंदित रहना है। हमें अपने और इस आनंद मनाने के बीच किसी भी अन्य चीज़ को नहीं आने देना है।

पद 4 में भजनकार विश्वासियों को परमेश्वर और उसकी शक्ति को खोजने की चुनौती देता है। इस संसार में कठिनाई और संकट के समय भी होंगे। दुख और पीड़ा के भी समय होंगे। इन समयों में हमें परमेश्वर और उसकी शक्ति को खोजना है। इस शक्ति में हमें वह सब मिलता है जो शत्रु पर विजयी होने के लिए ज़रूरी है।

हमें प्रभु के मुख की भी खोज करनी है। प्रभु का मुख ही साहस देता है। उसके मुख को देखकर हमारी सभी समस्याएं और कठिनाइयां छोटी दिखने लगती हैं। हम जानते हैं कि जब हम उसकी ओर दिखेंगे तो उसके लिए किसी भी चीज़ पर कार्य करना कठिन नहीं होगा शत्रु हमारा ध्यान प्रभु और उसके मुस्कराते चेहरे से हटाने का प्रयास करेगा।

पद 5 में हमें प्रभु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों को स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। हमें सदा प्रभु के सामर्थी कार्यों को स्मरण रखना है। हमें प्रभु द्वारा हमारे

जीवनों में और हमसे पहले के लोगों में किये गए आश्चर्यकर्मों को स्मरण रखना है। हमें स्मरण रखना है कि उनने कैसे पाप और बुराई का न्याय किया और धर्मी के लिए न्याय को लाया। संकट व संघर्षों के समय में हमें स्वयं को प्रभु के शक्तिशाली कार्यों का स्मरण कराना है।

पद 7 में भजनकार हमें स्मरण कराता है कि प्रभु परमेश्वर सभी पर प्रभु है। वह न्याय का परमेश्वर है जो कि संपूर्ण पृथ्वी का न्याय करेगा। तथापि, इनके अतिरिक्त वह वाचा का प्रभु था जो अपने लोगों के साथ एक वाचा में आया था। वाचा का परमेश्वर होने के कारण उसने अपने लोगों की देखभाल करने और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने की प्रतिज्ञा की। इसके बदले में उसने अपने लोगों से उसे आदर देने और उसकी आज्ञाओं को पूरा करने को कहा। उन्हें केवल उसके प्रति विश्वासयोग्य रहकर अन्य सभी देवताओं से फिरना था।

परमेश्वर का अपने लोगों के साथ वाचा का संबन्ध सदा के लिए था। वह उन्हें नहीं भूला था। उसने इस वाचा को इब्राहीम के साथ बांधा था। उसने इसहाक से उसका और उसके वंश का परमेश्वर होने की शपथ खाई थी। उसने इस वाचा को याकूब के साथ दृढ़ किया था। उसने अपने लोगों को ऐसे समय पर कनान देश को देने की प्रतिज्ञा की थी जब उस देश पर अन्यजातियों का नियंत्रण था। प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों की रक्षा की। वे थोड़े और बिना घर के थे परन्तु जब वे एक देश से दूसरे देश में भटक रहे थे परमेश्वर ने उन्हें संभाला। उसने उन्हें शक्तिशाली राजाओं पर विजयी किया जो उन्हें पीड़ा देने के साथ-साथ उन पर अधिकार कर सकते थे (पद 14, 15)।

परमेश्वर देश में अकाल लेकर आया और उसने वहां के भोजन का नाश किया जिससे उसके लोगों को मजबूरी में निर्वासन में जाना पड़े। उसने यूसुफ को उनके आगे आगे एक गुलाम के रूप में जाने दिया, जिसे उसके अपने भाईयों ने ही बेच दिया था। यूसुफ के पांव उन ज़जीरों से ज़ख्मी हो गए थे जिसने वे बंधे थे। उसकी गर्दन लोहे के बंधन में थी। इस सब को समझना कठिन लगता है, परन्तु उसके लोगों के जाने बिना, यह क्रूर कार्य उनके छुटकारे को लेकर आनेवाला था। भजनकार पद 19 में हमें स्मरण कराता है कि इस सब के होने से पहले भविष्यवाणी कर दी गई थी। परमेश्वर का वचन सत्य है।

बाद में यूसुफ बंदीगृह से मुक्त होकर देश का अधिकारी बना। यूसुफ को मिस्र के राज्य की प्रत्येक चीज़ पर अधिकारी ठहराया गया और उसे देश के अन्य अधिकारियों और प्राचीनों के ऊपर दायित्व दिये गए। जिस समय इस्राएली अकाल के कारण मिस्र देश में रहने को आए यूसुफ देश का अधिकारी था। उसके प्रबन्धन में,

इस्राएल संपन्न हुआ और मिस्र में उनकी संख्या बढ़ गई।

अब मिस्री लोग इस्राएलियों से घृणा करने लगे थे। वे उन्हें गुलाम बनाकर उनसे क्रूरतापूर्वक कठिन श्रम करवाते थे पुनः परमेश्वर ने उनकी सहायता के लिए एक दास को भेजा। परमेश्वर के लोगों को छुड़ाने के लिए मूसा और हारून को चुना गया। शक्तिशाली कार्यों और चमत्कारी चिन्हों के द्वारा उन्होंने प्रभु की सामर्थ और उसके लोगों पर उसकी विश्वासयोग्य देख-रेख को दिखाया।

परमेश्वर ने मिस्र देश पर अन्धकार को भेजा। उसने उनके पानी को खून में बदल दिया। उसने उनके जल की मछलियों को मरने दिया। उसने पूरे देश में मेंढकों की विपत्ति को भेजा। डांसों के झुण्ड देश भर में लोगों को दुख देने लगे। वर्षा, ओलों और बिजली ने मिस्र का नाश कर दिया। दाखलताओं और अंजीर के वृक्ष बिखर गए। टिडे और टिड्डियां समस्त हरी वनस्पति को निगल गए। प्रत्येक घर का पहलौठा मर गया, जिससे मिस्र के वासियों की आत्मा को बहुत दुख पहुंचा। अन्त में इस्राएल मिस्र से चला गया, ''सोने और चांदी को लेकर। मिस्रियाँ ने वहां से जाते हुए इस्राएलियों का बहुत विरोध किया और उन्हें अपना सोना चांदी भी दे दिये। वे उन्हें जाते हुए देखकर खुश थे।

यूसुफ के लिए जंजीरों में बंधे रहकर वाचा को पूरा करनेवाले परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को देखना कठिन रहा होगा। समय की ओर पलटकर देखने पर ही हम उसके लोगों के प्रति उसके अनुग्रह और दया को देख सकते हैं। दिखने में जो संकट प्रतीत होता है वह वास्तव में प्रेमी परमेश्वर का हाथ होता है जो हमें विजयी होने को तैयार कर रहा होता है। यूसुफ की गुलामी के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल के लिए मिस्र में आशीषित और संपन्न होने का मार्ग निकला। मिस्र को नाश करने वाली विपत्तियों के द्वारा परमेश्वर ने बचाव का मार्ग निकाला। वह अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य था।

परमेश्वर ने जंगल में भटकते अपने लोगों को सुरक्षित रखा था। जब मिस्री उनके पीछे आए उसने अपने लोगों को उनसे अलग करने को एक बादल को फैला दिया। जंगल में आग और बादल ने उसके लोगों को दिशा दिखाई। जब इस्राएल ने बटेरों की मांग की, परमेश्वर ने आकाश से उन्हें बरसाया ताकि वे संतुष्ट हों। उनके प्यासा होने पर परमेश्वर ने एक चट्टान को खोला ताकि पानी उसमें से एक नदी के समान निकलते हुए उनकी प्यास को बुझा सके।

परमेश्वर ने यह सब इसलिए किया क्योंकि वह वाचा को पूरा करनेवाला परमेश्वर था, जिसे इब्राहीम से की गई अपनी प्रतिज्ञाओं की स्मृति थी। परमेश्वर अपने लोगों से जयजयकार कराते हुए देश से निकाल लाया (पद 43)। उसने उन्हें वह देश

दिया जिसके देने की प्रतिज्ञा उसने उनसे की थी। वे उस देश के अधिकारी हो गए थे जिसके लिए उन्होंने कोई कार्य नहीं किया था। परमेश्वर ने उनसे केवल यही चाहा था कि वे उसके नियमों का पालन करें और उसके मार्गों पर चलें। वह उन्हें ज्योति बनाना चाहता था। वह उन्हें एक अंधेरे संसार में अपनी सुन्दरता से चमकाना चाहता था। वह उन्हें अपने लोग बनाना चाहता था कि उसकी आशीषों में रहते हुए आनंद करें।

परमेश्वर को अपने लोगों के पास जाने में खुशी मिलती है। बेशक कई बार हम संकटों व परेशानियों से होकर गुज़रते हैं, तौभी परमेश्वर हमें संभालता है। वह अपने लोगों की ज़रूरतों को पूरा करता और उनके दुखों में जाने से पहले ही उनके लिए उसमें से निकलने का मार्ग भी बनाता है। वह ऐसा परमेश्वर है जिसे अपने लोगों के साथ संबन्ध रखने में खुशी मिलती है। उसे हम पर आशीषें बरसाने में खुशी मिलती है। वह हमसे केवल इतना ही कहता है कि हम उन आशीषों का आनन्द लें और उसके व उसके मार्गों के प्रति समर्पण करें। वह एक वाचा का परमेश्वर है, एक अखण्डित वचनबद्धता का परमेश्वर। हमारे लिए उसे धन्यवाद देना कितना ज़रूरी है कि हम, जो उसे जानते हैं उसके अद्‌भुत प्रेम और दया के प्रति निश्चिंत हो सकते हैं। परमेश्वर हमें उसके अनुग्रह में रहने और उसके उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहनेवाला मन दे।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर को पुकारने का क्या अर्थ है? आपको इस सच्चाई से क्या शांति मिलती है कि आप प्रभु परमेश्वर को पुकार सकते हैं?
- परमेश्वर ने इस सप्ताह आपके लिए व्यक्तिगत रूप से क्या किया है? क्या आपको इन अच्छी चीज़ों को दूसरों के साथ बांटने का अवसर मिला?
- प्रभु की बड़ाई करने या डींग मारने का क्या अर्थ है? आज आपके जीवन में प्रभु और उसके कार्य के बारे में बड़ाई करने या डींग मारने का क्या कारण है?
- आपको इस सच्चाई से क्या शांति मिलती है कि परमेश्वर वाचा को पूरा करने वाला परमेश्वर है? परमेश्वर हमारे साथ वाचा के संबन्ध में प्रवेश करना क्यों चाहेगा?
- यह भजन उस तरीके या मार्ग के बारे में क्या सिखाता है जिसका प्रयोग परमेश्वर अपने लोगों के जीवनों में भलाई लाने को करता है चाहे कितने ही संकट दिख रहे हों?

प्रार्थना के लिए:

- आज आप किन संकटों का सामना कर रहे हैं? कुछ समय प्रभु को धन्यवाद दें कि वह वाचा को पूरा करने वाला प्रभु है और उन संकटों में आपको बचाकर

रखेगा।

- 'प्रभु की बड़ाई' करने में समय बिताएं। उसके अद्‌भुत कार्यों और चरित्र पर ध्यान दें। जो वह है और जो उसने किया है उसके लिए परमेश्वर की स्तुति करें।
- उस समय के लिए प्रभु की स्तुति करें जब उसने उस चीज़ का प्रयोग आपकी भलाई में किया था जो दुख और परीक्षा के रूप में दिख रहा था।

92. आज्ञाकारिता, संपन्नता, आनन्द और धन्यवादी

पढ़ें भजन संहिता 106:1-48

भजन 106 में भजनकार परमेश्वर के अपने लोगों के प्रति अनुग्रह दया और प्रेम पर विचार करता है। वह इस सच्चाई को लेकर बहुत सचेत है कि इन लोगों ने हमेशा परमेश्वर और उसके मार्गों के विरुद्ध विद्रोह किया था परन्तु तौभी परमेश्वर उन तक दया और क्षमा में होकर पहुंचा था।

भजनकार परमेश्वर और उसकी भलाई के प्रति स्तुति के शब्दों से आरम्भ करता है। वह यह जान गया था कि प्रभु की महान शांति इस सच्चाई में है कि प्रभु एक भला परमेश्वर था। उसमें कोई बुराई नहीं थी। उसके द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ पवित्र व सिद्ध थी। हमें इस सच्चाई से बड़ी शांति मिल सकती है कि हमारा परमेश्वर पाप और बुराई से दूर रहता है।

पद 1 में ध्यान दें कि प्रभु परमेश्वर प्रेम का भी परमेश्वर है। भजनकार यहां अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि प्रभु का प्रेम सदा तक बना रहता है। परमेश्वर का प्रेम कभी नहीं रुकता। विशिष्ट रूप से हम देखते हैं कि प्रभु का प्रेम तब भी बना रहता है जबकि उसके लोग उससे अपना मुंह फेर लेते हैं। उसके लोगों का विद्रोह भी परमेश्वर को उनसे प्रेम करने से नहीं रोक पाता।

पद 2 में भजनकार प्रभु के सामर्थी कार्यों पर विचार करता है। परमेश्वर के लोगों के इतिहास को देखने पर उसे परमेश्वर के शक्तिशाली कार्यों के बहुत से प्रमाण मिले थे। परमेश्वर ने जल को दो भागों में बांट दिया, स्वर्ग से भोजन दिया और अपने शत्रुओं का नाश किया। कोई भी ईश्वर इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के समान शक्तिशाली नहीं था। भजनकार ने यह जान लिया था कि कोई भी मानवीय जीभ परमेश्वर के सामर्थी कार्यों का वर्णन कभी भी पूरी तरह से नहीं कर पाएगी।

परमेश्वर की अद्‌भुत शक्ति, भलाई और प्रेम इतना अधिक थे कि इसके प्रति हमारी उपयुक्त प्रतिक्रिया उसके और उसके मार्गों के प्रति आज्ञाकारिता और आदर में रहने की ही है। पद 3 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया है कि न्याय पर चलने वाले और सही काम करनेवाले धन्य थे। वे इस कारण धन्य थे क्योंकि वे परमेश्वर

और उसके मार्गों के साथ मेल में रह रहे थे। तथापि, परमेश्वर से फिरनेवालों के लिए ऐसा नहीं था। इस भजन में हम देखेंगे परमेश्वर के लोग उससे भटक गए थे। ऐसा कहनेवाली भी हैं कि चूंकि परमेश्वर भला है और उसका प्रेम सदा तक का है अत: वे जैसा चाहे वैसा जीवन जी सकते हैं। भजनकार हमें यहां यह बता रहा है कि जबकि परमेश्वर की ओर से क्षमा मिलती है, तौभी सच्ची आशीषें केवल आज्ञाकारिता में ही मिल सकती हैं।

भजनकार परमेश्वर के उस अनुग्रह और आशीष के बारे में जानना चाहता था जो उसके उद्देश्यों के प्रति आज्ञाकारी रहने से मिलते हैं। पद 4 में वह परमेश्वर से उसे उस समय में याद रखने को कहता है जबकि वह दूसरों पर अनुग्रह दिखा रहा हो। वह प्रभु के उद्धार और विजय को अनुभव करना व जानना चाहता था। वह प्रभु के व्यक्तिगत स्पर्श को अनुभव करना चाहता था। वह प्रभु को लोगों के साथ उनकी संपन्नता में रहना चाहता था और उनके आनंद व धन्यवादी में भी भाग लेना चाहता था।

भजनकार ने परमेश्वर के चुने हुओं के बारे में जिन तीन चीज़ों को बताया है उन पर ध्यान दें। पहला, वे संपन्नता का आनंद लेते हैं। हमारे दिनों में संपन्नता का अर्थ अमीरी से है। इब्री संदर्भ में इसका अर्थ अधिक विस्तृत है। यह व्यक्ति के संपूर्ण हित को बताता है जो परमेश्वर अपने लोगों को देता है। परमेश्वर के चुने हुए कई तरह से आशीषित होते हैं। भौतिक आशीष परमेश्वर द्वारा दी जानेवाली संपन्नता का केवल हिस्सा है। परमेश्वर के चुने हुओं की संपन्नता आत्मिक, भावनात्मक और व्यावहारिक भी होती है। परमेश्वर की सन्तान होने के कारण हम कई तरह से आशीषित होते हैं।

दूसरा, परमेश्वर के चुने हुए लोग आनन्दित लोग होते हैं। भजनकार चुने हुओं के आनंद में सहभागी होना चाहता है। परमेश्वर के लोगों के पास धन्यवाद देने को बहुत कुछ होता है। वे परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त कर उसकी अद्‌भुत आशीष में चलते हैं। इसी कारण वे आनन्द से भरे रहते हैं। परमेश्वर की इच्छा यही है कि उसकी संतान आनन्द में चले।

तीसरा, इस पर ध्यान दें कि परमेश्वर के चुने हुए लोग धन्यवादी लोग होते हैं (पद 5)। परमेश्वर ने जो उनके लिए किया वे उसे हल्के रूप से नहीं लेते। परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के योग्य न होने पर भी वे इसका अनुभव कर रहे होते हैं। इसके लिए वे सच में धन्यवादी होते हैं।

अपने पाठकों को 'चुने हुओं' की विशेषताओं और उन पर परमेश्वर की आशीषों को स्मरण कराने के बाद भजनकार अपना ध्यान अपने लोगों के इतिहास पर लगाता है। परमेश्वर के लोगों ने सदा परमेश्वर के चुने हुओं की विशेषताओं को नहीं दिखाया। वास्तव में उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध होकर विद्रोह किया। अपने पूर्वजों के समान

परमेश्वर के लोग अपने सृष्टिकर्त्ता और प्रभु के विरोध में चलते रहे।

पद 7 में भजनकार अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि उनके पुरखाओं ने मिस्र में परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों पर मन नहीं लगाया था। परमेश्वर के लोग मिस्र में गुलामी में रहे थे। प्रभु परमेश्वर ने उन्हें उनकी बंधुआई और गुलामी से छुड़ाया था। सामर्थी कार्यों और चमत्कारों के द्वारा परमेश्वर मिस्र देश को घुटनों पर ले आया था। परमेश्वर के लोगों को चमत्कारिक रूप से उनके पीड़ा देनेवालों के हाथों से छुड़ाया गया था। परमेश्वर के लोग उसकी दया को भूल गए थे। बंधुआई के देश को छोड़ते ही वे लाल समुद्र पर पहुंचे। मिस्री सेना उनके पीछे पीछे थी। सेना को अपनी ओर आता देख परमेश्वर के लोग कुड़कुड़ाने व शिकायत करने लगे। उन्हें लगा कि वे मिस्रियों के हाथों नाश होने वाले हैं। वे यह याद नहीं कर पाए कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे छुड़ाया था। उन्होंने परमेश्वर द्वारा इस समय में उनके लिए कुछ भी किये जाने पर संदेह किया। हम बहुत आसानी से परमेश्वर के उद्देश्यों पर संदेह करने लगते हैं। ऐसा ही मिस्र के बंधन से मुक्त होने के तत्काल बाद ही परमेश्वर के लोगों ने किया। भजनकार इसे गंभीरता से लेता है। कुछ ही दिनों में इस्राएल उन्हें बचाने वाली परमेश्वर की सामर्थ पर संदेह करने व कुड़कुड़ाने लगा।

उनकी कुड़कुड़ाहट और संदेहों के बावजूद प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों को शत्रुओं से बचाया। 8-9 पदों में भजनकार उस ओर संकेत करता है जब परमेश्वर ने समुद्र को दो भाग कर अपने लोगों को सूखी भूमि में से जाने दिया था। उसने समुद्र को घुड़का और उसने सारी मिस्री सेना को ढांप दिया, उनका पूरी तरह से नाश करते हुए। ध्यान दें कि इस विजय कारण परमेश्वर के चुने हुओं का विश्वास और आज्ञाकारिता नहीं थे। परमेश्वर के लोगों को विजय का अनुभव केवल परमेश्वर के अनुग्रह और दया के कारण हुआ। वे इस योग्य नहीं थे कि परमेश्वर उन्हें विजय दिखाता। उन्हें विश्वास नहीं था। वे परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ा रहे थे और शिकायत कर रहे थे। उनकी असफलता या कमी के बावजूद परमेश्वर उनके शत्रुओं को हराता रहा।

इसके बाद परमेश्वर अपने लोगों को जंगल में से लेकर गया। परमेश्वर के लिए अपने लोगों को उनको विद्रोह के कारण नाश करने को लाल समुद्र में छोड़ देना कितना आसान होता। तथापि, परमेश्वर का अनुग्रह और दया अपरिमित हैं, इसी कारण वह उन्हें आशीष देते हुए उनकी अगुवाई करता रहा।

परमेश्वर का हाथ जंगल में अपने लोगों पर था। लाल समुद्र पर परमेश्वर ने अपने लोगों को उनकी ओर आती मिस्री सेना से बचाया था। पानी ने उनके शत्रुओं को ढांप दिया था और एक भी नहीं बचा था। कुछ समय के लिए इस्राएल का भरोसा परमेश्वर में बढ़ गया था। लाल समुद्र पर परमेश्वर के लोगों ने शत्रु पर अपनी विजय के कारण

स्तुति के गीत गाए।

इसने परमेश्वर पर उनके भरोसे को बढ़ाया और यह उसका अन्तिम कार्य नहीं था। पद 13 में परमेश्वर के लोग जल्द ही उसे भूल गए जो उसने किया था। जंगल में उन्होंने लालसा के कारण परमेश्वर की परीक्षा की। परमेश्वर और उसके मार्गदर्शन की प्रतीक्षा करने के बजाय, उन्होंने विषय को अपने हाथों में ले लिया। वे परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाने व शिकायत करने लगे। उन्हें शिक्षा देने को परमेश्वर ने उन पर बीमारी को आने दिया (पद 15)।

परमेश्वर के लोग उसकी युक्ति के लिए न ठहरे। मेरे जीवन में ऐसे बहुत से समय रहे हैं जबकि जीवन के दबावों के पड़ने पर मुझे ऐसा लगने लगा कि परमेश्वर और उसके ज्ञान की प्रतीक्षा करने के बजाय मुझे विषय को अपने हाथों में लेना होगा। मैंने हमेशा कठिन तरीके से ही सीखा है कि मुझे परमेश्वर की प्रतीक्षा करनी है और अपनी समझ के अनुसार कदम लेने में जल्दी नहीं करनी है। संकट के समय में परमेश्वर हमसे उसकी युक्ति की प्रतीक्षा करने और उसके नेतृत्व पर भरोसा रखने को कहता है। परमेश्वर के लोगों ने ऐसा नहीं किया।

पद 16 में भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि उनके पुरखाओं ने कैसे मूसा और हारून के विरुद्ध डाह की। उन्होंने मूसा और हारून के चुने जाने पर प्रश्न किया। उन्हें लगा कि वे अपने अगुवों के समान ही भले थे और उनकी बुलाहट से ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने मूसा और हारून के विरुद्ध विद्रोह किया और उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्य के विरुद्ध कुड़कुड़ाए और परमेश्वर ने क्रोध में आकर उन्हें दण्ड दिया। भूमि फट गई और शिकायत करनेवालों को निगल गई। परमेश्वर ने इन दुष्ट व्यक्तियों और इनके अनुयायियों को भस्म कर दिया।

परमेश्वर के लोगों ने होरेब पर उसके विरुद्ध विद्रोह किया जब उन्होंने परमेश्वर की आराधना करने के बजाय सोने का बछड़ा बनाकर उसकी आराधना की। ऐसा करके, भजनकार हमें बताता है कि उन्होंने परमेश्वर की महिमा को घास खानेवाले बैल की प्रतिमा में बदल डाला। उनके परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से छुड़ाया था परन्तु उन्होंने उसका इतना अपमान किया कि उन्होंने अपने छुड़ानेवाले की आराधना करने के बजाय एक बैल की आराधना करने का चुनाव किया। प्रभु परमेश्वर का यह कितना बड़ा अपमान है।

परमेश्वर अपने लोगों के इस अपमानित और निन्दनीय कार्य पर इतना अधिक क्रोधित था कि उसने उनका नाश करने का फैसला कर लिया। मूसा ने परमेश्वर से दया की विनती की। वह पवित्र परमेश्वर और पापी लोगों के बीच खड़ा हुआ। मूसा ने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाए और परमेश्वर उसकी सुनकर उन्हें

क्षमा कर दे। जब मूसा ने उस देश की जासूसी करने को सेवकों को भेजा जिसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी, देश की सेना के बारे में सुनकर उन्होंने मूसा से कहा कि वे मिस्र लौट जाना चाहते हैं। उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर की शक्ति और छुटकारे को भुला दिया था। उन्होंने इस पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन्हें इस देश को देगा। इसके विपरीत उन्होंने इस पर विश्वास किया कि उनके शत्रु उन पर विजयी होंगे। वे परमेश्वर और उसके मार्गों के विरुद्ध कुड़कुड़ाने व शिकायत करने लगे। उनके संदेह करते रहने के कारण परमेश्वर ने यह फैसला किया कि मिस्र से निकलने वाले सभी जंगल में ही नाश होंगे और प्रतिज्ञा के देश को देख नहीं पाएंगे।

परमेश्वर के चुने हुओं ने बाल की आराधना की और अन्यजाति व जीवन रहित ईश्वरों के बलिदानों को खाया। उन्होंने परमेश्वर के क्रोध को भड़काया। गिनती 25 इस कहानी को बताता है कि परमेश्वर के लोगों ने कैसे बाल की आराधना की थी। बाल की आराधना यौन अनैतिकता से भी जुड़ी थी। इन पापी रीति-रिवाजों के कारण इस्राएल के लोगों पर मरी आई। परमेश्वर ने अपने लोगों को इस बारे में बताया और वे बिखर गए। वे अपने पापों पर रोए, एक इस्राएली पुरुष एक मिध्यानी स्त्री को अपने तम्बू में लेकर चला गया था (निस्संदेह उसके साथ यौन संबन्ध बनाने को)। पीनहास ने तम्बू में जाकर उसके पुरुष और उस स्त्री दोनों को ही उनके पापी व निन्दनीय व्यवहार के कारण मार डाला। जिसके परिणाम में मरी रुक गई और परमेश्वर की आशीष उसके लोगों पर फिर से आई।

बाद में मरीबा सोते के पास इस्राएल ने फिर से पानी की कमी पर कुड़कुड़ाने व शिकायत करने के द्वारा परमेश्वर को क्रोध दिलाया। परमेश्वर के इतने आश्चर्यकर्मों को देखकर भी उसके लोगों ने उस पर भरोसा नहीं किया था। वे अपने अतीत से सीख नहीं पाए थे। वे इस पर विश्वास नहीं कर सके कि परमेश्वर ने जो अतीत में किया था वह उसे अब भी कर सकता है। अपनी ज़रूरतों के लिए उन्होंने मूसा से शिकायत की। उन्होंने परमेश्वर के आत्मा के विरुद्ध विद्रोह किया। मूसा भी इस समय में अपने लोगों द्वारा किये विद्रोह के कारण उनसे क्रोधित शब्द बोलने के द्वारा पाप में गिरा।

परमेश्वर के प्रतिज्ञात् देश में पहुंचने पर, जैसा इस्राएल को आज्ञा दी गई थी उसने उस देश के पापी वासियों को मारने से इन्कार कर दिया। इसके विपरीत परमेश्वर ने उन्हें उनकी बुरी रीतियों में ही रहने दिया। वे उनके साथ हिल-मिल गए और उनके व्यवहारों को भी सीख लिया। उन्हें पवित्र लोग बनना था परन्तु उन्होंने प्रभु के मार्गों पर चलने से इन्कार कर दिया। इसके विपरीत वे उस देश की मूर्तियों की पूजा करने लगे। उस देश के लोग उनके लिए फन्दा बन गए और उन्हें उनके परमेश्वर से दूर कर

दिया। इस्राएल इस देश के घृणित रीति-रिवाज़ों को पूरा करने लगा। उन्होंने पिशाचों के लिए अपने बेटों व बेटियों को बलिदान किया। उन्होंने अपने निर्दोष बच्चो का लहू बहाते हुए उन्हें कनान की मूर्तियों के सामने बलिदान चढ़ाया। उन्होंने इस निर्दोष लहू से देश को दूषित कर दिया। उन्होंने शारीरिक व आत्मिक रूप से अपने कामों से अपने को अशुद्ध किया। ऐसा करके उन्होंने उस मीरास का अपमान किया जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। उन्होंने अपनी बुराई से उस देश को भ्रष्ट कर दिया था जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था, परमेश्वर और उसके उन दानों के प्रति अपमान दिखाते हुए जो उसने उन्हें दिये थे।

चूंकि उन्होंने परमेश्वर द्वारा उन्हें दिये गए दानों को अपमानित किया था इसलिए परमेश्वर ने उनसे उन्हें ले लिया। उसने उन्हें उन देशों को दे दिया जो उन्हें सताते थे। वे दूसरे देशों के समान बनना चाहते थे। परमेश्वर ने उन्हें उन देशों के वश में कर दिया जिनके समान वे बनना चाहते थे। इन देशों ने इन्हें सताया और इन पर अधिकार किया।

परमेश्वर ने अपने लोगों को छोड़ा नहीं था। उसने कई बार उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया था। जब उन्होंने उसकी दोहाई दी तब उसने उन पर दया कर उन्हें छुड़ाया। तौभी, परमेश्वर के लोग बार-बार बुराई करते रहे। उनके हृदय पाप की ओर लगे थे।

वे अपने पाप और विद्रोह में बहुत बढ़ गए थे। संपन्नता, आनन्द और धन्यवादी पन उनके जीवन से चले गए थे। इसके विपरीत, वे अपने पाप और विद्रोह में डूब गए थे। पाप में कोई भविष्य नहीं था परन्तु परमेश्वर के लोग पाप के प्रति आकर्षित हुए और अपने परमेश्वर के प्रति सच्चे नहीं बने रहे।

पद 44 में भजनकार हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों के संकट पर ध्यान दिया और उनकी चिल्लाहट को सुना। उसने उनके साथ अपनी वाचा और उनके साथ अपने प्रेम को याद किया और उन्हें छुड़ाने को गया। जो उन्हें बन्धुए करके ले गए थे उसने उन सबसे उन पर दया कराई। उन्हें उनके शत्रु की पकड़ से छुड़ाया गया था। वे इस दया को पाने के योग्य नहीं थे परन्तु उन्होंने इसका अनुभव पाया।

अन्त में भजनकार परमेश्वर से अपने लोगों को बचाने और उन्हें जातियों से इकट्ठा करने को कहता है। जिससे वे उसके पवित्र नाम को धन्य कह सकें। उसे पता था कि उसके लोग कितने विद्रोही हैं और कैसे उन्होंने परमेश्वर के धीरज की परीक्षा ली थी। उसे अभी भी प्रभु के पास आकर उससे और अधिक क्षमा व अनुग्रह मांगने में कोई संकोच नहीं होता था। वह प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपने लोगों को संपन्नता, आनंद और धन्यवाद को फिर से दे।

हमारे लिए भी भजन की यही चुनौती है। भजनकार हमें याद दिलाता है कि

आशीषें उन लोगों की प्रतीक्षा में रहती हैं जो परमेश्वर का भय मानते व उसकी सच्चाई में चलते हैं। परमेश्वर के अपने लोगों के प्रति दयालु रहने पर भी वे प्राय: परमश्वेर की पूर्णता की आशीष में नहीं चले। उसके लोग होने के कारण आज हम वैसी ही स्थिति में हैं। हम भी अपने परमेश्वर के धीरज की परीक्षा लेते हैं। हम अक्सर उसके उद्देश्यों से भटक जाते हैं। वह एक प्रेमी व क्षमा करनेवाला परमेश्वर है इस कारण हमारे लिए उसे धन्यवाद देना कितना ज़रूरी है। वह हमें अपनी ओर उसकी आशीष, आनंद व धन्यवादी की पूर्णता में चलने को बुलाता है। यह हमारा भी अनुभव बनने पाए।

विचार करने के लिए:

- आपको इस सच्चाई से क्या शांति मिलती है कि परमेश्वर का प्रेम सदा तक का है?
- यह जानकार कि परमेश्वर का प्रेम सदा तक का है, क्या हम जैसा चाहे वैसा जीवन जी सकते हैं? आज्ञाकारिता में रहने के बारे में भजनकार हमें क्या सिखाता है?
- आपके प्रभु के पास आने पर वह आपके लिए किस 'संपन्नता' को लाता है? उसमें आप किन आशीषों को अनुभव करते हैं।
- एक विश्वासी होने के कारण क्या आपमें एक आनंद व धन्यवाद से भरा मन है?
- क्या आपने कभी परमेश्वर की विश्वासयोग्यता व शक्ति को भुलाया है? अपने संकटों में इन चीज़ों को याद रखना इतना कठिन क्यों होता है?
- इस भजन में हम कुड़कुड़ाने और शिकायत करने के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को उसके अद्‌भुत प्रेम के लिए धन्यवाद दें जो सदा तक बना रहता है।
- आपके जीवन में प्रभु की आशीष और अनुग्रह के लिए उसे कुछ समय धन्यवाद दें।
- जब आप परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए उसकी आज्ञाकारिता में होकर चलते हैं तो प्रभु से आपको आनंद और धन्यवादी मन से भरने को कहें।
- प्रभु से आपको ऐसे समयों के लिए क्षमा करने को कहें जब आप अपने जीवन के लिए उसके मार्गों और उद्देश्यों के बारे में कुड़कुड़ाए और शिकायत करने लगे थे।
- परमेश्वर से आपकी ज़रूरत के समय में आपको उस पर भरोसा करनेवाला मन देने को कहें।

93. भलाई और प्रेम

पढ़ें भजन संहिता 107:1-43

भजन 107 में भजनकार की चुनौती विश्वासी के लिए है जिसने अपने जीवन में परमेश्वर की अद्‌भुत आशीषों का अनुभव किया है। वह हमें परमेश्वर की आशीषों को परखने और उसे धन्यवाद देने को कहता है। प्रभु यीशु ने लूका 17 में 10 कोढ़ियों की एक कहानी को सुनाया जिन्हें चंगाई मिली थी। उनमें से केवल एक ही अपनी चंगाई के लिए धन्यवाद देने को लौटा था। हाल ही के वर्षों में मैं इस बात को लेकर बहुत सचेत हुआ हूं कि हम मांगते तो अधिक हैं परन्तु धन्यवाद कम चीज़ों के लिए ही देते हैं। भजनकार हमें परमेश्वर की अद्‌भुत आशीषों के लिए उसे धन्यवाद देनेवाले व उसकी प्रशंसा करनेवाले लोगों के रूप में बुलाता है।

आरम्भ में ही भजनकार अपने लोगों को परमेश्वर की भलाई व प्रेम के लिए उसे धन्यवाद देने को कहता है। वह उन्हें यदि दिलाता है कि प्रभु का प्रेम सदा तक बना रहता है। उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम को कोई भी चीज़ बदल नहीं पाती।

भजनकार के लिए यह महत्वपूर्ण था कि छुड़ाए हुए प्रभु का धन्यवाद व स्तुति करें (पद 2)। प्रतिदिन हमें इस प्रार्थना के साथ जागना है; ''यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला है'' (पद 1)। हमारे मार्ग में संकट और परेशानियों के आने पर हमारा गीत होना चाहिए: ''उसकी करुणा सदा की है।'' चाहे हमारे साथ कुछ भी क्यों न हो, इन शक्तिशाली सच्चाईयों पर विचार करने से हमें आनंद व खुशी मिलनी चाहिए।

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए बहुत कुछ किया। उसने उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया। परमेश्वर के लोग अपने पाप के कारण पृथ्वी के कोने तक फैल गए थे, परन्तु परमेश्वर ने इन दूर के स्थानों से उन्हें एकत्रित किया। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से आए और उसने उन्हें वह देश दिया जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की थी। वे इस दया के योग्य नहीं थे परन्तु उन्होंने इसे परमेश्वर के हाथों पाया। इन बिखरे हुओं में से कुछ ऐसे थे जिन्हें कोई ठिकाना नहीं मिला। इसके विपरीत, वे जंगल में ठहरने का स्थान पाने को भटकते रहे। ये लोग भूखे और प्यासे थे। इनके जीवन मिट रहे थे। इस सबके होने का कारण यही था कि इन्होंने परमेश्वर से अपना मुंह फेर लिया था। अपनी निस्साहयता में उन्होंने परमेश्वर को पुकारा। उन्हें निराशा में देखकर वह उनकी

सहायता करने को आया। वह उन्हें एक नगर में लेकर गया कि वे वहां टिक सकें। वहां उन्हें भूमि और रहने का स्थान मिला। उस नगर में वे अपने परिवारों को बढ़ाकर सुरक्षित रह सकते थे।

भजनकार इन लोगों को उस परमेश्वर के लिए स्तुति और धन्यवाद की पुकार करने को कहता है जिसने इनके साथ अद्‌भुत कार्य किये थे। वह ऐसा परमेश्वर था जिसने प्यासों की प्यास व भूखों की भूख को अच्छी चीज़ों से तृप्त किया था। वह उनकी प्रशंसा पाने के योग्य था।

ऐसे भी थे जिन्हें बंदी बनाकर अंधकार में रखा गया था। इन लोगों को लोहे ज़ंजीरों से बांधकर रखा गया था। इनकी आज़ादी को इनसे छीन लिया गया था क्योंकि उनके शत्रु ने इन्हें बंधुआई में रखा था। पद 11 स्पष्ट करता है कि ये विशिष्ट दोषी थे तथा दण्ड पाने के योग्य थे। ये ''ईश्वर के वचनों के विरुद्ध चले और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना।'' इन्हें इनके पापों के लिए दण्डित किया गया था। इन लोगों को कष्ट से दबाया गया। ये ठोकर खाकर गिर पड़े और इन्हें कोई सहायक न मिला (पद 12)। अपने संकट में इन्होंने यहोवा को पुकारा। इनके विद्रोह के बावजूद, परमेश्वर उनकी सहायता के लिए आया। उसने इन्हें इनके संकट से बचाया। वह इन्हें इनके बंदीगृह के अंधियारे से बाहर लेकर आया और इनके बन्धनों को तोड़ डाला। उसने इन पर दया व प्रेम को दिखाया।

पुन: पद 15 में भजनकार इन लोगों को प्रभु को उसकी करुणा के लिए धन्यवाद करने को कहता है। यह ऐसा प्रेम था जो इनके पाप और विद्रोह के बावजूद भी बना रहा। इन्हें प्रभु को धन्यवाद देना था क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर था जिसने पीतल के फाटकों को तोड़ डाला था और लोहे के बेण्डों को टुकड़े टुकड़े किया था। वह अपने लोगों को शक्तिशाली बंदीगृह से भी छुड़ाने में समर्थ था। उनके पापी और विद्रोही लोग होने पर भी वह ऐसा ही करता रहा। उनके लिए उसका प्रेम सदा तक बना रहेगा।

देश में एक और लोगों का समूह था। पद 17 के अनुसार ये लोग अपने विद्रोही मार्गों के कारण मूर्ख बन गए थे। उन्हें बंदीगृह में नहीं डाला गया था परन्तु तौभी वे बन्दी ही थे। मूर्ख होने के कारण उन्होंने बुद्धि से घृणा की। यहां बताई गई बुद्धि परमेश्वर की बुद्धि है। ये लोग अपनी मनचाही चीज़ें करना चाहते थे। वे अपने कार्यों और मार्गों में विद्रोही थे। परमेश्वर ने उन्हें उनके विद्रोह से छुड़ाया। पद 17 हमें बताता है कि अपने अधर्म के कामों के कारण उन्होंने दुख उठाया। हमें यह नही बताया गया कि इन लोगों के साथ क्या हुआ परन्तु हमें पद 18 में एक संकेत दिया गया है। यहां भजनकार हमें बताता है कि सब भांति के भोजन से उनका मन मिचलाता है और वे मृत्यु के फाटक तक पहुंचते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि ये लोग बीमारी या रोग से

ग्रस्त हों? ये अपनी बीमारी व रोग के बन्धुए थे। उनके बुरे और विद्रोही मार्गों के कारण यह भी परमेश्वर की ओर से उनके लिए दण्ड था। वे इस बीमारी को स्वयं पर लाए थे। उनके जीवनों में पाप के प्रभाव के कारण उनका नाश हो गया था। अपने संकट में इन लोगों ने भी परमेश्वर को पुकारा और उसने उनकी पुकार को सुना।

उन तक पहुंचकर उसने उन्हें चंगाई भी दी। उसने उन्हें कब्र या मृत्यु से बचाया और फिर से उनके स्वास्थ्य को अच्छा किया।

भजनकार इन लोगों को भी परमेश्वर की करुणा और अद्‌भुत कार्यों के लिए उसे धन्यवाद देने को कहता है (पद 20)। उन्हें अपने प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद का बलिदान चढ़ाने के साथ-साथ जयजयकार करते हुए उसके कामों का वर्णन करना था (पद 22)।

जिस अगले समूह के बारे में भजनकार बताता है उसने स्वयं को धन व सांसारिक संपन्नता में गाड़ दिया है। पद 23 में ये लोग जहाज़ों में समुद्र पर चलते हैं। पद 23 में भजनकार हमें बताता है कि वे महासागर पर होकर व्यापार करते हैं। वे भी परमेश्वर और उसके मार्गों के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। वे भी भौतिकवाद और लालच के बंदीगृह में थे। उनकी संपन्नता उनके लिए आशीष नहीं परन्तु शाप थी क्योंकि इसने उन्हें उनके परमेश्वर से दूर कर दिया था।

प्रभु ने स्वयं को इन व्यापारियों पर समुद्र में प्रगट किया था। उन्होंने 'गहरे समुद्र' में उसके अद्‌भुत कार्यों को देखा था। उनके पास कोई बहाना नहीं था क्यों कि परमेश्वर उनसे उन तरंगों और लहरों में होकर बोला था जो उनके जहाज़ों से टकराई थीं। योना भविष्यद्वक्ता के समान परमेश्वर के इन भटके हुओं का ध्यान अपनी ओर लगाने का प्रयास कर रहा था। परमेश्वर समुद्र के तूफान में था। वह उनके भटकने में उनके साथ-साथ था। तूफान की लहरों ने उनके जहाज़ों को आकाश की ऊंचाई से नीचे गहराई तक उतार दिया था। अपने जीवनों के भय उनके साहस को पिघला दिया था।

पतवाले के समान वे लड़खड़ाते और जहाज़ पर डगमगाते थे। वे अपने को अन्त की ओर ले आए थे और नहीं जानते थे कि क्या करें। धन और सम्पत्ति उनकी सहायता नहीं कर सके। वे एक सच्चे व जीवित परमेश्वर से भटक गए थे। वे भौतिकता और धन सम्पत्ति के ईश्वर के आगे झुक गए थे। अब उन्होंने अपने पाप और अपने मार्गों की नश्वरता को देखा। अपने संकट में उन्होंने भी परमेश्वर को पुकारा और उसने जवाब दिया।

परमेश्वर आँधी को थाम देता है। वह समुद्र की विद्रोही लहरों को शांत कर देता है। तनाव और संकट के स्थान पर शांति और आनंद आ जाता है। वे इस शांति में खुश

थे। उन्होंने उस शांति व सुरक्षा को पाया जिसे भौतिकता नहीं दे सकती। उनकी शांति और सुरक्षा धन और संपत्ति में नहीं थी परन्तु क्षमा के विषय जानने और अपने परमेश्वर के साथ संबन्ध का पुनर्गठन करने में थी। वे अपने धन व संपन्नता की उपासना करने को उसके विमुख हो गए थे। परमेश्वर उनका पीछा कर उन्हें लौटा ले आया। इसी कारण भजनकार इन व्यापारियों को प्रभु को धन्यवाद देने को कहता है। उन्हें सभा में उसकी सराहना करने के साथ-साथ पुरनियों की बैठक में उसकी स्तुति करनी थी। इन व्यापारियों का देश के पुरनियों से जुड़े होना यह दिखाता है कि वे प्रभावी व्यक्ति थे।

33-34 पदों में भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि इस्राएल का परमेश्वर वह परमेश्वर था जो नदियों को जंगल बना डालता है। वह जल के सोतों को सूखी भूमि कर डालता है। वह फलवन्त भूमि की लवनी करता है। वह पाप और बुराई के कारण ऐसा करता है। सभी आशीषों का स्त्रोत होने के कारण इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों पर से क्षण भर में ही उन आशीषों को हटा सकता है, यदि वे अपने पापों में बने रहें।

दूसरी ओर, यही परमेश्वर जंगल को जल का तालाब बनाता और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है। उसने भूखों को जीवन और एक देश दिया कि वे उसमें बस सकें। उसकी आशीष के कारण ही उनकी दाखलताओं में बहुत से फल लगे। परमेश्वर ने उन्हें बहुत से बच्चे दिये जिसके कारण वे संख्या में बहुत बढ़ गए। और उसने उनके पशुओं को भी घटने नहीं दिया। परमेश्वर उनकी आशीष का स्त्रोत था।

तौभी, उसकी आशीष में बने रहने के विपरीत, परमेश्वर के लोग उससे दूर हो गए। वे उसके विमुख हो गए और उन्होंने अपने ही ढंग से जीवन जीने का चुनाव किया। जिसके कारण उनकी संख्या घटने लगी। इस भजन में हम देखते हैं कि वे तितर-बितर हो गए, कैदी बनाए गए, बीमारी और रोग में पड़े तथा भौतिकता व लालच के शिकार हुए। दण्ड आने पर वे नम्र बने। विपत्ति और दुख ने उन्हें घेर लिया। वे पीड़ित व परास्त हुए और उनका दुख बढ़ गया। उनमें से अधिकांश जंगल में 'मार्गरहित' होकर भटकने को मजबूर हुए (पद 40)। अन्य शब्दों में, वे खोए हुए व दिशा रहित थे। यह परमेश्वर के विरुद्ध उनके विद्रोह के परिणामस्वरूप था।

परमेश्वर ने उन्हें उनकी गड़बड़ी में नहीं छोड़ा। उसने उन्हें उनके दुख से उठाया। उनके संघर्ष में वह उनसे मिला। अपनी दया में उसने उनके परिवारों को पुनः बढ़ाया। उसने अयोग्य व विद्रोही पापियों पर अपनी आशीषें फिर से बरसाईं।

अन्त में भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि जिन चीज़ों के बारे में वह बता रहा था सीधे लोग उन्हें देखेंगे और आनंद करेंगे। परन्तु सब कुटिल लोगों के मुंह बन्द

होंगे। अन्य शब्दों में, दुष्टों ने परमेश्वर की आराधना व स्तुति करने से इन्कार कर दिया था। जबकि उन्हें प्रभु की आराधना व स्तुति करने को अपने मुंह को खोलना था उन्होंने उसे बन्द कर रखा था। परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करने का इन्कार दुष्टों का पाप है। भजनकार के अंतिम शब्द हमें चुनौती देते हैं: ''जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा; और यहोवा की करुणा के कामों पर ध्यान करेगा'' (पद 43)।

विचार करने के लिए:

- यह भजन धन्यवाद देने के महत्व के बारे में हमें क्या सिखाता है? यह हमें धन्यवाद न देने के पाप के बारे में क्या सिखाता है?
- क्या आप तब भी धन्यवाद दे सकते हैं जब चीज़ें वैसे न हो रही हों जैसा आप चाहते हों कि वे हों?
- यह भजन हमें परमेश्वर की क्षमा और धीरज के बारे में क्या सिखाता है?
- इस भजन में हम परमेश्वर के अनुशासन और अनुशासन में उसकी दया के बारे में क्या सीखते हैं?
- क्या इस संसार की चीज़ों में हमें सच्ची सुरक्षा और शांति मिल सकती है? इस भजन में हमें सच्ची शांति और सुरक्षा के बारे में सिखाने को क्या है?
- क्या आप कभी परमेश्वर और उसकी आशीषों से दूर गए हैं? ऐसा करना इतना सरल क्यों है?

प्रार्थना के लिए:

- जब चीज़ें आपके ढंग से न हों रही हो तब परमेश्वर से आपको अधिक धन्यवादी बने रहने और उसकी स्तुति करने का रवैया देने को कहें।
- परमेश्वर से आपको उसकी आशीष की छाया में बने रहने का अनुग्रह देने को कहें। उससे आपको उन समयों के लिए क्षमा करने को कहें जब आप उन आशीषों से दूर चले गए थे।
- परमेश्वर से आपको ऐसे समयों के लिए क्षमा करने को कहें जब आप अपने प्रति उसकी भलाई के लिए धन्यवाद व स्तुति से भरे नहीं थे।

94. सहायता की पुकार

पढ़ें भजन संहिता 108:1-109:31

विश्वासी कई बार अपने जीवन में बहुत कठिन संघर्षों का सामना करते हैं। ये संघर्ष उन्हें परास्त कर सकते हैं। इन अगले दो भजनों में भजनकार संघर्ष के कठिन समय में अपने मन और विचारों को खुलकर बांटता है।

भजनकार परमेश्वर को यह याद दिलाते हुए आरम्भ करता है कि उसका हृदय स्थिर था (108:1)। जीवन में कठिनाइयां और संघर्ष होने पर भी भजनकार प्रभु और उसके उद्देश्यों के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। प्रभु हमसे भी यही करने को कह रहा है। वह हमसे दुख और संकट में धीरज रखने को कह रहा है। वह हमसे उस पर और उसके उद्देश्यों पर भरोसा रखने को कह रहा है। चाहे हमारे साथ कुछ भी क्यों न हो वह हमसे विश्वासयोग्य बने रहने को कह रहा है।

प्रभु और उसकी प्रेमी दया पर भरोसा करने के कारण भजनकार स्थिर बना रह सका था। मन से परमेश्वर पर भरोसा रखने के कारण ही वह दुख और संकट के समयों में गीत गाने के साथ-सथ संगीत भी बना सका। भजन 108:2 में वह सारंगी और वीणा को जागने को कहता है। वह स्वयं प्रभु के भरोसेमंद सेवक के रूप में सौंपता है कि पौ फटते ही उठकर उसकी भलाई और करुणा के लिए उसे धन्यवाद दे।

न केवल वह व्यक्तिगत रूप से प्रभु की स्तुति करेगा परन्तु भजनकार ने स्वयं को देश देश के लोगों में उसके नाम का धन्यवाद करने को भी सौंप दिया था। वह चाहता था कि संसार प्रभु की क्षमा और आशीष के बारे में जाने। उसका परमेश्वर के साथ का अनुभव उसे सुरक्षित रखने को भला था। समस्त संसार को इस बारे में जानना था।

विशिष्ट रूप से इस पर ध्यान दें कि भजनकार के धन्यवाद देने के साथ आनंद करने का कारण क्या था। वह अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु का प्रेम आकाश से भी ऊँचा है और उसकी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है (108:4)। अन्य शब्दों में, यदि आप परमेश्वर के लोगों के प्रति उसके प्रेम और सच्चाई की अभिव्यक्तियों को एक के ऊपर एक करके रखें तो यह आकश तक पहुंचेगी। उनकी गिनती नहीं की जा सकती।

ऐसे प्रेम और दया के लिए, भजनकार परमेश्वर को स्वर्ग के ऊपर देखना चाहता है (108:5)। अर्थात् वह यह चाहता है कि पृथ्वी पर उसके द्वारा इतने अनुग्रह और दया को दिखाए जाने के कारण सभी स्वर्गीय प्राणी उसके नाम की प्रशंसा करें। इस पर भी ध्यान दें कि उसकी इच्छा सारी पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा को देखने की थी (108:5)। वह चाहता था कि परमेश्वर पृथ्वी पर शक्ति में होकर अपनी उपस्थिति को प्रगट करे ताकि संसार जाने कि वह परमेश्वर है और सराहना व प्रशंसा में उसके सम्मुख झुकने पाए।

भजन 108:6 में भजनकार ने परमेश्वर को उन्हें एक जाति के रूप में बचाने और सहायता करने को पुकारा। प्रभु से उसकी पुकार यह थी कि उससे प्रेम करने वाले छुड़ाए जाएं। ऐसा कहते हुए भजनकार हमें यह स्मरण करा रहा है कि परमेश्वर से प्रेम रखनेवालों को भी इस जीवन में संघर्षों का सामना करना होगा। संघर्षों का सामना करने पर भी वे सभी जातियों का परमप्रधान परमेश्वर था। उसके लिए कुछ भी कठिन न था।

भजन 108:7-9 में ध्यान दें कि प्रभु एक महान परमेश्वर था। वह स्वर्ग में अपने पवित्र स्थान से बोला था। इससे बड़ी कोई और अदालत नहीं थी। इस अदालत से बोली गई हर बात का न केवल स्वर्ग पर अधिकार था परन्तु पृथ्वी पर भी। प्रत्येक जाति को स्वर्ग के पवित्रस्थान से दिये गए आदेश के आधीन आना था।

स्वर्ग में अपने पवित्रस्थान से परमेश्वर ने शकेम क्षेत्र को बांट लिया था। उसने सुक्कोत की तराई को नपवाया था (108:7)। उसने उनके प्रभाव और उनकी सीमाओं के विस्तार को निर्धारित किया था। वह सभी जातियों पर राज्य करता है। गिलाद और मनश्शे उसके हैं। उसने एप्रैम को अपना टोप होने के लिए चुना था। उसने यहूदा को अपना राजदण्ड कहा। उसने इन जातियों को आदर दिया (108:8)। तथापि, मोआब उसके धोने का पात्र था। परमेश्वर ने एदोम पर अपना जूता फेंका और पलिश्त पर जयजयकार कराई (108:9)। वह कुछ जातियों के उठाता और उन तक अपनी आशीषों को फैलाता है। वह जातियों को नीचा भी करता है।

परमेश्वर ऐसा ही था जो भजनकार के संघर्षों में उसके साथ-साथ था। यह ऐसा शक्तिशाली और अद्‌भुत परमेश्वर था जिसकी शक्ति को पलटा नहीं जा सकता। प्रतिदिन के संघर्षों का सामना करने पर ऐसे परमेश्वर का साथ होना भजनकार के लिए कितना शांति देनेवाला था।

भजन 108:11 में ध्यान दें कि इस समय में परमेश्वर के लोग उसकी आशीषों को अनुभव नहीं कर रहे थे। ऐसा लगता था कि परमेश्वर उनके विमुख हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि परमेश्वर की उपस्थिति अब अपनी सेना के साथ नहीं थी।

भजनकार ने परमेश्वर से उसे गढ़वाले नगर में पहुंचाने और सदोम तक उसकी अगुवाई करने की विनती की। सदोम परमेश्वर के लोगों का शत्रु था। भजनकार जान गया था कि केवल परमेश्वर ही उसे उसके शत्रु पर विजयी कर सकता था। उस विजय को देने के लिए उसने परमेश्वर को पुकारा। सारी मानवीय सहायता व्यर्थ थी। यद्यपि इस समय में भी भजनकार परमेश्वर के हाथ को कार्य करते नहीं देख पाया था तौभी उसकी सराहना करना और उस पर भरोसा करना उसने नहीं छोड़ा था। उसे पता था कि समस्त विजय परमेश्वर की ओर से ही आती है।

भजन 109 में भजनकार परमेश्वर से चुप न रहने को कहता है। वह परमेश्वर के सामर्थी हाथ को कार्य करते नहीं देख रहा था परन्तु उसे भरोसा था कि परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आएगा।

परमेश्वर से कार्य करने की विनती किये जाने पर भजनकार ने उसे याद दिलाया कि शत्रु क्या कर रहे थे। उसने प्रभु को बताया कि कैसे वे उसके विरोध में बोल रहे थे (109:2)। ये शत्रु दुष्ट मनुष्य थे जिन्होंने अपने मुंह को उसे घात करने के लिए खोला था। वे भजनकार के बारे में झूठ बोल रहे थे (109:2)। उन्होंने बिना कारण अपने शब्दों से भजनकार पर हमला किया। उन्होंने उसके विरुद्ध घृणापूर्ण व्यवहार किया। इस सच्चाई के बावजूद कि उसने उनके प्रति मित्रता के अतिरिक्त और किसी चीज़ को नहीं दिखाया था, उन्होंने तब भी उसके साथ ऐसा किया। उसके विरोध में कही गई भयानक चीज़ों के बावजूद भजनकार ने अपने बल व भरोसे को परमेश्वर में पाया। ''प्रार्थना में लवलीन'' रहने के कारण उसने अपने निवेदन परमेश्वर के सामने रखे और उसपर भरोसा किया (109:4)।

प्रेरित पतरस ने प्रेरितों के काम 16:20 में भजन 109 को उद्धृत किया है। वह यहूदा के विश्वासघात के बारे में बताने को इसका वर्णन करता है। इससे कुछ टिप्पणी कर्त्ता यह मानते हैं कि यह भजन भविष्यसूचक रूप से उस समय के बारे में बताता है जब यहूदा प्रभु यीशु से विश्वासघात करता। कम से कम हम यहां समानता को तो देख सकते हैं। यीशु यहूदा का मित्र बनकर रहा था, तौभी यहूदा उसके विरोध में बोला और उसके भरोसे को तोड़ा।

भजन 109:6 में भजनकार अपने शत्रु की एक विस्तृत आलोचना के साथ आरम्भ करता है। इसकी जांच करने से पहले यह महत्वपूर्ण होगा कि भजन 109 के इस भाग के संदर्भ में हम कुछ चीज़ें कहें।

सबसे पहले, हमारे लिए यह देखना ज़रूरी है कि इन पदों में भजनकार के शब्द उसकी एक छाप है जो भी उसके साथ हो रहा है। वह अपने शत्रु के हाथों दुख उठा रहा है। वह परमेश्वर से शत्रु के साथ वही करने को कहता है जो वे उसके लोगों के

साथ कर रहे हैं। दूसरा, इन पदों की छाया एक दु:खी मनुष्य की छाया है। ये वचन हमें इस बारे में सैद्धान्तिक या व्यावहारिक शिक्षा देने के उद्देश्य से नहीं हैं कि हमें कैसे प्रार्थना करनी है। नया नियम हमें स्पष्टतया सिखाता है कि हमें अपने शत्रु को आशीष देने और उनकी भलाई की चाह करने की ज़रूरत है (लूका 6:27-28)। इन पदों में जो हम देखते हैं वह अत्यंत दुखी व्यक्ति के विचार और भावना की खुली अभिव्यक्ति है। हम सभी इन भावनाओं से परिचित हो सकते हैं, यदि उन्हें प्रोत्साहित न भी किया जाए।

तीसरा, हमें भजनकार के शब्दों को लेने और बुराई व भलाई के बीच संघर्ष के रूप में उन्हें समझने की ज़रूरत है। भजनकार बुराई के प्रति परमेश्वर की घृणा को प्रतिबिम्बित कर रहा है। वह बुराई पर भलाई की विजय के लिए कह रहा है। ऐसा कहते हुए हमें उनके प्रति भजनकार के विचारों की जांच करने की ज़रूरत है जो उस पर दोष लगा रहे थे और उसके जीवन में दुर्दशा लाने का कारण थे।

भजन 109:6-7 में भजनकार प्रभु से उसके शत्रुओं का विरोध करने को किसी दुष्ट व्यक्ति को नियुक्त करने और उसके दहिने हाथ पर किसी विरोधी को खड़ा रखने के लिए कहता है। भजनकार के साथ यही हो रहा था। उस पर झूठे दोष लगाए गए और दुष्टों द्वारा उसका विरोध किया गया। वह प्रभु से उस पर दोष लगाने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध मेज़ को पलटने के लिए कहता है। वह परमेश्वर से अपने शत्रुओं को यह दिखाने को कह रहा है कि झूठे दोष लगाना और न्याय का इंकार करना कैसा होता है।

भजन 109:8 में वह आगे कहता है कि परमेश्वर दुष्ट लोगों के दिनों को थोड़ा करे। वह परमेश्वर से कह रहा है कि परमेश्वर अधर्मी लोगों के दिनों का अन्त करे। वह कहता है कि अगुवाई का स्थान दूसरे को दिया जाए और उनके बच्चे अनाथ हो जाएं। मुख्य विचार यह है कि उनके बच्चे अधर्म की रीति को आगे बढ़ाने के योग्य न रहें। वह परमेश्वर से बुराई को रोकने और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बुरी रीतियों को आगे न बढ़ाने को कह रहा है।

भजन 109:10-11 में, भजनकार दुष्ट लोगों के बच्चों के मारे-मारे फिरने और भिखारी बनने के बारे में कहता है। वह चाहता था कि उनको उनके उजड़े घर से दूर जाकर टुकड़े मांगना पड़े। ये लोग परमेश्वर के लोगों के साथ ऐसा ही कर रहे थे। वे उनहें निकालने के साथ-साथ उनसे उनकी प्रत्येक चीज़ को छीन रहे थे। भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उनके विरुद्ध अपनी तलवार चलाए ताकि वे उसे अनुभव कर पाएं जो वे दूसरों के साथ कर रहे थे।

अपने संकट के समय में भजनकार ने अपने को अकेला अनुभव किया। उसके

संकट में कोई भी उसके पास नहीं आया था। किसी ने भी उसकी ओर दया का हाथ नहीं बढ़ाया था। किसी ने उस पर और उसके बच्चों पर उनकी ज़रूरत में दया नहीं दिखाई थी। उसने परमेश्वर से कहा कि वह उसके शत्रुओं को अनुभव कराए कि ज़रूरत के समय में मित्रहीन होना कैसा होता है (109:12)।

धर्मी के विरुद्ध भयानक कार्य किये जाने के कारण भजनकार ने दुष्टों के वंश को काट डालने के लिए कहा। वह इन दुष्ट लोगों के नामों को सदा के लिए नाश चाहता था। वह चाहता था कि उनकी उपस्थिति की कोई भी याद अगली पीढ़ी तक न जाने पाए जिससे उनके दुष्ट कार्य रुक जाएं।

भजन 109:14 में भजनकार ने प्रभु से इन दुष्ट लोगों के कार्यों को स्मरण करने को कहा। उसने परमेश्वर से पाप से निपटने की विनती की। यह बिना दण्ड के नहीं रह सकता।

इन लोगों ने ज़रूरतमंदों पर कोई दया नहीं दिखाई थी। वास्तव में भजनकार हमें बताता है कि उन्होंने दरिद्रों को सताया और ज़रूरतमंद व खेदित मन के लोगों को मार डालना चाहा था (109:16)। उन्हें शाप देना अच्छा लगा और ज़रूरतमंदों की किसी भी ज़रूरत को पूरा करने से उन्होंने इंकार कर दिया (109:17)। उन्होंने शाप को वस्त्र की नाईं पहना (109:18)। शाप उनका और उनके कार्यों का एक हिस्सा बन गया था। भजनकार ने परमेश्वर से इन लोगों और इनके बुरे मार्गों को शाप देने को कहा। वह परमेश्वर से इन अधर्मियों को दण्ड देकर इनकी बुराई का बदला देने को कहता है।

भजनकार को भरोसा था कि परमेश्वर एक न्यायी परमेश्वर था (109:21)। उसे भरोसा था कि परमेश्वर बुराई को सदा तक विजयी नहीं होने देगा। परमप्रधान परमेश्वर होने के कारण वह बुराई से व्यवहार कर अपने लोगों की आशीषों को लौटाएगा। भजनकार को परमेश्वर की करुणा और भलाई पर भरोसा है। चूंकि परमेश्वर भला था, उसने पाप और बुराई से व्यवहार किया। परमेश्वर भजनकार की पीड़ा को जानता था। उसे पता था कि उसके मन को बहुत से व्यक्तियों ने ज़ख्मी किया था। परमेश्वर को पता था कि वह शाप की छाया के समान धुंधला पड़ता जा रहा था और उपवास व परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना करते रहने के कारण उसके घुटने निर्बल हो गए थे (109:24)। परमेश्वर इस सच्चाई से अज्ञात नहीं था कि उसके लोग नामधराई का कारण बने थे (109:25)।

भजनकार ने सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारा (109:26)। उसने उसके प्रेम को पुकारा। अपने चारों ओर के संकटों के बावजूद उसे यह भरोसा था कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है। उसने परमेश्वर से न्याय की विनती की। उसने परमेश्वर से उसके

शत्रुओं के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाने को कहा।

शत्रुओं ने धर्मी को शाप दिया परन्तु परमेश्वर उन्हें अपने समय में आशीष देगा (109:28)। उनका अन्त निकट था। वे लज्जित होंगे। परमेश्वर के सेवक आनंद करेंगे। उनके विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहनाए जाऐंगे और वे अपनी लज्जा को कम्बल के समान ओढ़ेंगे (109:29)। परमेश्वर के लोग उसके नाम की स्तुति करेंगे (109:30)। परमेश्वर अपनी संतान को नहीं छोड़ेगा। वह उनके दहिने हाथ पर खड़े होकर उन्हें उनके शत्रु के हाथ से छुड़ाएगा।

भजनकार के चारों ओर भयानक अन्याय था। प्रभु परमेश्वर से प्रेम करने पर भी उसे शत्रु की नामधराई का सामना करना पड़ा था। ऐसे भी समय थे जब उसने अपने आस-पास की बुराई से स्वयं को हारा हुआ अनुभव किया था। उसे कई बार परमेश्वर अपने से बहुत दूर लगा था। इन समयों में भजनकार उससे जुड़ा रहा जो वह परमेश्वर के बारे में जानता था। वह उसे प्रेम व भलाई के परमेश्वर के रूप में जानता था। वह उसे एक न्यायी परमेश्वर के रूप में जानता था। परमेश्वर के मार्गों और उद्देश्यों को देखने या समझ पाने पर भी उसने उस पर पूरी तरह से भरोसा किया था। ऐसे भी समय होते हैं जब हम समझ नहीं पाते कि परमेश्वर क्या कह रहा है परन्तु हम उसके उद्देश्यों के प्रति निश्चिंत हो सकते हैं। वह कभी असफल नहीं होगा। संकट के इस समय में यह भजनकार का भरोसा था। इसी तरह से हमारा भी यह भरोसा हो सकता है।

विचार करने के लिए:

- क्या एक पापी संसार में हम कभी भी संघर्ष और पीड़ा से पूर्णतया स्वतंत्र हो पाएंगे?
- हमारे इस संसार में संघर्ष करने का अर्थ क्या यह है कि परमेश्वर का नियंत्रण नहीं है? स्पष्ट करें।
- भजनकार का हमें इसे बताने से क्या अभिप्राय है कि परमेश्वर का प्रेम और दया आकाश से भी ऊँचे हैं? क्या यह आपका भी अनुभव रहा है? अपने जीवन में परमेश्वर की दया और प्रेम के कुछ उदाहरणों की सूची बनाने में समय बिताएं।
- हमारे संघर्ष के समय में परमेश्वर के प्रेम व दया की महानता को भूलना इतना सरल क्यों होता है?
- भजनकार जातियों और लोगों पर परमेश्वर की परमप्रधानता के बारे में हमें क्या सिखाता है? ज़रूरत के समय में आपको इससे क्या साहस मिलता है?
- हमारे समाज में पाप और बुराई के विरुद्ध हमारी क्या मांग होनी चाहिए?

- अपने संघर्ष के बीच भजनकार का क्या भरोसा है? हमें क्या भरोसा करना है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि जब कि इस पापी संसार में हम कभी भी पूरी तरह से पाप और दुख से स्वतंत्र नहीं हो पाएंगे, परमेश्वर तब भी परमप्रधान और भला रहता है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसका प्रेम और दया आकाश से भी ऊंचे हैं।
- कुछ समय के लिए इस ज्ञान पर विचार करें कि परमेश्वर सभी जातियों और लोगों पर परमप्रधान है। इसके लिए उसकी स्तुति करें और उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपके समाज के पाप और बुराई से व्यवहार करने की कहें। प्रभु से इसको बढ़ावा देनेवाले के नियंत्रण को तोड़ने के लिए कहें।

95. विजय की प्रतिज्ञा

पढ़ें भजन संहिता 110:1-111:10

भजन 110 विजय का भजन है। इसमें भजनकार दाऊद अपने शत्रुओं पर परमेश्वर की विजय की प्रतिज्ञा का उत्सव मनाता है।

दाऊद इस वाक्यांश से आरम्भ करता है, ''मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है।'' यहां 'यहोवा' शब्द पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। अंग्रेज़ी में दोहराए जाने पर भी यह इब्री शब्द के समान नहीं है। इसका अनुवाद इस तरह से भी किया जा सकता है: यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने राजा से कहा।

यहोवा ने राजा से जो 110:1 में कहा उस पर ध्यान दें। उसने उससे उसके दहिने हाथ बैठने को कहा जब तक कि वह उसके शत्रुओं को उसके पावों की चौकी न कर दे। यहां इस्राएल के प्रभु परमेश्वर का चित्र राजा की सहायता के लिए आने को है। प्रभु परमश्वर ने राजा को अपने दहिने हाथ पर बैठने को कहा। दहिना हाथ आदर और सहभागिता का स्थान था। युद्ध के मध्य में हम इसके श्रेष्ठ स्थान होने की आशा कर सकते हैं।

इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर की इच्छा राजा को उसके शत्रुओं पर विजय देने की थी। हमारे लिए यहां यह देखना महत्वपूर्ण है कि राजा ने इस विजय को नहीं पाया परन्तु प्रभु परमेश्वर ने उसे इस विजय को दिया।

इस निमंत्रण में हमें एक और चीज़ को देखने की ज़रूरत है। निमंत्रण आने और बैठने का है। यह सच है कि परमेश्वर कई बार हमें व्यस्त होने और अधिकार लेने को बुलाता है। तौभी, यहां निमंत्रण बैठने और प्रभु द्वारा विजय लाने का है। कई बार बैठने और परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के बजाय युद्ध करना अधिक सरल होता है। इससे यहां यह स्पष्ट होता है कि युद्ध प्रभु का था और केवल वही राजा के लिए ज़रूरी विजय को लाएगा।

भजन 110:2 में प्रभु परमेश्वर ने सिय्योन से राजा के राजदण्ड को बढ़ाने की प्रतिज्ञा की। राजदण्ड राजा के अधिकार का प्रतीक था। परमेश्वर कह रहा है कि वह राजा के अधिकार को बढ़ाना चाहता था। वह उसके शत्रुओं पर उसके शासन को चाहता था। परमेश्वर की इच्छा अपने लोगों को नाश करने या मिटा डालने की नहीं है।

वह हमें विजयी करना चाहता है। वह उन क्षेत्रों में हमारे अधिकार को बढ़ाना चाहता है जहां उसने हमें उत्तरदायित्व दिये हैं। उसकी इच्छा हमारे द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी होने की है। ध्यान दें कि राजदण्ड का वर्णन 'पराक्रम का राजदण्ड' के रूप में किया गया है। राजदण्ड के शक्तिशाली होने पर भी प्रभु इसे बढ़ाना चाहता था। संभवत: परमेश्वर इस समय में आपको अद्‌भुत रूप से एक पराक्रमी राजदण्ड के रूप में प्रयोग कर रहा है। यह पद हमें बताता है कि वह तब भी आपके अधिकार के 'राजदण्ड' को बढ़ाना चाहता है। परमेश्वर ने आपके लिए जो रखा है उससे कम पर कभी संतुष्ट न होएं। उसे आपके अधिकार को बढ़ाने दें।

विजय का कार्य दूसरों से अलग होकर अकेले किये जानेवाला कार्य नहीं है। भजन 110:3 में प्रभु परमेश्वर ने अपने सेवक राजा को बताया कि वह उसे उसके युद्ध के दिन में स्वेच्छा-बलि चढ़ानेवालों का दल देगा। उसे युद्ध का सपना अकेले नहीं लेना होगा। परमेश्वर शत्रुओं से लड़ने जाने के समय में उसके लिए सहकर्मियों के एक दल को तैयार करेगा।

इस पर ध्यान दें कि यह दल ''पवित्रता से शोभायमान' और 'भोर की ओस' के समान होगा। बाइबल के किंग जेम्स संस्करण में ''पवित्रता से शोभायमान'' का अनुवाद पवित्रता की सुन्दरता'' किया गया है। मुख्य विचार यह है कि इस युद्ध में राजा के साथ खड़ा यह दल प्रभु परमेश्वर और उसकी शक्ति को धारण किये है। वे पवित्र और पराक्रमी लोग हैं जो प्रभु की सामर्थ में युद्ध करते हैं। 'भोर' और 'ओस' का संदर्भ हमें बताता है कि ये सैनिक भरपूर हैं। वे राज्य के लिए तैयार व योग्य योद्धा हैं।

दाऊद भजन 110:4 में हमें स्मरण कराता है कि यहोवा ने शपथ खाई और वह न पछताएगा। जिसके होने की उसने प्रतिज्ञा की है वह होकर रहेगा। विजय निश्चित थी जिसे राजा से कभी लिया नहीं जा सकता।

भजन 110:4 में मेलकी सेदेक का संदर्भ है। यह संदर्भ प्रभु के शपथ खाने और कभी न पछताने के बारे में हैं। भजनकार प्रभु परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं पर पूरा भरोसा कर सका क्योंकि वह मेल्की-सेदेक की रीति पर सदा का याजक था।

मेल्कीसेदेक इब्राहीम के समय में यरूशलेम का याजक/राजा था। (इब्रानियों 7:1)। उत्पत्ति 14:18 में वह इब्राहीम से मिला। उससे मिलकर इब्राहीम ने उसे दशवांश दिया जो भी उसके पास था। उत्पत्ति 14 और इब्रानियों से यह स्पष्ट होता है कि मेल्कीसेदेक इस्राएल के प्रभु परमेश्वर पर विश्वास करता था और यरूशलेम में इस्राएल से जुड़ने से पहले भी यरूशलेम में राजा और याजक के रूप में कार्य करता था।

भजन 110:5 में राजा प्रभु की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करता है। वह कहता है, ''प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकर अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा। यहां प्रयुक्त प्रभु शब्द यहोवा परमेश्वर के लिए नहीं है। इसे राजा के लिए प्रयोग किये जाने के रूप में देखना है। यह राजा ही था जिसे प्रभु परमेश्वर के दहिने हाथ पर बैठने को आमंत्रित किया गया था। आदर के स्थान पर होने के कारण वह अपने शत्रुओं के विरुद्ध खड़ा हो सका। वह प्रभु द्वारा दी गई विजय में चला। वह जातियों का न्याय उनकी बुराई के लिए करने को परमेश्वर का उपकरण होगा।

धर्म का यह युद्ध सरल नहीं होगा। परमेश्वर ने युद्ध में विजय देने की प्रतिज्ञा की थी, न कि युद्ध से मुक्त करने की। युद्ध की गर्मी में भी प्रभु परमेश्वर ताज़गी को लेकर आएगा। भजन 110:7 में भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि वह मार्ग में चलते हुए नदी का जल पीएगा जिसका प्रबन्ध परमेश्वर ने उसकी ज़रूरत के समय में किया था।

ऐसे बहुत से समय रहे हैं जब मुझे व्यक्तिगत रूप से इस नदी की ज़रूरत रही है। कई बार यह किसी की ओर से पत्र या ई-मेल के रूप में आती है जो केवल मुझे प्रोत्साहित करना चाहते हैं। कई बार यह भीषण युद्ध के बाद आराम के रूप में आती है। कई बार यह किसी ज़रूरत के प्रबन्ध के रूप में या परमेश्वर के वचन के संदर्भ के रूप में आती है, जो सामना किये जानेवाले संघर्ष के बारे में बताता है। हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर अपने थके दासों के लिए उनकी ज़रूरत के समय में 'नदी' का प्रबन्ध करेगा। वे अपने थके सिरों को उठाकर ताज़गी पाएंगे। इससे हमें युद्ध में जाने का बढ़ावा मिलता है। परमेश्वर हमें विजय देगा। वह ज़रूरतमंद सहकर्मियों और साधनों की आपूर्ति करने के साथ-साथ हमारे थकने पर हमें ताज़गी प्रदान कर नया बनाएगा।

इसी संदर्भ में हम भजन 111 में विचार करेंगे। भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि वह सीधे लोगों की गोष्ठी और मण्डली में प्रभु के नाम की महिमा करेगा (111:1)। उसके पास अपने प्रभु परमेश्वर की स्तुति करने और उसे धन्यवाद देने का प्रत्येक कारण था। वह चाहता था कि धर्मी परमेश्वर की भलाई के बारे में जानें। वह चाहता था कि उसके भाई और बहन उसके आनंद को जानें।

परमेश्वर के काम बड़े थे और जितने उन से प्रसन्न रहते हैं वे उन पर ध्यान लगाते हैं (111:2)। ऐसा कहकर भजनकार प्रभु की आशीषों का अनुभव करने वालों को उन कार्यों पर 'विचार' करने की चुनौती देता है। प्रभु के कार्यों पर विचार करने पर उनके हृदय स्तुति और धन्यवाद से भर जाएंगे। प्रभु के कार्य विभवमय थे (111:3)। इन कार्यों न पर विचार करनेवाले दीनता से सराहना करने को झुके थे।

परमेश्वर द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ विभवमय और ऐश्वर्यमय थी। उसका धर्म सदा तक बना रहेगा (111:3)। उसके द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ भली व शुद्ध थी। वह अनुग्रहकारी और दयावन्त परमेश्वर था जिसने अपनों की देखभाल की थी (111:5)। उसने अपने डरवैयों को आहार दिया। वह अपनी वाचा के लोगों को कभी नहीं भूलेगा (111:5)। उन्हें उनके शत्रुओं पर विजय देने के द्वारा और उनकी मीरास के रूप में उन्हें देश को देने के द्वारा उसने उन्हें अपनी सामर्थ को दिखाया (111:6)।

परमेश्वर के काम सच्चाई और न्याय के थे (111:7)। उसने अपने लोगों के प्रति सच्चाई में होकर कार्य किया था। उसके उपदेश (आज्ञाएं और उद्देश्य) विश्वासयोग्य थे। उसने अपने लोगों को उद्धार व छुटकारा दिया (111:9)। उसने उनके साथ जिस वाचा को बांधा था वह कभी भी रद्द नहीं होगी। वह हमेशा उनकी देखभाल और रक्षा करेगा। उसका नाम पवित्र और भययोग्य था (111:9)। सभी प्रभु का भय माननेवाले (वचन और कार्यों में आदर और श्रद्धायुक्त भय दिखाना) बुद्धिमान थे। वास्तव में, परमेश्वर और उसके उद्देश्यों को जाने बिना कोई भी सच्ची बुद्धि के बारे में जानना आरम्भ नहीं कर सकता। उसके मार्गों पर चलनेवालों में सच्ची समझ थी।

बहुत ही वास्तविक ढंग से भजन 110 भजन 111 की पृष्ठभूमि को तैयार करता है। परमेश्वर अपने दास को दहिने हाथ पर बैठने की बुलाता है कि उसे विजयी करे। उसने अपने दास के हाथ के कामों को समर्थ करने नया बनाने और दृढ़ करने की प्रतिज्ञा की थी। बड़ी स्तुति और आनन्द मनाने का यही कारण था।

विचार करने के लिए:

- भजन 110 हमें परमेश्वर के अपने दास को आदर व विजय देने की खुशी के बारे में क्या बताता है? क्या आप इस समय उस आदर और विजय के स्थान पर बैठे हैं?
- अपने स्वयं के बल व प्रयास से विजय व आदर पाना क्या संभव है? स्पष्ट करें।
- प्रभु परमेश्वर की इच्छा राजा के राजदण्ड को बढ़ाने की थी। क्या परमेश्वर आपके राजदण्ड के अधिकार को बढ़ाना चाहता है? स्पष्ट करें।
- इन भजनों में हम राज्य के लिए किये जाने वाले युद्ध में सहकर्मियों के महत्व के बारे में क्या सीखते हैं। आपके सहकर्मी कौन हैं?
- प्रभु के कामों पर विचार करने का क्या अर्थ है? पिछले कुछ समय में आपके जीवन में प्रभु द्वारा किये गए कार्यों पर कुछ समय के लिए विचार करें।

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमें विजय देना चाहता है।

- प्रभु से आपके अधिकार के राजदण्ड को बढ़ाने के लिए कहें। बढ़ाए गए अधिकार में कार्य करने के लिए परमेश्वर से आपको विश्वास देने को कहें।
- कुछ समय के लिए प्रभु को उन सहकर्मियों हेतु धन्यवाद दें जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है। उनके प्रोत्साहन व सहारे के लिए प्रभु को धन्यवाद दें।
- क्या आपके युद्ध के बीच में प्रभु ने आपको ताज़े जल की 'नदी' को दिया है। ताज़गी के उन क्षणों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

96. धर्मी की आशीषें

पढ़ें भजन संहिता 112:1-114:8

भजनों की पुस्तक में हमने देखा कि धर्मी भी दुख उठाते हैं। वास्तव में वे सामान्यता शत्रु के तीरों का लक्ष्य बन जाते हैं। तौभी हमें यह नहीं सोचना है कि विश्वासी का जीवन कठिनाईयों से भरा होता है। परमेश्वर ने हमें विजय और आशीष में भी रहने को बुलाया है। भजन 112 में भजनकार कुछ समय के लिए धर्मी की आशीषों पर विचार करता है।

भजन 112:1 का आरम्भ पाठकों को यह बताते हुए होता है कि प्रभु की आज्ञाओं से प्रसन्न रहनेवाला व्यक्ति धन्य है। भजनकार आगे के पदों में अपने अभिप्राय को स्पष्ट करता है।

वह हमें बताता है कि प्रभु की आज्ञाओं से प्रसन्न रहनेवालों की सन्तान देश में पराक्रमी होगी। प्रभु की आज्ञाओं से प्रसन्न रहनेवालों की सन्तान धन्य होगी (112:2)। सामान्य विचार यह है कि एक बच्चे के सत्य और धार्मिकता के मार्ग में बढ़ने पर वह यह समझेगा/समझेगी कि प्रभु की आशीषों में जीवन कैसे बिताना है। प्रभु परमेश्वर उन्हें आशीष देता है जो उसे आदर देते हैं। जब माता-पिता उदाहरण बनकर अपने विश्वास को अपनी अगली पीढ़ी तक बढ़ाते हैं, उनके बच्चों के पास भी तब उनके जीवनों में परमेश्वर की आशीष में चलाने के लिए ज़रूरी उपकरण होते हैं। जबकि सभी बच्चे परमेश्वर के उद्देश्य और योजना में रहने का चुनाव नहीं करते। सामान्य सिद्धान्त यह है कि परमेश्वर से प्रेम करनेवाले और बच्चों को परमेश्वर से प्रेम करने व उसे आदर देने की शिक्षा देनेवाले उन्हें प्रभु की आशीष में बड़ा कर रहे होते हैं और उनके लिए उसी आशीष में रहने का मार्ग तैयार कर रहे होते हैं।

भजनकार आगे कहता है कि प्रभु और उसकी आज्ञाओं से प्रेम करनेवाले के घर में धन संपत्ति रहती है और उसका धर्म सदा तक बना रहता है (112:3)। ऐसा कहने वाले भी होंगे कि इससे यह प्रमाणित होता है कि सभी मसीही धनी और संपन्ना होने चाहिए। इस सिद्धान्त के साथ समस्याएं हैं। पहली यह कि प्रभु यीशु इस संसार की चीज़ों में धनी नहीं था। लूका 9:58 में अपने बारे में बोलते हुए यीशु ने कहा:

यीशु ने उससे कहा, ''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं।''

भजनकार ने अपने समय के संसार के चारों ओर देखते हुए ऐसे बहुत से विश्वासियों को देखा होगा जो प्रभु से प्रेम करते थे, परन्तु गरीबी से भी संघर्ष कर रहे थे। भजन 112:3 और प्रभु से प्रेम करनेवालों को धन और संपत्ति के बारे में दो चीज़ें कहने की ज़रूरत है।

पहली, सामान्य सिद्धान्त यह है: यदि हम प्रभु से प्रेम करें और उसकी आज्ञाओं को आदर दें, तो हम उसकी तरह से जीएंगे जो परमेश्वर द्वारा दी गई सभी आशीषों का बुद्धिमानी से प्रयोग करेगा। कुछ लोगों के पास हमेशा दूसरों से अधिक होता है। तथापि परमेश्वर से प्रेम करनेवाले और उसकी आज्ञाओं पर चलनेवाले उसके वचन में उस ज़रूरी बुद्धि को पाते हैं जिसकी ज़रूरत उन्हें उसमें सही तरह से प्रयोग करने की होती है जो परमेश्वर ने उन्हें दिया होता है। प्रभु की आज्ञाओ से प्रेम करनेवाले अपने साधनों के सदैव अच्छे भण्डारी होंगे। वे अपने परिवार की और अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा करने के योग्य होंगे क्योंकि वे उसे नहीं गंवाते जो परमेश्वर ने उन्हें दिया होता है।

दूसरी, हमें धन को लेकर ही संपन्नता पर सीमित नहीं होना है। बाइबल धन और सम्पत्ति को अत्यधिक विस्तृत रूप से देखती है। संपन्नता आत्मिक, भावनात्मक, शारीरिक या भौतिक हो सकती है। सपन्नता को धन तक ही सीमित करना उससे चूकना है जो परमेश्वर कह रहा है। परमेश्वर को जाननेवाले और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीनेवाले धन और अमीरी का आनन्द लेते हैं। बेशक उनके पास उनके आस-पास वालों के समान धन और भौतिक संपत्ति नहीं होती, तौभी वे आत्मिक, भावनात्मक और शारीरिक तरीके से आशीषित होते हैं।

भजन 112:4 में भजनकार हमें बताता है कि प्रभु और उसकी आज्ञाओं से प्रेम करनेवाले अंधकार में भी भोर की रोशनी को अनुभव करेंगे। ऐसा कहने के द्वारा भजनकार को इस बात का ज्ञान है कि धर्मी के लिए अन्धकार के दिन होंगे। प्रभु के लोगों के जीवनों में कठिनाई व संघर्ष के दिन होंगे परन्तु प्रतिज्ञा यह है कि उनके लिए ज्योति उदय होगी। अन्य शब्दों में, प्रभु उनकी सहायता को आएगा (112:5)। अपनी पीड़ा और संकट में भी उन्हें परमेश्वर की शांति और उपस्थिति की अनुभूति हो सकती है। चूंकि प्रभु परमेश्वर उनके साथ है इसलिए वे अलग रहेंगे (112:6)। प्रभु की सामर्थ से वे दृढ़ रहेंगे।

भजन 112:7 हमें बताता है कि प्रभु से प्रेम रखनेवाले बुरे समाचार से नहीं डरते क्योंकि उनका हृदय प्रभु पर भरोसा करने में स्थिर रहता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि धर्मी कभी बुरे समाचार को नहीं सुनेंगे। हम प्रतिदिन बुरे समाचार सुनते हैं। बुरे समाचार सुनने और बुरे समाचार से डरने के बीच अन्तर है। धर्मी भी बुरा समाचार सुन

सकते हैं, तौभी उन्हें भय नहीं होता। वे प्रभु पर भरोसा रखते हैं। वे जानते हैं कि चाहे उनकी ज़िन्दगी में कुछ भी हो वे अपने प्रभु पर भरोसा रख सकते हैं। उनका हृदय सुरक्षित है। शत्रु के उन्हें घेरे जाने पर भी वे यह जानते हैं कि चूंकि परमेश्वर उनके साथ है वे अपने शत्रु पर विजय होंगे (112:8)।

धर्मी चूंकि दूसरों को उदारता से देता है, इस कारण वे आदर पाएंगे। परमेश्वर आशीष देना चाहता है। धर्मी भी ऐसी ही मनसा रखता है। परमेश्वर धर्मी द्वारा ज़रूरत मंदों की सहायता किये जाने पर उस पर अपनी करुणा बनाए रखेगा।

प्रभु परमेश्वर से प्रेम करनेवाले और उसे आदर देनेवाले आशीषित होंगे, परन्तु ऐसा उनके साथ नहीं होगा जो उसके विमुख हो जाते हैं। वे लोग कुढ़ेंगे। वे दांत पीसेंगे। वे नष्ट हो जाएंगे। उनकी लालसा पूरी नहीं होगी (112:10)। सांसारिक खुशी और व्यवसायों में वे बेशक धनी होंगे, परन्तु अन्त में इसकी कोई गणना न होगी।

भजन 112 हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर से प्रेम करने वालों पर उसकी आशीषें आती हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें इस जीवन में कभी पीड़ा और संकट का सामना नहीं करना होगा। ऐसे भी समय होंगे जब वे अंधकार से घिर जाएंगे परन्तु उन समयों में भी परमेश्वर उनका सहारा और विश्राम होगा। यह सच है कि दुष्ट इस जीवन में संपन्न हो सकते हैं परन्तु यह संपन्नता चिरस्थायी नहीं होगी। यह अस्थायी है और घास के समान मुरझा जाती है। सच्ची और स्थायी आशीष केवल प्रभु और उसकी आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी बने रहने में ही मिलती है।

जबकि हम विश्वासी के जीवन में परमेश्वर की आशीष के विषय पर विचार कर रहें हैं भजन 113 हमें परमेश्वर को स्तुति की भेंट चढ़ाने की चुनौती देता है। हमें उसकी भलाई और आशीष के लिए उसकी स्तुति करने को प्रोत्साहित किया गया है। विश्वासी सूर्य के निकलने से लेकर सूर्य के अस्त होने तक कई कारणों से परमेश्वर की स्तुति कर सकता है (113:3)। प्रत्येक दिन प्रभु परमेश्वर को सर्वोच्च स्तुति और धन्यवाद देने के कई कारण होते हैं।

इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के समान कोई परमेश्वर नहीं है। वह सारी जातियों के ऊपर महान है (113:4)। अर्थात् वह सभी जातियों में सर्वोच्च है। प्रत्येक जाति को उसके सामने झुककर उसकी स्तुति करनी है। उसकी महिमा आकाश से भी ऊँची है (113:4)। अन्य शब्दों में, उसकी महिमा से पृथ्वी और आकाश भरपूर है। वह हर कहीं व्याप्त है।

इस्राएल का परमेश्वर ऊँचे पर विराजमान है (113:5)। वह राजाओं का राजा है। कोई भी सिंहासन उसके सिंहासन से ऊँचा नहीं है। उससे बड़ा कोई अधिकारी नहीं है। जबकि हमारा परमेश्वर बड़ा व महिमामयी है। ध्यान दें कि भजनकार भजन

113:6-9 में हमें क्या बताता है। इस्राएल का परमेश्वर आकाश और पृथ्वी पर भी दृष्टि करने के लिए झुकता है। अन्य शब्दों में, उसकी इसमें रुचि है कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है। वह मानवता पर विचार करने में समय लगता है। तथापि, इसके अतिरिक्त वह कंगाल को मिट्टी पर से और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊँचा करता है (113:7-8)। वह बांझ स्त्री पर दया करता और उसके संतानहीन होने के दुख पर दृष्टि करता है। वह उसके गर्भ को छूता और उसे बच्चों की आशीष देता है (113:9)।

इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों तक पहुंचता है। उनकी पीड़ा को देखकर वह उन्हें शांति और आराम देने को उनके पास पहुंचता है। वही महान आशीष का स्त्रोत है और हमारी सर्वोच्च स्तुति व धन्यवाद पाने के योग्य हैं।

भजन 114 में भजनकार ने अपने लोगों के जीवनों में प्रभु की आशीष के व्यावहारिक उदाहरण को दिया है। उसने उन्हें याद दिलाया कि प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र और अन्य देशों की गुलामी से बचाया। उसने ऐसा यहूदा को अपना पवित्र स्थान बनाने और इस्राएल पर अपनी अधिकार करने के द्वारा किया (114:2)। अन्य शब्दों में उसने उन्हें केवल दूर से ही आशीष नहीं दी, उसने उनके पास आने और अपनी अशीषों से उन्हें व्यक्तिगत रूप से अवगत कराने का चुनाव किया।

भजन 114:3-8 में प्रभु की उपस्थिति को अनोखे ढंग से बताया गया है। समुद्र प्रभु की उपस्थिति को देखकर भाग गया (114:3)। भजन 114:5 विशिष्ट रूप से यर्दन नदी के संदर्भ को देता है। संभवत: यह नदी के दो भागों में बांटने के संदर्भ में है जबकि इस्राएल के लोग प्रभु द्वारा प्रतिज्ञात् देश में पार होकर पहुंचे थे (यहोशू 4) इसका पानी प्रभु के वचन की आज्ञाकारिता में बह गया।

भजन 114:4 में पहाड़ मेढ़ों की नाईं उछलने लगे और पहाड़ियां भेड़ बकरियों के बच्चों की नाईं उछलने लगीं। पहाड़ पर मेढ़ों के चित्र को दूर से देखा गया है। दर्शक जब पहाड़ को मेढ़ों से भरा देखता है तो उसे दूर से देखने पर ऐसा लगता है कि मेढ़ों के उछलने और नाचने के कारण पहाड़ भी हिल रहा है। इस्राएल के बीच प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति को हल्के से नहीं लिया जा सकता। यह एक अनोखी उपस्थिति थी। समुद्र बंट गया था। पहाड़ हिले और कांपे। यह ऐसी उपस्थिति थी जो चट्टान को जल का ताल बना सकती है (114:8)। यह इस संदर्भ में भी हो सकता है कि जंगल में अपने लोगों की प्यास बुझाने को परमेश्वर ने चट्टान में से कैसे पानी को निकाला था (देखें निर्गमन 17:6)।

हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि इस अद्भुत और अद्वितीय परमेश्वर को अपने लोगों के बीच पवित्र स्थान बनाने में खुशी मिलती है। यहां परमेश्वर दरिद्रों और

ज़रूरतमंदों की ज़रूरतों पर दृष्टि करने को झुका था। इसी परमेश्वर को अपनी आज्ञा का पालन करनेवालों और अपने मार्गों पर चलने वालों पर स्वयं को प्रगट करने से खुशी मिलती है। उसके समान कोई परमेश्वर नहीं है। उसके बिना कहीं कोई सच्ची और स्थायी आशीष नहीं है।

विचार करने के लिए:

- क्या आशीषित होने का अर्थ यह है कि जीवन में कभी कोई संघर्ष नहीं होगा? क्या आशीषित होने पर भी हम संघर्षरत् हो सकते हैं?
- सच्ची संपत्ति क्या है? क्या संपत्ति को भौतिक चीज़ों तक ही सीमित किया जा सकता है? अन्य और कौन सी किस्म की धन संपत्तियां हैं?
- भजनकार प्रतिज्ञा करता है कि परमेश्वर से प्रेम करनेवाले अंधकार में भी ज्योति को देखेंगे। क्या आपने कभी अंधकार में इस ज्योति को अनुभव किया है? स्पष्ट करें।
- बुरे समाचार सुनने और बुरे समाचार से डरने के बीच क्या अन्तर है? विश्वासियों को बुरे समाचार से डरने की ज़रूरत क्यों नहीं है?
- भजन 114 प्रभु परमेश्वर की अद्‌भुत आशीषों के बारे में बताता है। क्या आप अपने जीवन में प्रभु की उपस्थिति से परिचित हैं? यह आपके लिए कैसे एक आशीष रही है।

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि इस जीवन में संकटों का सामना करने पर भी हम उसकी आशीषों की वास्तविकता में रह सकते हैं।
- परमेश्वर की आपमें व्यक्तिगत रूप से रुचि लेने के लिए धन्यवाद दें। कुछ समय उसके द्वारा दी गई आशीषों पर विचार करें। उन आशीषों के लिए उसे धन्यवाद दें।
- प्रभु को इसके लिए धन्यवाद दें कि जीवन में चाहे कुछ भी हो चूंकि परमेश्वर हमारे साथ है इसका कारण हमें डरने की ज़रूरत नहीं।
- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जो सांसारिक धन संपत्ति में फंस गया है? कुछ समय प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनकी आंखों को खोले कि वे उसकी भरपूर आशीषों को देख सकें।

97. जातियों का परमेश्वर

पढ़ें भजन संहिता 115:1-116:19

भजन 115 और 116 में भजनकार परमेश्वर की भलाई और सच्चाई पर विचार करता है। वह ऐसा अपने आस-पास के देवताओं से उसकी तुलना करते हुए करता है।

भजन 115 के आरम्भ में, भजनकार यह मानता है कि सारी महिमा और आदर परमेश्वर का है। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि भजनकार हमें बताता है कि महिमा हमारी नहीं है। हमारे दिनों में हम बहुत सी मानव उपलब्धियों को देखते हैं। इन अद्‌भुत उपलब्धियों का श्रेय मनुष्यों को देना सरल भी होता है। तौभी इनमें से कोई भी उपलब्धि महिमा के योग्य नहीं है। प्रभु परमेश्वर के बिना हम कहां होते? इन सभी उपलब्धियों को क्या सच में हम अपना कह सकते हैं? अपनी प्रत्येक सांस के लिए हम पूर्णतया परमेश्वर पर आश्रित हैं। अलग होकर हम कुछ नहीं कर सकते। महिमा मनुष्यों की नहीं है, परन्तु केवल उसकी है जो उन्हें जीवन व सांस देता है।

भजन 115:1 में ध्यान दें कि प्रभु परमेश्वर ही अपने प्रेम और सच्चाई के कारण समस्त महिमा पाने के योग्य है। उसके प्रेम और सच्चाई के कारण ही हम सांस ले पाते हैं। उसके प्रेम और सच्चाई के कारण ही हम नाश होने को छोड़े नहीं गए हैं।

हर कोई चीज़ों को इस तरह से नहीं देखता। ऐसे अविश्वासी भी थे जो यह कहते थे: तुम्हारा परमेश्वर कहां है? उन्होंने परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को नहीं देखा था। उन्होंने यह नहीं जाना था कि परमेश्वर के विश्वासयोग्य प्रेम के कारण ही उन्होंने इस सब को किया था। उनके हृदय की प्रत्येक धड़कन ने उन्हें प्रेमी और विश्वासयोग्य परमेश्वर की उपस्थिति को दिखाना चाहा था।

ऐसे भी समय थे जबकि प्रभु परमेश्वर के मार्गों को समझना कठिन था, भजनकार ने अविश्वासी को याद दिलाया कि परमेश्वर स्वर्ग में है और उसने जो चाहा वही किया है (115:3)। भजनकार परमेश्वर को स्वर्ग तक ही सीमित नहीं करता। हम जानते हैं कि परमेश्वर हर कहीं है। वह मनुष्यों से ऊपर है। वह स्वर्ग से आज्ञा देता और पृथ्वी पर उसके पूरे होने की आशा करता है। उसने जो चाहा वही किया। वह सभी पर प्रभु था। उससे ऊँचा कोई भी अधिकार या शक्ति नहीं थी। कोई भी उसे नहीं बता सकता कि उसे क्या करना है या उसके अधिकार पर प्रश्न नहीं कर सकता।

भजन 115:4 में भजनकार कुछ समय के लिए जातियों के ईश्वर की ओर ध्यान लगाता है। वह अविश्वासियों को उनके देवताओं की याद कराता है। उनके देवता सोने और चांदी से बनी मूरते थे। उन्हें उनके आराधकों ने बनाया था। यह इन देवताओं की अनुपयोगिता का एक संकेत होना चाहिए। यदि मनुष्यों ने उन्हें बनाया है तो वे मनुष्यों से कम स्तर के ही हैं।

सोने चांदी की इन मूरतों के मुंह तो थे परन्तु वे बोल नहीं सकती थीं। इनकी आंखें थीं परन्तु देख नहीं सकती थीं। इनके कान थे परन्तु सुन नहीं सकती थीं, और नाक थी परन्तु सूंघ नहीं सकती थीं इनके पांव तो थे परन्तु चल नहीं सकती थीं। (115:5-7)। इन देवताओं में जीवन नहीं था। ये बोलने, स्पर्श करने, अनुभव करने और सोचने में भी शक्तिहीन थे। जातियां इन्हीं देवताओं की आराधना करती थीं।

भजन 115:8 में भजनकार ने स्पष्ट किया कि इन देवताओं को बनानेवाले भी इनके समान ही हैं। अन्य शब्दों में, जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनाने वाले हैं। उनकी मूरतों के समान वे मूर्ख और शक्तिहीन थे। इन मूरतों पर उनका भरोसा उतना ही मूर्खतापूर्ण था जितना कि मूरतें स्वयं थीं।

इन जीवनरहित मूरतों की तुलना में, भजनकार अपना ध्यान इस्राएल के परमेश्वर की ओर फिर से लगाता है (115:9)। वह अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि इस्राएल का भरोसा प्रभु परमेश्वर में था। जातियों के जीवन रहित देवताओं के प्रतिकूल, इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों की ढाल था (115:9)। वह अपने लोगों को अपने प्रभु पर अपनी ढाल व सहायक के रूप में भरोसा करने को कहता है। वह एक जीवित परमेश्वर था जो उनकी ज़रूरत के समय में उनकी सहायता कर सकता था।

भजन 115:12 में भजनकार ने प्रभु पर सभी भरोसा करनेवालों के याद दिलाया कि उसने हमें स्मरण किया है और हमें आशीष देगा। जातियों के देवताओं के प्रतिकूल, इस्राएल के प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों की दोहाई पर प्रतिक्रिया दी। उनकी ज़रूरत के समय में उसने उन्हें याद किया। उन्हें आशीष देने और उन्हें अपनी संतान के रूप में मानने से उसे खुशी मिलती थी। उससे प्रेम करनेवालों और उसका भय माननेवालों के साथ उसने ऐसा ही किया। दुख और दरिद्रता में रहनेवाले विश्वासियों के साथ वैसा ही व्यवहार किया गया जैसा धनी और संपन्न के साथ।

भजनकार भजन 115 का अन्त प्रभु का भय माननेवालों को आशीष देने के द्वारा करता है (115:14-16)। वह परमेश्वर से उनके बच्चों को बढ़ाने के लिए कहता है। (115:14)। वह आकाश और पृथ्वी के कर्त्ता को अपने लोगों को आशीष देने के लिए कहता है (115:15)। वह उन्हें याद दिलाता है कि जबकि स्वर्ग यहोवा का है

पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है (115:16)। संपूर्ण पृथ्वी परमेश्वर की ओर से मनुष्यों के लिए एक उपहार थी। अपने चारों ओर हम जिन चीज़ों को देखते हैं और इस सृष्टि की समस्त सुंदरता और जटिलता इस्राएल के परमेश्वर का अपने लोगों के प्रति अनुग्रह और प्रेम का संकेत है। वह एक अद्‌भुत परमेश्वर है, जो जातियों के प्रतिकूल अपने लोगों को अच्छे दान देने के योग्य है। इसी कारण वह हमारी स्तुति और सराहना पाने के योग्य है। मृतक कब्र में परमेश्वर की स्तुति नहीं कर सकते (115-17)। हम ही उसके नाम को ऊँचा कर सकते हैं। जीवित ही परमेश्वर की आशीषों को अनुभव करते हैं। परमेश्वर की आशीषों को जानने और उनका अनुभव करने के कारण हमें पूरे मन से उसे धन्यवाद देने और उसकी स्तुति करने की ज़रूरत है। वह एक प्रेमी और विश्वासयोग्य परमेश्वर है। उसके लोग होने के कारण सारा श्रेय और सच्चाई हमारे लिए ही है। इस कारण हमें सर्वदा उसके नाम की स्तुति करनी है।

इस्राएल के परमेश्वर की जातियों के देवताओं से तुलना करने पर, भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि जबकि जातियों के देवता निरर्थक थे, इस्राएल का परमेश्वर सच्चा और विश्वासयोग्य परमेश्वर था जिसकी अपने लोगों में अत्यंत रुचि थी। भजन 116 में भजनकार अपने प्रति इस्राएल के इस जीवित परमेश्वर की अद्‌भुत विश्वासयोग्यता का उदाहरण देता है।

भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि वह अपने परमेश्वर से इसलिए प्रेम रखता है क्योंकि उसने उसके गिड़गिड़ाने को सुना है (116:1)। परमेश्वर ज़रूरत के समय की गई उसकी पुकार के लिए बहरा नहीं हुआ था। परमेश्वर ने अपने सेवक की पुकार को सुनकर उसे जवाब दिया था। इसी कारण, भजनकार का विश्वास नया हुआ था। उसने अपने पाठकों को बताया कि चूंकि परमेश्वर ने उसकी आवाज़ को सुना था, इसलिए वह जीवन भर उसको ही पुकारा करेगा (116:2)। अन्य शब्दों में, अपनी ज़रूरत के समय में वह उस पर भरोसा रखेगा। वह अब जान गया था कि परमेश्वर ने प्रार्थनाओं का जवाब दिया है। जातियों के देवताओं के विपरीत इस्राएल का परमेश्वर जीवित और करुणामयी था। जातियों की मूरतों के कान तो थे, परन्तु वे सुन नहीं सकती थीं। इस्राएल के परमेश्वर ने केवल सुना ही नहीं बल्कि उसने प्रेम और दया में होकर जवाब भी दिया।

भजनकार ने अपने श्रोताओं को बताया कि मृत्यु की रस्सियां उसके चारों ओर थीं। उसने मृत्यु के दुख को सहा और दुख व संकट से भर गया था (116:3)। दुख और संकट के इस संसार में विश्वासी को भी रहना है। भजनकार को पता था कि दुख और पीड़ा सहना कैसा होता है। इस समय में उसने परमेश्वर को पुकारा, ''हे यहोवा, मेरे प्राण बचा ले'' (116:4)। परमेश्वर ने प्रेम और अनुग्रह में होकर उसे जवाब दिया।

भजन 116:5 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि प्रभु परमेश्वर अनुग्रह कारी, धर्मी और दया करनेवाला परमेश्वर है। ध्यान दें, उसने ऐसा दुख और संकट के समय में कहा था। इस संसार के दुख व पीड़ा का दोष भजनकार परमेश्वर पर नहीं लगाता। इसके विपरीत, वह परमेश्वर द्वारा उसे बचाए जाने व उसकी रक्षा किये जाने के ढंग की प्रशंसा करता है। उसने परमेश्वर को भोलों की रक्षा करनेवाला परमेश्वर कहा। उसने सभी सुननेवालों से कहा कि उसकी ज़रूरत के समय में परमेश्वर ने उसे बचाया था (116:6)।

इस संसार के दुखों व समस्याओं पर केन्द्रित होना बहुत सरल है। पाप के अपने प्रभाव होते हैं। पाप का सृजक परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर और उसके मार्गों के विरुद्ध विद्रोह कर हम पाप को इस संसार में लेकर आए। पाप इस पृथ्वी पर आग के समान फैल रहा है। हम मनुष्यों के जीवनों में और उनके द्वारा लिये जानेवाले निर्णयों में इसके प्रभाव को देखते हैं। हम अपने वातावरण और राजनीति में इसके प्रभाव को देखते हैं। प्रत्येक चीज़ पाप से प्रभावित है। हम इसे स्वयं पर लाए हैं। परमेश्वर अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें एक समाधान देता है। जब हम अपने चारों ओर के पाप से घिरे होते हैं तब परमेश्वर हमारी ओर अपने प्रेमी व दयावंत हाथ को बढ़ाता है। इस सब के समाप्त होने का दिन आ रहा है। पाप का अन्त होगा। उस समय तक, भजनकार परमेश्वर द्वारा दी गई शक्ति और विजय के लिए उसकी आराधना करता है।

भजन 116:7 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि वे विश्राम में आ सकते हैं। वे इस्राएल के परमेश्वर के कारण विश्राम में आ सकते हैं, जो जातियों के देवताओं के विपरीत, प्रेमी व विश्वासयोग्य परमेश्वर था, जो अपने प्रेम करनेवालों के लिए भला था।

परमेश्वर ने भजनकार के प्राण को मृत्यु से बचाया था। उसने उसकी आंखों को आंसू बहाने से और उसके पांव को ठोकर खाने से बचाया था (116:8)। भजनकार को दुख व पीड़ा का सामना करना पड़ा परन्तु परमेश्वर ने उसे इसमें भी संभाले रखा।

116:10-11 में भजनकार के विश्वास को देखा जा सकता है। यहां यह हमें बताता है कि चूंकि उसने विश्वास किया, इसी कारण वह अपने दुख को परमेश्वर तक पहुँचा सका। परमेश्वर पर विश्वास करने के कारण ही वह अपने दुख व पीड़ा में परमेश्वर के पास आया। उसे पता था कि परमेश्वर उसकी सहायता के लिए की जानेवाली पुकार को सुन लेगा। उसने परमेश्वर को बताया कि वह अनुभव कर रहा था: ''मैं तो बहुत ही दुखित हुआ'' (116:10)। भजन 116:11 में ध्यान दें कि वह यह भी जान गया था कि उसके इस दुख में केवल परमेश्वर पर ही भरोसा किया जा सकता है। उसने कहा, ''सब मनुष्य झूठे हैं।'' अन्य शब्दों में, मनुष्यों से कोई आशा

नहीं है। वे उसे वह आराम व सहायता नहीं दे सकते जिसकी उसे ज़रूरत है। वे सहायता करने के बड़े-बड़े दावे तो करते हैं परन्तु अन्ततः सारी सहायता परमेश्वर की ओर से ही आती है। केवल वह ज़रूरत को पूरा कर सकता है। एकमात्र वही प्राण को बचा सकता है।

प्रभु परमेश्वर की अद्‌भुत सहायता का अनुभव पाने पर भजनकार भजन 116:12 में स्वयं से प्रश्न करता है: ''यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं?'' वह यह जान गया था कि इस भलाई के बदले में कुछ देना ज़रूरी था। इस दया के बदले में वह परमेश्वर के प्रति कृतध्न नहीं था। उसकी दया के लिए धन्यवाद देने को वह कुछ करना चाहता था। इस भजन के अन्तिम पदों में भजनकार की वचनबद्धता पर ध्यान दें।

भजन 116:13 में वह अपने पाठकों को बताता है कि जो कुछ परमेश्वर ने उसके लिए किया है उसके कारण वह अपने उद्धार का कटोरा उठाकर प्रभु से प्रार्थना करेगा। प्रभु द्वारा अपने लोगों को दिये उद्धार की तुलना दाखमधु के कटोरे से की गई है। कटोरे को प्रभु के लिए धन्यवाद के प्रतीक के रूप में उठाया गया है, उसके उद्धार के फल पर आनन्द व उत्सव मनाते हुए।

कुछ समय पहले परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि हमारे उसे धन्यवाद देने का सबसे अच्छा तरीका उसके द्वारा दिये दान पर आनंद मनाना है। कुछ समय के लिए परिवार के सदस्य या किसी मित्र के लिए उपहार खरीदने पर विचार करें। कल्पना करें कि जो उपहार आपने दिया है उसका प्रयोग आपके मित्र ने पहले कभी नहीं किया। उपहार देते समय आपको कैसा लगेगा? अब आप उस उपहार को आनन्द से प्रयोग करते हुए देखेंगे तो आपका मन आनन्दित होगा। उद्धार के कटोरे को ऊपर उठाते हुए भजनकार दो चीज़ें कर रहा है। पहली, वह अपने उद्धार के सभी अद्‌भुत समाचारों को बता रहा है। वह कटोरे को ऊपर उठाता है ताकि सभी इसे देख सकें। दूसरी, वह कटोरे को लेकर इसमें की सामग्री को आनंद से पी जाता है। यह भी धन्यवाद देने का कार्य है।

परमेश्वर के प्रति अन्य प्रतिक्रिया को भजन 116:11, 18-19 में भी देखा जा सकता है। यहां भजनकार बताता है कि वह अपने लोगों के सामने अपनी मन्नतों को पूरा करेगा। भजन 116:19 में वह विशिष्ट रूप से बताता है कि वह ऐसा विशिष्ट रूप से यहोवा के भवन के आंगनों में करेगा। इससे हमें यह विश्वास होता है कि यहां बताई गई मन्नतें प्रशंसा भेंट और आज्ञाकारिता की मन्नतों से संबन्धित हैं। चूंकि परमेश्वर उसके प्रति विश्वासयोग्य रहा था, भजनकार इसके बदले में कम से कम उसके प्रति विश्वासयोग्य तो बना रह सकता था। जो कुछ उसने परमेश्वर से लिया था उसके लिए परमेश्वर को आदर देने, उसकी आज्ञा मानने और उसको भेंट चढ़ाने के द्वारा वह उसे

सम्मान देगा। वह कर्तव्य को पूरा करने से नहीं हटेगा।

भजनकार ने अपने उद्धार के कटोरे को उठाने और अपनी मन्नतों को पूरा करने की प्रतिज्ञा इसलिए की थी क्योंकि वह जान गया था कि यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है (116:15)। अर्थात् परमेश्वर अपनी संतानों की मृत्यु को गंभीरता से लेता है। वह उनमें से प्रत्येक की चिन्ता करता है। जहां तक भजनकार की बात है, परमेश्वर ने उसे असामाजिक मृत्यु से बचाया था। वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर का ऋणी था। इसके बदले में उसकी वचनबद्धता विश्वासयोग्यता में चलने और उन सभी मन्नतों को पूरी करने की थी जो उसने इस अद्‌भुत परमेश्वर से मानी थीं।

भजन 116:16 में भजनकार स्वयं को प्रभु के दास के रूप में पुन:समर्पित करता है। वह परमेश्वर की प्रेमी विश्वासयोग्यता के बदले में स्वयं को खुलकर सौंपता है। परमेश्वर ने उसे ज़ंजीरों से छुड़ाया था। अब उसकी सबसे बड़ी इच्छा प्रभु के दास के रूप में जीवन बिताने की थी जिसने उसकी ज़रूरत के समय में उसे बचाया था।

अन्तत: भजन 116:17 में, भजनकार ने प्रभु को धन्यवाद का बलिदान चढ़ाने की वचनबद्धता की। प्रभु को उसकी दया और अनुग्रह के लिए धन्यवाद देने में वह कोई लापरवाही नहीं करेगा। हाल ही के महीनों में मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि प्रभु के द्वारा बहुत सी प्रार्थनाओं के जवाबों का धन्यवाद देने में मैं कितनी बार असफल रहा हूं। भजनकार निश्चित होना चाहता था कि परमेश्वर को उन कार्यों के लिए धन्यवाद दिया गया है या नहीं जो उसने किये थे। उसका मन प्रभु के प्रति उसकी भलाई के लिए आभार से भरा था।

हम चाहे और कुछ न कर सकते हों परन्तु 113 और 116 के बीच के अन्तर को देख सकते हैं। जातियों के देवता निर्जीव मूरतें ही थीं। वे न तो बोल सकती थीं और न ही सोच सकती थीं। वे शक्तिहीन थीं और अपने बनानेवालों की सहायता या देखभाल करने में असमर्थ थीं। दूसरी ओर इस्राएल का प्रभु परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर था जिसने अपनी संतानों से अत्यधिक प्रेम किया और उनकी सहायता के लिए आया। परमेश्वर के व्यक्तिगत स्वभाव न सहायता के लिए आया। परमेश्वर के व्यक्तिगत स्वभाव ने भजनकार को छू लिया था। उसका मन ऐसे परमेश्वर के लिए प्रशंसा और धन्यवाद से भरा था जिसने उससे अत्यंत प्रेम किया था। इतनी अधिक भलाई के लिए उसने अपना जीवन उसकी प्रशंसा करने और उसे धन्यवाद देने को सौंप दिया था।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी स्वयं को जीवन में पाई उपलब्धियों के लिए बड़ी-बड़ी बातें करते पाया है। सारी महिमा परमेश्वर की क्यों है?

- आज हम किन मूरतों को बनाते हैं? उनकी तुलना इस्राएल के परमेश्वर से क्यों की जाती है?
- आपको इस सच्चाई से क्या शांति मिलती है कि प्रभु परमेश्वर की आपमें व्यक्तिगत रूप से रुचि है?
- इस संसार में बुराई और दुख का स्त्रोत क्या है? इस दुख पर ध्यान देना इतना सरल क्यों है न कि उस परमेश्वर पर जो हमें उस दुख से बचाता व हमारी रक्षा करता है?
- भजन 116 में परमेश्वर के प्रति भजनकार की प्रतिक्रिया उद्धार के कटोरे को उठाने, अपनी मन्नतों को पूरा करने, सेवक के रूप में परमेश्वर के प्रति समर्पण करने और धन्यवाद का बलिदान चढ़ाने की है। प्रभु के छुटकारे और उद्धार के प्रति आपकी जीवनपर्यन्त प्रक्रिया क्या रही है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर ने आपको कैसे छुड़ाया है? कुछ समय व्यक्तिगत छुटकारे या प्रेमी-दया के लिए उसे धन्यवाद देने में बिताएं।
- परमेश्वर से आपको उन समयों के लिए क्षमा करने को कहें जब आपने उस पर बुराई और पाप के लिए दोष लगाया था। उसकी देखभाल और सहायता को देखने में उससे आपकी सहायता करने को कहें।
- उसे धन्यवाद दें कि उसने पहले से ही पाप को जीत लिया है।
- परमेश्वर से आपको भजनकार के समान अधिक से अधिक मन देने को कहें कि आप उसके द्वारा आपके जीवन में व्यक्तिगत रूप से किये गए प्रेमी प्रदर्शन को प्रतिक्रिया दें।

98. प्रभु का उद्धार

पढ़ें भजन संहिता 117:1-118:29

भजन 117-118 प्रभु परमेश्वर के अद्‌भुत उद्धार पर चिन्तन है। यहां भजनकार याद करता है कि प्रभु ने उसे शत्रु के हाथों से कैसे बचाया था। उस महान उद्धार के भी चिन्ह हैं जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा लाया जाएगा।

भजन 117 के आरम्भ में भजनकार अपनी इच्छा के बारे में बताता है कि प्रभु परमेश्वर के प्रेम व सच्चाई के कारण उसकी स्तुति की जाए। ध्यान दें कि भजनकार की इच्छा यह थी कि जातियां प्रभु के नाम की स्तुति करें। प्रभु परमेश्वर संपूर्ण संसार की स्तुति पाने के योग्य है। जो उसे जानते भी नहीं थे उनसे भी उसकी स्तुति करने को कहा गया है। उन्होंने भी अपने जीवनों में परमेश्वर की आशीषों को अनुभव किया था। चमकते सूर्य और धड़कते हृदय ने यह प्रमाणित किया था कि प्रभु परमेश्वर ने जातियों को भी आशीषित किया था और उनकी प्रशंसा पाने के योग्य था।

परमेश्वर के प्रेम व सच्चाई को उनमें भी देखा गया जो उससे प्रेम नहीं करते थे। दिन प्रतिदिन उसकी सच्चाई स्पष्टता से दिख रही थी। भजनकार के लिए यह एक अद्‌भुत चीज़ थी।

भजन 117 में भजनकार ने जातियों को प्रभु की प्रशंसा करने को कहा, उसने भजन 118 में अपने लोगों को विशिष्ट रूप से ऐसा ही करने की चुनौती दी। यदि जातियां प्रभु की प्रशंसा कर सकती हैं तो इस्राएल को तो उसकी और भी प्रशंसा करनी है।

इस्राएल को यह कहने की चुनौती दी गई: ''उसकी करुणा सदा की है'' (118:2)। परमेश्वर के चुने हुए लोग होने पर भी इस्राएल परमेश्वर के स्तर से गिर गया था। उन्होंने प्रभु की परीक्षा ली और उसके विरुद्ध विद्रोह किया। वाचा संबन्ध के बावजूद उन्होंने ऐसा किया जो उनके और उनके परमेश्वर के बीच था। परमेश्वर ने उसे अपनी पत्नी के रूप में देखा। उसकी अविश्वासयोग्यता के बावजूद परमेश्वर का प्रेम उसके प्रति बना रहा। भजनकार अपने लोगों को याद दिलाता है कि परमेश्वर की करुणा सदा की है।

हारून के घराने को कहना था: ''उसकी करुणा सदा की है'' (118:3)। हारून

का घराना याजकों को प्रस्तुत करता था। उन्हें परमेश्वर के सभी लोगों ने उसके दास होने के लिए चुना था। परमेश्वर के चुने लोग होने के कारण उन्हें सभी को प्रभु की सच्चाई के मार्ग की ओर लेकर जाना था।

यहोवा के सभी डरवैयों को यह कहना था कि उसकी करुणा सदा की है (118:4)। यहां भजनकार ने परमेश्वर की पवित्रता और महिमा का भय माननेवालों को उसकी करुणा को जानने और उसे बताने की चुनौती दी।

भजन 118:5 में भजनकार अधिक व्यक्तिगत हो जाता है। वह यहां अपने जीवन के विशिष्ट समय के बारे में बताता है जब वह पीड़ा में था। हमें यह नहीं बताया गया है कि इस पीड़ा का कारण क्या था। तौभी, हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि पीड़ा के इस समय में भजनकार ने प्रभु परमेश्वर को पुकारा और उसने उसे मुक्त कर दिया। परमेश्वर ने पीड़ा की इस पुकार को सुना। भजनकार ने इसे हल्के रूप से नहीं लिया। हमारे जीवनों में ऐसे भी समय होते हैं जब हमें लगता है कि परमेश्वर हमारे पीड़ा व दुख के बारे में कुछ करने को वचनबद्ध है। जितना जल्द हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी सहायता को आए उसके ऐसा न करने पर हम कुड़कुड़ाते व शिकायत करते हैं। भजनकार इस सच्चाई से आनन्दित था कि परमेश्वर उसकी सहायता को आएगा। वह समझ गया था कि एक पापी के रूप में वह कौन था। वह समय गया था कि परमेश्वर स्वर्ग में एक अद्‌भुत परमेश्वर था। इस सच्चाई पर उसे आश्चर्य था कि इतना बड़ा और अद्‌भुत परमेश्वर स्त्री पुरुषों की ज़रूरत के समय में उनकी सहायता करने को आता है। उसका हृदय प्रशंसा व धन्यवाद से भरा था कि परमेश्वर ने उसके हृदय की छोटी सी पुकार को सुना और व्यक्तिगत रूप से उसकी सहायता के लिए आया था।

कुछ समय पहले एक सभा में प्रभु ने एक पास्टर का प्रयोग मेरे जीवन के कुछ गंभीर विषयों में मेरी सहायता करने में किया। हमारे मिलकर प्रार्थना करने पर प्रभु ने मुझमें एक शक्तिशाली कार्य करना आरम्भ कर दिया। कुछ समय प्रार्थना में एक साथ बिताने के बाद, हमने मिलकर अपने समय का समापन किया। इस पास्टर ने मुझे बाद में बताया कि जिस कमरे में वह प्रार्थना कर रहा था वहां से निकलकर वह तारों भरी रात में गया। आकाश की ओर ऊपर देखने पर उसे ऐसा लगा कि प्रभु उससे कह रहा था: ''बिल, क्या तुम्हें पता है कि आज क्या हुआ। मैं इन सभी तारों के ऊपर से नीचे वायन के जीवन को छूने के लिए आया।'' वह इस विचार से स्तब्ध रह गया। परमेश्वर आकाश से भी बड़ा था। तारे, उसकी सृष्टि थे तौभी वह नीचे मुझे व्यक्तिगत रूप से स्पर्श करने को आया था। इससे हम कितने आश्चर्य व विस्मय से भर जाते हैं। हमारे हृदय ऐसे परमेश्वर की प्रशंसा करने व धन्यवाद देने को उमण्डने लगते हैं जो हमारी

पीड़ा की पुकार को सुनकर हम तक पहुंचता है।

भजन 118:6 में भजनकार बताता है कि प्रभु उसके साथ था। न केवल परमेश्वर उसकी पीड़ा में उसे स्पर्श करने को नीचे आया परन्तु वह उसके साथ बना भी रहा। वह आकर और चंगाई देकर चला नहीं गया। आने पर वह ठहरा रहा। भजनकार को भरोसा था कि प्रभु परमेश्वर उसकी ओर था। इससे उसमें बड़ा आत्मविश्वास था। यदि सर्वशक्तिमान परमेश्वर उसकी ओर था तो मनुष्य उसका क्या कर सकता था (118:7)। उसे पता था कि विजय निश्चित है। वह अपने शत्रुओं पर विजय को देखेगा।

भजनकार का भरोसा मनुष्यों पर नहीं था। भजन 118:8 में उसने अपने पाठकों को बताया कि यहोवा की शरण लेना मनुष्यों पर भरोसा रखने से उत्तम है। भजनकार के दिनों में पृथ्वी पर शक्तिशाली पुरुष हुआ करते थे। इन में से कुछ बड़े अधिकारी हुए जिनके आधीन सेना होती थी। भजनकार ने इस झूठे भरोसे के भाव से धोखा नहीं खाया था। उसे इन अधिकारियों और इनकी सेना पर भरोसा नहीं था। उनकी तुलना इस्राएल के परमेश्वर से कैसे की जा सकती थी जो कि उसकी ओर था। यद्यपि वह इस्राएल के परमेश्वर को अपनी आंखों से देख नहीं पाता था तौभी उसने उस पर विश्वास करने के साथ साथ उस पर अपना भरोसा रखा।

चूंकि प्रभु परमेश्वर उसका सहायक था, इस कारण ऐसा कोई शत्रु नहीं था जो उस पर विजयी हो पाता। भजन 118:10 में ध्यान दें कि जबकि सभी जातियों ने उसे घेर लिया था, परन्तु भजनकार को कोई डर नहीं था। प्रभु के नाम से वह उन्हें काट डालेगा। यद्यपि उन्होंने उसे हर दिशा से घेर लिया था और मधुमक्खियों के समान उसके चारों ओर थे, वह डरा नहीं (118:12)। वह प्रभु के नाम में उन्हें काट डालेगा। चूंकि परमेश्वर उसकी ओर है, वह अपने सभी शत्रुओं को पीछे धकेल देगा, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों, उसके लिए ऐसा कोई शक्तिशाली नहीं है जिस पर वह विजयी न हो सके। भजनकार को परमेश्वर पर कितना अधिक भरोसा था! निःस्संदेह हमें भी अपने जीवनों और मनों में इसे बढ़ते हुए भरोसे को देखने की ज़रूरत है।

भजनकार ऐसे अद्‌भुत परमेश्वर की स्तुति करता व धन्यवाद देता है। परमेश्वर उसका बल और मगन का विषय था (118:14)। केवल उसकी सहायता से ही वह शत्रु पर विजयी हो सका था। परमेश्वर उसका उद्धार था। (118:15)। परमेश्वर ने उसमें और उसके द्वारा बहुत सी सामर्थी चीज़ें की थीं (118:15)। धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है प्रभु से प्रेम करनेवालों और उसकी सेवा करनेवालों ने उसकी अद्‌भुत विजय को अनुभव कर जयजयकार किया।

यही विजय आज हमारे लिए भी है। परमेश्वर बदला नहीं है। अभी भी पृथ्वी पर अपने लोगों तक स्वर्ग से पहुंचता है। विजय देने को वह अब भी उनकी ही ओर रहता है। उसका दहिना हाथ महान हुआ है। यह अभी भी अपने लोगों के लिए महान चीज़ें कर रहा है (118:16)।

चूंकि परमेश्वर उसके साथ और उसका हाथ सामर्थी चीज़ें कर रहा था, इस कारण भजनकार को बड़ा भरोसा था। यह सच है कि शत्रु उसके विरुद्ध आ रहा था परन्तु विजय उसकी ही होगी। वह शत्रु के हाथों नाश नहीं होगा परन्तु प्रभु की स्तुति करने को जीवित रहेगा (118:17)।

विश्वासी का जीवन संकट से मुक्त नहीं है। ऐसे भी समय होते हैं जब शत्रु बाढ़ की नाईं परास्त करने को आता है। भजनकार को विरोधियों का ज्ञान था। सेना में सैनिक होने के कारण उसने कई युद्धों का सामना किया था। परमेश्वर बचाने के लिए सामर्थी व शक्तिशाली था परन्तु उसे तब भी शत्रु का सामना करना था। ऐसे भी समय थे जब परमेश्वर ने शत्रु को बुरी तरह से उसका पीछा करने दिया लेकिन उन सभी समयों में उसे विजय दी गई थी (118:18)।

हम सभी अपने जीवन बिना किसी संकट या परेशानी के बिताना पसंद करते हैं। परमेश्वर हमें जीवन में परेशानियों से मुक्त नहीं करता। वह प्राय: हमें कठिनाइयों का सामना करने देता है। उसने युद्ध में प्रयोग किये जाने को हमारा चुनाव किया है। जब हम लड़ने के लिए उसकी शक्ति में होकर कदम बढ़ाते हैं तब विजय आती है। युद्ध के मैदान में हममें से बहुतों को शत्रु के तीरों से घायल होना होगा। कुछ को शत्रु के आमने-सामने होकर लड़ना होगा। युद्ध कठिन होगा परन्तु विजय निश्चित है। शत्रु जीत नहीं सकता।

परमेश्वर युद्ध का प्रयोग अपने दासों को शक्तिशाली व परिपक्व बनाने में करता है। युद्ध के द्वारा परमेश्वर हमें शुद्ध करता है। जो लोग युद्ध का सामना करते हुए विश्वासयोग्य बने रहते हैं वे कभी पहले के समान नहीं रहते। वे अपने दानों और विश्वास में प्रबल होंगे। वे बड़े कार्यों के लिए तैयार होंगे। उनका विश्वास और भरोसा बढ़ेगा। जीवन में वे जिस किसी भी चीज़ का सामना करें परमेश्वर उसका प्रयोग उनकी भलाई के लिए ही करेगा।

इस अद्‌भुत विचार के कारण भजनकार फिर से प्रभु परमेश्वर की स्तुति करता है। भजन 118:19 में वह कहता है, मेरे लिए धर्म के द्वार खोलो, मैं उनसे प्रवेश करके याह का धन्यवाद करूंगा। भजनकार को ऐसे स्थान में जाने से खुशी मिलती है जहां परमेश्वर के लोग उसकी आराधना के लिए इक्ट्ठा होते हैं। इस स्थान पर वह सार्वजनिक रूप से प्रभु की उसके प्रति भलाई और सच्चाई की घोषणा करेगा (भजन.

118:19-21)।

भजन 118:22-26 को प्रभु यीशु द्वारा स्वयं के बारे में बताने को उद्धृत किया गया है (देखें मत्ती 21:42)। इस तात्कालिक संदर्भ में भजनकार अपनी स्वयं की विजय के बारे में बोलता है। उसने अपनी और अपने लोगों की तुलना निकम्मे पत्थर से की। यहां एक भवन निर्माण कार्य की कल्पना को दिखाया गया है। राजमिस्त्री भवन निर्माण के लिए पत्थरों की जांच करते हुए किसी एक पत्थर को एक ओर कर उसे अस्वीकृत कर देता है कि वह उसके उद्देश्य को पूरा करने के योग्य नहीं है। तथापि, समय बीतने पर वही पत्थर कोने का सिरा हो जाता है। यह कोने का सिरा भवन का मुख्य स्थान बन जाता है। यह आदर के स्थान पर होता है क्योंकि यह निर्माण योजना की पूर्ति को दिखाता है।

भजनकार हमें यहां यह बता रहा है कि जिन्हें संसार ने अयोग्य ठहराते हुए एक ओर कर दिया है उन्हीं लोगों का प्रयोग परमेश्वर समय आने पर अपने राज्य के कार्य को पूरा करने में करेगा। प्रभु यीशु ने इसका प्रयोग अपने बारे में बताने को किया। वह लोगों की आशा के अनुसार नहीं आया था। बहुसंख्यक लोगों ने उसके विमुख होकर उसे अपने मसीहा के रूप में स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। वह एक ठुकराया हुआ पत्थर था परन्तु वह परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की परिपूर्णता को दिखाते हुए कोने का सिरा बन गया।

भजन 118:24-27 प्रभु के उद्धार के बारे में बताता है। भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि प्रभु ने अद्भुत विजय के दिन को ठहराया है। उन्होंने अपने शत्रु से उसके उद्धार का अनुभव किया था। इसी कारण उन्हें आनन्दित और मगन होना था। उन्हें उस उद्धार में चलते हुए, उस सबके लिए आनन्दित और मगन होना था जो परमेश्वर ने उनके लिए किया था। इस पर ध्यान दें कि यह उद्धार उनके लिए आनन्द को लाया और उन्हें इसमें आनन्दित बने रहना था। परमेश्वर हमें आनन्दित व मगन लोग बनाना चाहता है। वह अपने लोगों की उनके उद्धार के लिए आभारपूर्ण और आनंद पूर्ण प्रशंसा किये जाने से खुश होता है।

भजन 118:26 में ध्यान दें कि भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि यहोवा के नाम से आनेवाला धन्य है। वह यहां उनके बारे में बता रहा है जो प्रभु के हैं और उसके नाम में चलता है। ये लोग परमेश्वर की सेना में सैनिक हैं। जहां कहीं भी वे जाते हैं वे परमेश्वर को प्रस्तुत करते हैं। वे उसके बल और शक्ति में होकर चलते हैं। वे उसके कार्य को प्रस्तुत करते हैं। ये लोग जहां भी जाते हैं वहां परमेश्वर की विजय को अनुभव करते हैं। वे उसकी सामर्थ और अनुग्रह में चलते हैं।

यूहन्ना ने इस पद का प्रयोग प्रभु यीशु के बारे में बताने को किया जबकि वह गद्दी के बच्चे पर बैठकर यरूशलेम में आया था (यूहन्ना 12:13)। उसके साथ-साथ चलनेवाले लोग इस पद को तेज़ आवाज़ में बोल रहे थे। उन्होंने प्रभु यीशु के यरूशलेम में आने की घोषणा करने को इस पद का प्रयोग किया। उन्होंने उसे एकमात्र विजय दिलानेवाले के रूप में बताया। वह अपने पिता के द्वारा आशीषित हुआ था कि उसके लोगों को उनके पाप और बंधन से छुटकारा देनेवाला बने।

भजन 118:27 में भजनकार ने कहा, ''यहोवा ईश्वर है और उसने हम को प्रकाश दिया है।'' विशिष्ट रूप में, आज परमेश्वर को जाननेवाले अपने पर उसके प्रकाश को जानते हैं। वे अपने जीवनों पर परमेश्वर के विशेष अनुग्रह और विजय में चलने के आश्वासन को जानते हैं कि वे विशेष लोग हैं।

इस अद्‌भुत आशा के प्रकाश में भजनकार अपने लोगों को सींगों की बेदी पर जुड़ने को कहता है। यहां मुख्य चीज़ यह है कि उन्हें प्रभु की वेदी पर बड़े आनंद व उत्सव मनाने के साथ जाना है। परमेश्वर ने जो कुछ उनके लिए किया है उसके आभार के रूप में उन्हें अपने धन्यवाद को चढ़ाना है। उन्हें धन्यवादी लोग होना है कि उनके प्रभु परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया व उन्हें बचाया था। क्या आज हम धन्यवादी लोग हैं?

विचार करने के लिए:

- अविश्वासियों को किसके लिए प्रभु को धन्यवाद देना है? उन्हें प्रभु की स्तुति क्यों करनी है?
- परमेश्वर ने आप पर अपने अटल प्रेम को कैसे दिखाया है?
- परमेश्वर के हमारे बचाने को आने और परमेश्वर के हमारे साथ बने रहने के बीच क्या अन्तर है। आपके पास इसका क्या प्रमाण है कि परमेश्वर आपके साथ बना हुआ है?
- जिस परमेश्वर को हम देख नहीं सकते उसकी तुलना में जिन मनुष्यों को हम देख सकते हैं उन पर भरोसा करना इतना सरल क्यों होता है?
- परमेश्वर ने आपको कौन सी विजय दी है?
- संघर्षों के माध्यम से परमेश्वर हममें किसकी पूर्ति करता है? क्या विजय का अर्थ यह है कि परमेश्वर सभी संघर्षों को दूर कर देगा?
- ''निकम्मे पत्थर'' के बारे में भजनकार यहां हमें क्या सिखाता है? इससे आपको व्यक्तिगत रूप से क्या सांत्वना मिलती है?

प्रार्थना के लिए:

- जिन विश्वासियों के संपर्क में आप आते हैं परमेश्वर से उनकी आंखों को

खोलने के लिए कहें कि वे यह देखें परमेश्वर की स्तुति करना और उसे धन्यवाद देना कितना ज़रूरी है।

- आपके जीवन में विजय और अटल प्रेम के प्रमाण के लिए कुछ समय प्रभु को धन्यवाद देने में बिताएं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपको कभी नहीं छोड़ता बल्कि आपके साथ-साथ चलता है।
- प्रभु से आपको उसमें अधिक साहस व भरोसा रखने को कहें उससे आपको दिखाने को कहें कि रखने को कहें। उससे आपको दिखाने को कहें कि आप उसके लिए अधिक निर्भीकता से कैसे चल सकते हैं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह ''निकम्मे पत्थरों'' को प्रयोग करता है।

99. पकड़े रखें

पढ़ें भजन संहिता 119:1-40

भजन 119 सभी भजनों में सबसे बड़ा है। इसे 22 भागों में बांटा गया है, प्रत्येक विभाग इब्री शब्द के भिन्न अक्षर से आरम्भ होता है। यह भजनकार की रचनात्मकता को दिखाता है जिसने इसे इस तरह से रखने को समय दिया। यह परमेश्वर की व्यवस्था की आज्ञाकारिता में रहने की आशीष और खुशी पर केन्द्रित है।

संपूर्ण भजन की विषय-वस्तु शुरु के पदों में मिलती है। यहां भजनकार हमें बताता है कि यहोवा की व्यवस्था पर चलनेवाले लोग धन्य हैं। हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि धन्य से भजनकार का क्या अभिप्राय है। वह शारीरिक या भौतिक आशीषों तक ही आशीष को सीमित नहीं करता। प्रभु यीशु अपने पिता की इच्छा की सिद्ध आज्ञाकारिता में रहा, तौभी न तो उसका अपना घर था और न ही वह संसार की चीज़ों में धनी था। न ही आशीष का अर्थ यह है कि हम पर कभी शारीरिक दुख या पीड़ा नहीं आएगी। प्रेरित पौलुस ने अपना जीवन देह में कांटे के साथ बिताया (2कुरिन्थियों 12:7)। धन्य होने पर भी हमारे पास संसार की बहुत कम चीज़ें हो सकती हैं। धन्य होने पर भी हम अपने शरीर में दुख उठा सकते हैं। अर्थात् हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि संपन्नता और स्वास्थ्य सच में उस आशीष का एक हिस्सा है जो परमेश्वर हमें देता है परन्तु हमें इसके लिए भजनकार के अर्थ को सीमित नहीं करना है। ऐसा कहकर, 1 और 2 पदों में भजनकार स्पष्ट करता है कि प्रभु के वचन का पालन करने वाले धन्य हैं। प्रभु और उसके मार्गों की मन से खोज करनेवाले अपने जीवनों में उसकी आशीष को अनुभव करेंगे।

पद 3 हमें बताता है कि प्रभु के मार्गों पर चलनेवाले गलत काम नहीं करते। हमें यहां यह नहीं देखना कि पृथ्वी पर संपूर्णता को देखा जा सकता है। भजनकार हमें यहां यह बता रहा है कि परमेश्वर की व्यवस्था परमेश्वर का सिद्ध मानदण्ड है। हम जानते हैं कि प्रभु यीशु को छोड़ ऐसा कोई और मनुष्य नहीं है जिसने कभी कुछ गलत न किया हो। कोई भी व्यवस्था का पालन पूरी तरह से नहीं कर सकता। तथापि, परमेश्वर की सहभागिता में रहने को व्यवस्था एक सिद्ध मार्गदर्शक थी। इसका पूरी तरह से पालन करने के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ सिद्ध सामंजस्य में चलना होगा।

पद 4 से ध्यान दें कि परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को इसलिए दिया कि उसका

पूर्णतया पालन किया जाए। भजनकार व्यवस्था का पूरी तरह से पालन न करने की अपनी कमी को जान गया था (पद 5)। तौभी, वह दृढ़ व अटल बने रहना चाहता था। उसे पता था कि जब तक वह प्रभु के मार्गों पर चलते हुए उसकी आज्ञाओं को पूरा करेगा और उसके उद्देश्यों की आज्ञाकारिता में रहेगा उसे लज्जित होना न पड़ेगा। वह परमेश्वर के सामने बिना भय के खड़ा हो सकता है।

पद 7 में ध्यान दें कि भजनकार समझ गया था कि परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता एक जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया थी। उसने प्रभु से कहा कि उसके धर्मी नियमों को सीख जाने पर वह उसकी प्रशंसा करेगा। वह जान गया था कि परमेश्वर की व्यवस्था से सीखने को बहुत कुछ है। वह दिन प्रतिदिन उसकी आज्ञाकारिता में बढ़ना चाहता था। मैंने व्यक्तिगत रूप से पाया है कि परमेश्वर मुझे अपनी आज्ञाओं की गहरे स्तर की आज्ञाकारिता में लेकर जाता है। जितना अधिक हम बढ़ते हैं उतना ही अधिक हमसे आज्ञाकारिता में चलने की आशा की जाती है, उतना ही अधिक वह हम पर प्रगट करता है कि उसकी व्यवस्था कैसे जीवन की भिन्न परिस्थितियों में कार्य करती है। भजनकार परमेश्वर और उसके मार्गों में बढ़ने पर पूरी तरह से अधिक से अधिक आज्ञाकारिता को सीखना चाहता था। आज्ञाकारिता सदैव सरल नहीं होती। इसमें भजनकार को अपने जीवन के उस भाग को समर्पित करने के लिए भी कहा जा सकता है जिसे वह समर्पित करना नहीं चाहता था। वह अपने को आज्ञाकारिता में रहने को सौंप देता है। वह अपने को स्तुति और धन्यवाद करने के रवैये के प्रति भी समर्पित कर देता है जबकि परमेश्वर उसे गहरी आज्ञाकारिता में लेकर चलता है।

भजनकार आज्ञाकारिता में चलने का समर्पण कर पद 8 में प्रार्थना करता है कि प्रभु परमेश्वर आज्ञाकारिता में बढ़ने की इस प्रक्रिया में उसे न छोड़े। वह इसे सीखने पर परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में जानना चाहता है। मैं यहां एक छोटे बच्चे के चलना सीखने के उदाहरण को देखना चाहूंगा। पहले कदम कठिन होते हैं। ऐसे भी समय होते हैं जब बच्चा गिरने के कारण निराश हो जाता है। आज्ञाकारिता को सीखना भी ऐसा ही है। हम परमेश्वर के स्तर से गिरेंगे। हम कई बार निराश होंगे और इस पर आश्चर्य करेंगे कि क्या विजय पाना संभव है। इन समयों में हमारे लिए प्रभु की उपस्थिति को जानना कितना ज़रूरी है। केवल उसकी शक्ति और प्रोत्साहन ही हमें विजयी होने और विजय में बने रहने का अनुग्रह दे सकते हैं। भजनकार यहां परमेश्वर से विनती करता है कि जबकि वह पूर्ण आज्ञाकारिता में चलना सीखता है, तब उसके असफल हो जाने पर वह उसे छोड़ न दे।

पद 9 में भजनकार यह जान जाता है कि जवान अपनी चाल को केवल एक ही

तरीके से परमेश्वर के सामने शुद्ध रख सकता है, वह है उसके वचन के अनुसार सावधान रहने से। वह उस जवान के समान शुद्ध मन का होना चाहता है। परमेश्वर से उसकी प्रार्थना यह थी कि वह उसे उसकी आज्ञाओं से भटकने न दे। भजनकार एक जवान के रूप में अपनी प्रवृत्ति को समझ गया था। उसे पता था कि उसका मन परमेश्वर से भटकने की परीक्षा में पड़ेगा। उसने परमेश्वर से विनती की कि उसे भटकने से बचाए रखे। यदि वह भटकना भी चाहे तौभी प्रभु उसे ऐसा न करने देगा (पद 10)। उसका मन तो आज्ञाकारी रहना चाहता था परन्तु उसकी देह और मस्तिष्क कमज़ोर थे। वह परमेश्वर से उसके शरीर और मन की अभिलाषाओं पर अधिकार करने को कहता है।

अपनी कमज़ोरी को जानने पर भी वह भटकने से बचने के अपने भाग को करता रहा। पद 11 में ध्यान दें कि उसने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रख लिया था कि वह उसके विरुद्ध पाप न करे। ध्यान दें कि उसने वचन को केवल अपने मस्तिष्क में ही नहीं रखा था। भजनकार सच्चाई को याद करने से अधिक के बारे में बता रहा था। किसी चीज़ को अपने हृदय में रखना उसे अपनी व्यक्तिगत चाह बनाना है। सच्चाई को जानना और उस सच्चाई को अपने हृदय में रखने के बीच अन्तर है। भजनकार ने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रख लिया था। उसने अपने हृदय को परमेश्वर की शिक्षा के लिए खोला था। उसने परमेश्वर से उसके व्यवहार को बदलने को कहा।

भजनकार ने परमेश्वर की व्यवस्था को न केवल अपनी व्यक्तिगत इच्छा और हृदय की पुकार बनाया था, परन्तु पद 13 हमें बताता है कि वह दूसरों को भी उन नियमों को बताने के लिए समर्पित था। वह इसमें संतुष्ट नहीं था कि वह स्वयं व्यवस्था का पालन करे और दूसरों को उनकी इच्छानुसार जीने के लिए छोड़ दे। वह चाहता था कि सारा संसार प्रभु की व्यवस्था में रहे। वह चाहता था कि दूसरे भी प्रभु की आशीष में रहें। वह न केवल अपने जीवन से प्रभु को आदर व महिमा देना चाहता था, परन्तु अपने समाज के जीवन से भी।

भजनकार परमेश्वर की चितौनियों पर चलने को उसी तरह से आनंदित रहना चाहता था जितना कि कोई अपने धन की बहुतायत पर आनंदित होता है (पद 14)। अन्य शब्दों में, वह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की अपनी खोज को अपनी सबसे बड़ी अभिलाषा बनाना चाहता था। यह उसके लिए संसार की समस्त बहुतायत से कीमती होगा। इसके लिए उसे अनुशासन में रहना होगा। उसे जीवन के प्रलोभनों के लिए मरना होगा। उसे उस प्रत्येक चीज़ का बलिदान करना होगा जो उसके मन और मस्तिष्क को पूरी तरह से परमेश्वर और उसके मार्गों पर बने रहने से रोकती है।

पद 15 में भजनकार स्वयं को प्रभु के उपदेशों पर ध्यान करने और उसके मार्गों पर दृष्टि करने को सौंपता है। इसके लिए अध्ययन व चिन्तन करने की ज़रूरत होती है। चिन्तन करना पढ़ने से अधिक होता है। चिन्तन करना इस पर विचार करना होता है कि व्यवस्था की सच्चाई वास्तविक जीवन में कैसे कार्य करती है। भजनकार यह जानना चाहता था कि वह परमेश्वर की व्यवस्था की सच्चाई को अपने दैनिक जीवन में कैसे कार्यन्वित कर सकता है। ऐसा करने के लिए वह वचन पर नियमित रूप से मनन करने और इसकी व्यावहारिकता पर विचार करने को समर्पित हुआ।

भजनकार प्रभु के वचन को भूला नहीं (पद 16)। वह इसके विमुख नहीं हुआ और न ही उसने इसे एक ओर रख दिया। इसके विपरीत उसने इसे खोला और इस पर कार्य किया। उसने इसे अपने दैनिक जीवन का एक हिस्सा बनाया। उसने इसे पढ़ा, इस पर विचार किया, इस पर ध्यान किया और प्रतिदिन के जीवन में इसे लागू किया। परमेश्वर की व्यवस्था प्रतिदिन जीने के लिए थी। वह उसे करना भूला नहीं।

पद 17 में भजनकार ने परमेश्वर से उसका उपकार करने को कहा और कि वह उसके वचन की आज्ञाकारिता में रहेगा। पहली दृष्टि में हमें ऐसा लगा सकता है कि परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता इस पर निर्भर थी कि परमेश्वर ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया था। ऐसा नहीं है। भजनकार प्रत्येक चीज़ के लिए परमेश्वर को जानने की अपनी ज़रूरत को जान गया था, उसके अपने जीवन के लिए भी। वह यह जान गया था, उसके अपने जीवन में परमेश्वर की आशीषों के बिना वह उसे करने के योग्य नहीं हो पाएगा जिसकी आशा परमेश्वर उससे करता है। आज्ञाकारिता में बने रहने के लिए उसे परमेश्वर के बल की ज़रूरत थी। मुझे उस शक्ति, बुद्धि और विश्वासयोग्यता की आशीष दे जिसकी मुझे ज़रूरत है और मैं तेरी इच्छा की आज्ञाकारिता में रहूंगा, क्योंकि तेरी भलाई के बिना मैं निश्चय ही असफल हो जाऊंगा। इस विनती में भजनकार भी एकाग्रता दिखती है।

इस पर भी ध्यान दें कि वह परमेश्वर द्वारा उसकी आंखों को खोले जाने की ज़रूरत को भी समझ गया था ताकि उसकी व्यवस्था की अद्‌भुत चीज़ों को देख सके। वह इन शक्तिशाली सच्चाइयों को अपनी समझ से पाने का दिखावा नहीं करता। वह समझने के लिए परमेश्वर की बुद्धि को पाने की अपनी ज़रूरत से अवगत था। वह प्रार्थना करता था कि परमेश्वर उसकी आंखों को खोले ताकि वह उसकी व्यवस्था की अद्‌भुत बातों को देख सके (पद 18)। वह परमेश्वर से विनती करता है कि अपनी आज्ञाओं को मुझ से न छिपा मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं। वह परमेश्वर को बता रहा है कि उसका समर्पण पृथ्वी के मार्गों के लिए नहीं था। उसकी इच्छा स्वर्ग के सिद्धान्तों के अनुसार जीने की थी। इसी कारण उसने परमेश्वर से उसे स्वर्गीय सच्चाईयों को दिखाने की विनती की। इन सच्चाईयों को मनुष्यों द्वारा प्रगट नहीं किया

जा सकता जिनकी आंखें केवल सांसारिक मार्गों पर लगी रहती हैं। उसे परमेश्वर द्वारा उच्च मार्गों को दिखाए जाने की ज़रूरत थी। इस सच्चाई के निर्देश व मार्गदर्शन के लिए उसने परमेश्वर की ओर देखा। ध्यान दें कि पद 20 में उसने परमेश्वर को कैसे बताया कि कैसे उसका मन परमेश्वर के नियमों की अभिलाषा करते रहने के कारण जीवित रहता है।

पद 21 में भजनकार यह जान गया था कि प्रभु की आज्ञाओं से भटकनेवालों या जो अभिमान के कारण प्रभु के मार्गों को ग्रहण करना नहीं चाहते, उन पर शाप पड़ा है। वह उस शाप के अधीन नहीं होना चाहता था। उसकी इच्छा आज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर की आशीषों में बने रहने की थी।

भजनकार यह जान गया था कि प्रभु की व्यवस्था का पालन करना सरल नहीं होता। उसके समर्पण के कारण उसका अपमान व ठट्ठा किया जाएगा। संसार सदा परमेश्वर के मार्गों को स्वीकार नहीं करेगा। अपमान के बाद भी भजनकार परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में रहने को समर्पित था (पद 22)। बेशक उसका अपमान हो, तौभी वह व्यवस्था पर ध्यान करता रहेगा (पद 23)। परमेश्वर की व्यवस्था उसका सुखमूल और मंत्री होगी (पद 24)। वह अपने प्रभु परमेश्वर की विधियों पर चलने को अन्य सभी परामर्श को ठुकरा देगा। जबकि यह समर्पण उसे गलत समझे जाने, संकटों और संघर्षों की ओर लेकर जाएगा, भजनकार परमेश्वर से विनती करता है कि वह उसके जीवन को बनाए रखने के साथ-साथ उसे अपने वचन में की गई प्रतिज्ञा के अनुसार सुरक्षित रखे (पद 25)।

पद 26 में भजनकार अपने पाठकों को याद दिलाता है कि जब उसने अपनी चाल-चलन का प्रभु से वर्णन किया, प्रभु ने उसे जवाब दिया। प्रभु की आज्ञाकारिता में रहना सरल नहीं था परन्तु जब वह धूल में पड़ा प्रभु ने उसे जवाब दिया (पद 25-26)। परमेश्वर ने उसके दुख व पीड़ा को देखा।

हमारे संकट व संघर्ष के समयों में हमें आज्ञाकारिता में बने रहने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। हमारे ऊपर दबाव पड़ने पर हम प्रायः प्रभु की शिक्षा को छोड़ने या उससे फिर जाने की परीक्षा में पड़ते हैं। इन समयों में भजनकार की पुकार यह थी कि परमेश्वर उसे अपनी विधियों पर चलने के गंभीर मार्ग को दिखाए (पद 27-28)। इब्रानियों 5:8 हमें बताता है कि प्रभु यीशु ने दुख उठाकर आज्ञाकारिता को सीखा था। संकटों के माध्यम से परमेश्वर हमारी वचनबद्धता अथवा समर्पण को विस्तृत करता है। वह हमें आज्ञाकारिता के गंभीर स्तर पर लेकर आएगा। भजनकार इसे समझ गया था और उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके संकटों के माध्यम से उसे बड़ी आज्ञाकारिता को सिखाए पद 28 में उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके दुख

के समय में उसे वह शक्ति दे जिसकी प्रतिज्ञा उसने वचन में की है।

इस जीवन के दुख और संकटों में भजनकार ने स्वयं की छल के मार्गों से दूर रहने को सौंप दिया था। इसके विपरीत उसने सच्चाई पर चलने (पद 30) और अपने हृदय को परमेश्वर की व्यवस्था पर लगाने का चुनाव किया। उसने प्रभु की चितौनियों पर बने रहने की प्रतिज्ञा की (पद 31)। सच्चाई यह है कि उसका बने रहना उस संघर्ष का एक संकेत है जिसका सामना वह कर रहा था। शत्रु आज्ञाकारिता से दूर रखने का भरसक प्रयास करेगा। अदन की वाटिका में शैतान का लक्ष्य आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा के विमुख कराने का था। हमारे समय में भी हमें आज्ञाकारिता से दूर रखने को वह हर संभव प्रयास करता है। आज्ञाकारिता का संघर्ष लम्बा व कठोर होगा। हमें शत्रु के प्रयासों के विरुद्ध ''बने रहने'' को बुलाया गया है।

भजनकार को परमेश्वर द्वारा दी जानेवाली शक्ति पर भरोसा था। पद 32 में उसने अपने पाठकों को बताया कि चूंकि परमेश्वर ने उसे स्वतंत्र किया था। इस कारण वह परमेश्वर की आज्ञा के मार्ग में दौड़ेगा। यह विजय का चित्र है। उन सभी संकटों के बावजूद जिनको वह अनुभव कर रहा था, वह प्रभु के मार्गों में दौड़ने के योग्य हो सका था। वह स्वयं को प्रभु के मार्ग में अनिच्छा से नहीं खींच रहा था। प्रभु ने उसे अद्‌भुत स्वतंत्रता दी है। परमेश्वर द्वारा उसके बोझ को हल्का किये जाने पर वह दौड़ पाता है। परमेश्वर ने उसे शक्ति और बल दिया था इस कारण वह दौड़ पाता है। यह सच है कि शत्रु ने उसके विरोध में बहुत कुछ किया था परन्तु परमेश्वर की शक्ति शत्रु से अधिक थी।

पद 33 में भजनकार की पुकार यह है कि प्रभु उसे उसके मार्गों की शिक्षा देता रहे। उसकी वचनबद्धता उन मार्गों पर चलने की है चाहे जीवन कितना भी कठिन क्यों न हो। वह यह जान गया था कि परमेश्वर उसे अपने मार्गों की अधिक समझ देगा। उसकी वचनबद्धता उस समझ को बढ़ाने के लिए आज्ञाकारिता में रहने की थी।

35-37 पदों में भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे उसकी आज्ञाओं के पथ पर चलाए, उसके मन को लोभ से और उसकी आंखों को व्यर्थ की वस्तुओं से फेर दे। वह अपना ध्यान जीवन में परमेश्वर की समस्त चीज़ों पर केन्द्रित करना चाहता था न कि संसार की चीज़ों पर। वह यह नहीं चाहता था कि संसार की चीज़ें उसे प्रभु के प्रति उसके समर्पण और मार्गों से हटाए। उसे पता था कि यह उसके लिए एक परीक्षा होगी इसलिए उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसकी आंखें उसके मार्गों पर लगाए।

भजन 119 के इस भाग का अन्त पद 38-40 में भजनकार के हृदय की पुकार के साथ होता है। उसने यहां प्रार्थना की कि परमेश्वर उससे की गई अपनी प्रतिज्ञाओं

को पूरा करे, जिससे उसका (परमेश्वर का) भय माना जाए। वह यह नहीं बताता कि प्रतिज्ञा क्या थी। यह उसे शक्ति देने व सुरक्षित रखने की प्रतिज्ञा हो सकती थी। केवल परमेश्वर की आशीष और सुरक्षा के कारण ही भजनकार परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा कर पाया था और ऐसा करते हुए उसने परमेश्वर के प्रति भय व आदर को दिखाया था। केवल आज्ञाकारिता के कारण ही परमेश्वर की उपस्थिति पृथ्वी पर अधिक स्पष्टता से दिखती है।

पद 39 में उसने परमेश्वर से उस नामधराई को दूर करने के लिए कहा जिससे वह डरता था। पुनः हमें यह नहीं बताया गया कि वह अपमान क्या था परन्तु संदर्भ से हमें यह विश्वास होता है कि हो सकता है कि वह परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य की आज्ञाकारिता में रहने से चूक गया था या फिर यह शत्रु के द्वारा की जानेवाली नामधराई थी।

इस परिच्छेद की जांच करना और परमेश्वर की व्यवस्था के लिए भजनकार के जोश को न देखना कठिन है। उसकी सबसे बड़ी इच्छा परमेश्वर के उद्देश्य और योजना के अनुसार रहने की थी। किसी भी कीमत पर परमेश्वर के आज्ञाकारी बने रहना उसकी जीवनपर्यन्त बने रहनेवाली अभिलाषा थी। हमें इस पर आश्चर्य करने को छोड़ा गया है कि हम उसके उदाहरण को कैसे आंकते हैं।

विचार करने के लिए:

- इस भजन में भजनकार हमें बताता है कि आज्ञाकारिता में बने रहने की आशीष है। क्या इसका यह अर्थ है कि कोई संघर्ष नहीं होगा? स्पष्ट करें।
- आज्ञाकारिता को सीखने का क्या अर्थ है? क्या आपकी आज्ञाकारिता गहराई तक बढ़ी है?
- अपने हृदय में परमेश्वर के वचन को रखने का क्या अर्थ है? परमेश्वर के वचन को अपने मस्तिष्क में रखने और अपने हृदय में रखने के बीच क्या अन्तर है?
- परमेश्वर संघर्ष के द्वारा आज्ञाकारिता को कैसे सिखाता है?
- आज्ञाकारिता के लिए अपनी इच्छा की भजनकार की इच्छा के साथ तुलना करें। इसकी तुलना कैसे की जाती है?

प्रार्थना के लिए:

- आज्ञाकारिता के लिए परमेश्वर से आपको गंभीर उत्साह देने को कहें।
- परमेश्वर से शत्रु और उसकी परीक्षाओं पर विजयी होने के लिए आपको अनुग्रह देने को कहें। क्या आज आपके जीवन में कोई विशिष्ट परीक्षा है? परमेश्वर से आपको विजय देने को कहें।

- परमेश्वर से आपको आज्ञाकारिता को सिखाने के लिए कहें। उससे आपके जीवन के उन क्षेत्रों को प्रगट करने को कहें जहां वह आपसे गंभीर आज्ञाकारिता में रहने की आशा करता है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आज्ञाकारिता के पथ पर ''दौड़ने'' में हमारी सहायता करने के योग्य है। उसे उस विजय के लिए धन्यवाद दें जो हमारी उसमें हो सकती है।

100. दुख में शांति

पढ़ें भजन संहिता 119:41-80

भजन हमें याद दिला रहा है कि विश्वासी का प्रभु के साथ चलना सदा आसान नहीं होगा। ऐसे समय भी होंगे जब विश्वासी के विश्वास की परख होगी। भजनकार दुख से अनजान नहीं था। उसके शत्रु उसके चारों ओर खड़े थे। इन कठिनाईयों के द्वारा भजनकार को प्रभु की व्यवस्था में बड़ी शांति मिली थी।

पद 41 से आरम्भ करने पर, भजनकार प्रभु से अपनी करुणा और उद्धार को उसे भी देने को कहता है जिससे वह अपनी नामधराई करनेवालों को उत्तर दे सके। इससे हम यह समझ पाते हैं कि उसके शत्रु उसकी नामधराई कर रहे थे। हमें यह नहीं पता कि शत्रु क्या कह रहे थे परन्तु हम यह समझ सकते हैं कि उसके शत्रु इस बात से आश्चर्य कर रहे थे कि उसका परमेश्वर उसकी सहायता के लिए क्यों नहीं आ रहा था। ऐसा भी हो सकता है कि वे उसकी और प्रभु में उसके विश्वास की हंसी उड़ा रहे थे। ध्यान दें कि दोष लगानेवालों के लिए भजनकार के पास कोई जवाब नहीं था। परमेश्वर ने उसे दुख में पड़ने दिया था। तौभी, उसने आशा नहीं छोड़ी थी। उसने अपनी ज़रूरत के समय में परमेश्वर को पुकारा और उससे उसको इस पीड़ा से मुक्त करने को कहा जिसे वह अनुभव कर रहा था ताकि वह अपने दोष लगानेवालों को जवाब दे सके।

संकट के इस समय में भजनकार ने परमेश्वर से विनती की कि मुझे अपने सत्य वचन कहने से न रोक क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है। वचन का उसके मुंह में होना इस बात का संकेत है कि भजनकार इसे अपने भोजन के रूप में मानता था। भोजन के समान परमेश्वर के वचन ने उसे संभाला व सुरक्षित रखा था। इस वचन के बिना उसका नाश हो गया होता। परमेश्वर के वचन ने उसे जीवन देने के साथ-साथ जीने का कारण भी दिया था। जब शत्रु ने उसे चारों ओर से घेर लिया था तब उसने प्रभु परमेश्वर की प्रतिज्ञा में आशीष को पाया था। शत्रु का सामना करते समय यही सब उसका था। उसे इसका निश्चय नहीं था कि यदि प्रभु की प्रतिज्ञा नहीं होती तो वह क्या होता।

हमारे जीवनों में भी ऐसे समय होते हैं जब हम सभी के पास परमेश्वर का वचन और प्रतिज्ञाएं होती हैं। मानव तर्क और परिस्थितियां सभी हमारा ध्यान इस ओर लगाते

हैं कि हमारे लिए कोई आशा नहीं है। उन समयों में भजनकार परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से कसकर जुड़ा रहा।

पद 44 में भजनकार की व्यवस्था पर लगातार सदा सर्वदा चलने की वचनबद्धता पर ध्यान दें। इस संदर्भ में स्मरण रखें कि भजनकार अपने शत्रु की नामधराई का सामना कर रहा था। उसका मानवीय तर्क उसे इस सब में से निकालने को उपयुक्त नहीं था। चीज़ों का उसके लिए कोई अर्थ नहीं था। इसके बावजूद, उसने अपने को आज्ञाकारिता के लिए समर्पित कर दिया था। मानवीय तर्क उस विषय को अपने हाथों में लेने को कहते, परन्तु संदेह के इन समयों में उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और पूर्णतया उसके आदेशों में रहने को अपनी सबसे पहली वचनबद्धता बनाया था।

पद 45 में भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि वह स्वतंत्रता में चलेगा क्योंकि उसने परमेश्वर के उपदेशों की सुधि रखी थी। ऐसे भी हैं जिनका यह मानना है कि परमेश्वर की व्यवस्था बांधती व प्रतिबंध लगाती है। विषय की सच्चाई यह है कि प्रभु की आज्ञाकारिता से अलग होकर हम सही स्वतंत्रता को नहीं जान सकते। हमें परमेश्वर द्वारा उसकी महिमा के लिए बनाया गया है। जब हम उन उद्देश्यों से बाहर रहते हैं जिनके लिए हमें बनाया गया था, तब हम अपने जीवनों में सदा किसी चीज़ को खोया हुआ पाएंगे। सच्ची आज्ञाकारिता में ही हम सच्ची स्वतंत्रता को पा सकते हैं।

भजनकार के शत्रु उसकी नामधराई कर रहे थे। वे उसके तथा उसके परमेश्वर के मार्गों पर प्रश्न कर रहे थे। इसके कारण भजनकार ने अपने विश्वास को नहीं खोया था। उसने प्रभु और उसकी आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने का चुनाव किया था। उसने पूरे मन से यह विश्वास किया कि वे आज्ञाएं और प्रतिज्ञाएं सच्ची थीं। पद 46 में उसने अपने पाठकों को याद दिलाया कि वह दिन आ रहा था जब वह प्रभु की चितौनियों का वर्णन राजाओं के सामने करेगा। वह संकोच नहीं करेगा। वह उन आज्ञाओं के बारे में बोलेगा और देश के बड़े अधिकारियों के सामने उन्हें सत्य घोषित करेगा। उसे प्रभु की व्यवस्था में बड़ी खुशी मिलती थी। इन आज्ञाओं का पालन करने में वह कभी संकोच नहीं करेगा। उसने प्रभु की आज्ञाओं के लिए अपने हाथ को उठाया था (पद 45)। हाथ ने उठाना उस किसी चीज़ की प्रशंसा करना या उसे आदर देना है जिसके लिए हम अपने हाथों को उठाया था। भजनकार प्रभु की आज्ञाओं से सुखी था। उसने स्वयं को उनका पालने करने और उन पर विचार करने को सौंप दिया था।

इस संदर्भ में हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि हम परमेश्वर के वचन को परमेश्वर से अलग नहीं कर सकते हैं। भजनकार की वचन के लिए खुशी और प्रंशसा

को मूर्तिपूजा के रूप में भी लिया जा सकता था, यदि उसने परमेश्वर के वचन को परमेश्वर और उसके चरित्र के विस्तार में न देखा होता। भजनकार ने व्यवस्था की उपासना नहीं की परन्तु व्यवस्था देनेवाले परमेश्वर की। वह व्यवस्था से ही सुखी नहीं होता था। वह इसमें इसलिए सुखी होता था क्योंकि इस व्यवस्था के पीछे प्रभु परमेश्वर था जिसकी प्रतिज्ञाएं उसके लिए सुख व शांति का कारण थीं।

पद 49 में भजनकार परमेश्वर को उस वचन को याद करने के लिए कहता है जो उसने अपने दास को दिया है। भजनकार अपने हिस्से के संकटों को जानता था। परमेश्वर के वचन ने ही जीवन में उन संकटों के बीच से उसे आशा दी थी। यह वचन ही उसके दुख में उसे शांति देता था (पद 50)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं ने उसके जीवन को संभालने के साथ-साथ बने रहने में उसकी सहायता की थी।

अभिमानी पुरुष और स्त्रियों ने उसकी हंसी उड़ाई थी (पद 51)। वे इस कारण अभिमानी थे क्योंकि वे यह नहीं मानते थे कि उन्हें प्रभु की व्यवस्था की ज़रूरत है। वे इस कारण अभिमानी थे क्योंकि उन्हें ऐसा लगा कि वे परमेश्वर और उसके मार्गों का निरादर कर सकते हैं और जैसा चाहे वैसा कर सकते हैं। उन्होंने प्रभु परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहनेवालों की हंसी उड़ाई। हमें अधिक पहले की ओर देखने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हम अपने दिनों में भी इस तरह के लोगों को देखते हैं।

इन अभिमानी पुरुषों और स्त्रियों की ओर से पड़नेवाले इस दबाव के बावजूद भजनकार अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। उसने प्रभु के प्राचीन नियमों को स्मरण करने का चुनाव किया। उसे उनमें शांति मिली (पद 52)। प्रभु परमेश्वर और उसके मार्गों से फिरने के लिए ये अभिमानी उस पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं डाल पाएंगे।

भजनकार के हृदय को यह देखकर बहुत दुख हुआ कि उसके दिनों के अभिमानी और दुष्ट लोगों ने कैसे अपने मन प्रभु से फेर लिए थे। स्त्री पुरुषों ने प्रभु की स्पष्ट शिक्षा का निरादर करने का चुनाव किया। उन्होंने प्रभु की चितौनियों को त्याग दिया और वही किया जो उन्हें अच्छा लगा। भजनकार के साथ ऐसा नहीं था। प्रभु की विधियां वहां उसके गीत का विषय बनीं जहां कहीं भी वह गया (पद 54)। वह प्रभु की आज्ञाओं को भूला नहीं। रात होने पर जब सब चीज़ों पर अन्धकार हो जाता है और कोई भी यह नहीं देख सकता कि वह क्या कर रहा है, भजनकार प्रभु के प्रति सत्य बना रहा। वह प्रभु की व्यवस्था का पालन करता रहा चाहे लोगों ने उसे देखा या नहीं देखा।

पद 57 में भजनकार हमें बताता है कि परमेश्वर उसका भाग था। ''भाग'' शब्द

का अर्थ मूल भाषा में संपत्ति या संबद्ध सामग्री से हो सकता है। भजनकार यहां यह कह रहा है कि उसके और परमेश्वर के बीच घनिष्ठ संबन्ध था। परमेश्वर ने अपने को भजनकार को दे दिया था और भजनकार ने अपने को परमेश्वर को दे दिया था। इस संबन्ध के बारे में यहां कुछ चीज़ों पर ध्यान दें।

पहली, परमेश्वर के साथ इस संबन्ध के कारण भजनकार प्रभु और उसके वचन का पालन करने की प्रतिज्ञा करता है (पद 57)। वह उसके और उसके मार्गों के प्रति विश्वासयोग्य से बना रहेगा। वह किसी और ईश्वर या किसी और मार्ग की ओर नहीं जाएगा।

दूसरी, पद 50 में वह पूरे मन से प्रभु की खोज करने का चुनाव करता है। प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना एक चीज़ है और स्वयं प्रभु की खोज करना दूसरी बात है। भजनकार के विषय में दोनों ही सत्य थीं। भजनकार के शब्दों में उत्साह है। वह विधिवादी नहीं था। जीवन में उसका लक्ष्य केवल परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना ही नहीं था, इसमें परमेश्वर की खोज करना और आज्ञाकारी सहभागिता में चलने के द्वारा उसे आदर देना भी शामिल था।

भजनकार हमें यहां जो बता रहा है उसको समझना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। बहुतों का यह मानना है कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर वे परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन बिताते हैं। तथापि यह महत्वपूर्ण है कि हम आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता से रुके नहीं। एक ऐसे विवाह की कल्पना करें जिसमें दोनों सहभागी एक दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य हैं परन्तु उत्साह से एक दूसरे के पीछे पीछे नहीं रहते। प्रभु के प्रति आज्ञाकारिता महत्वपूर्ण है परन्तु हमें यहीं नहीं रुक जाना है। हमें ऐसे लोग भी बनना है जो सक्रिय रूप से परमेश्वर के पीछे चलते और पूरे मन से उसकी खोज में रहते हैं। परमेश्वर हमारी इच्छा और उमंग बन जाना चाहिए। यही भजनकार का मन था।

पद 59 से हम यह समझ पाते हैं कि परमेश्वर की खोज करने के एक भाग में अपने मार्गों की जांच करना और परमेश्वर के मार्गों पर चलने के लिए अन्य मार्गों से हटना शामिल है। ध्यान दें प्रभु को यहां दो चीज़ों की ज़रूरत है। प्रथम, वह हमें हमारे मार्गों पर सोच-विचार करने को कहता है। ऐसा हम अध्ययन और मनन करने के द्वारा करते हैं। हमें ऐसे लोग बनना है जो प्रभु और हमारे लिए उसकी इच्छा को समझने के लिए अपना सब कुछ सौंप देते हैं। दूसरा, हमें उसकी चितौनियों का मार्ग लेना है। हमें अपने मार्गों की तुलना उससे करनी है जिसकी मांग परमेश्वर वचन में हम से करता है। प्रभु की व्यवस्था का अध्ययन करना और उस पर विचार करना एक चीज़ है और आज्ञाकारिता में रहने के लिए अपने कदमों को फेरना दूसरी। हमारे लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन और मनन करना ज़रूरी है परन्तु हमें इसका पालन करने के प्रति

भी समर्पित रहना है। भजनकार हमें याद दिलाता है कि कष्ट होने पर भी वह प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में देरी नहीं करेगा। प्रभु के प्रति उसके समर्पण के कारण उसके शत्रु उसे रस्सियों से बांध सकते हैं परन्तु भजनकार कभी भी परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं भूलेगा (पद 61)। चाहे उसे कितना भी कष्ट हो तौभी वह इसका पालन करेगा।

प्रभु की व्यवस्था में भजनकार इतना सुखी था कि पद 62 में वह अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु के धर्ममय नियमों के कारण वह आधी रात को उसका धन्यवाद करने को उठेगा। यहां एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जो व्यवस्था को लेकर इतना उत्साहित है कि सो भी नहीं पाता। रात में ही उठकर वह पूरे मन से प्रभु को धन्यवाद देता और प्रभु व उसकी अद्‌भुत व्यवस्था की प्रशंसा करता है।

पद 63 में भी ध्यान दें कि यह सुख उन सभी के साथ संबन्धों पर भी दिखता था जो उसके आस-पास रहते थे। वह हमें बताता है कि जितने परमेश्वर का भय मानते और उसके मार्गों पर चलते हैं उनका वह मित्र है। उसने अपने और उस प्रत्येक व्यक्ति के बीच संबन्ध को पाया था जो उसके समान उत्साह से ही परमेश्वर से प्रेम करता था।

पद 64 में ध्यान दें कि भजनकार ने यह बताया कि पृथ्वी परमेश्वर की करुणा व प्रेम से भरी हुई थी। उसने परमेश्वर द्वारा सृष्टि की रचना किये जाने और स्त्री पुरुषों के साथ उसके व्यवहार में परमेश्वर के प्रमाण को देखा था। प्रभु के कार्यों में उसने देखा था कि परमेश्वर एक प्रेमी व करुणामयी परमेश्वर था। उसने उसे परमेश्वर और उसके मार्गों की जांच करने को अधिक प्रेरित किया था।

पद 65 में भजनकार ने परमेश्वर से उसकी की गई प्रतिज्ञा के अनुसार उसके साथ भला करने को कहा। पुनः स्मरण करें कि इस संदर्भ में भजनकार का शत्रु द्वारा अपमान व ठट्टा किया गया था। वह अपने को प्रभु व उसकी भलाई के लिए सौंपता है। उसे भरोसा है कि प्रभु जो करेगा वह अच्छा ही होगा।

66-67 पदों से ध्यान दें कि भजनकार यह मानता है कि परमेश्वर का न्याय उसकी भलाई के लिए था। प्रभु से वह उसे भली विवेक शक्ति और ज्ञान सिखाने को कहता है, वह यह स्वीकार करता है कि दुखी होने से पहले वह भटकता था, परन्तु अब वह उसके वचन का पालन करता है। भजनकार हमें यहां यह बता रहा है कि परमेश्वर ने दुखों का प्रयोग उसके जीवन में उसे अपने निकट लाने को किया।

पद 68 में भजनकार आगे कहता है कि परमेश्वर भला है और भला करता भी है। जो कुछ भी उसके साथ हुआ उसका प्रयोग परमेश्वर उसकी भलाई के लिए ही करेगा। उसने बुराई का दोष परमेश्वर पर नहीं लगाया। इसके विपरीत, वह परमेश्वर

को सारी भलाई का स्त्रोत मानता है। जिन दुखों का वह सामना कर रहा था वे भी परमेश्वर के हाथों में थे जो उनका प्रयोग महान चीज़ों के लिए करेगा।

उसके आस-पास के अभिमानी लोग भजनकार के मन को और परमेश्वर व उसके मार्गों के लिए उसकी अभिलाषा को समझ नहीं पाए थे। उन्होंने उसके विरोध में झूठी बात गढ़ी (पद 69)। उन्होंने उसकी व उसके मार्गों की हंसी उड़ाई। वह परमेश्वर और उसके मार्गों के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। ये अभिमानी लोग कठोर और भावनारहित थे (पद 70)। उनका परमेश्वर से कुछ लेना-देना नहीं था और परमेश्वर की खोज करनेवालों की उन्होंने बिना किसी दया के हंसी उड़ाई।

पद 71 में भजनकार कहता है कि मेरे लिए दुखी होना अच्छा रहा। इन अभिमानी और बुरे लोगों द्वारा उसके विरोध में की जानेवाली हानि का प्रयोग परमेश्वर ने उसकी भलाई में किया। ये सभी संकट केवल उसे परमेश्वर और उसके मार्गों के निकट लाने को थे। इसने केवल परमेश्वर के वचन और उसके मार्गों को उसके लिए और भी कीमती बना दिया था। सुख के समयों में हम संभवत: इन प्रतिज्ञाओं को इतना महत्व नहीं देते परन्तु संकट के समयों में ये हमारी आशा और सुख का रूप ले लेती हैं। भजनकार ने जिस दुख का सामना किया वह परमेश्वर के हाथों का एक उपकरण था कि उसे दिखाए कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं वास्तव में अद्‌भुत रूप से कितनी बहुमूल्य थीं। इसी कारण भजनकार ने अपने मार्ग में आनेवाले दुखों को स्वीकार किया।

भजनकार ने परमेश्वर से उसकी आज्ञाओं को सीखने के लिए समझ को देने को कहा (पद 73)। वह जान गया था कि परमेश्वर ने उसे बनाया है और वह यह जानता था कि उसे अपने मार्गों के बारे में कैसे सिखाए। उसे परमेश्वर और उसके मार्गों पर संदेह नहीं था। हां, बुरे लोगों के हाथों उसने दुख उठाया था परन्तु जो कुछ हो रहा था उससे परमेश्वर अवगत था और वह इसका प्रयोग भलाई के लिए करनेवाला था। भजनकार प्रभु की आज्ञाओं और उसके मार्गों के बारे में अधिक जानने को इस अपमान का सामना करने को तैयार था।

भजनकार यह चाहता था कि प्रभु का भय माननेवाले उसे देखकर आनन्दित हों (पद 74)। इस पद का संदर्भ भजनकार का दुख है। वह परमेश्वर से यही नहीं कह रहा है कि वह उसके जीवन के दुखों का प्रयोग केवल उसे उसकी प्रतिज्ञाओं से सुखी बनने की शिक्षा देने को ही न करे परन्तु इन दुखों का प्रयोग उन स्त्री पुरुषों के सामने एक गवाह बनने को करे जो उस पर भरोसा करते हैं। वह चाहता था कि हर कोई यह जाने कि जबकि परमेश्वर ने उसे दुख में जाने दिया था, उसने ऐसा सच्चाई के अनुसार किया था (पद 75)। परमेश्वर अपने दासों के विमुख नहीं होगा। जितना अधिक भजनकार परमेश्वर की सच्चाई में सुखी होता था उतना ही अधिक परमेश्वर को

उसके प्रति सच्चा बने रहने में खुशी मिलती थी। भजनकार की इच्छा संसार को यह दिखाने की थी कि दुख में भी परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा था। वह चाहता था कि उसका जीवन उस आशीष का एक उदाहरण बने जो परमेश्वर की सच्चाई लाई थी।

अपने दुख में भजनकार परमेश्वर से अपनी करुणा और दया में होकर उसे शान्ति देने को कहता है (पद 76-77)। दुख हमें परमेश्वर की निकटता में लाने का माध्यम होते हैं। दुखों ने भजनकार में शांति और सांत्वना की ज़रूरत को उत्पन्न किया। उस शांति और सांत्वना का स्त्रोत परमेश्वर था। उन बांहों में उसे बड़ी शांति और सांत्वना मिली थी।

भजन 119 के इस भाग के अन्त में, भजनकार अपने दुख में तीन चीज़ों की विनती करता है। पहली, पद 78 में उसने परमेश्वर से कहा कि उसे दुख देनेवाले अभिमानियों की आशा टूटे जिन्होंने बिना किसी कारण उसके साथ गलत किया था। विजयी होने के लिए वह न्याय चाहता था। वह चाहता था कि धर्मी बने रहें व दुष्ट नाश हों। धर्मी को दुख देनेवाले अपमानित हों उसके लिए जो उन्होंने उसके साथ किया, यही उसकी पुकार है।

भजनकार की दूसरी विनती पद 79 में यह है कि परमेश्वर का भव्य माननेवाले उसकी ओर फिरें (पद 79)। भजनकार यह जान गया था कि दूसरों को उसकी ज़रूरत है। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे ऐसे लोग दे जिनके हृदय उसके दुख की पीड़ा को समझ सकें और प्रोत्साहन व सहारा देने को आगे आएं।

पद 80 में भजनकार की तीसरी विनती यह है कि परमेश्वर उसे एक निर्दोष हृदय दे जिससे उसे लज्जित न होना पड़े। अन्य शब्दों में, वह परमेश्वर से उसके लिए ज़रूरी अनुग्रह को देने को कह रहा है जिससे वह व्यवस्था को तोड़े बिना इस दुख में बना रह सके। वह परमेश्वर से उसके विश्वासयोग्य बने रहने को शक्ति और अनुग्रह देने को कह रहा है।

भजनकार ने संघर्ष किया। उसने अपने दुख की शिकायत नहीं की। वास्तव में, उसने इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया क्योंकि इसके कारण वह परमेश्वर अत्यंत प्रशंसा कर पाया इसने उसे परमेश्वर के प्रेम और करुणा को दिखाया और उसे परमेश्वर की निकटता में लाया। उसके दुख में उसकी सबसे बड़ी इच्छा यही है कि हर तरह से परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बने रहकर परमेश्वर को आदर देने की शक्ति उसे मिले। काश कि यह हमारी भी इच्छा होने पाए।

विचार करने के लिए:

- क्या परमेश्वर सदैव हमें हमारे दुख का कारण दिखाता है?
- हमारे दुख में परमेश्वर के वचन की क्या भूमिका है?

- भजनकार हमें बताता है कि प्रभु की व्यवस्था की आज्ञाकारिता में रहकर उसने स्वतंत्रता का अनुभव किया। अनाज्ञाकारिता हमें बन्धन की ओर कैसे लेकर जाती है?
- परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना और परमेश्वर की खोज करने के बीच क्या अन्तर है?
- हम यहां अपने दुख में परमेश्वर की भलाई के बारे में क्या सीखते हैं? परमेश्वर हमारे जीवनों में दुख के द्वारा क्या पूरा करता है?

प्रार्थना के लिए:

- दुख में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी व दृढ़ बने रहने का अनुग्रह परमेश्वर से आपको देने को कहें।
- परमेश्वर ने आपके जीवन में जिन दुखों का प्रयोग आपके लिए भलाई को उत्पन्न करने में किया उसके लिए उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपको उन लोगों को दिखाने को कहें जो इस समय दुख उठा रहे हैं। उससे आपको दिखाने को कहें कि उनकी ज़रूरत के समय में आप कैसे उनकी सहायता कर सकते हैं।
- अपने दुख के समय में आपके साथ खड़े होनेवाले भाई बहनों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
- भजनकार के समान अपने संकटों के लिए क्या आप परमेश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं? कुछ समय उसके लिए प्रभु को धन्यवाद दें जो वह आपके संकटों में आपके लिए करेगा।

101 मैंने अपने हृदय को स्थिर किया है

पढ़ें भजन संहिता 119:81-120

पूरे भजन 119 में हमने देखा है कि भजनकार के अपने हिस्से के संकट थे। उन समयों में उसे प्रभु और उसके वचन में बड़ी शान्ति मिली। भजन के इस अगले भाग में हम भजनकार के किसी भी कीमत पर परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की वचनबद्धता को देखेंगे।

आरम्भ में, भजनकार हमें दुख और पीड़ा का स्मरण कराता है। पद 81 में उसने प्रभु को बताया कि उसका प्राण प्रभु के उद्धार के लिए बेचैन है। यहां वह जिस उद्धार को ढूंढ रहा है वह उसके दुख और पीड़ा का उद्धार है। हम देख चुके हैं कि अभिमानी लोगों ने उसे घेरा हुआ था और उसके संकट का कारण थे (देखें भजन 119:51, 69)। भजनकार ने पीड़ा व अपमान के शब्दों को सहा था। उसे इन संकटों में कोई सुख नहीं मिला था। वह स्वतंत्र होना चाहता था। वह परमेश्वर की संतान की स्वतंत्रता में रहना चाहता था। उद्धार के लिए उसने प्रभु की ओर देखा। उसने प्रभु के वचन और उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास किया।

परमेश्वर के वचन पर भरोसा करना सदैव सरल नहीं होता है। ऐसे समय भी होंगे जब हम अपने विश्वास में बढ़ेंगे। पद 82 में भजनकार इस विश्वास की वृद्धि को जानता था। उसने कहा ''मेरी आँखें तेरे वचन के पूरे होने की बाट जोहते-जोहते रह गई हैं।'' यहां एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जो किसी आशान्वित चीज़ के लिए क्षितिज की ओर देख रहा है। उसने अपनी आँखें इस प्रतिज्ञा के पूरे होने की ओर लगाई हैं। प्रतीक्षा करते करते उसकी आँखें थक गई हैं। तौभी उसने प्रतीक्षा करना नहीं छोड़ा। पद 82 में उसने पूछा, ''तू मुझे कब शान्ति देगा?'' यद्यपि वह उस शान्ति को नहीं जानता था, तौभी उसे पता था कि यह आएगी।

पद 83 में भजनकार अपनी तुलना धुएं की कुप्पी से करता है। एक कुप्पी ऊपर टंगे टंगे धुएं से गन्दी हो जाती है। भजनकार को भी ऐसा ही लग रहा था। वह जलते-जलते सूखता जा रहा था। उसकी देह पर संकटों और दुख के धुएं के निशान थे। कहीं भी देखने पर परमेश्वर नहीं दिखता था। अभिमानी उसकी इस दशा पर हंसी करते थे। निःस्संदेह, वह आश्चर्य में था कि परमेश्वर कहां था और उसे इतना दुख क्यों उठाना पड़ रहा था। इस सबके बावजूद भजनकार प्रभु की विधियों को भूला नहीं

था (पद 83)। वह उन विधियों के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा और उनमें उसको शक्ति व शांति मिलती है।

किसी भी कीमत पर आज्ञाकारी बने रहने की उसकी वचनबद्धता ने उसके दुख की पीड़ा को कम नहीं किया था। पद 84 में ध्यान दें कि भजनकार कैसे परमेश्वर से न्याय की मांग करता है। ''तेरे दास के कितने दिन रह गए हैं? तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा?'' ये सतानेवाले अभिमानी लोग थे (पद 85)। अर्थात् वे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति समर्पित नहीं होंगे। वे स्वयं के स्वामी थे और उन्होंने समस्त अधिकार को ठुकरा दिया था। इन अभिमानी लोगों ने भजनकार के लिए गड्डा खोदा था। उन्होंने उसके जीवन को कठिन बना दिया था। कुछ समय तक तो वे उससे शक्तिशाली दिख रहे थे। वे सुरक्षित और शांति में थे जबकि भजनकार उनके हाथों दुख उठा रहा था। उन्होंने बिना किसी कारण उसे सताया (पद 86)। उन्होंने उसे पृथ्वी पर से मिटा'' ही डाला था (पद 87)। तौभी, भजनकार की अटल वचनबद्धता पर ध्यान दें: ''मैंने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा'', पद 87 में उसने प्रभु से कहा। वह प्रभु की व्यवस्था से नहीं फिरा। उसे पता था कि वह परमेश्वर पर भरोसा रख सकता है। और इसी कारण उसने उसके और उसके वचन के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने का निर्णय लिया। वह प्रभु के उपदेशों को नहीं भूला (पद 87)। परमेश्वर और उसके वचन के प्रति यह वचनबद्धता करने के बाद उसने स्वयं को प्रभु पर उसकी सुरक्षा और शक्ति के लिए डाल दिया। ''अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला तब मैं तेरी दी हुई चितौनी को मानूंगा'' (पद 88)।

हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के प्रति ये सारी वचनबद्धताएं संकट और कठिनाई के समय में की गईं। जब सब कुछ अच्छा चल रहा होता है तब परमेश्वर के प्रति प्रतिज्ञा करना सरल होता है। जब सब कुछ गलत हो रहा हो और हमें ऐसा लग रहा हो कि शत्रु हमें 'पृथ्वी पर से मिटा' डालने को है, उस समय में ऐसी वचनबद्धता करना सरल नहीं होता (देखें पद 87)।

भजनकार को पता था कि परमेश्वर का वचन अनन्त है और आकाश में सदा तक स्थिर रहता है (पद 89)। अन्य शब्दों में, समय का परमेश्वर के वचन पर कोई प्रभाव नहीं होगा। कोई भी चीज़ उसके अटल वचन को नहीं बदल पाएगी। वह वचन आकाश में स्थिर रहता है। इसका न केवल पृथ्वी पर अधिकार था परन्तु आकाश पर भी। यह अडिग था। परमेश्वर ने जिसके होने के बारे में कहा वह ज़रूर होगा कोई भी चीज़ उसकी प्रतिज्ञाओं को न हिला पाएगी और न ही बदल पाएगी। भजनकार को पता था कि चाहे उसके आस-पास कुछ भी क्यों न हो, परमेश्वर अपने वचन के प्रति सच्चा बना रहेगा। उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रही है (पद 90)। इसे

सृष्टि और इतिहास में देखा गया था। उसका सूर्य प्रतिदिन धर्मियों और अधर्मियों पर प्रकाशमान होने को निकलता है। उसकी वर्षा सच्चाई के साथ पृथ्वी पर पड़ी कि उसमें फल उपजाए। जैसे परमेश्वर सृष्टि में सच्चा रहा था वैसे ही वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में भी सच्चा ठहरेगा। अपने संघर्ष में भजनकार का यही भरोसा था।

पद 92 में भजनकार स्पष्ट करता है कि यदि वह परमेश्वर की व्यवस्था से सुखी न होता तो वह दुख के समय नाश हो जाता। परमेश्वर की प्रतिज्ञा से उसे आगे बढ़ने की शक्ति का कारण मिला था। यदि परमेश्वर के वचन में दी गई आशा न होती तो उसे आशा न होती और वह शत्रुओं के हाथों नाश हो गया होता। मैं इस बारे में निश्चित हूं कि भजनकार यहां जो बता रहा है उस सब से हम परिचित हो सकते हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था ने भजनकार को जीवन दिया था (पद 93)। परमेश्वर की व्यवस्था में बने रहने के कारण वह उसे भूला नहीं था। कठिनाई और दुख में यह उसकी शक्ति और आशा रहा था। दुष्ट लोग उसे नाश करना चाहते थे परन्तु प्रभु की चितौनियों पर ध्यान करते रहने के कारण उसे उनमें प्रोत्साहन और शक्ति मिली थी (पद 95)। उन आज्ञाओं से उसे आशा मिलने के साथ-साथ बने रहने का भरोसा भी मिला था।

परमेश्वर की आज्ञाओं पर विचार करने पर भजनकार पद 96 में एक विशिष्ट घोषणा करता है। ''जितनी बातें पूरी जान पड़ती है; उन सब को तो मैंने अधूरी पाया है, परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार बड़ा है। ''अपने आस-पास भजनकार ने बहुत सी अद्‌भुत चीज़ों को देखा। वह ऊपर आकाश में या पृथ्वी पर अपने आस-पास परमेश्वर की बनाई अद्‌भुत चीज़ों को देख सका। संध्या का सूर्यास्त संपूर्ण दिखता है। मानव देह का काम करना बिना किसी प्रवाह के लगता है परन्तु इन सभी संपूर्णताओं की एक सीमा थी। उनका अन्त होगा। परमेश्वर की आज्ञाएं और विधियां इस संसार की संपूर्णता से आगे की थीं। पृथ्वी मिट जाएगी परन्तु परमेश्वर की विधियां बनी रहेंगी। समय और अनन्तता थोड़ा-थोड़ा करके पृथ्वी का नाश कर देंगे परन्तु इसका परमेश्वर के उद्देश्य पर कोई प्रभाव नहीं होगा। कोई भी चीज़ परमेश्वर के उद्देश्यों को बदल नहीं सकती है। समय सांसारिक शक्तियां या मानवजाति के पापी और विद्रोही हृदय भी उसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकते जिसे परमेश्वर ने ठहरा दिया है। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पृथ्वी और नर्क के परास्त किये जाने वाले प्रयासों के बावजूद भी बनी रहती हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था जिस तरह से सिद्ध थी वैसे पृथ्वी की कोई चीज़ सिद्ध नहीं हो सकती। यह अनन्त और स्थायी थी। यह विश्वासयोग्य और सच्ची थी।

भजनकार ने परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम किया और वह दिन भर उस पर ध्यान करता रहता था (पद 97)। व्यवस्था की आज्ञाओं ने उसे वह बुद्धि दी जो इस पृथ्वी की समस्त बुद्धि से सर्वोच्च थी। परमेश्वर की आज्ञाओं ने उसे वह बुद्धि दी जो उसके सारे शत्रुओं की बुद्धि से सर्वोच्च थी (पद 98)। इसके कारण वह अपने सांसारिक शिक्षकों से भी अधिक बुद्धि रखता था (पद 99-100)। परमेश्वर का वचन सारी बुद्धि और समझ का स्त्रोत था। यह समस्त सत्य का स्त्रोत था।

समस्त बुद्धि और समझ के स्त्रोत से अलग होना कितना मूर्खतापूर्ण होगा। पद 101 में भजनकार बताता है कि उसने अपने पांवों को हर एक बुरे कार्य से रोक कर रखा था ताकि वह परमेश्वर वचन के अनुसार चल सके। वह उसकी व्यवस्था से अलग नहीं हुआ था। परमेश्वर का वचन उसके लिए मीठा था (पद 103)। परमेश्वर की बुद्धि की तुलना में उसके लिए कुछ भी अद्‌भुत नहीं था। पद 103 में उसने इसकी तुलना अपने मुँह के मधु से की है।

परमेश्वर ने उसे अपने अनन्त और अटल प्रेम में जो दिखाया था उसने उसके जीवन को बदल दिया था। प्रभु की व्यवस्था के द्वारा उसने जिस समझ को पाया था उसने उसे जीवन में गलत मार्गों में चलने से बचाया था। उसने धार्मिकता के पथ की सराहना करना और बुराई के मार्ग से घृणा करना सीखा था (पद 104)। यह वचन उसके पांव के लिए दीपक और पथ के लिए उजियाला था। इसने उसे उस मार्ग को दिखाया जिस पर उसे जाना था। इसने उसके सामने मार्ग की बाधाओं व रुकावटों को दिखाया ताकि वह ठोकर खाए बिना चल सके। भजनकार ने एक शपथ खाई ओर पद 106 में उसकी पुष्टि भी की। वह प्रभु का और उसके मार्गों का अनुसरण करेगा।

जीवन भजनकार के लिए सदा दयावन्त नहीं रहेगा। उसने इस विचारधारा से धोखा नहीं खाया था कि यदि वह परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार चलेगा तो प्रत्येक चीज़ उसके लिए सही तरह से कार्य करेगी। पद 107 में यह स्पष्ट हो जाता है कि भजनकार ने बहुत दुख उठाया था। उसने परमेश्वर से अपने जीवन को बनाए रखने की विनती की थी। चीज़ों के कठिन होने पर भी, भजनकार ने प्रभु को प्रशंसा की स्वेच्छाबलि को चढ़ाया (पद 108)। वह शत्रु को परमेश्वर पर से उसके भरोसे को छीनने का अवसर नहीं देगा। चीज़ों के कठिन होने पर भी, भजनकार का परमेश्वर के उद्देश्य और योजना में पूरा भरोसा था। उसके आस-पास क्या हो रहा है यह समझ न पाने पर भी वह प्रभु की प्रशंसा करने का ही चुनाव करेगा।

पद 109 में उसने प्रभु को बताया कि बेशक उसका प्राण उसकी हथेली पर रहता था, परन्तु तब भी वह उसकी व्यवस्था को नहीं भूला था। अर्थात् यदि परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता का अर्थ सताव है तो वह स्वेच्छा से इस सताव को

सहेगा, परन्तु वह अनाज्ञाकारी नहीं होगा। प्रभु के प्रति अनाज्ञाकारी रहने की तुलना में वह स्वेच्छा से अपना जीवन न्यौछावर कर देगा।

दुष्टों ने उसके लिए फन्दा लगाया था (पद 110)। वे उसे फंसाना चाहते थे। इन दुष्टों ने परमेश्वर व उसके मार्गों की सहारना नहीं की थी। वे भजनकार को नाश करना चाहते थे क्योंकि वह प्रभु और उसके उद्देश्यों के लिए खड़ा था। प्रभु के प्रति उसकी वचनबद्धता ने उसके शत्रु बनाए थे।

प्रभु के प्रति भजनकार की वचनबद्धता ने उसके शत्रु बनाए थे, तौभी उसने उस मार्ग से भटकने से इंकार कर दिया था जो परमेश्वर ने उसके लिए ठहराया था। परमेश्वर ने उसे विश्वासयोग्य बने रहने के लिए शक्ति और अनुग्रह दिया था। प्रभु की चितौनियां उसकी मीरास थीं। वह न तो उन्हें कभी भूलेगा और न ही उनसे फिरेगा। वह प्रभु के मार्गों से सुखी था और ये उसके हृदय के हर्ष का कारण थे (पद 111)। उसकी जान का पीछा करनेवालों के समय में भी उसमें यह आनंद था। उसने अपने मन को इस बात पर लगाया था कि अन्त तक वह परमेश्वर की विधियों पर चलता रहेगा (पद 112)।

परमेश्वर ने भजनकार को 'दुचित्ते' लोगों से घृणा करना सिखाया था (पद 113)। दुचित्ते व्यक्ति वह होते हैं जो यह कहते हैं कि वे प्रभु की आज्ञा का पालन और सेवा तो करना चाहता है परन्तु समस्या आने पर वे तत्काल ही अपना मन बदल लेते हैं और संसार के मार्गों पर चलने लगते हैं। भजनकार को दुचित्ते लोगों के मार्गों से घृणा थी। उसका हृदय केवल परमेश्वर की व्यवस्था पर और उसकी ही व्यवस्था पर लगा था। वह बुराई से कोई संबन्ध नहीं रखना चाहता था। वह उनकी संगति में भी नहीं रहना चाहता था कि कहीं वे उसे परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं के मार्ग से फेर न दें (पद 115)। जिस संगति में हम रहते हैं वह हम पर एक या दूसरे तरीके से प्रभाव डाल सकती है। भजनकार की वचनबद्धता विश्वासयोग्य बने रहने और स्वयं को उस किसी भी चीज़ या व्यक्ति से दूर रखने की थी जो उसे भटका सकती थी। उसने अपने मन व संगति की चौकसी की।

पद 116-117 में इस पर ध्यान देना चाहिए कि भजनकार यह नहीं मानता कि वह अपनी शक्ति से परमेश्वर की व्यवस्था को मानने के योग्य है। उसने अपने को अनुशासित करने के साथ-साथ स्वयं को दुष्टों और उन चीज़ों से अलग रखा था जो उसे भटका सकती थीं। तथापि, पद 116 में वह परमेश्वर से उसे सम्भालने को कहता है कि वह जीवित रह सके। वह परमेश्वर से विनती करता है कि उसकी आशा को टूटने न दे। उसकी आशाएं क्या थीं? संदर्भ संकेत देता है कि उसकी आशा शत्रु से बचने और पूर्णतया प्रभु के लिए जीवन बिताने की थी। प्रभु से उसका यह विनती

करना कि उसकी आशा न टूटने पाए इस बात का संकेत है कि उसे पता था कि ऐसा होने के लिए वह पूरी तरह से परमेश्वर पर आश्रित था। पद 117 में उसने परमेश्वर से उसे थामे रखने को कहा ताकि वह बचा रहे। पुनः हम देखते हैं कि विजय में उसका भरोसा अपने अनुशासित रहने की योग्यता और मानवीय शक्ति से नहीं आया था। उसका भरोसा प्रभु परमेश्वर में था जिसकी प्रतिज्ञाओं और शक्ति के द्वारा ही विजय को पाया जा सकता था।

भजन के इस भाग के अन्त में, भजनकार बताता है कि परमेश्वर उन सबको तुच्छ जानता है जो उसकी विधियों के मार्ग से भटक जाते हैं (पद 118)। उनका धोखे में रहना व्यर्थ था। कुछ समय के लिए तो इन लोगों को अपने बहन भाइयों को धोखा देने पर लाभ हुआ था। उन्होंने उनकी चोरी की और उनसे छल किया और ऐसा करके इन्होंने स्वयं को धनी बना लिया था और इस जीवन में बड़े आराम से थे। तौभी ये चीज़ें सदा तक नहीं रहेंगी। परमेश्वर दुष्टों को धातु के मैल के समान दूर कर देगा (पद 119)। उन्हें कूड़े के समान फेंक दिया जाएगा। वे परमेश्वर के न्याय के हाथों दुख उठाएंगे। भजनकार कांप उठता है क्योंकि उसे पता था कि परमेश्वर का न्याय उन सभी पर आएगा जो परमेश्वर और उसके मार्गों से फिर जाते हैं (पद 120)। उसने अपना मन आज्ञाकारिता में रहने को स्थिर किया था, न केवल इसलिए क्योंकि परमेश्वर के मार्ग सत्य व बुद्धिमत्ता के थे परन्तु इसलिए भी क्योंकि परमेश्वर के मार्गों से फिरने पर उसे परमेश्वर के न्याय का सामना करना होगा। भजनकार के लिए परमेश्वर और उसके मार्गों से फिरना मूर्खतापूर्ण था। प्रभु के नियम सिद्ध थे। ये सारे आराम, बुद्धि और सत्य का स्त्रोत थे। प्रत्येक चीज़ को इस मापदण्ड से मापा गया था। कोई भी चीज़ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को बदल नहीं सकती और आज्ञाओं पर चलना ही सच्ची विजय का एकमात्र मार्ग था। जबकि परमेश्वर के मार्गों पर चलना सदैव सरल नहीं होता, ऐसा करने के द्वारा ही भजनकार उस अर्थ और उद्देश्य को जान सका जिसके लिए उसे बनाया गया था। इसी कारण उसने अपना मन आज्ञाकारिता में रहने को स्थिर किया था।

विचार करने के लिएः

- क्या परमेश्वर की व्यवस्था का अनुसरण करने का अर्थ समस्त दुख और पीड़ा से छुटकारा है? भजनकार हमें यहां क्या सिखाता है?
- परमेश्वर के वचन की ओर देखना और अपनी परिस्थितियों की ओर देखने के बीच क्या अन्तर है?
- भजनकार हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के अपरिवर्तनीय स्वभाव के बारे में क्या सिखाता है? आपको इससे क्या शांति मिलती है?

- भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर की व्यवस्था ने उसके जीवन को बचाया था? इससे उसका क्या अभिप्राय था? क्या परमेश्वर की व्यवस्था ने आपको कभी ऐसी आशा व शान्ति दी है कि आप यह कह सकें कि इसने आपको जीवन दिया है?
- भजनकार यहां हमें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की हमारी ज़रूरत के बारे में क्या दिखाता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु के वचन से आपको जो प्रोत्साहन मिलता है उसके लिए उसे धन्यवाद दें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसकी व्यवस्था समस्त सत्य और जीवन के उद्देश्यों का स्त्रोत है। उससे आपको उन समयों के लिए क्षमा करने को कहें जब आपने उसके वचन से मुंह फेर लिया था और अपनी समझ के अनुसार चले थे।
- परमेश्वर से आपको शक्ति देने को कहें कि आप उसके वचन की आज्ञाकारिता में रहने के लिए अपने हृदय को स्थिर कर सकें।

102. मुझे तेरे उद्धार की प्रतीक्षा है

पढ़ें भजन संहिता 119:121-176

भजन 119 के अंतिम भाग में भजनकार फिर से प्रभु परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में रहने और छुटकारे और उद्धार के लिए उसकी प्रतीक्षा करने की वचनबद्धता की पुनः पुष्टि करता है।

भजन 119 में दो प्रमुख विषय-वस्तुएं दिखती हैं। इनमें से पहली विश्वासी का दुख है। दूसरी विषय-वस्तु परमेश्वर के वचन और उसकी प्रतिज्ञाओं की विश्वसनीयता है। प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार चलने पर भी भजनकार अपने जीवन में दुखों का अनुभव कर रहा था। पद 121 में ध्यान दें कि उसने प्रभु को याद दिलाया कि उसने न्याय और धर्म के काम किये थे। उसने परमेश्वर के वचन की शिक्षा के अनुसार जीवन बिताया था। तौभी, इसी पद में ध्यान दें, भजनकार प्रभु से उसे उसके सताने वालों के हाथ में न छोड़ने की विनती करता है। इससे स्पष्ट होता है कि उसे सताया जा रहा था।

जिस पापी संसार में हम रहते हैं वह सदैव प्रभु के मार्गों को समझ नहीं पाएगा। लोग प्रभु की चीज़ों के विरुद्ध प्रतिक्रिया देंगे क्योंकि परमेश्वर के मार्ग उनके मार्गों से भिन्न हैं। इसका अर्थ यह है कि धर्मी और न्यायी जीवन बिताने की चाह करनेवालों को प्रायः अविश्वासियों के सताव व ठट्टा का सामना करना होगा। प्रभु परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में रहना एक संकट मुक्त जीवन का आश्वासन नहीं देता। वास्तव में, सामान्यता इसके विपरीत ही होता है (2तीमुथियुस 3:12)। अपने विश्वास के कारण सताए जाने पर भजनकार ने स्वयं को प्रभु पर डाल दिया था। पद 122 में उसने प्रभु से उसकी भलाई को निश्चित करने को कहा। उसने प्रभु से विनती की कि अभिमानी उसे सताने न पाएं।

पद 123 से हम समझते हैं कि प्रभु का समय हमारे समय के समान नहीं है। भजनकार का भरोसा प्रभु परमेश्वर पर था, परन्तु ऐसा लगता था कि परमेश्वर देरी कर रहा था। भजनकार ने प्रभु से कहा कि उसकी आंखें उससे उद्धार पाने और उसकी प्रतिज्ञाओं के पूरा होने की प्रतीक्षा करते करते थक गई हैं। परन्तु इस देरी के कारण भजनकार ने परमेश्वर पर से अपनी आशा को नहीं छोड़ा था। पद 124 में ध्यान दें कि कैसे वह परमेश्वर के प्रेम में बना रहता है और उससे अपनी विधियों को सिखाने के

लिए कहता है। परमेश्वर का दास होने की अपनी वचनबद्धता की वह पुनः पुष्टि करता है। उसे पता था कि परमेश्वर के लिए उसकी समझ सीमित थी। प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा करते हुए उसने प्रभु की चितौनियों की गहरी समझ की मांग की।

यदि ऐसा हमारे साथ होता, तो इस जीवन में चीज़ें पूर्णतया भिन्न होतीं। हम प्रायः अधीर हो जाते हैं। हम चीज़ों के तत्काल ही होने की इच्छा करते हैं। स्पष्टतया, भजनकार यह नहीं समझ पाता कि परमेश्वर उसे दुष्ट स्त्री और पुरुषों के हाथों दुख उठाने क्यों दे रहा था। न ही उसे यह समझ में आता था कि परमेश्वर उसके उद्धार और छुटकारे में देरी क्यों कर रहा था। तौभी, वह यह समझ पाया था कि परमेश्वर के मार्ग उसके मार्गों से सर्वोच्च थे। प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा करते हुए वह समझ व पहचान की मांग करता है जिससे वह प्रभु और उसके मार्गों से भटकने न पाए।

मानवीय रूप से कहा जाए तो अपने चारों ओर देखने पर भजनकार को ऐसा लगा कि यह परमेश्वर के कार्य करने का समय है। पद 126 में वह ऐसा कहता है: ''वह समय आया है, कि यहोवा काम करे।'' पद 126 में ध्यान दें कि इस कथन का आधार यह सच्चाई था कि प्रभु की व्यवस्था को तोड़ा गया था। स्त्री और पुरुष प्रभु के नियमों का निरादर करते हुए जीवन बिता रहे थे। वे ऐसे जीवन बिता रहे थे मानो कोई परमेश्वर है ही नहीं जिसे एक दिन उन्हें जवाब देना होगा। इसके परिणाम स्वरूप परमेश्वर से प्रेम न करनेवालों ने धर्मियों और परमेश्वर के दासों को सताया व दुख दिया।

अपनी मानवीय समझ से भजनकार को ऐसा लगा कि यह परमेश्वर के हस्तक्षेप व कार्य करने का समय है। उसे ऐसा इसलिए लगा क्योंकि जब उसने परमेश्वर की व्यवस्था का निरादर होते देखा तो इससे उसका हृदय टूट गया था। उसने प्रभु की आज्ञाओं को सोने से भी अधिक प्रिय जाना (पद 127)। उसने विश्वास किया कि प्रभु के सारे उपदेश सही थे (पद 128)। भजनकार को इससे दुख पहुंचा कि परमेश्वर की इस सिद्ध व्यवस्था की उपेक्षा अभिमानी और विद्रोही लोगों द्वारा की गई थी।

परमेश्वर की चितौनियां भजनकार के लिए अद्‌भुत थीं। उनके प्रति वह आज्ञाकारी होकर रहा। जब परमेश्वर ने अपने वचन को उस पर खोला तब भजनकार के मन में एक नया प्रकाश और समझ आई (पद 130)। वह परमेश्वर की व्यवस्था के लिए वैसे ही हांफता था जैसे एक धावक बड़ी दौड़ में भाग लेने के बाद हांफता है। यह व्यवस्था उसका जीवन थी। वह इस पर आश्रित था। वह स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था के बिना रहते हुए नहीं देख सकता था।

पद 132 में भजनकार ने प्रभु परमेश्वर से उसकी ओर फिरकर उसे पर अनुग्रह

करने की विनती की। इस समय में परमेश्वर दूर लग रहा था। उससे उद्धार का अनुभव नहीं हो रहा था। भजनकार आशा छोड़नेवाला नहीं था। उसे पता था कि परमेश्वर सदा उनकी ओर लौटता है जो उसके नाम से प्रीति रखते हैं (पद 132)। यद्यपि वह उस उद्धार और छुटकारे को अनुभव नहीं कर सकता जिसे वह उस क्षण देखना चाहता था, तौभी उसने परमेश्वर की प्रतीक्षा की, यह जानते हुए कि वह उसकी सहायता के लिए आएगा। इस छुटकारे की प्रतीक्षा करते समय भजनकार ने 133-135 पदों में परमेश्वर से बहुत से निवेदन किये हैं।

सबसे पहले, भजनकार ने प्रभु से उसके पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर करने को कहा जिससे पाप की उस पर प्रभुता न होने पाए (पद 133)। प्रतीक्षा करते समय हम धीरज छोड़कर विषय को अपने हाथों में ले लेते हैं। शत्रु जानता है कि यदि वह प्रलोभन में डालता रहे तो हमारे उस प्रलोभन में पड़ने के अवसर अधिक होंगे। अधिक समय तक सताव के बोझ को उठाने पर हम अत्यधिक थक जाते हैं। भजनकार यह जान गया था कि प्रभु का समय उसके समय के समान नहीं था। शत्रु के सताव में रहने पर वह चाहता था कि उसके द्वारा लिये जानेवाले प्रत्येक कदम पर परमेश्वर का नियंत्रण हो। उसे सही मार्ग पर बने रहने की अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं था। सताव के इस समय में उसे परमेश्वर की एक मार्गदर्शक के रूप में ज़रूरत थी।

पद 134 में भजनकार की दूसरी विनती यह है कि परमेश्वर उसे मनुष्यों के सताव से छुड़ाए ताकि वह उसके उपदेशों को माने। भजनकार को सताव की शक्ति का ज्ञान था कि वह शक्तिशाली विश्वासी को थका देती है। यह सच है कि परमेश्वर संकटों और संघर्षों के द्वारा विश्वासी को मज़बूत व तैयार कर सकता है परन्तु भजनकार को पता था कि प्रभु के पास आने से पहले और परीक्षाओं में गिरने पर वह इससे भी अधिक का सामना कर सकता है। इसी कारण वह परमेश्वर से उसे इस सताव से छुड़ाने को कहता है ताकि उसे भटकना न पड़े।

इस संदर्भ में अन्तिम विनती यह है कि प्रभु अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए और उसे अपनी विधियों को सिखाए। प्रभु के उद्धार और छुटकारे की प्रतीक्षा करने पर वह सुनिश्चित कर लेना चाहता था कि प्रभु की आशीष उसके जीवन पर थी। वह निश्चित हो जाना चाहता था कि परमेश्वर उसके साथ इस सताव का सामना करेगा और सारे मार्ग में उसका मार्गदर्शन भी करेगा। वह प्रभु की आशीष और उसकी उपस्थिति के ज्ञान के बारे में जानना चाहता था। परमेश्वर की उपस्थिति इस समय में उसका प्रोत्साहन और बल होगी।

पद 136 में वह अपने समाज की दशा पर लौटता है। वह प्रभु को बताता है कि

उसकी आँखों से ''जल की धारा'' बहती रहती है, क्योंकि लोग उसकी व्यवस्था को नहीं मानते। इससे उसे दुख पहुंचा था क्योंकि ये नियम धर्मी थे। ये मानवजाति के लिए एक प्रेमी व पवित्र परमेश्वर के हृदय को दिखाते थे। परमेश्वर का वचन पूर्णतया सिद्ध, पवित्र और भरोसा किये जाने के योग्य था (पद 138)।

भजनकार ने पद 139 में अपने पाठकों को बताया कि वह प्रभु के लिए अपनी धुन के कारण भस्म हो रहा था। उसने अपने आस-पास स्त्री पुरुषों को परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करते देखा था। इससे उसे दुख पहुंचा था। वह परमेश्वर के वचन से प्रेम करता था और उसे पता था कि इस पर विश्वास किया जा सकता है (पद 140)। यद्यपि परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करने के कारण लोगों ने उससे घृणा की, तौभी वह इससे फिरा नहीं (पद 141-143)। वह परमेश्वर और उसके मार्गों के प्रति अपनी वचनबद्धता में दृढ़ खड़ा रहा, उस समय में भी जबकि ऐसा करना कठिन था।

पद 145 में ध्यान दें कि भजनकार ने परमेश्वर से उसे जवाब देने और उसकी ज़रूरत के समय में उसे बचाने की विनती की (पद 146)। इस पर भी ध्यान दें कि वह पौ फटने से पहले ही प्रभु को सहायता करने के लिए दोहाई देता था (पद 147)। वह रात में उठ जाता था और प्रभु की प्रतिज्ञाओं पर ध्यान करता था (पद 148)। जिस उद्धार और छुटकारे की वह प्रतीक्षा कर रहा था उसके दिखाई न देने पर भी उसने परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखा। उसने परमेश्वर से उसकी दोहाई को सुनने को कहा: ''मुझे जीवित कर'' (पद 149)।

उसके चारों ओर लोग बुरी युक्तियां बना रहे थे। ये लोग परमेश्वर की व्यवस्था की अधीनता में नहीं थे। उन्होंने जैसा चाहा वैसा किया। शत्रु के निकट होने पर भी परमेश्वर निकट था (पद 151)। न केवल परमेश्वर निकट था परन्तु उसकी आज्ञाएं व चितौनियां सत्य थीं और परास्त नहीं होंगी। इसने भजनकार को आशा व जीवित रहने का कारण दिया। हां, शत्रु निकट थे परन्तु सबसे बड़ी शक्ति उसे बल दे रही थी। परमेश्वर ने उसे छोड़ा नहीं था। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी और उद्धार व छुटकारे की वह प्रतिज्ञा ज़रूर पूरी होगी।

पद 153 में उसने प्रभु से उसे छुड़ाने और उसके दुख पर दृष्टि करने की विनती की। उसने परमेश्वर से उसका मुकद्दमा लड़ने और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसे छुड़ाने को कहा (पद 154)। दुष्टों के लिए प्रभु के उद्धार की आशा नहीं है परन्तु परमेश्वर से प्रेम रखनेवालों के लिए उस उद्धार का पूरा होना निश्चित है क्योंकि उन्होंने स्वयं को प्रभु पर डाल दिया है (पद 155-156)। इस सत्य के प्रकाश में, भजनकार यह स्पष्ट करता है कि वह अपने प्रभु परमेश्वर की चितौनियों से नहीं हटेगा और अपने को दुष्टों से अलग रखेगा (पद 157-158)।

भजनकार को प्रभु व उसकी आज्ञाओं के प्रति उसके प्रेम के कारण सताया व पीड़ित किया गया था (पद 161)। परमेश्वर और उसके मार्गों के प्रति उसकी वचनबद्धता ने उसे अधर्मियों से अलग किया था। वह परमेश्वर और उसके मार्गों में वैसे ही हर्षित था जैसे एक सैनिक बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है (पद 162)। उसे प्रभु की व्यवस्था से प्रेम था। प्रभु के अद्‌भुत नियमों के कारण वह दिन में सात बार उसकी स्तुति करता था (पद 164)। सात बार संदर्भ को अक्षरश: लिया जा सकता है और इसका अर्थ सारा दिन प्रभु की स्तुति करने से लिया जा सकता है।

परमेश्वर की व्यवस्था में सुखी रहने के कारण भजनकार को बड़ी शान्ति थी। हमें परमेश्वर के लिए जीवन बिताने को बनाया गया था और उसमें रहने के द्वारा ही हम उसके द्वारा दी जानेवाली शांति को अनुभव कर सकते हैं। भजनकार ने इस सच्चाई के बावजूद कि उसके शत्रु उसे सता रहे थे, इस शांति को अनुभव किया। उसे पता था कि जब तक वह प्रभु की आज्ञाकारिता में चलता रहेगा वह ठोकर नहीं खाएगा।

भजनकार ने प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा की। जबकि उसके लिए ये कठिन समय थे, तौभी उसने आशा नहीं खोई। वह प्रभु को ढूंढने और उसके वचन के अनुसार चलने में दृढ़ बना रहा। 169-170 पदों में, उसने परमेश्वर को उसकी आवाज़ सुनने को पुकारा। प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा करने पर भजनकार प्रभु की स्तुति करते रहने के साथ-साथ उसके वचन के गीत गाता रहेगा (पद 171-172)। वह प्रभु के उद्धार की अभिलाषा करता था (पद 174)। उसने प्रभु से उसे जीवित रखने की विनती की जिससे वह उसकी स्तुति कर सके। उसने अपनी तुलना एक भेड़ से की जो अपने चरवाहे से दूर होकर भटक गई थी (पद 176)। उसने स्वयं को हारा हुआ और अकेला अनुभव किया। उसने अपने चारों ओर शत्रु की उपस्थिति को अनुभव किया जो उसे निगल जाना चाहते थे। उसे पता था कि एक भेड़ होने के कारण वह अपने शत्रु पर विजयी नहीं हो सकता है परन्तु उसका एक ऐसा चरवाहा था जो उसकी रक्षा कर सकता था। यही चरवाहा उसकी समस्त आशा और भरोसा था।

विचार करने के लिए:

- क्या प्रभु परमेश्वर और उसके मार्गों के पीछे चलना आपके लिए सताव को लाया है? स्पष्ट करें।
- हम यहां परमेश्वर के समय के बारे में क्या सीखते हैं? उन दिनों में हमारी क्या परीक्षा होती है जब ऐसा लगता है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने में देरी कर रहा है?
- आप क्या कभी किसी ऐसे समय में पड़े हैं जब परमेश्वर आपको दूर लगा हो?

जीवन के इन समयों में भजनकार की वचनबद्धता क्या है?

- आपके समाज में परमेश्वर के वचन की उपेक्षा और अपमान किये जाने पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए?

प्रार्थना के लिए:

- जब चीज़ें तेज़ी से वैसे न हो रही हों जैसा आप चाहते हैं तब परमेश्वर से आपको उस पर विश्वास करने के लिए विश्वास देने को कहें।
- प्रभु से आपको उसके और उसके वचन के लिए बड़ा प्रेम देने को कहें। उससे आपको उन समयों के लिए क्षमा करने के कहें जब आपके समाज की दशा पर आपका मन दुखी नहीं हुआ था।
- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जो अपने विश्वास की परख का सामना कर रहा है? इस समय में परमेश्वर से उसके कदमों का मार्गदर्शन करने को कहें जिससे वह उसके वचन के सत्य से भटकने न पाए।

103. परमेश्वर की दृष्टि आप पर है

पढ़ें भजन संहिता 120:1-121:8

यह जानना कितना अद्‌भुत है कि इस पृथ्वी पर हम जिन संघर्षों का सामना करते हैं उनके बावजूद प्रभु परमेश्वर हमारी ओर होकर हम पर अपनी दृष्टि बनाए रखता है। संकट और कठिनाई के इन समयों में हम उसे पुकार सकते हैं और वह हमारे निवेदन को सुनेगा। भजन 120 में भजनकार अपनी निराशा को व्यक्त करता है उस संघर्ष के कारण जिसका वह अपने चारों ओर के लोगों से सामना कर रहा था।

भजन 120:1 में भजनकार ने अपनी निराशा में परमेश्वर को पुकारा। ध्यान दें कि उसकी निराशा का कारण विशिष्ट रूप से झूठ बोलनेवाला मुँह और छली जीभ था (120:2)। जो चीज़ें कहीं गई थीं वे सत्य नहीं थीं। ऐसा भी हो सकता है कि उसके बारे में इन चीज़ों को कहा गया था परन्तु हम इन पर सीमा नहीं लगा सकते हैं। भजनकार की निराशा सामान्य निराशा थी। लोग ईमानदारी और नैतिकता के सिद्धान्तों के अधीन नहीं थे। भजनकार ने झूठ बोलने वाले मुँह और छली जीभ वालों के लिए एक बहुत मज़बूत चेतावनी दी थी। उसने उन्हें चिताया था कि परमेश्वर उन्हें नोकीले तीरों और झाऊ के अंगारों से नाश करेगा (120:3-4)। झाऊ एक मरुभूमि की झाड़ी है जिसमें से गर्म लपेटें निकलती हैं। भजनकार यह बता रहा था कि झूठ बोलनेवाले मुंह और छली मन को परमेश्वर गंभीर रूप से दण्ड देगा, उसके लिए जो उन्होंने अपनी जीभों से किया था। हम बेईमानी और छल के लिए परमेश्वर की घृणा को देख सकते हैं। इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि हमारे मुंह पर आनेवाली हर चीज़ शुद्ध व पवित्र होनी चाहिए।

न केवल भजनकार उन लोगों के बीच रहा था जो बेईमान थे परन्तु वह उन लोगों के बीच भी रहा था जो शांति से घृणा करते थे। वे हमेशा एक दूसरे से लड़ते रहते थे।

भजन 120:5 में भजनकार ने इस सच्चाई पर विलाप किया कि वह मेशेक और केदार में रहा। मेशेक और केदार दोनों ही विदेशी राज्य थे जो एशिया माइनर में स्थित थे। ये लोग इस्राएल के प्रभु को नहीं जानते थे, न ही वे उसकी व्यवस्था पर चले थे। भजनकार इन विदेशी स्थानों में अक्षरशः नहीं रहा था। परन्तु वह यहां यह बता रहा है कि वह ऐसे लोगों में रह रहा था जो प्रभु से प्रेम नहीं करते थे। जिन इस्राएलियों के

साथ वह रहता था वे अन्यजातियों के समान रहते थे, जिनके पास परमेश्वर के सिद्धान्त नहीं थे। वे बेईमान और छली थे। उन्हें एक दूसरे से लड़ना अच्छा लगता था। उन्हें शांति से नफरत थी।

शांतिप्रिय व्यक्ति होने के कारण जो कि परमेश्वर से प्रेम करता था, भजनकार को अपने ही देश में विदेशी होने की अनुभूति हुई। जो लोग प्रभु से प्रेम नहीं करते थे और न ही उसका आदर करते थे उसे उनके बीच आराम नहीं था। इसी कारण उसने निराशा में परमेश्वर को पुकारा था।

हमें भजनकार के अपने देश की दशा पर दुखी होने के ढंग की सराहना करनी है। उसका हृदय टूट गया था क्योंकि उसके लोग परमेश्वर को आदर देनेवाले ढंग से जीवन नहीं बिता रहे थे। उसने अकेलेपन और सताए जाने का अनुभव किया। ये झूठे और छली उसके विरुद्ध बोले थे और उसकी निराशा का कारण थे।

भजन 121 में ध्यान दें कि अपनी निराशा में भजनकार ने अपनी आँखें पर्वतों की ओर उठाईं। यरूशलेम नगर और वह मन्दिर जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था, पर्वतों पर थे। पर्वतों की ओर देखते हुए भजनकार उस स्थान की ओर देख रहा है जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को दिखाया था। भजनकार को पता था कि उसकी सहायता पृथ्वी और आकाश के बनानेवाले प्रभु की ओर से आई थी। इससे बड़ी और कोई सहायता नहीं हो सकती। जब आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता उसकी सहायता करने को आया है, तो उसके शत्रु उसके साथ क्या कर सकते हैं?

भजनकार के अपने परमेश्वर पर बड़े भरोसे पर ध्यान दें। भजन 121:3 में वह स्पष्ट कर देता है कि प्रभु परमेश्वर की सहायता के कारण उसके पांव नहीं टलने के। एक व्यक्ति के सकरे पर्वत पर चढ़ने की कल्पना करें जहां पर हर कदम खतरे से भरा हो। इस स्थिति में गिर जाने पर कोई बच नहीं पाएगा। भजनकार को पता था कि प्रभु परमेश्वर उसका सहायक है जो कि उसके प्रत्येक कदम का मागदर्शन कर रहा है, इस कारण वह ठोकर नहीं खाएगा या नहीं गिरेगा। परमेश्वर उसे सुरक्षित रखेगा।

मानव सहायता के विपरीत इस्राएल का परमेश्वर कभी न सोएगा (121:4)। उसे न तो आराम की ज़रूरत है और न ही वह कभी थकता है। इसका अर्थ है कि वह सारा समय अपनी संतान की देखभाल करने में दे सकता है।

भजन 121:5-6 में भजनकार परमेश्वर को छाया बताता है। छाया होने के कारण प्रभु ने दिन के जलते सूर्य और रात को चांदनी से सुरक्षा दी थी। सूर्य और चन्द्रमा उन चीज़ों को प्रस्तुत करते हैं जो एक विश्वासी को हानि पहुंचा सकती हैं। अपने चारों ओर परमेश्वर की सुरक्षा देनेवाली उपस्थिति होने के कारण भजनकार को कोई भय नहीं था। झूठ बोलनेवालों और छली जीभवालों से घिरे होने पर भी वह सर्वशक्तिमान

की छाया के नीचे सुरक्षित रह सकता है।

भजन 121:7-8 में भजनकार की प्रतिज्ञा है कि परमेश्वर अपने सभी खोजनेवालों की रक्षा करेगा। वह हानि से उनकी रक्षा कर उनके जीवनों पर दृष्टि रखेगा। जहां कहीं भी वे जाएंगे परमेश्वर उनके साथ-साथ रहेगा।

भजनकार को अपने ही देश में विदेशी होने की अनुभूति हुई। उसने पाया कि उसकी उसके अपने लोगों के साथ कोई पहचान नहीं हो सकती जो परमेश्वर और उसके मार्गों से दूर होते जा रहे थे। इन लोगों के झूठ बोलनेवाले मुंह और छली जीभें थीं। इन्होंने परमेश्वर और उसके मार्गों को ठुकरा दिया था। इन्होंने शांति को ठुकरा दिया था और आपस में तथा उन लोगों के विरुद्ध लड़े जो सत्य के लिए खड़े थे। इसका अर्थ यह है कि भजनकार सताव और अपमान की वस्तु बन गया था। एक अधर्मी देश में एक धर्मी व्यक्ति होने के कारण वह प्रसिद्ध नहीं था।

इसी कारण भजनकार के लिए यह जानना एक अद्‌भुत आशीष थी कि आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता उसकी ओर था उसके कदमों पर दृष्टि करते हुए और उसे ठोकर खाने से बचाते हुए। परमेश्वर की शक्ति और सुरक्षा के कारण ही भजनकार सुरक्षा और मार्गदर्शन के आश्वासन के साथ सत्य के मार्ग पर चलता रहा।

विचार करने के लिए:

- ईमानदारी के महत्व के बारे में हम क्या सीखते हैं? भजनकार हमें झूठ बोलनेवाले और छली जीभ के लोगों के साथ परमेश्वर के द्वारा क्या किये जाने के बारे में बताता है?
- क्या आपको अपने लोगों के बीच कभी अनजान होने की अनुभूति हुई है? भजनकार भिन्न बनना चाहता था। उसने अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने का चुनाव किया था। आपमें क्या यह शक्ति है? स्पष्ट करें।
- जो प्रभु के लिए दृढ; कदम लेना चाहते हैं उन्हें भजन 121 क्या सांत्वना देता है? प्रभु के लिए दृढ़ बने रहनेवालों के लिए यह भजन क्या प्रतिज्ञा करता है?

प्रार्थना के लिए:

- विरोध के बीच भी दृढ़ता से खड़े रहने का अनुग्रह परमेश्वर से आपको देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमारे संकट के समय में हमें सुरक्षित रखने की प्रतिज्ञा करता है।
- परमेश्वर से आपके समाज की बेईमानी और अनैतिकता को मिटा देने को कहें।
- परमेश्वर से आपको आपके आस-पास वालों के लिए धार्मिकता का प्रकाश बनने में सहायता करने को कहें।

104. शांति की पुकार

पढ़ें भजन संहिता 122:1-125:5

इस बारे में जानना बहुत अद्‌भुत है कि हमें प्रभु परमेश्वर ने घेरा हुआ है और अपनी सुरक्षा में रखा है। कई बार हमारा शत्रु हमें परास्त करता हुआ प्रतीत होता है। उन समयों में यह जानना बड़ी बात होती है कि वह परमेश्वर जो हमारे सभी शत्रुओं से बड़ा है, हमें सुरक्षित रखेगा। भजन 122-125 में हम प्रभु की उपस्थिति की इस झलक को देख पाते हैं जिसने उसके लोगों को घेरा हुआ है।

भजन 122 के आरम्भ में भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि उसे लोगों द्वारा प्रभु के भवन में जाने का निमंत्रण दिये जाने पर खुशी हुई। प्रभु के भवन से यहां अभिप्राय उस मन्दिर से है जहां परमेश्वर ने पुराने नियम के समय में अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था। हमें केवल भवन में ही आनंद को नहीं देखना है, यद्यपि यह एक अद्‌भुत भवन था। भवन और यरूशलेम नगर की महिमा परमेश्वर की वास करनेवाली उपस्थिति के कारण थी। भजनकार और उसके मित्रों की खुशी लकड़ी और ईंटों में नहीं परन्तु परमेश्वर की प्रगट उपस्थिति में थी।

भजन 122:2 में भजनकार ने कहा: ''हे यरूशलेम, तेरे फाटकों के भीतर हम खड़े हो गए हैं।'' इस पद में विस्मय का एक भाव है। भजनकार इस सच्चाई से अभिभूत लगता है कि वह और उसके मित्र उस स्थान पर खड़े हैं जहां परमेश्वर की उपस्थिति प्रगट हुई थी। उन्हें पता था कि वे इस आदर को पाने के योग्य नहीं थे परन्तु वे फिर भी इस स्थान पर खड़े हैं।

भजनकार कुछ समय के लिए यरूशलेम नगर पर विचार करता है। उसने अपने पाठकों को बताया कि यरूशलेम को ऐसे नगर के समान बनाया गया था जिसके घर एक दूसरे से मिले थे (122:3)। अन्य शब्दों में, नगर को सही तरह से बनाया गया था। नगर के चारों ओर की एक बड़ी दीवार की कल्पना करे। इस दीवार की जांच करने पर आपको इसमें छेद दिखाई देंगे। संभवत: इसे ठीक तरह से नहीं बनाया गया था क्योंकि ईंटें ठीक से नहीं लगी थीं कि एक शक्तिशाली दीवार को बना सकें। यह यरूशलेम नगर का चित्र नहीं है। इसे सही तरह से बनाया गया था। प्रत्येक भाग दूसरे के साथ सही से लगा था। यह एक दूसरे से जुड़कर शक्तिशाली इकाई को बनाता था जिसे शत्रु किसी भी तरह से बेध नहीं सकता था। इसी कारण इसके नागरिक सुरक्षा में

रह सके। यहोवा के गोत्र प्रभु के नाम की स्तुति करने को यरूशलेम में जाते हैं (122:4)। यह एक ऐसा नगर था जहां प्रभु वास करता था। यह एक ऐसा स्थान था जहां प्रभु को आदर दिया गया व उसकी आराधना की गई। यह जाने के लिए एक अद्‌भुत स्थान था क्योंकि इस नगर में जानेवाले अपने प्रभु की स्तुति करने का आनन्द ले सके।

भजन 122:5 में ध्यान दें कि यरूशलेम एक ऐसा स्थान भी था जहां न्याय के सिंहासन धरे थे। इस स्थान से परमेश्वर के न्यायी उद्देश्य आगे बढ़ पाएंगे। यहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति और अधिकार को बनाया था। यहीं से वह समस्त संसार के लिए अपनी योजना और उद्देश्यों को आगे बढ़ाएगा।

भजनकार के लिए यरूशलेम एक महत्वपूर्ण स्थान था। यहां परमेश्वर की उपस्थिति प्रगट हुई थी। यह सुरक्षा, स्तुति और न्याय का स्थान था। यहीं इसी स्थान से परमेश्वर ने अपने विश्वव्यापी उद्देश्यों को आगे बढ़ाया। इसी कारण, भजनकार ने अपने लोगों को यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करने को कहा (122:6-7)। भजन 122:8 में ध्यान दें कि अपने भाइयों और बहनों के कारण उसने इस नगर की शांति के लिए प्रार्थना की। हमारे लिए यहां इस संबन्ध में कुछ चीज़ों का वर्णन करना महत्वपूर्ण है।

जीवन में एक चीज़ का होना निश्चित है। जब प्रभु अपनी महिमा और अपने राज्य के विस्तार के लिए एक व्यक्ति या एक स्थान का प्रयोग करने का चुनाव करता है तो शत्रु उस उद्देश्य में बाधा डालने से कभी पीछे नहीं हटेगा। परमेश्वर के अद्‌भुत उद्देश्य पर विचार करने पर जिसे यरूशलेम नगर से खोला जाना था, उसे पता था कि इसी कारण यरूशलेम परमेश्वर के उद्देश्य व योजना का रणक्षेत्र था। उसे यह भी पता था कि शत्रु इसे अपना निशाना बनाएगा। जबकि इस नगर में परमेश्वर की उपस्थिति में रहनेवाले सुरक्षित थे, इसका अर्थ यह नहीं था कि वे शत्रु के हाथों दुख नहीं उठाएंगे। भजनकार को पता था कि यरूशलेम का परमेश्वर की योजना में स्थान होने के कारण इस पर हमला ज़रूर होगा। प्रभु यीशु इस नगर में आएगा और क्रूस पर मारा जाएगा। परमेश्वर के शत्रु इसे नाश कर पूरी तरह से जला डालेंगे। भविष्यवाणी में आगे की ओर देखते हुए भजनकार ने इस महत्वपूर्ण नगर में परमेश्वर की शांति के आने की प्रार्थना की। उसने इस नगर में रहनेवाले अपने भाईयों व बहनों पर विचार किया क्योंकि शत्रु इस पर हमला करना चाहता था। भजन 122:9 में भजनकार ने स्वयं को नगर की संपन्नता की खोज करने को सौंप दिया जिसका चुनाव परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को प्रगट करने के लिए किया था। उसकी इच्छा है कि परमेश्वर इस नगर में अपने उद्देश्यों को पूरा करे।

हमारे लिए यहां यह समझना ज़रूरी है कि हमें अपने आस-पास राज्य के कार्य में जुड़े लोगों के लिए प्रार्थना करनी है। शैतान जानता है कि हममें से प्रत्येक परमेश्वर के राज्य में कार्य करने को महत्वपूर्ण है। हमारे मार्ग में बाधा पहुंचाने को वह हर संभव प्रयास करेगा। इसी कारण हमारे लिए एक दूसरे हेतु प्रार्थना करना ज़रूरी है। हमारे लिए हाथ जोड़कर एक होकर कार्य करना ज़रूरी है। यरूशलेम के घर भी एक दूसरे के साथ-साथ बनाए गए थे, हमारे लिए भी एक संगठित देह बनना ज़रूरी है ताकि शत्रु हमें बेध न सके।

हमारे लिए युद्ध से पहले की सच्चाई यह है कि हमें न केवल एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने और एक दूसरे को सहारा देने के लिए एकत्रित होना है परन्तु हमें अपनी आँखें स्वर्ग के सिंहासन की ओर भी लगानी हैं (देखें भजन 123:1)। भजन 123 में भजनकार ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं। ध्यान दें कि उसने अपनी आँखों को कैसे उठाया।

भजन 123:2 में उसने अपने पाठकों को बताया कि जैसे दासों की आँखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर और दासियों की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती हैं वैसे ही वह अपनी आँखें प्रभु की ओर उठाता है। दास अपने स्वामी के हाथ की ओर कैसे देखता है? दास स्वामी के हाथ की ओर नम्रता से देखता है। दास की कोई चीज़ अपनी नहीं होती है। जिस कार्य को करने के लिए उसे बुलाया गया होता है उसे पूरा करने को वह पूरी तरह से अपने स्वामी के साधनों पर आश्रित होता है। भजनकार ने ऐसे ही परमेश्वर की ओर देखा। वह जान गया था कि उसके लिए सभी ज़रूरी चीज़ें परमेश्वर के पास थीं। वह जान गया था कि यदि परमेश्वर ने उसे नहीं दिया होता तो जिस कार्य को करने के लिए उसे बुलाया गया था उसे वह कभी पूरा नहीं कर पाता। वह पूरी निर्भरता के साथ परमेश्वर के पास आता है।

दास न केवल नम्रता और निर्भरता के साथ परमेश्वर के पास आता है परन्तु भरोसे के साथ भी। दास जानता है कि स्वामी को उसकी गरीबी की जानकारी है। दास स्वामी के पास इस भरोसे के साथ आता है कि जिसने उसे किसी एक कार्य को करने के लिए बुलाया है वही उस कार्य को पूरा करने में ज़रूरी साधनों और उपकरणों को देने की भी व्यवस्था करेगा। जो कोई भी इस संसार में परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के केन्द्र में है वह यह भरोसा रख सकता है कि जबकि शत्रु हमें अपना निशाना बनाएगा, प्रभु हमें उस सब को देने का प्रबन्ध करेगा जिसकी ज़रूरत उसे पूरा करने में होगी, जिसे पूरा करने को परमेश्वर ने हमें बुलाया है।

दास अपने स्वामी के सामने पूरी आज्ञाकारिता में होकर आता है। स्वामी उसे जो कुछ करने को कहता है उसे वह करता है। अपने ढंग से वह चीज़ों को नहीं करता।

वह अपने स्वामी के प्रति समर्पित होता है और केवल वही करता है जो स्वामी उसे करने को कहता है। ऐसे ही भजनकार परमेश्वर के पास आता है।

हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि चूंकि परमेश्वर हमारे साथ है हमें विरोध का सामना नहीं करना होगा। भजन 123:3 में ध्यान दें कि भजनकार प्रभु से दया करने को कहता है। वह अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उसने घमण्डी और अभिमानी लोगों के ठट्ठे और अपमान को सहा था। घमण्डी और अभिमानी वे हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था और उसके उद्देश्यों की अधीनता में आने से इन्कार कर देते हैं। परमेश्वर के ये शत्रु परमेश्वर के लोगों की निराशा का कारण थे। हमें इसकी अपने साथ होने की आशा करनी है।

भजन 124 में भजनकार शत्रु के हाथों ठट्ठा व अपमान किये जाने के इन क्षणों में प्रभु की अद्‌भुत सहायता पर विचार करता है। इस भजन में उसने अपने पाठकों को याद दिलाया कि यदि प्रभु परमेश्वर उनकी ओर नहीं होता तो वे नष्ट हो गए होते।

ध्यान दें कि परमेश्वर के लोगों के लिए संघर्ष था। भजन 124:2 में उन पर हमला किया गया था। उनके शत्रुओं का क्रोध उनके विरुद्ध भड़का था (124:3)। यदि प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति नहीं होती तो वे जीवित ही उनके भड़के क्रोध में निगले गए होते (124:3)। बाढ़, प्रचण्ड धारा और विरोधियों के जाल का प्रवाह उन्हें मिटा डालता। यदि परमेश्वर उनके साथ न होता तो वे डूब गए होते या बह गए होते (124:4-5)। परमेश्वर ने उन्हें शत्रु के सारे विरोध से छुड़ाया था। प्रभु ने शत्रु को उन्हें अपने दांतों से फाड़ने नहीं दिया (124:6)। उसने उन्हें शत्रु के द्वारा बिछाए गए जाल से छुड़ाया था ताकि वे उनके क्रोध से बच सकें (124:7)। संकट के समय में परमेश्वर उनका सहायक था। आकाश और पृथ्वी के कर्त्ता ने उन्हें चारों ओर से घेरा हुआ था और उनकी सहायता के लिए आया था (124:8)।

इस अद्‌भुत सच्चाई पर विचार करते हुए भजनकार ने भजन 125:1 में बताया "जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत को समान हैं।" इसके कई कारण हैं।

सबसे पहले ध्यान दें कि यहोवा पर भरोसा रखनेवाले सिय्योन पर्वत के समान इसलिए हैं क्योंकि इसे हिलाया नहीं जा सकता। यरूशलेम पर्वत पर दृढ़ता से टिका रहा। शत्रु के पर्वत के नीचे इसे उस तरह से हिलाने की कल्पना करें जैसे कोई वृक्ष को फल पाने के लिए हिलाता है। पर्वत दृढ़ता से खड़ा था जिसे शत्रु हिला नहीं सकता था। भजनकार हमें यहां यह बता रहा है कि प्रभु पर भरोसा रखनेवाले उस नींव के प्रति निश्चिंत होते हैं जिस पर वे खड़े होते हैं। जब तक वे प्रभु में बने रहते हैं शत्रु उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है। हम तक पहुंचने के लिए शत्रु को सबसे पहले प्रभु से निपटना होगा जो कि हमारा आधार है।

दूसरा, भजन 125:2 से हम देखते हैं कि प्रभु पर भरोसा रखनेवाले सिय्योन पवर्त या यरूशलेम के समान इसलिए हैं क्योंकि सिय्योन पवर्त पहाड़ों से घिरा हुआ है। उसी तरह से प्रभु परमेश्वर ने अपने लोगों को चारों ओर से घेरा हुआ है। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि परमेश्वर ने अपने लोगों को 'अब से लेकर सर्वदा तक' घेरा हुआ है। ऐसा कोई भी समय नहीं रहा होगा जबकि परमेश्वर की उपस्थिति अपने लोगों के चारों ओर न रही हो। प्रेमी स्वर्गीय पिता होने के कारण प्रभु अपनी संतान की चिन्ता करता है। हमारा शत्रु हमें हराने और सताने को सब कुछ करेगा परन्तु परमेश्वर हमें चारों ओर से वैसे ही घेरेगा जैसे यरूशलेम को पहाड़ों ने घेरा हुआ है। उसकी बांहों में हम सुरक्षित हैं।

तीसरा, प्रभु पर भरोसा रखनेवाले सिय्योन पर्वत के समान इसलिए है क्योंकि परमेश्वर को उनके लिए जलन थी और वह उनके शत्रुओं को उन पर विजयी नहीं होने देगा। भजन 125:3 में परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा यह है कि दुष्टों का राजदण्ड धर्मियों के भाग पर बना नहीं रहेगा। परमेश्वर ने यरूशलेम को अपने लोगों को दिया था। शत्रु उस देश में घुस आया था। वे बाढ़ और प्रचण्ड धारा के समान आए थे (भजन. 124:2-3)। परमेश्वर के लोगों को सताया गया व उनका अपमान किया गया। परमेश्वर इन शत्रुओं को उस देश में नहीं रहने देगा जिसे उसने अपने लोगों को दिया था। उनका राजदण्ड (अधिकार और सामर्थ का प्रतीक) तोड़ा जाएगा। जो मन के सीधे थे परमेश्वर उनके साथ भला ही करेगा। वह उनका नाश कर देगा जिनके मार्ग टेढ़े थे (125:5)। अन्ततः विजय प्रभु और उसके लोगों की ही होगी।

भजनकार ने भजन 125 का अन्त इस्राएल को शान्ति मिलने की प्रार्थना के साथ किया। भजनकार की यह प्रार्थना है कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर द्वारा दी गई शान्ति में रहें। उसकी प्रार्थना निश्चित रूप से यह हो सकता है कि प्रभु दुष्टों को उनका विरोध करने से रोके। युद्ध और संकटों में भी शांति को पाया जा सकता है। यूहन्ना 14:27 में प्रभु यीशु ने हमसे अपने शांति को देने की प्रतिज्ञा की है:

मैं तुम्हें शान्ति दिये जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

प्रभु ने क्रूसित किये जाने से पहले अपने शिष्यों से इस शांति की प्रतिज्ञा की थी। शिष्यों द्वारा पृथ्वी की छोर तक उद्धार के संदेश को ले जाने पर उन्हें अपने शत्रुओं के हाथों बहुत दुख उठाना था। जिस शांति की प्रतिज्ञा प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से की थी, वह पीड़ा और संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं था परन्तु संकटों और पीड़ा के बीच शांति का आश्वासन था। भजनकार ने प्रार्थना की कि यह शांति इस्राएल को मिले। उसने प्रार्थना की कि प्रभु की उपस्थिति की सांत्वना और आश्वासन प्रभु के उद्देश्य को आगे बढ़ाने पर उनकी शक्ति और भरोसा बने।

भजन 122-125 हमें परमेश्वर के लोग होने के कारण इस संसार के लिए परमेश्वर के उद्देश्य में रणनीति स्थान के बारे में अवगत कराना चाहते हैं। राज्य के विशिष्ट योद्धा होने के कारण हम शत्रु के प्रहार के केन्द्र में होंगे तौभी, इस युद्ध में हम अपने चारों ओर परमेश्वर की उपस्थिति के आश्वासन को पा सकते हैं। जैसे पहाड़ों ने यरूशलेम नगर को घेरा हुआ था वैसे ही परमेश्वर अपने प्रेम करेवालों को घेरे रखेगा। समय आने पर वह बुराई का नाश कर अपनी संतान को विजय देगा। इस विजय की प्रतीक्षा करते हुए हम उस शांति में रह सकते हैं जिसे परमेश्वर को उन सभी को देने में खुशी मिलती है जो उसमें विश्राम करते और उसके उद्देश्यों पर भरोसा करते हैं।

विचार करने के लिए:

- विश्वासी के लिए परमेश्वर की उपस्थिति आनन्द मनाने का कारण क्यों है?
- यरूशलेम मानवजाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों का केन्द्र कैसे था?
- यह परिच्छेद हमें इस बारे में क्या सिखाता है कि शत्रु उन पर कैसे प्रहार करता है जो धार्मिकता के युद्ध में कुशल योद्धा होते हैं?
- भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि उसने परमेश्वर की ओर वैसे ही देखा जैसे एक दास अपने स्वामी के हाथ की ओर देखता है। उसका इससे क्या अभिप्राय है? यह हमें इस बारे में क्या सिखाता है कि हमें परमेश्वर पर कितना आश्रित होने की ज़रूरत है?
- परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाले सिय्योन पर्वत के समान कैसे होते हैं? इससे आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- शांति संकट की अनुपस्थिति नहीं है, परन्तु भरोसे के साथ संकट का सामना करने का अनुग्रह। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? स्पष्ट करें।

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय के लिए इस पर विचार करें कि परमेश्वर ने आपको कैसे घेरा हुआ है और संकट के समय में वह आपको कैसे अपनी सुरक्षा में रखता है। उन समयों में प्रभु को उसकी सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद दे।
- कुछ समय उनके लिए प्रार्थना करें जो आपके चारों ओर सत्य और धार्मिकता के युद्ध में मुख्य योद्धा हैं। परमेश्वर से उन्हें सुरक्षित रखने और युद्ध में उन्हें अपनी शांति देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि युद्ध के भयानक होने पर भी सभी प्रभु पर भरोसा रखनेवालों के लिए विजय निश्चित है।

105. आँसू बहाते हुए बोना जयजयकार करते हुए लवना

पढ़ें भजन संहिता 126:1-130:8

भजन संहिता की पुस्तक में हमने देखा है कि विश्वासी का जीवन प्राय: दुखों व संकटों से भरा होता है। तौभी इस जीवन की अद्‌भुत चीज़ यह है कि दुखों और सताव के बावजूद भी अद्‌भुत आशीषें और आनन्द है। इस चिन्तन में हम उन कुछ आशीषों की चर्चा करेंगे। जिनका अनुभव एक विश्वासी दुख और पीड़ा में कर सकता है।

भजन 126:1 का आरम्भ बंधुआई से लौटने की भजनकार की घोषणा के साथ होता है। भजनकार हमें बताता है कि प्रभु जब इस्राएल देश को बंधुआई से लौटाकर लाया, वे 'स्वप्न देखनेवाले से हो गए' थे। अन्य शब्दों में, चीज़ें इतनी अद्‌भुत व सिद्ध थीं कि उनके मनों का इसके वास्तविक होने पर विश्वास करना कठिन था। बंधुआई से स्वतंत्र होने का अनुभव वास्तव में अद्‌भुत था। भजन 126:2 हमें बताता है कि उनके मुँह हंसी से और उनकी जीभ जयजयकार से पूर्ण थीं। ये अद्‌भुत दिन थे। परमेश्वर के लोग शत्रु के बन्धन से स्वतंत्रत थे। यह बड़े आनन्द और स्तुति का कारण था। भजन 126:3 में उनकी स्तुति की पुकार को सुनें: ''यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं; और इस से हम आनन्दित हैं।''

सबसे बड़ी आशीष जिसे आज हम विश्वासी होने के कारण जानते हैं वह हमारे शत्रु से स्वतंत्र होना है। हमारा सबसे बड़ा शत्रु पाप है। यह हमें बंधन में और परमेश्वर से अलग रखता है। इसके प्रभुत्व के आधीन हम परमेश्वर से अलग होकर उसके क्रोध और न्याय के लिए ठहरा दिए जाते हैं। प्रभु यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा हमें स्वतंत्र किया है। हम प्रभु यीशु पर विश्वास करनेवाले और उसके कार्यों पर भरोसा रखनेवाले अब भजनकार के साथ ऐसा कह सकते हैं: ''यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं; और इससे हम आनन्दित हैं।''

भजन 126:4 में ध्यान दें कि भजनकार प्रभु से उनके भविष्यों को नेगेव के सोतों के समान पुनर्गठित करने को कहता है। यह सच है कि इस्राएल की संतान अपने बंधन से स्वतंत्र हो गई थी परन्तु यह परमेश्वर की आशीषों का अन्त नहीं था। परमेश्वर उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाने से अधिक करना चाहता था। वह उनके भविष्यों को पुनर्गठित

करना चाहता था। पाप के कारण उन्होंने बहुत कुछ खो दिया था। इस शत्रु ने उन्हें उनके परमेश्वर की अद्‌भुत घनिष्ठता और उसके असीमित खज़ाने से वंचित कर दिया था। आज विश्वासी होने के कारण यही हमारे लिए भी सत्य है। परमेश्वर की इच्छा न केवल हमें पाप के प्रभुत्व से स्वतंत्र करने की है परन्तु हमें हर वह चीज़ लौटाने की भी है जिसे पाप ने हमसे ले लिया था।

परमेश्वर जिन आशीषों को लौटाना चाहता था वह घमण्डी लोगों के लिए नहीं थीं परन्तु उनके लिए थीं जो प्रभु के अनुशासन में नम्र हुए थे। एक माली की कल्पना पर ध्यान दें (126:5-6)। यह माली आँसुओं के साथ बोता है। अपने बीज वह रोते हुए बोता है। ये कठिन समय होते हैं। चीज़ों के कठिन होने के कारण वह रोता है। इस्राएल के लोग अभी बंधुआई से लौटे ही थे। उन्हें अनुशासित किया गया था। वे परमेश्वर के दण्ड के भारी हाथ को जानते थे। उन्होंने अतीत में पापी कार्यों को बोया था परन्तु अब उन्होंने पश्चात्ताप किया और अपनी आँखों में आँसुओं के साथ धार्मिकता को बोना आरम्भ किया।

तथापि भजन 126:5-6 में ध्यान दें कि जिन्होंने पश्चात्ताप के आँसुओं के साथ बोया था वे अपनी पूलियों को लिये जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। परमेश्वर ने उनके पश्चात्तापी हृदयों के प्रति प्रतिक्रिया दी थी। उन्हें आशीष में लौटा लाने के लिए उसने उन्हें उनकी बंधुआई के द्वारा तोड़ा था। उनकी बंधुआई भी परमेश्वर की ओर से आशीष थी। परमेश्वर का अनुशासन अपने लोगों को पश्चात्ताप की ओर लेकर गया और अन्त में उसके साथ घनिष्ठता में चलने की ओर।

परमेश्वर अपने लोगों के जीवनों में कार्य करने की प्रक्रिया में है। भजन 126 में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों को सहभागिता में लौटा लाने को बंधुआई का प्रयोग किया। परमेश्वर को अपने लोगों को वे सभी आशीषें लौटाने में खुशी मिलती है जिन्हें पाप ने उनसे छीन लिया था।

अपनी बंधुआई के बाद अपने जीवनों का निर्माण करने के लिए उन्हें यह समझने की ज़रूरत थी कि उन्हें प्रभु की कितनी अधिक ज़रूरत थी। भजन 127 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि यदि घर को यहोवा न बनाए तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होता है। यदि परमेश्वर उसमें नहीं होता जो वे कर रहे थे तो वे केवल अपने समय और प्रयास को बर्बाद करते। भजनकार अपने लोगों को उसे देखने की चुनौती देता है जो परमेश्वर कर रहा था और साथ ही इसे समर्पित करने की वह सभी को प्रोत्साहित करता है कि परमेश्वर को अपने आगे चलने दें। कितनी बार हमें ऐसा लगता है कि परमेश्वर का राज्य हम पर निर्भर है। हमें लगता है कि हमारे मानव प्रयास और बुद्धि के द्वारा ही यह आगे बढ़ेगा। वास्तव में ऐसा नहीं है। मत्ती

16:18 में यीशु ने पतरस से कहा:

और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा। और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

इस पर ध्यान दें कि प्रभु ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वही अपनी कलीसिया को बनाएगा। कलीसिया का निर्माण मानवीय बुद्धि और प्रयास से नहीं होगा परन्तु मानव पात्रों के माध्यम से पवित्र आत्मा की शक्ति में। यही प्रभु ने जकर्याह से जकर्याह 4:6 में कहा:

तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, ''जरूब्बाबेल के लिए यहोवा का यह वचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

प्रभु अद्‌भुत कार्य करने की प्रक्रिया में है। वह अपने लोगों की आशीषों को लौटा रहा है और पाप के दृढ़ गढ़ों को पीछे धकेल रहा है। परमेश्वर के इस अद्‌भुत कार्य का हिस्सा बनना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। परमेश्वर के प्रयासों के केन्द्र में होने के कारण हम धन्य हैं। इस संसार में उसके महान कार्य का उपकरण बनने को हम धन्य हैं।

विश्वासी होने के कारण हमारी प्रवृत्ति प्रयास करने और परमेश्वर की भूमिका को लेने की है। अपने चारों ओर की समस्याओं को देखकर हम उन्हें अपने पर ले लेते हैं। मेरी अपनी सेवकाई में मैंने कई अच्छे प्रयासों को धारण किया है। समस्याओं पर विचार करते रहने के कारण में सो नहीं पाता था। मैं उन स्थितियों की चिन्ता किया करता था जो मेरे नियंत्रण से बाहर थीं। मैंने हमेशा अपने जीवन की स्थिति या दूसरों के जीवनों की परिस्थितियों को बदलने का प्रयास किया परन्तु सब व्यर्थ रहा। भजनकार भजन 127:2 में अपने पाठकों को जो बताता है उस पर ध्यान दें। उसने उन्हें बताया कि वे सवेरे उठते और देर करके विश्राम करते हैं, यह सब व्यर्थ है। उसने उन्हें बताया कि परमेश्वर अपने प्रियों को योंही नींद प्रदान करता है परन्तु वे अपने को बेकार में उन चीज़ों की ओर धकेल रहे थे जिन्हें केवल परमेश्वर ही प्राप्त कर सकता है। क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर के लिए आपकी वर्तमान स्थिति को बदलना कितना सरल होगा? एक ही क्षण में प्रत्येक चीज़ बदल सकती है। हम उस चीज़ को प्राप्त करने का प्रयास करते रहते हैं जिसे परमेश्वर एक क्षण में प्राप्त कर सकता है।

विश्वासी होने के कारण हमें यहां उसे देखना है जो भजनकार हमें बता रहा है। यदि परमेश्वर आपकी समस्या के बारे में कुछ नहीं कर रहा है, तब क्या आपको लगता है कि आप इस पर केन्द्रित हो सकते हैं? हम उसे कैसे कर सकते हैं जो परमेश्वर नहीं कर सकता है? हम अपने को चिन्ताओं और मानव प्रयासों से भस्म कर

लेते हैं जबकि परमेश्वर हमसे केवल उसकी प्रतीक्षा करने और उसकी अगुवाई में चलने को कहता है। हमारी स्थिति में वह हमारी कल्पना से कहीं अधिक कर सकता है। उसकी इच्छा हमें आशीष देने और हमारे भाग्य पर लौटा लाने की है। क्या हम उस पर उसे करने के लिए भरोसा कर सकते हैं जो वह हममें करना चाहता है? यदि ऐसा है तो हम उसमें विश्राम कर उसके और उसके समय की प्रतीक्षा करेंगे। यह जानना एक अद्‌भुत आशीष है कि परमेश्वर हमारे लिए काम कर रहा है।

भजन 127:3-5 में भजनकार प्रभु की ओर से दूसरी अद्‌भुत आशीष के बारे में बताता है। यहां वह अपने पाठकों को याद दिलाता है कि लड़के यहोवा के दिये हुए भाग हैं और बच्चे उसकी ओर से प्रतिफल हैं। इन बच्चों की तुलना वह तर्कश में धरे तीरों से करता है। विचार यहां यह है कि प्रभु अपने लोगों की ज़रूरतों को उनके बच्चों के माध्यम से पूरा करेगा। उनके बुढ़ापे में बच्चे उनके रक्षक और सहारा होंगे। माता-पिता के कारण उन्हें फाटक पर संकोच न होगा (127:5)। नगर के फाटक पर व्यवसाय विषयों के साथ-साथ महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते थे। यही वह स्थान भी था जहां शत्रु हमला करता था। भजनकार अपने पाठकों को बता रहा है कि उनके बूढ़े हो जाने पर जब वे अपने व्यवसाय की देखरेख करने के योग्य न रहेंगे या फिर स्वयं को बचाने के, तब उनके बच्चे वहां उनके लिए होंगे।

भजनकार अपने पाठकों को बता रहा है कि परमेश्वर दूसरे मनुष्यों के द्वारा उनकी ज़रूरत के समय में उनकी ज़रूरतों को पूरा करेगा। इस तरह से, परमेश्वर उनके साथ खड़े होने को उन्हें बच्चे देगा। यह परिच्छेद उन लोगों के बारे में भी बताता है जिनकी ज़रूरत के समय में खड़े होने को बच्चे नहीं होते। यदि आपके बच्चे नहीं हैं तो परमेश्वर आपके साथ खड़े होने को दूसरों का प्रबन्ध करेगा। विश्वासियों के लिए परमेश्वर की इच्छा समाज में रहने की है। समाज में उन्हें एक दूसरे को आशीष देना व प्रोत्साहित करना है। हमारे फाटक पर हमला होने पर हम एक परिवार के रूप में मिलकर खड़े होते हैं।

परमेश्वर का भय माननेवाले व उसके मार्गों पर चलनेवाले अपने परिश्रम के फल को निश्चय खाने पाएंगे (भजन 128:1)। परमेश्वर की आशीष और संपन्नता उनके जीवनों पर होगी (128:2)। बच्चे उनकी मेज़ के चारों ओर जलपाई के पौधे से होंगे। जलपाई का पौधा संपन्नता का प्रतीक था। इससे मिलने वाला तेल खाना पकाने के साथ-साथ दवा में प्रयुक्त होता है। प्रत्येक जलपाई का पौधा अपने जीवन काल में अधिक मात्रा में तेल का उत्पादन कर सकता है। यह तेल बहुतों के लिए अद्‌भुत आशीष होगा। भजनकार अपने पाठकों को यहां यही बता रहा है। वह उन्हें बता रहा है कि उनके बच्चे उत्पादक व फलदायी होंगे। वे अपने माता पिता के लिए अद्‌भुत आशीष का कारण होंगे। भजन 128:5-6 में भजनकार की प्रार्थना यह है कि प्रभु का

भय माननेवाले धन्य हों और इतनी लम्बी आयु जीयें कि अपने नाती-पोतों को देखने पाएं।

भजन 129 से हम समझ पाते हैं कि विश्वासी के जीवन में और भी बहुत से संकट होते हैं। भजन 129:1 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि बचपन से ही उसने बहुत दुख सहा था। ध्यान दें कि यद्यपि उसे सताया गया था, तौभी उसके शत्रु उस पर विजयी नहीं हो पाए थे (129:2)।

भजन 129:3 में भजनकार अपने संघर्ष की तुलना हलवाहों के उसकी पीठ पर हल चलाने से करता है। हम इसकी केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि उसकी पीठ पर हल चलने से उसे कितनी पीड़ा हुई होगी। उसके शत्रुओं ने उसे चोट पहुंचाई थी परन्तु परमेश्वर ने उसे दुष्टों के फन्दों से छुड़ाया था (129:4)।

केवल वही अपने शत्रुओं के कारण दुख नहीं उठा रहा था। भजन 129:5-8 में भजनकार उन लोगों के लिए परमेश्वर की दोहाई देता है जिन्होंने उसके लोगों को सताया था। उसने प्रार्थना की कि सिय्योन से बैर रखनेवालों की आशा टूटे। उसने परमेश्वर से अपने शत्रुओं को छत पर की घास के समान बनने को कहा जो बढ़ने से पहले ही सूख जाती है (129:6)। इससे कोई भी लवनेवाला अपनी मुट्ठी नहीं भर सकता क्योंकि यह गर्मी से सूख जाती है (129:7)। भजनकार ने यह भी कहा कि सिय्योन से बैर रखनेवालों से परमेश्वर की आशीष दूर हो ताकि वे अपनी दुष्ट रीतियों में बने न रहें (129:7-8)।

भजन 130 में भजनकार ने परमेश्वर की दोहाई दी कि उस पर दया करें। यह सच है कि प्रभु से प्रेम करनेवाले धन्य होते हैं। भजन 126-129 में हमने इसके प्रमाण को देखा है। तथापि, यह आशीष पीड़ा और संकट को नहीं हटाती। विश्वासियों के रूप में हम एक पापी संसार में रहते हैं। परमेश्वर की आशीष का हमारा अनुभव बहुत वास्तविक है परन्तु उसी तरह से शत्रु के हाथों संकट का अनुभव भी। हम एक ही समय में आशीष और संकट का अनुभव करते हैं। भजनकार भयंकर सताव के बीच प्रभु की आशीष के लिए दोहाई देता है।

भजनकार को पता था कि वह इस योग्य नहीं है कि परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आए। उसे पता था कि वह एक पापी व्यक्ति था। यदि परमेश्वर उसके सभी पापों का लेखा रखता तो वह उसके सामने खड़े रहने के योग्य नहीं होता (130:3)। तौभी वह उस तक उसकी क्षमा और दया के आधार पर पहुंचा (130:4)। उसे पता था कि प्रभु परमेश्वर में अद्‌भुत आशीष थीं। वह परमेश्वर से सहायता के लिए कह सका क्योंकि परमेश्वर अनुग्रह का परमेश्वर था जिसकी इच्छा अपने बच्चों को उनकी कमियों के बावजूद आशीष देने की थी।

उसने परमेश्वर की प्रतीक्षा की और अपना भरोसा व अपनी आशा उसमें और उसके वचन में रखी। पहरेदार जितना अधिक भोर को चाहते थे (130:6) जबकि सुबह होने पर वे आराम कर सकें उतना ही उसने परमेश्वर की प्रतीक्षा की थी। उसकी सारी आशा और भरोसा प्रभु में था। उसने इस्राएल को उनके संकट में ऐसा ही करने को प्रोत्साहित किया। परमेश्वर एक अटल प्रेम का परमेश्वर था। वह अपने लोगों को उनके शत्रु के हाथों से छुड़ाएगा (130:7-8)।

ये भजन हमें याद दिलाते हैं कि विश्वासी होने के कारण हमें संकटों से भरे संसार में चलना है। ऐसे भी समय होंगे जब शत्रु हम पर प्रबल होगा। ऐसे भी समय होंगे जब हम ''सिय्योन से बैर करनेवालों'' के हाथों दुख उठाएंगे। तौभी, विश्वासी होने के कारण हमारी दूसरी आशा भी है। परमेश्वर संकटों का प्रयोग हमें अपने निकट लाने के लिए कर सकता है। हमारी पीड़ा और सातव में वह हम पर आशीष की वर्षा करेगा। आशीषें जीवन से संकटों को हटाती नहीं है। तौभी, वे इस बात का प्रमाण हैं कि परमेश्वर हमारे साथ है। ये आशीषें हमें जीवन की पीड़ा का सामना करने का साहस देती हैं। परमेश्वर द्वारा अपनी कलीसिया का निर्माण किये जाने पर संघर्ष के समय होंगे। हम एक पापी संसार में संकट रहित जीवन बिताने की आशा नहीं कर सकते। तौभी, हमें यह आशा करनी है कि परमेश्वर, जो अटल प्रेम का परमेश्वर है, इस समय में हम तक पहुंचेगा और कदम कदम पर हमारा मार्गदर्शन करेगा। वह हमें पीड़ा में संभालेगा। वह पीड़ा में हमें आशीष देगा और वह हममें पीड़ा को भी आशीष देगा।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर की इच्छा उस भविष्य को लौटा लाने की है जिससे पाप ने हम से छीन लिया था। पाप ने आपसे क्या छीना है?
- संकट कैसे पश्चात्ताप को उत्पन्न कर घनिष्ठता और आशीष को लौटाते हैं? क्या आपने कभी ऐसे संकटों का अनुभव किया है जिन्होंने आपकी आत्मिक आशीषें लौटाई हों?
- ये भजन हमें उसमें विश्राम करने के बारे में क्या सिखाते हैं जो परमेश्वर कर रहा है? क्या आपने कभी स्वयं को मानवीय प्रयास और चिन्ताओं को धारण किये पाया है? इन समयों में हमारा रवैया क्या होना चाहिए?
- प्रभु की एक आशीष कमज़ोरी के समयों में परिवार का हमारे साथ खड़े होना है। क्या आज आपका ऐसा परिवार है?
- क्या परमेश्वर की आशीषें संकटों को हटाती हैं? स्पष्ट करें।

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमें पाप से स्वतंन्त्र करने को आया। उसे धन्यवाद दें कि अब हम मसीह के कारण पाप पर विजेता के रूप में जी सकते हैं।
- प्रभु पर भरोसा न करने के लिए उससे आपको क्षमा करने को कहें और कि उसकी प्रेमी करुणा पर्याप्त है। उससे आपको आपकी विशिष्ट समस्या या संघर्ष में उस पर भरोसा करने का अनुग्रह देने को कहें।
- प्रभु को उस तरीके के लिए धन्यवाद दें जिसके द्वारा वह आपके जीवन में संकटों का प्रयोग आशीष लाने में कर सकता है।
- आपके मार्ग में आनेवाले संघर्षों को स्वीकार करने का अनुग्रह उससे आपको देने को कहें। उन आशीषों के लिए उसे धन्यवाद दें जो वह संकटों के बीच में आपको देता है।

106. सिय्योन में यहोवा का वास

पढ़ें भजन संहिता 131:1-134:3

प्रभु परमेश्वर के बारे में हमें जिस किसी एक चीज़ को समझने की ज़रूरत है वह यह कि उसके मार्ग हमारे मार्गों से बड़े हैं। मैं प्राय: उन लोगों से बात करता था जो परमेश्वर की योजना का अर्थ लगाने का प्रयास किया करते थे। बाइबल स्कूल को पूरा कर लेने के बाद मैंने एक विश्वविद्यालय में नाम लिखाया और धार्मिक अध्ययन में बहुत कुछ किया। यह मेरे लिए मन को खोल देनेवाला अनुभव था। इस नये विश्वविद्यालय में मैंने विचारधारा के पूर्णतया एक नये ढंग को देखा। यहां मानव मस्तिष्क का राज्य था। कोई भी असंगत चीज़ या जिसकी बुद्धिसंगत व्याख्या नहीं की जा सकती, उसे असत्य मानकर ठुकरा दिया जाता था। विश्वास को एक कमज़ोरी के रूप में देखा गया था। वैज्ञानिक या बुद्धिसंगत रूप से प्रमाणित की जानेवाली चीज़ पर ही विश्वास किया जा सकता था। यह घमण्डी मानवता की मनोदशा थी। इससे एक विचार आता है कि मानव मस्तिष्क सभी सत्य का न्यायी है।

कई वर्ष पहले मैं इस मनोदशा के विरुद्ध उस समय दौड़ा था जब मैं एक प्रकाशन दुकान में एक व्यक्ति से बात कर रहा था। मैंने जिन पुस्तकों को प्रकाशित कराया था वह उनकी जांच कर रहा था। बातचीत ने आत्मिक रूप ले लिया और जल्द ही हम एकता के सिद्धान्त पर बात करने लगे थे। उसने मुझे बताया कि उसे इस सिद्धान्त पर कोई विश्वास नहीं था क्योंकि उसे उसमें कोई अर्थ दिखाई नहीं देता था। मुझे याद है कि मैं उसे बता रहा था कि मुझे इस बात की बहुत खुशी थी कि परमेश्वर के बारे में कुछ ऐसी चीज़ें थीं जिन्हें मैं समझ नहीं सकता था क्योंकि यदि परमेश्वर को हमारे मानवीय मस्तिष्कों द्वारा समझा जा सके तो पर्याप्त रूप से बड़ा नहीं होगा।

परमेश्वर और उसके मार्गों के बारे में हमेशा ऐसी चीज़ें होंगी। समझे जाने को वह बहुत बड़ा है। हमारे मस्तिष्कों के उसे पाने में वह बहुत अद्‌भुत है। कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हमें केवल विश्वास द्वारा ग्रहण करना होगा। परमेश्वर के उद्देश्यों और मार्गों को न समझ पाने पर भी हमें उस पर भरोसा करना सीखना होगा।

भजन में भजनकार दाऊद ने अपने पाठकों को बताया कि न तो उसका मन गर्व से और न उसकी दृष्टि घमण्ड से भरी है। जो बातें बड़ी और उसके लिए कठिन थीं।

उन से वह काम नहीं रखता था। अर्थात् भजनकार यह जान गया था कि परमेश्वर में कुछ ऐसा है जिसे मानव मस्तिष्क से समझा जा नहीं जा सकता है।

ध्यान दें कि दाऊद ने एक बच्चे के अपनी माँ की गोद में रहने के समान अपने मन को शांत कर लिया था। कितनी ही बार हम उन विषयों के बारे में चिंता करते रहते हैं जो हमारे लिए बहुत बड़े होते हैं? उन विषयों को लेकर हम अपनी नींद खो देते हैं जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। हम उन सिद्धान्तों के साथ मल्लयुद्ध करते हैं जिन्हें समझना हमारे मस्तिस्कों के लिए कठिन होता है। दाऊद हमें बताता है कि विषयों पर व्यवहार करने के बजाय हमारे लिए उन्हें समझना अधिक अद्‌भुत होता है। हमें एक छोटे बच्चे के समान अपने प्रभु पर पूरी तरह से भरोसा करते हुए उसकी बांहों में रहना है।

यहां एक ऐसे छोटे बच्चे का चित्र है जो संसार की चिन्ताओं को देखकर अपने को परेशान नहीं करता या करती। अपने माता-पिता पर भरोसा करते हुए वे बिना किसी परेशानी के रहते हैं। वे सारे विषयों को अपने सक्षम माता और पिता के हाथों में छोड़ देते हैं। दाऊद ने ऐसा उस समय किया था जब वह यह समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा है।

परमेश्वर हमें ऐसे लोग होने के लिए बुला रहा है जो स्वयं को यह जानने के लिए नम्र करते हैं कि जीवन में ध्यान देने को बहुत से बड़े विषय भी हैं। तथापि परमेश्वर हम से बड़ा है और सृष्टि की समस्त चीज़ों से व्यवहार करने में सक्षम है। हमें अपनी सभी चिंताओं और परेशानियों को उतार कर अपने स्वर्गीय पिता की बांहों में स्थान को पाना है। यहीं हमें समस्त चिन्ताओं और परेशानियों से आराम मिलेगा। यहीं हमें सुरक्षा और संतुष्टि मिलेगी। भजन 131:3 में दाऊद ने समस्त इस्राएल को अब से लेकर सदा सर्वदा तक प्रभु परमेश्वर पर अपनी आशा लगाए रखने का कहा। यही बुलाहट हम तक भी आती है।

प्रभु परमेश्वर के महिमामयी और प्रेमी स्वभाव को जानकर दाऊद ने अपना मन एक ऐसे स्थान को ढूढ़ने पर लगाया जहां परमेश्वर वास करे और उसकी आराधना की जाए। दाऊद को पता था कि परमेश्वर को कहीं भी सीमित नहीं किया जा सकता क्योंकि वह हर कहीं उपस्थित था। तौभी, उसी समय में दाऊद यह जानता था कि परमेश्वर को अपने लोगों पर स्वयं को प्रगट करने में खुशी मिलती है। दाऊद को प्रभु की उपस्थिति में सुख मिलता था। भजन 131 में हमने देखा कि दाऊद ने परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध की तुलना अपनी मां की गोद में आराम करते बच्चे से की। चूंकि दाऊद प्रभु की उपस्थिति को विस्तृत रूप से व्यक्त होते देखना चाहता था, उसने परमेश्वर से शपथ खाई। भजन 132:3-5 में वह इस शपथ की प्रकृति को स्पष्ट

करता है।

कि निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में प्रवेश
न करूंगा, और न अपने पलंग पर चढ़ूंगा;
न अपनी आँखों में नींद, और
और न अपनी पलकों में झपकी आने दूंगा,
जब तक मैं यहोवा के लिए एक स्थान,
अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिए निवास स्थान न पांऊ।

दाऊद का मन यरूशलेम में प्रभु के लिए एक भवन निर्माण करने का था। प्रभु परमेश्वर के इस भवन में उसकी आराधना व आदर मान किया जाए। यहां उसके नाम की स्तुति हो। यहां उसके लोगों के अपराधों को ढांपने के लिए बलिदान चढ़ाए जाएं। इस भवन में प्रभु परमेश्वर की आराधना करने को लोग दूर-दूर से आएं (132:6-7)।

यरूशलेम में परमेश्वर का यह मन्दिर प्रभु का विश्राम स्थान होगा। यहां परमेश्वर लोगों पर अपनी उपस्थिति को प्रगट करेगा। भजन 132:8 में दाऊद ने परमेश्वर को उठकर अपने विश्राम-स्थान में आने को कहा। यह दाऊद की सबसे बड़ी अभिलाषा थी। वह अपने बीच में परमेश्वर को देखना चाहता था। वह उसकी अद्‌भुत उपस्थिति में विश्राम करना चाहता था। उसने परमेश्वर से उसके याजकों की धर्म के वस्त्र पहनाने और उसके लोगों को उसकी उपस्थिति में जयजयकार के साथ लाने को कहा (भजन 132:9)।

भजन 132:10 से ध्यान दें कि दाऊद ने परमेश्वर से उसे राजा के रूप में न ठुकराने की विनती की। यह संभावित है कि इस विनती के द्वारा दाऊद प्रभु से उसकी इस इच्छा को आदर देने को कह रहा है कि वह यरूशलेम में और उसके द्वारा परमेश्वर के लिए बनाए गए मन्दिर में उसकी प्रगट उपस्थिति को देखने पाए।

परमेश्वर ने दाऊद से एक शपथ खाई (132:11-12)। उसने उससे प्रतिज्ञा की कि उसके वंश में से कोई एक यरूशलेम के सिंहासन पर बैठेगा। तौभी, इससे महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह सिय्योन को अपना विश्रामस्थान बनाएगा और वहां सिंहासन पर एक सच्चे राजा के रूप में बैठेगा। इस स्थान पर परमेश्वर अपने राज्य को बनाएगा और यहीं से यह समस्त पृथ्वी तक फैलता चला जाएगा।

भजन 132:14 में ध्यान दें कि परमेश्वर को सिय्योन से अपनी उपस्थिति को प्रगट करने में खुशी मिली। ''यहीं मैं रहूंगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।'' परमेश्वर का मन अपने लोगों पर अपनी उपस्थिति को प्रगट करने का था। परमेश्वर से यरूशेलम के माध्यम से अपनी उपस्थिति को प्रगट करने को कहते हुए दाऊद

परमेश्वर से कुछ ऐसा करने को कह रहा था जिसे वह पहले से ही करना चाहता था।

भजन 132:15-18 में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रकाशन से आनेवाली आशीषों पर ध्यान दें। परमेश्वर ने अपने लोगों की आवश्यकताओं को बहुतायत से पूरा करने और उन्हें भोजन से तृप्त करने की आशीष दी थी। (132:15)। प्रेमी स्वर्गीय पिता होने के कारण वह उनकी ज़रूरत की प्रत्येक चीज़ उन्हें देगा। वह उनकी मौलिक आवश्यकताओं की भी चिन्ता करेगा।

प्रभु अपने याजकों को उद्धार के वस्त्र पहनाएगा और उसके भक्त लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करेंगे (132:17)। परमेश्वर की उपस्थिति में पापों की क्षमा और अद्‌भुत आनन्द होगा।

परमेश्वर की उपस्थिति अपने साथ एक ''सींग'' और एक ''दीपक'' को भी लाएगी। सींग अधिकार और सामर्थ का प्रतीक था। जानवर के लिए सींग एक हथियार होता है। परमेश्वर के लोगों के बीच उसकी उपस्थिति अधिकार और सामर्थ को लाएगी। दीपक मार्ग के लिए ज्योति देता था। यह पूरे मार्ग में यात्री का मार्गदर्शन करता था ताकि वह ठोकर न खाए या किसी जाल में न फंसे। परमेश्वर की उपस्थिति उनका मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उन्हें सुरक्षित रखेगी ताकि वे ठोकर न खाएं।

इस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि अधिकार का यह सींग और मार्गदर्शन का दीपक भविष्यवाणी के रूप में प्रभु यीशु और उसकी सेवकाई की ओर संकेत करते हैं। यीशु परमेश्वर के अधिकार के सींग के साथ आया। उसका वचन अपने लोगों के लिए ज्योति भी था।

परमेश्वर की उपस्थिति परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं पर विजय को लाएगी (132:18)। परमेश्वर अपने शत्रुओं को अपमान के वस्त्र पहनाएगा। वह एक ''शोभायमान'' मुकुट के साथ राज्य करेगा। उसके राज्य की तुलना न होगी। उसके शत्रु अपमानित होकर अपनी पीठ फेर लेंगे।

परमेश्वर की उपस्थिति की अन्य अद्‌भुत आशीष को भजन 133 में देखा जा सकता है। भजनकार बताता है कि भाई लोगों का आपस में एकता से रहना कितना अद्‌भुत है।

भजनकार भाई बहनों की इस एकता की तुलना हारून के सिर पर डाले हुए तेल से करता है जो उसकी दाढ़ी पर बहकर उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया था। यहां तेल के बहुतायत के प्रयोग को दिखाया गया है। यह हारून के सिर पर से होते हुए उसकी दाढ़ी और उसके वस्त्र पर आता है। भाई बहनों की एकता भी इस तेल के समान है। यह बहुतायत की आशीष को लाती है। पवित्रशास्त्र में तेल पवित्र आत्मा और उसकी सेवकाई का भी प्रतीक है। इस पर ध्यान देना चाहिए कि भाई बहनों की

एकता पवित्र आत्मा की सेवकाई है। सुगन्धित तेल के हारून की दाढ़ी तक आने के समान पवित्र आत्मा भाई बहनों के बीच विश्वास में इस अद्‌भुत एकता को लाता है।

भजन 133:3 में भजनकार इस एकता की तुलना ओस से करता है। ओस पृथ्वी को ताज़गी प्रदान करती है। यह भी प्रभु में भाई बहनों के बीच एकता के समान है। प्रभु में बहन और भाईयों के बीच मेल न होने से बुरी चीज़ और कोई भी नहीं हो सकती। हम सभी जानते हैं कि सह विश्वासी के साथ मतभेद होना कैसा होता है। हमारे दिनों की कलीसियाएं एकता न होने के कारण नष्ट हुई हैं। शत्रु को पता है कि परमेश्वर के राज्य के कार्य में रुकावट डालने के लिए एकता को कैसे तोड़ना है। दूसरी ओर, एकता ताज़गी और पुनर्जीवन के वातावरण को बनाती है। एकता में होकर परमेश्वर की आशीषों को बहुतायत से अनुभव किया जाता है। एकता केवल परमेश्वर की ओर से आशीष नहीं है परन्तु एक ऐसा वातावरण भी है जिसमें हम पर आनेवाली आशीषें हारून के सिर पर डाले गए तेल के समान उण्डेली जाती हैं।

सिय्योन में परमेश्वर की आशीष के इस चिन्तन के अन्त में हम भजन 134 में भजनकार को परमेश्वर के सभी दासों को यहोवा के नाम की स्तुति करने का आमंत्रण देते हुए देखते हैं। उसने प्रभु के घर में सभी सेवा करनेवालों को बुलाया जहां पर कि परमेश्वर की उपस्थिति को प्रगट किया गया था कि अपने हाथ उठाकर प्रभु की स्तुति करें (134:2)। वह आकाश और पृथ्वी के कर्त्ता परमेश्वर को सिय्योन से अपनी आशीष को उनमुक्त करने को कहता है जहां से पृथ्वी भर में उसकी उपस्थिति को जाना गया था।

इन भजनों में हम पाते हैं कि प्रभु परमेश्वर की इच्छा स्वयं को अपने लोगों पर प्रगट करने की है। ऐसे भी समय होते हैं जब यह संसार एक बहुत जटिल व कठिन स्थान बन सकता है। उन समयों में भजनकार हमसे कहता है कि हमें वैसे ही विश्राम करना है जैसे एक छोटा बच्चा अपनी माँ की गोद में करता है। वह हमें उसकी उपस्थिति की खोज करने को बुलाता है और परमेश्वर की अद्‌भुत उपस्थिति की आशीष में प्रसन्न होता है। वह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की उपस्थिति में विश्राम, मार्गदर्शन, ताज़गी और विजय निश्चित हैं। जींवन के संघर्षों के मध्य में यह हमारा भी अनुभव होने पाए।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी स्वयं को उन चीज़ों के लिए चिन्तित व परेशान पाया है जिन्हें समझना आपके लिए बहुत कठिन है? भजन 131 में भजनकार की चुनौती क्या है?
- भजनकार की प्रसन्नता प्रभु की उपस्थिति को जानना थी। क्या आप अपने

बीच–प्रभु की उपस्थिति से अवगत हैं? कौन सी चीज़ उसे आप पर स्वयं को एक बड़ी मात्रा में प्रगट करने से रोक रही है?

- इन भजनों में परमेश्वर की उपस्थिति को लानेवाली कुछ आशीषें कौन सी हैं?
- प्रभु में भाई बहनों की एकता के बारे में हम क्या सीखते हैं? प्रभु में भाई बहनों की एकता कैसे परमेश्वर की ओर से महान आशीष के वातावरण को बनाती है?

प्रार्थना के लिए:

- जब आपके लिए चीज़ों को समझना बहुत कठिन हो जाता है तब परमेश्वर से कहें कि वह आपको सिखाए कि उसमें विश्राम करने का क्या अर्थ है। उसे धन्यवाद दें कि वह उस किसी भी चीज़ से बड़ा है जिसका आप कभी समझने के योग्य हो भी पाएंगे।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसे अपनी उपस्थिति को प्रगट करने में खुशी मिलती है।
- दाऊद की इच्छा एक ऐसे स्थान को बनाने की थी जहां परमेश्वर अपनी उपस्थिति को प्रगट कर सके। परमेश्वर से कहें कि वह आपको आपकी कलीसिया या आपके जीवन में एक ऐसे वातावरण की रचना करने के योग्य करें जहां उसकी उपस्थिति का स्वागत व इच्छा की जाए।
- क्या आपको ऐसा कोई भाई या बहन है जिससे प्रेम करने में आपको कठिनाई होती है? प्रभु से एकता में आनेवाली हर बाधा को तोड़ने के लिए कहें।

107. स्तुति करना और धन्यवाद देना

पढ़ें भजन संहिता 135:1-136:26

भजन 135 और 136 इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की स्तुति करने और धन्यवाद देने वाले भजन हैं। इन दोनों भजनों में भजनकार अपने लोगों को स्तुति करने और धन्यवाद देते हुए प्रभु के नाम को ऊंचा करने की चुनौती देता है। इन दो भजनों में वह अपने लोगों को प्रभु को धन्यवाद देने के उपयुक्त कारण को देता है।

भजन 135 के आरम्भ में भजनकार यहोवा के भवन में और उसके भवन के आंगनों में सेवा करनेवाले प्रभु के सेवकों से बात करता है (135:2)। ये सेवक स्तुति और धन्यवाद करने में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करते थे। भजनकार ने उन्हें अपनी भूमिका को गंभीरता से लेने और परमेश्वर के लोगों की आराधना में अगुवाई करने की चुनौती दी।

भजन 135:3 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि उन्हें परमेश्वर की स्तुति करनी है क्योंकि वह भला है। अर्थात् प्रभु द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ सही व सत्य थी। उसमें न तो काई पाप था और न ही पाप का उसकी विधियों और कार्यों पर कोई प्रभाव था। वह हर तरह से सिद्ध था। भजनकार को ऐसे परमेश्वर की आराधना करने में कोई कठिनाई नहीं लगती थी। वास्तव में वह परमेश्वर के अद्‌भुत नाम की आराधना ''मनभाऊ'' होने के लिए करता है। अन्य शब्दों में, प्रभु की आराधना करने में बहुतायत और बड़ी आशीष मिलती है।

इस भले परमेश्वर ने याकूब को अपने लिए और इस्राएल को अपना निज धन होने के लिए चुन लिया था। भलाई और सुन्दरता का यह अद्‌भुत परमेश्वर इस्राएल देश के पास आया था और उन्हें अपने विशेष धन्यवाद की वस्तु बनाया था। वे उसका निज धन थे। हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि इस्राएल इस ध्यान को पाने के योग्य नहीं था। उनमें अपना कुछ न होने के कारण वे उसका निज धन नहीं थे। वे निज धन केवल इसलिए थे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें आदर देने और एक विशेष ढंग से व्यवहार करने को उन्हें चुना था। भजनकार अपने लोगों को इस अद्‌भुत आदर के लिए प्रभु की स्तुति करने की चुनौती देता है।

इस्राएल का परमेश्वर सब देवताओं से महान् था (135:5)। ऐसा कोई देवता नहीं

था जिसकी तुलना इस्राएल के परमेश्वर से की जा सके। भजन 135:6 में हमें पाते हैं कि परमेश्वर ने जो चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र में किया। आकाश और पृथ्वी पर ऐसा कोई स्थान नहीं था जहां उसकी सामर्थ नहीं थी। आगे पद में भजनकार हमें आकश, पृथ्वी और समुद्र पर प्रभु की सामर्थ के उदाहरण देता है।

भजन 135:7 में भजनकार हमें याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर पृथ्वी की छोर से कुहरे को उठाता है और वर्षा के लिए बिजली बनाता है। वर्षा, हवा और तूफान के पीछे एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर का हाथ था जिसका प्रकृति के इन तत्वों पर नियंत्रण था। बिजली उसकी आज्ञा पर चमकी। हवा वहीं चली जहां उसने उसे चलने को कहा। उसकी आज्ञा पर पृथ्वी वर्षा के जल से भर गई। उसके समान कोई परमेश्वर नहीं था।

भजन 135:8-12 इस्राएल देश के जीवन में परमेश्वर के कार्य के बारे में बताता है। 8-9 पदों में भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि उसने मिस्र के पहलौठों को कैसे मार डाला था (देखें निर्गमन 12:29-30)। इसी परमेश्वर ने मिस्र में बड़े चिन्ह और चमत्कार भी किये थे। इन चमत्कारों के द्वारा परमेश्वर ने मिस्र की सामर्थ को तोड़कर अपने लोगों को बंधुआई से मुक्त किया था।

परमेश्वर ने अपने लोगों को एक देश देने की प्रतिज्ञा की थी। बंधुआई के देश मिस्र से निकलने पर वे कनान देश के मार्ग की ओर गए। उनकी यात्रा के समय में परमेश्वर ने उन्हें एमोरियों और बाशान देश पर विजय दी थी। कनान देश में पहुंचने पर उसने उन्हें कनानियों पर भी विजयी किया। उसने उन्हें वह देश दिया जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनकी मीरास के रूप में की थी। यद्यपि इस समय में परमेश्वर के लोग परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करते रहे व कुड़कुड़ाते रहे, तौभी वह अपनी प्रतिज्ञा में सच्चा था। भजन 135:13 में भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि प्रभु का नाम सदा स्थिर है और जिस नाम से उसका स्मरण होता है, वह पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा। परमेश्वर के नाम ने भलाई, पवित्रता और सच्चाई को प्रस्तुत किया था। यह कभी बदला नहीं। परमेश्वर अपने लोगों का न्याय चुकाएगा और उन पर तरस खाएगा (135:14)। परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के मिस्र देश से निकलने के समय में उन पर भी दया की थी और कनान देश को विजयी किया था, अत: वह इस्राएल और अपनी संतान के प्रति सदा तक विश्वासयोग्य रहा। उसने उनके शत्रुओं से उनकी रक्षा की और उनकी ज़रूरत के समय में उन पर तरस खाया।

इस्राएल के परमेश्वर के तुल्य और कोई ईश्वर नहीं था। भजन 135:15 में भजनकार ने अपने लोगों को याद दिलाया कि अन्यजातियों की मूरतें सोना-चांदी ही हैं। इन मूरतों के मुंह तो थे परन्तु ये बोल नहीं सकती थीं। उनकी आंखें तो थीं परन्तु वे

देख नहीं सकती थीं। वे मृत और निर्जीव थीं।

इन मूरतों को बनानेवाले भी इनके समान ही थे। ये मूरतें निर्जीव और मूर्ख थीं। ये सोच नहीं सकती थीं। इसी कारण इनकी आराधना करनेवाले भी इनके समान ही थे। इन मूरतों की आराधना करनेवाले मूर्ख थे जो वास्तविकता को देख नहीं पा रहे थे। ये मूरतें उनकी सहायता नहीं कर सकती थीं।

इस्राएल का परमेश्वर भिन्न था। वह दया और सामर्थ का परमेश्वर था। उसने आकाश, पृथ्वी और समुद्र पर शासन किया था। उसकी आज्ञा से पृथ्वी ने जलमग्न होकर फल उपजाए थे। उसने अपने लोगों को शत्रुओं से छुड़ाया था। भजनकार अपने पाठकों को इस अद्‌भुत परमेश्वर की स्तुति करने की चुनौती देता है (135:19)। उसने हारून और लेवी के घराने (याजकीय वंशावली) को प्रभु के नाम की आराधना में अगुवाई करने को बुलाया था।

इस अद्‌भुत परमेश्वर ने यरूशलेम में अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था। वह ऐसा परमेश्वर नहीं था जो कि बहुत दूर था। वह अपने लोगों के बहुत निकट था और उनमें प्रसन्न रहता था (135:21)।

भजन 136 में स्तुति और धन्यवाद का यह विषय जारी रहता है। भजन 136 में इस वाक्यांश की पुनरावृत्ति पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है ''और उसकी करुणा सदा की है।'' भजनकार ने अपने और अपने लोगों में परमेश्वर के प्रेम के स्पर्श को गहराई से अनुभव किया था। भजन में आगे भजनकार अपने पाठकों को उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम का एक के बाद एक उदाहरण देता और उनसे उस प्रेम के लिए धन्यवाद देने को कहता है।

भजन 136:1 में भजनकार ने अपने लोगों को यह याद दिलाते हुए आरम्भ किया कि परमेश्वर भला था। भजन 135:3 में हम पहले ही इस अभिव्यक्ति को देख चुके हैं। वह अपने पाठकों को बता रहा है कि परमेश्वर अपने सभी मार्गों में सिद्ध है। वह पाप और बुराई से अछूता था। परमेश्वर का प्रेम उसके लोगों के प्रति उसकी भलाई की अभिव्यक्ति था।

भजनकार ने परमेश्वर को ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु कहा (136:2-3)। अर्थात्, उसके अतिरिक्त और कोई भी इतने अधिक अधिकार, मर्यादा और शक्ति में नहीं था। इस्राएल के परमेश्वर के समान और कोई परमेश्वर नहीं था। अपनी अद्‌भुत सामर्थ और शक्ति के बावजूद यह परमेश्वर एक प्रेम भी परमेश्वर था, जिसे अपने लोगों से अन्तहीन प्रेम था। बहुत शक्तिशाली और सामर्थी होने पर भी वह व्यक्तिगत भी था।

इस्राएल का परमेश्वर बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म करनेवाला परमेश्वर था (136:4)। उसने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया (136:5)। किसी ने उसे नहीं बताया कि उसे क्या करना है। वह ज्ञान और समझ का स्त्रोत था। उसने आकश बनाया और पृथ्वी को जल के ऊपर फैलाया (136:6)। सूर्य, चांद, तारों को बनाया और उन्हें अपने अपने स्थान पर रखा कि पृथ्वी पर अपने प्रकाश को दें (136:8-9)। सृष्टि के ये सभी अद्‌भुत कार्य परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति अटल प्रेम की अभिव्यक्तियां थीं।

परमेश्वर के प्रेम को अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाए जाने के ढंग में भी देखा जा सकता था (136:10-15)। यहां भजनकार ने इस्राएल को याद दिलाया कि कैसे प्रभु परमेश्वर ने उनकी पुकार को सुनकर मिस्रियों के पहलौठों को मारा था। वह इस्राएल को मिस्र की गुलामी से एक सामर्थी हाथ और शक्ति के बड़े प्रदर्शन के द्वारा बाहर निकाल ले आया था। समस्त मिस्री सेना द्वारा उनका पीछा किये जाने पर प्रभु ने लाल समुद्र को दो भागों में बांट दिया जिससे उसके लोग सूखी भूमि पर से होकर पार जा सकें। फिरौन और उसकी पूरी सेना उस समुद्र में डूबकर मर गई।

जंगल में अपने लोगों के भटकने पर परमेश्वर ने उनकी चिन्ता की। यह उसके अटल प्रेम की एक और अभिव्यक्ति थी (136:16-20)। जब उसके लोग जंगल में भटक रहे थे उसने उन्हें उनके शत्रुओं पर विजयी किया। उसने अपने लोगों का बचाव करने को प्रतापी राजाओं को मारा। एमोरियों के राजा सीहोन (136:19) और बाशन के राजा ओग, (136:20) का वर्णन किया गया है। परमेश्वर ने अपने लोगों को इन दोनों राजाओं पर विजयी किया।

उनके पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञा के अनुसार परमेश्वर ने अपने लोगों को उनकी मीरास के रूप में कनान पर अधिकार दिया (136:32-22)। उसने ऐसा इसलिए नहीं किया कि वे इतनी कृपा और ध्यान पाने के योग्य थे परन्तु इसलिए क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था। उसने इस्राएल को उसकी 'दुर्दशा' में याद रखा और बहुतायत से उनकी ज़रूरतों की पूर्ति की। उसने उन्हें गुलामी से उठाकर उन्हें उनके अपने देश में राजा और रानियों के समान रखा क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था। उसने उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाया और उन पर तरस खाया (136:24)।

इस महान परमेश्वर ने सभी प्राणियों को भोजन दिया (136:25)। समस्त सृष्टि उस पर आश्रित है। उसके बिना कोई जीवन नहीं होगा। वह हमारे सर्वोच्च धन्यवाद और स्तुति को पाने के योग्य है।

विचार करने के लिए:

- भजनकार हमें बताता है कि इस्राएल का परमेश्वर भला है। उसका ऐसा कहने

से क्या अभिप्राय है? इस सच्चाई से आपको क्या शांति मिलती है?

- आज लोग किन देवताओं की सेवा करते हैं? उनकी इस्राएल के परमेश्वर से कैसे तुलना की जाती है?
- इस्राएल के जीवन और इतिहास में परमेश्वर के प्रेम और विश्वासयोग्यता को कैसे प्रदर्शित किया गया था। आपके जीवन में परमेश्वर ने अपने प्रेम को कैसे प्रदर्शित किया है?
- परमेश्वर की अपने लोगों के प्रति प्रेम की एक अभिव्यक्ति को ऐसे देखा गया था कि उसने अपने लोगों को बंधुआई से कैसे छुड़ाया था। परमेश्वर ने आपको किस बंधुआई से छुड़ाया है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर ने इस्राएल को अपना 'निज धन' होने के लिए चुना था। आज प्रभु यीशु में विश्वासी होने के कारण हम उसका निज धन हैं। इस अनर्जित कृपा के लिए कुछ समय उसे धन्यवाद देने को निकालें।
- आप पर व्यक्तिगत रूप से उसके प्रेम के विश्वासयोग्य प्रदर्शन के लिए उसे धन्यवाद दें। आपके जीवन में इस प्रेम के कुछ विशिष्ट उदाहरणों के लिए उसे धन्यवाद दें।
- क्षण भर के लिए परमेश्वर की कुछ विशेषताओं पर विचार करें। जो वह है उसके लिए उसे धन्यवाद दें। उसकी स्तुति करें कि उसके समान कोई और ईश्वर नहीं है।

108. बेबीलोन की नदियों से

पढ़ें भजन संहिता 137:1-138:8

ईमानदारी से कहा जाए तो ऐसे समय भी होते हैं जब प्रभु की स्तुति करना कठिन होता है। ऐसा हमेशा पाप और विद्रोह के कारण नहीं होता है। मेरे जीवन में ऐसे समय रहे हैं जब बोझ और संघर्ष इतने भारी लगते थे कि स्तुति करना लगभग असंभव लगता था। परमेश्वर के लोगों ने अपनी सबसे गंभीर परीक्षा में स्वयं को इस स्थिति में पाया था।

दृश्य बेबीलोन देश का है। परमेश्वर के लोगों को उनके पाप और प्रभु परमेश्वर के प्रति विद्रोह के कारण वहां भेजा गया था। बेबीलोन का यह निर्वासन मनोहर नहीं था। बेबीलोन इस्राएल देश से घृणा करता था। यरूशलेम की नीवों को ढा दिया गया था। उनके सभी मुख्य भवनों को भस्म कर दिया गया था। प्रभु के मन्दिर को दूषित किया गया था। शहरपनाह को तोड़ दिया गया था। वर्तमान समय में जो लोग बेबीलोन में थे उन्होंने अपने शहर और देश के लिए हुए युद्धों में अपने भाइयों, बहनों, पतियों, माता-पिता और बच्चों को खो दिया था। वे सभी अपने घर और देश को खो चुके थे।

बेबीलोन के इन निर्वासनों में जो सबसे बुरी चीज़ हुई थी वह एदोमियों के हाथों जो कुछ हुआ था, वह था। एदोमी एसाव के वंशज थे। याकूब और उसके वंशज (इस्रालियों) और एसाव व उसके वंशज के बीच का इतिहास है। उत्पत्ति की पुस्तक में हमें पढ़ते हैं कि कैसे याकूब ने अपने भाई एसाव से जन्म अधिकार और आशीष को चुराया था। एसाव ने उत्पत्ति 27:41 में यह शपथ खाई थी कि अपने पिता की मृत्यु के बाद वह याकूब को मार डालेगा। जबकि यह पर्याप्त रूप से बुरा था, इस सच्चाई ने तौभी विषय को और भी बुरा बना दिया था कि यह घृणा एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक बढ़ती जानी थी। यहेजकेल 35:5 में एदोमियों के बारे में बोलते हुए, भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने भविष्यवाणी की कि उनके दण्ड का समय आ पहुंचा था क्योंकि उन्होंने इस्राएलियों के विरुद्ध एक युग-युग की पुरानी घृणा को बनाए रखा था।

क्योंकि तू इस्राएलियों से युग-युग की शत्रुता रखता था, और उनकी विपत्ति के समय जब उनके अधर्म के दण्ड का समय पहुंचा, तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया।

यह शत्रुता एसाव और याकूब के दिनों के समान थी। इन दो भाइयों के बीच की कड़वाहट पीढ़ी से पीढ़ी तक बढ़ती गई।

भजन 137 में हम इस 'युग-युग की शत्रुता' के प्रमाण को देखते हैं। पद 7 में ध्यान दें कि इस्राएलियों ने कैसे अपने निर्वासन में परमेश्वर को पुकारा, उसके कारण जो एदोमियों ने उनके साथ उस दिन किया था जब बेबीलोन ने यरूशलेम को ढा दिया था। भजन 137:7 हमें बताता है कि एदोमी बेबीलोनियों से यह कहते थे: ''ढाओ उन्होंने कहा उसको नींव से ढा दो।'' एदोमियों ने बेबीलोन को यरूशलेम का विनाश करने को प्रोत्साहित किया। यह इस्राएल के विरुद्ध बड़ा अपराध था।

अब बेबीलोन में अपनी गुलामी में इस्राएल की संतान यरूशलेम (सिय्योन) और उन आशीषों को याद करके रोए जिनका वे कभी आनन्द उठाते थे। भजन 137: 2 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि इस्राएलियों ने अपनी वीणाओं को मंजनू वृक्षों पर टांग दिया था। यह पराजय का चित्र है। इस्राएल के परमेश्वर की प्रशंसा शांति या खामोशी से की गई। शत्रु विजयी हुआ।

टिंडेल बाइबल शब्दकोश बताता है कि ''वेदियों को सामान्यता पहाड़ी की चोटी पर और मजनू उपवनों की छाया पर बनाया जाता था। (''मजनू'' टिन्डेल बाइबल शब्दकोश इलेक्ट्रोनिक एडीशन, 2001 टिन्डेल हाऊस पब्लिशर्स)। बेबीलोन के उपवनों में इस्राएल के बंधकों ने उनसे उनके देश के गीत गाने को कहा। भजन 137:3 में ध्यान दें कि इस्राएलियों ने अपने बंधकों को ''रूलानेवाले'' कहा। ''चाहकर' शब्द के प्रयोग पर भी दें दें (137:3) इससे हमें यह विचार मिलता है कि बेबीलोनी इस्राएल के लोगों की हंसी उड़ा रहे थे। उन्होंने उन्हें रुलाया और यह चाहा कि वे उनका मनोरंजन करें।

उनकी हानि की पीड़ा इतनी बड़ी थी कि इस्राएली प्रभु के गीतों को नहीं गा सके। स्तुति और आराधना उनके मनों से जा चुकी थी। अब उसके स्थान पर दुख और उदासी का राज्य था। वे और अधिक परमेश्वर की स्तुति नहीं कर सके। उनका दुख बहुत बड़ा था।

इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर को भुला दिया था। उन्होंने यरूशलेम को कभी न भुलाने की वचनबद्धता की थी। (137:5)। भजन 137:6 में जो वे कहते हैं उस पर ध्यान दें।

यदि मैं तुझे स्मरण न रखूं यदि मैं यरूशलेम को अपने सब आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए।

इस्राएल अपने दुख और पीड़ा के समय में परमेश्वर की आशीष को भूला नहीं इस्राएल को पता था कि परमेश्वर उनके शत्रुओं को दण्ड देगा (137:8)। ''बेबीलोन

की बेटी'' की नियति विनाश की थी इस्राएल को अभी भी विश्वास था कि जो कुछ हुआ था उसे परमेश्वर में देखा था और बेबीलोन का न्याय करेगा। बेबीलोन को परमेश्वर ने शाप दिया था। उसका भविष्य अंधकार में था। उसकी संतान नाश होगी और पृथ्वी पर उसकी बुराई और नहीं रहेगी। उसका वंश नाश होगा, उसके बच्चों को पकड़कर चट्टान पर पटका जाएगा (137:9)।

अपने दुख के समय में भी जब स्तुति और आराधना दूर दिख रही थी, इस्राएल अभी भी इस सत्य से जुड़े रहने के योग्य था कि परमेश्वर न्याय और विश्वासयोग्यता का परमेश्वर था। वह उसे नहीं भूलेगा। वह अपने शत्रुओं को उनके बुरे कार्यों के लिए दण्डित करेगा। ऐसे समयों में जब आपके हृदय में आराधना की उपस्थिति नहीं दिखती, परमेश्वर के बारे में आप जिस सत्य को जानते हैं उससे जुड़े रहें।

जबकि उनकी वीणाएं खामोशी के साथ मंजनू वृक्षों पर टंगी थीं, वह दिन आ रहा था जब इस्राएल की स्तुति की आवाज़ को फिर से सुना जाएगा। भजन 138:1 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि वह देवताओं के सामने पूरे मन से परमेश्वर का भजन गाएगा। वह उसके पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करेगा और उसकी करुणा और सच्चाई के कारण उसके नाम की स्तुति करेगा (138:2)। उसने परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर ने उसकी सुन ली और उसे जवाब दिया।

भजन 138:3 में ध्यान दें कि परमेश्वर ने उसे जवाब दिया और उसे बल देकर उसका हियाव बन्धाया। अपने दुख और पीड़ा में भजनकार ने अपने को दीन किया था। उसने अपने कमज़ोर और दुर्बल हृदय को बल दिया।

भजन 138:4 में भजनकार की प्रार्थना यह है कि पृथ्वी के सब राजा प्रभु की स्तुति करें और उसके मार्गों के गीत गाएं। भजनकार को पता था कि उसका परमेश्वर एक महान परमेश्वर था। वह न केवल इस्राएल में स्तुति किये जाने के योग्य था परन्तु बाबुल और समस्त जातियों में भी।

भजनकार को भरोसा था कि परमेश्वर नम्र लोगों की और दृष्टि करेगा (138:6)। अपनी पीड़ा और निराशा में वे इससे आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर उनकी पुकार को सुनेगा। परमेश्वर ने उन अभिमानी लोगों को भी देखा था जो उसके लोगों को सताते थे। जो कुछ उन्होंने किया था उससे वह अज्ञात नहीं था और न ही वह अपने और अपने लोगों के विरुद्ध उनकी अभिमानी बातों के प्रति बहरा हुआ था।

भजनकार को भरोसा था कि परमेश्वर उसके लिए अपने उद्देश्य को पूरा करेगा और कि उसका प्रेम सदा तक रहेगा (138:8)। इस पद में कितनी अद्भुत सांत्वना मिलती है। इन दो भजनों की विषय-वस्तु शत्रु के हाथों दुख व पीड़ा उठाने की है। परमेश्वर के लोगों ने बाबुल के निर्वासन में इतनी अधिक पराजय को अनुभव किया

था कि वे प्रभु की स्तुति भी नहीं कर पाए थे। जबकि इस समय में उनकी कुचली हुई आत्मा स्तुति नहीं कर सकी थी, तौभी यह सच्चाई बनी हुई थी कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर न्यायी था जो इससे भली-भांति परिचित था कि उसके शत्रु क्या कर रहे थे। वह प्रेम का परमेश्वर था, जिसका प्रेम सदा तक बना रहता है। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो अपनी संतान के लिए हमेशा अपने उद्देश्यों को पूरा करता है। ये उद्देश्य या तो सुख में पूरे होते हैं या दुख में, परन्तु ये हमेशा पूरे होते हैं और परमेश्वर के लोगों की भलाई के लिए होते हैं।

प्रभु के साथ मेरे संबन्ध में ऐसे समय रहे हैं जब मेरा मन आनंद नहीं कर पाता था। जितना अधिक मैं परमेश्वर की स्तुति करना चाहता था, तब ऐसे भी समय होते थे जब मेरा मन गाना नहीं चाहता था। चाहे मेरा मन उसकी स्तुति करे या न करे, उसका प्रेम बना रहता है। वह अपने उद्देश्यों पर कार्य करता है और मेरे विश्वासयोग्य बने रहने पर वह मुझमें अपनी योजना को पूरा करेगा। इसके लिए हम सभी धन्यवादी हो सकते हैं।

विचार करने के लिए:

- इस जीवन में क्या हमारे सदा परमेश्वर की स्तुति करनेवाले मन रहेंगे? क्या आपके आत्मिक जीवन में कभी 'शुष्क' समय रहे हैं? एक उदाहरण दें।
- इन 'शुष्क' समयों में सत्य का क्या स्थान होता है? जब हमें ऐसा लगता हो कि हम सिय्योन के गीत नहीं गा सकेंगे, सत्य हमें इसमें से कैसे लेकर जाता है?
- भजन 138 में भजनकार हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे लिए अपने उद्देश्य को पूरा करेगा और कि उसका प्रेम सदा तक बना रहता है। हमारी परीक्षाओं में हमें इससे क्या प्रोत्साहन मिलता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि चाहे हमें कैसा भी क्यों न लगे उसकी सच्चाई कभी नहीं बदलेगी।
- कुछ समय के लिए प्रभु को धन्यवाद दें कि चाहे हमारे साथ कुछ भी क्यों न हो हम यह भरोसा रख सकते हैं कि वह हमारे लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो प्रभु के साथ अपने संबन्ध में कठिन समय का सामना कर रहा है? प्रभु से पूछें कि इस समय में उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

109. सुरक्षित न्याय

पढ़ें भजन संहिता 139:1-140:13

भजन 139 का आरम्भ करने पर भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि प्रभु ने उसे खोजा है। यहां विचार यह है कि प्रभु परमेश्वर उसके बारे में सब कुछ जानता था। परमेश्वर से कुछ नहीं छिपा था। परमेश्वर उसके मन की हर बात को जानता था। वह उसके द्वारा बहाए हर आँसू को जानता था। परमेश्वर से न कोई विचार और न ही कोई इच्छा छिपी थी। जितना भजनकार स्वयं को जानता था परमेश्वर उसे उससे भी अच्छी तरह से जानता था।

उन पदों पर ध्यान दें जो परमेश्वर द्वारा भजनकार को गहराई से जानने के बारे में बताते हैं। प्रभु परमेश्वर को उसके उठने और बैठने का पता था (139:2)। वह भजनकार के विचारों को दूर से आते हुए ही देख लेता था। इसके पहले कि भजनकार अपने मस्तिष्क में किसी विचार को कार्यान्वित करे, परमेश्वर को पता था कि वह क्या सोच रहा था। परमेश्वर को भजनकार के चलने और लेटने की पूरी जानकारी थी। परमेश्वर उसके सभी मार्गों को जानता था। ''पूरी'' शब्द महत्वपूर्ण है। भजनकार द्वारा सोची और की गई ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसे परमेश्वर नहीं जानता था। उसके मुंह में शब्दों के आने के पहले ही परमेश्वर जानता था कि वह क्या बोलेगा (139:4)। परमेश्वर न केवल भजनकार के बारे में सब कुछ जानता था परन्तु उसने उसे चारों ओर से घेरा हुआ था (139:5)। पद 5 में ध्यान दें कि परमेश्वर ने अपना हाथ भजनकार पर रखा था। उस पर अपना हाथ रखते हुए प्रभु परमेश्वर उसकी सुरक्षा कर रहा है। वह उसे अपने विशेष उपकरण, अपनी विशेष कृपा की एक वस्तु के रूप में अलग कर रहा था।

भजनकार के लिए इन चीज़ों का विचार करना ही बहुत अद्‌भुत था (139:6)। परमेश्वर उसके बारे में इतना अधिक कैसे जान सकता है? परमेश्वर उसके बारे में इतना अधिक क्यों जानना चाहता है? परमेश्वर ने अपना हाथ उस पर रखकर उसे अपनी सुरक्षा और विशेष कृपा के लिए अलग क्यों किया? इन प्रश्नों का जवाब नहीं मिल पाएगा। भजनकार इन्हें समझना नहीं चाहता था, इसके विपरीत उसने इनकी सच्चाई और अपनी स्थिति में आनन्दित रहने का चुनाव किया।

ऐसी कोई जगह नहीं थी जहां भजनकार परमेश्वर के आत्मा से बचकर जा सकता था। वह चाहकर भी उसकी उपस्थिति से भाग नहीं सकता था। वह हमें बताता है कि वह आकाश पर भी चढ़े तो वहां भी परमेश्वर उसका स्वागत करने को है। यदि वह अधोलोक में भी चला जाए तौभी प्रभु वहां होगा (139:8)। यदि वह समुद्र के दूसरी ओर भी चला जाए तौभी वहां परमेश्वर का हाथ उसकी अगुवाई करेगा और उसका दहिना हाथ (कृपा का हाथ) उसे पकड़े रहेगा (139:10)। इस विचार में कुछ चीज़ अत्यंत अद्‌भुत है। हम किसी भी ऐसी जगह नहीं जा सकते जहां परमेश्वर हमारे साथ न हो। चाहे हम कितनी भी दूर क्यों न चले जाएं उसका हाथ हमेशा हमारी अगुवाई करेगा। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा।

गहरे अंधकार में भी परमेश्वर की ज्योति उसकी संतान पर चमकेगी। भजन 139:11 में ध्यान दें कि भजनकार हमें बताता है कि चाहे वह अन्धकार में छिप जाने का चुनाव करे, परमेश्वर की ज्याति उसमें भी चमकेगी। ऐसे भी समय होते हैं जब परमेश्वर की संतान ज्योति से अंधकार के मार्ग में जाने का चुनाव करती है। ऐसे भी समय होते हैं जब अपने विद्रोह हम स्वयं को बुराई से घेर लेते हैं। तब भी परमेश्वर हमें नहीं छोड़ेगा। उसकी ज्योति हमारे विद्रोह से बड़ी है। उसका अनुग्रह हमारे पाप से बड़ा है। वह उसी तरह से हमारा पीछा करेगा जैसा उसने पुराने नियम में योना नबी का पीछा किया था, जब तक कि वह हमारे मनों को फिर से जीत नहीं लेता। वह अपनी खोई हुई भेड़ को उसके विद्रोह से निकालने को हर खतरे को उठाएगा।

विश्वासी के लिए चीज़ें चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हो, अंधेरा परमेश्वर के लिए अंधकारमय नहीं होगा। वह अंधकार में भी देखता है और जहां हम होते हैं वहां पहुंचता है। हम पाप और विद्रोह में छिप नहीं सकते क्योंकि जहां कहीं भी हम जाएं उसका हाथ हम पर होगा।

भजन 139:13 में भजनकार परमेश्वर के रचनात्मक कार्य पर हैरान होता है। परमेश्वर ने उसे उसकी माता के गर्भ में रचा था। परमेश्वर ने उसके प्रत्येक भाग को बनाया व उसके चरित्र व व्यक्तित्व को आकार दिया था। उसने यह सब बहुत कोमलता के साथ किया था। भजनकार ने प्रभु की स्तुति की क्योंकि वह भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया था।

भयानक शब्द से अभिप्राय श्रद्धायुक्त भय, आदर और सम्मान से है। अन्य शब्दों में, प्रभु का कार्य ऐसा था कि इसने आश्चर्य और श्रद्धायुक्त भय को बढ़ावा दिया था। भजनकार को ऐसा ही उस समय लगा था जब उसने इस ओर देखा कि उसे कैसे बनाया गया था। मुझे अपने प्रत्येक बच्चे के जन्म में सहायता देने का सौभाग्य मिला था। जिन्होंने भी बच्चे के जन्म को देखा है उनमें इस आश्चर्य और विस्मय का भाव

होता है। ऐसा ही भजनकार को यह जानकर लगा कि परमेश्वर ने उसे उसकी मां के गर्भ में कैसे रचा था।

परमेश्वर ने उसकी मां के गर्भ में उसके बेडौल शरीर को देखा था। यह कहते हुए कि परमेश्वर ने उसके बेडौल शरीर को देखा था, भजनकार यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर को उसकी मां के गर्भ में उसकी उपस्थिति की जानकारी थी। वह यह कह रहा है कि परमेश्वर का हृदय उसके बेडौल शरीर पर लगा था। उसके जन्म लेने से पहले परमेश्वर की उसमें रुचि थी। उसने उसके जीवन के लिए एक उद्देश्य और योजना बनाई थी। यह उद्देश्य और योजना केवल उसके लिए ही विशिष्ट होगी। परमेश्वर ने उसके लिए एक विशेष मार्ग और उसके पूरा करने के लिए एक विशेष उद्देश्य को रखा था। भजनकार फिर से प्रभु परमेश्वर की चमत्कारिक योजना पर कुछ समय के लिए विचार करता है। (139:17)। ये विचार और यह ज्ञान और यह घनिष्ठता उसके मन के कल्पना किये जाने से अधिक थी। वह इन विचारों की गणना भी नहीं कर सकेगा। वे समुद्र की बालू के किनकों भी अधिक थे।

भजन 139 में भजनकार का चिन्तन दुख और परीक्षाओं के संदर्भ में है। उसके चारों ओर दुष्ट स्त्री और पुरुष थे जिन्होंने उसके जीवन को कठिन बना दिया था। इन लोगों का परमेश्वर और उसके मार्गों से कोई लेना देना नहीं था। चाहे परमेश्वर उन्हें जानता भी था और भजनकार के समान उसने उन्हें भी माता के गर्भ में रचा था, तौभी इन लोगों ने एक बिल्कुल भिन्न मार्ग को चुना था। वे खून के प्यासे और दुष्ट लोग थे। वे परमेश्वर से दुष्टता से बोलते थे। वे उसके नाम का दुरुपयोग करते व अनादर करते थे (139:20)।

भजनकार के मन में अपने आस-पास वालों के दुष्ट विद्रोह के कारण घृणा थी। वास्तव में वह हमें बताता है कि उसने परमेश्वर से प्रेम रखनेवालों से घृणा की (139:21)। उसने उन्हें अपना शत्रु जाना (139:22)। भजनकार के मन को इससे दुख होता है कि इन दुष्ट लोगों ने ऐसे अद्‌भुत परमेश्वर से कैसे घृणा की थी। अपने आस-पास उसने जो सुना था उससे उसका दिल टूट गया था। परमेश्वर के प्रति उसका प्रेम और आदर इतना अधिक था कि उससे घृणा करनेवाले उसके बैरी थे। वह प्रभु के नाम के लिए जलन रखता था।

इन दुष्टों के प्रति अपनी भावनाओं पर आश्चर्य कर भजनकार ने परमेश्वर से अपने मन व हृदय की जांच करने को कहा कि कहीं उसमें कोई बुरी चाल तो नहीं है।

जबकि लोगों की घृणा के लिए कोई बहाना नहीं है, भजन परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध के क्षेत्र में हमें चुनौती देता है। क्या हममें परमेश्वर की महिमा के लिए भजनकार के समान जलन है? हमारे प्रति परमेश्वर की देख-रेख और प्रबन्धन के

कारण क्या हम इतने अधिक प्रेरित हुए हैं कि हम हर उस चीज़ से घृणा करते हैं जो पृथ्वी पर उसकी महिमा को अलग करेगी?

इस पृथ्वी पर ऐसे बहुत से लोग हैं जो प्रभु परमेश्वर और उसके मार्गों को आदर नहीं देते हैं। इन दुष्ट लोगों के स्वयं को प्रभु और उसके राज्य के शत्रु के रूप में रखा है। भजन 140 में भजनकार ने परमेश्वर को इन दुष्ट लोगों से उसे छुटकारा देने को पुकारा। उनके मन में उसके विरुद्ध विनाशकारी बुरी योजनाएं रही थीं (140:2)। उनका बोलना सांप का काटना और नाग के विष का सा था। अपने होठों से उन्होंने इस संसार के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को परास्त करना चाहा। अपने मुंह से वे उसकी संतान को हानि पहुंचाना चाहते थे।

भजन 140:4 से हम देखते हैं कि ये दुष्ट लोग भजनकार को फंसाना चाहते थे। वे इस ताक में रहते थे कि किस तरह से उसे गिराएं। वे ऐसा न केवल उसे हानि पहुंचाने को करना चाहते थे परन्तु इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को भी हानि पहुचाने को। हम निश्चित हो सकते हैं कि शैतान हर तरह से हमें गिराने का प्रयास करता रहता है। वह ऐसा हमारे जीवनों में परमेश्वर के कार्य को रोकने और इस संसार में हमारे द्वारा उसके प्रभाव को रोकने के लिए करता है।

भजनकार ने अपने जीवन के इस कठिन समय में परमेश्वर को दया के लिए पुकारा (140:6)। वह उसे सामर्थी उद्धारकर्त्ता और शक्तिशाली छुड़ानेवाले के रूप में जानता था जिसने युद्ध के दिन उसकी रक्षा की थी (140:7)। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर दुष्टों की इच्छा पूरी न होने दे और न ही उनकी युक्ति को सफल करे (140:8)। इसके विपरीत, उसने प्रार्थना की कि उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात उन पर पड़े (140:9)। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर का न्याय बुराई को भस्म करने के लिए जलते अंगारों के समान आए कि वे फिर न उठ सकें (140:10)। उसने प्रार्थना की कि बकवादी पृथ्वी पर स्थिर न होने पाएं और उपद्रवी पुरुष को गिराने के लिए बुराई उसका पीछा करे (140:11)।

भजनकार इस आशा के साथ समापन करता है कि परमेश्वर जिसने उसे चारों ओर से घेरा था और गर्भ में जिसकी रचना की थी वह उनका न्याय चुकाएगा जो उससे प्रेम करते थे जिससे अन्त में उनके पास उसकी स्तुति करने का कारण होगा (140:12-13)।

विचार करने के लिए:

- भजनकार हमें बताता है कि प्रभु परमेश्वर को हमारे बारे में सब कुछ ज्ञात है। इससे आपको आज क्या प्रोत्साहन और चुनौती मिलती है?
- हम अपने प्रभु परमेश्वर के हमारे सभी विद्रोह से बड़े होने के बारे में क्या

सीखते हैं? हमारे परमेश्वर से दूर चले जाने पर क्या वह हमें छोड़ देगा?

- भजनकार हमें याद दिलाता है कि हमें भयानक और अदभुत रीति से बनाए गए हैं। यह परमेश्वर के हममें प्रसन्न होने के बारे में क्या सिखाता है? गर्भपात को लेकर यह हमें परमेश्वर की भावनाओं के बारे में क्या सिखाता है?
- इन भजनों में हम भजनकार की परमेश्वर की महिमा में गहराई से रुचि लेने के संदर्भ में क्या सीखते हैं? क्या आपमें परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साह या उमंग है?
- क्या भजनकार की उसके शत्रुओं के प्रति घृणा और क्रोध उचित थे? यीशु मत्ती 5:44 में हमें इसके बारे में क्या सिखाता है? इस सच्चाई के प्रकाश में कि परमेश्वर पहले से ही हमारे विचारों को जानता है क्या यह व्यक्त करना स्वीकार्य है कि हमें परमेश्वर के लिए कैसा लगता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसकी संतान होने के कारण उसकी आपमें रुचि है। उसे धन्यवाद दें कि उसकी दृष्टि प्रतिदिन आप पर रहती है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसने आपको कितनी अद्भुत रीति से बनाया है और आपके लिए उसका एक विशेष उद्देश्य और योजना है।
- परमेश्वर से आपको उसकी महिमा के लिए एक गहरी भूख और उत्साह देने को कहें।
- प्रभु को इसके लिए धन्यवाद दें कि आप जो अनुभव करते हैं वह आप परमेश्वर को बता सकते हैं। उसके हमारे साथ बहुत धीरजवंत बने रहने के लिए धन्यवाद दें।

110. फुर्ती से आ

पढ़ें भजन संहिता 141:1-143:12

भजनों की पुस्तक में हम पहले ही देख चुके हैं कि विश्वासी का जीवन आराम और शांति का नहीं है। भजनकार बहुत से विरोध और संकट का अनुभव करता है परन्तु वह अपने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति व शांति से भी परिचित है।

भजन 141 के आरम्भ में ध्यान दें कि भजनकार परमेश्वर से फुर्ती से आने को कहता है (141:1)। यह दुख से त्रस्त एक हृदय की पुकार है। यह एक ऐसे हृदय की पुकार है जो यह नहीं जानता कि उसे उस दुख में कितने समय तक रहना है जिसे वह अनुभव कर रहा है। भजनकार अपने जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुंच गया था जहां उसे ऐसा लगता था कि यदि प्रभु परमेश्वर शीघ्रता से नहीं आएगा तो दुख और दर्द उसे परास्त कर देंगे। निराशा में वह प्रभु को पुकारता है।

भजन 141:2 में ध्यान दें कि भजनकार चाहता है कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना को सुगन्धित धूप के समान ग्रहण करे और उसका हाथ फैलाना संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे। धूप का प्रयोग मन्दिर में आराधना के लिए होता था। इसे बलिदान के साथ चढ़ाया जाता था और लैव्यव्यवस्था का लेखक इसका वर्णन इस तरह से करता है, ''सुखदायक सुगन्धित हवन' (देखें लैव्यव्यवस्था 2:2; 6:15)। भजनकार की पुकार यह है कि सहायता के लिए की जानेवाली उसकी पुकार का प्रभाव प्रभु परमेश्वर पर सुगन्धित धूप से साथ चढ़ाए गए बलिदान के समान पड़े। वह चाहता था कि प्रभु इसे सुखदायक सुगन्ध के रूप में ग्रहण करे। उसकी इच्छा है कि प्रभु उसकी पुकार का कृपा सहित जवाब दे।

यह मान लेना आसान होगा कि शत्रु के साथ संघर्षरत् एक व्यक्ति की पहली विनती छुटकारे की होगी। जबकि इस भजन में भजनकार की यही पुकार है, यह केवल उसकी पुकार ही नहीं है। भजन 141:3-4 में ध्यान दें कि भजनकार ने परमेश्वर से कहा कि उसके मुंह और मन की चौकसी करे। हमें इसकी संक्षिप्त रूप से जांच करने की ज़रूरत है। भजन 141:3 में भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके मुंह पर पहरा बैठाए और उसके होंठों के द्वार की रखवाली करे। अपने जीवन के तनाव व संकट के समयों में मैंने स्वयं को उन चीज़ों को कहते पाया है जो मुझे नहीं कहनी चाहिए। तनाव के वश में आकर मैं जिन बातों को बोल जाता था उनके

कारण मुझे अपनी पत्नी और अन्यों से माफी मांगनी पड़ती थी। इस्राएली जंगल में से भटकते हुए इस कारण शिकायत करने व कुड़कुड़ाने लगे थे कि परमेश्वर ने उन्हें कठिनाई में से जाने दिया था। भजनकार को अपने मानव स्वभाव की इस प्रवृत्ति का पता था। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे कुड़कुड़ाने और शिकायत करने से बचाकर रखे। उसने प्रार्थना की कि इस समय में परमेश्वर उसक मुंह से दूसरों को चोट पहुंचाने वाले शब्द न निकलने दे।

इस पर भी ध्यान दें कि भजनकार ने परमेश्वर से कहा कि वह उसके मन को किसी बुरी बात की ओर न फिरने दे। भजन 141:4 में वह दुष्टों की 'स्वादिष्ट भोजन वस्तुओं' के बारे में बोलता है। भजनकार को पता था कि वह कितनी आसानी से पाप की परीक्षा में पड़ सकता है। वह अपने हृदय की पापी दशा को जानता था और उसके लिए संकट के समयों में परीक्षा में पड़ना बहुत सरल होगा। उसने प्रभु से उसे बल देने को कहा कि अपनी कमज़ोर दशा में वह परीक्षा का सामना कर सके। वह चाहता था कि उसका हृदय केवल प्रभु परमेश्वर के प्रति ही समर्पित हो।

भजन 141:5-10 में भजनकार अपने आस-पास के अधर्मियों के बारे में परमेश्वर को बताता है। ध्यान दें कि भजनकार अपने पाठकों को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि यदि धर्मी उसे मारे तो यह कृपा मानी जाएगी। यदि एक धर्मी व्यक्ति उसे झिड़के तो यह उसके सिर पर का तेल ठहरेगा (141:5)। भजनकार सुधार के विरोध में प्रार्थना नहीं कर रहा है। मेरे जीवन में ऐसे समय रहे हैं जब मुझमें सुधार लाने की ज़रूरत होती थी। मुझे एक ऐसे समय की याद है कि जब मैं लगातार एक कलीसिया के विरुद्ध नकारात्मक बोलता जा रहा था जिसके लिए मुझे ऐसा नहीं लगता था कि वह परमेश्वर का काम कर रही थी। मसीह में एक भाई ने मुझे इसके लिए गलत ठहराया। इस सुधार की मुझे ज़रूरत थी। इसे मैंने परमेश्वर से लेने के समान ग्रहण किया। सभी विरोध बुरे नहीं होते हैं। कुछ हमें सही करने और धार्मिकता में प्रशिक्षित करने के लिए होते हैं। भजनकार अपने जीवन में इस तरह के सुधार के कार्य के कारण आनन्दित था। धर्मी की छड़ी से 'मार खाना' सदैव मनोहर नहीं लगता परन्तु यह हमारी भलाई के लिए होता है। इस तरह के सुधार के संदर्भ में हमें भजनकार के समान रवैया रखने की ज़रूरत है।

इस तरह के धर्मी सुधार को ग्रहण करने के लिए भजनकार ने दुष्टों के कार्य के विरोध में प्रार्थना की। मैंने प्रभु के धर्मी सुधार और दुष्टों के कार्य के बीच सदैव कोई दूरी नहीं रखी है। हमें इनमें से एक को ग्रहण कर दूसरे के विरुद्ध पुकार करनी है।

दुष्टों के कार्य का मुख्य उद्देश्य हमें प्रभु परमेश्वर से दूर करना होता है। ये कार्य शत्रु की ओर से आते हैं जो परमेश्वर के राज्य के कार्य में बाधा डालना चाहता है।

धर्मी सुधार यद्यपि कई बार बहुत कठिन होता है, तौभी इसका लक्ष्य सदैव हमें प्रभु परमेश्वर और हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्यों के निकट लाने का होता है।

भजन 141:6-10 में भजनकार दुष्टों के कार्यों के विरुद्ध प्रार्थना करता है। वह हमें यहां यह बताता है कि इन दुष्टों के स्वामी चट्टान के पास गिराए जाएंगे। अन्य शब्दों में, उनके न्याय का दिन आ रहा था। परमेश्वर उन्हें अपने राज्य के विरोध में कार्य नहीं करते रहने देगा। उस दिन ये दुष्ट जान जाएंगे कि भजनकार ने परमेश्वर के जिस वचन से प्रेम किया व जिसकी घोषणा की थी, वह सत्य था (141:6)।

इन दुष्टों ने धर्मी को बहुत पीड़ा दी थी। वास्तव में भजन 141:7 भजनकार हमें बताता है:

जैसे भूमि में हल चलाने से ढेले फूटते हैं, वैसे ही हमारी हड्डियाँ अधोलोक के मुँह पर छितराई हुई हैं।

यहां धर्मी के गहरे संघर्ष और पीड़ा का चित्र है। उनकी तुलना भूमि से की गई है जिसे हल से तोड़ा गया है। शत्रु उन्हें वैसे ही तोड़ रहा है जैसे हल भूमि को तोड़ता है। उनकी हड्डियाँ बिखर गई थीं और वे मरने को तैयार थे।

इतने विरोध में भी, भजनकार अपनी अपनी आँखें प्रभु परमेश्वर पर लगाए रहता है। भजन 141:8 में ध्यान दें कि वह उसे यहोवा, प्रभु कहता है। अन्य शब्दों में, उसका शत्रु के क्रोध पर भी नियंत्रण था। जबकि ऐसा लगता था कि शत्रु का नियंत्रण था, तौभी एक सर्वोच्च अधिकार था जो उनके ऊपर शासन करता और उन्हें अपने कामों का लेखा देने को कहता है। इस अधिकार अर्थात् सर्वशक्तिमान प्रभु की ओर ही भजनकार अपना ध्यान लगता है। उसने परमेश्वर को शत्रु पर शासन करने और अपने जीवन को बचाने के लिए पुकारा। जब शत्रु ने उसकी भूमि का विनाश कर दिया तब भजनकार ने अपने प्रभु परमेश्वर की शरण ली। उसे पता था कि केवल उसमें ही वह सुरक्षित रह सकता है।

दुष्टों ने उसके लिए फन्दे लगाए थे (141:9)। यह एक शिकारी के अपने शिकार की खोज करने का चित्र है। वास्तव में ऐसा ही हो रहा था। शैतान परमेश्वर के कार्य का नाश करने की खोज में रहता है। वह विश्वासी के लिए फन्दे लगाता है। वह सबसे अधिक विश्वासी को उसकी परीक्षाओं में गिरने की अभिलाषा करता है। इससे पहले कि वे परमेश्वर के राज्य की महिमा के लिए प्रयोग किये जाएं वह उनका नाश करना चाहता है। हम इससे निश्चित हो सकते हैं कि शत्रु ने आज भी हमारे लिए बहुत से फंदे लगाए हैं। यह खुले सताव के रूप में भी सामने आ सकता है। अन्य समयों में ऐसा अनैतिकता, झूठे सिद्धान्तों या घमण्ड के कारण होगा। हम इससे निश्चित हो सकते हैं कि शैतान विश्वासी को गिराने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। भजन

141:9 में भजनकार की प्रार्थना पर ध्यान दें कि परमेश्वर उसे शत्रु के फन्दे से बचाकर रखे। उसने कहा कि दुष्ट लोग अपने जालों में आप ही फंसे और वह बच निकले (141:10)।

भजन 142 में भजनकार हमें याद दिलाता है कि वह परमेश्वर को पुकारता रहेगा। जब हमारा विरोध किये जाने के साथ-साथ प्रभु हमें तत्काल ही जवाब नहीं देता है, तब प्रार्थना करना छोड़ देना और आशा न रखना सरल होता है। भजनकार ऐसा करने से इन्कार करता है। भजन 142:1 में वह हमें बताता है कि मैं यहोवा की दोहाई देता और उससे दया करने को कहता हूँ। उसने प्रभु की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया कि उसे छुटकारा मिलेगा, इस कारण वह परमेश्वर से उसके लिए विश्वासयोग्य बने रहने को कहेगा जिसके प्रतिज्ञा उसने की थी। वह इस छुटकारे की खोज करना बन्द नहीं करेगा।

पीड़ा भजनकार के जीवन में थी। उसने उस पीड़ा को परमेश्वर को बताने में संकोच नहीं किया। ध्यान दें कि उसने अपनी शिकायत को उसके सामने उण्डेल दिया था (142:2)। जो कुछ भी उसके मन में था उस सबको बताने का उसे कोई भय नहीं था और न ही परमेश्वर को उन संघर्षों को बताने का जिनका वह सामना कर रहा था। परमेश्वर से खुलकर बात करना कितनी अद्‌भुत चीज़ है। वह हमारी शिकायत के लिए अपने कानों को बन्द नहीं करता है। वह दया के साथ सुनता है।

भजनकार को पता था कि परमेश्वर उसके द्वारा सामना किये जानेवाले संघर्षों से अवगत था। परमेश्वर को पता था कि उसकी आत्मा व्याकुल हो रही थी। परमेश्वर को उन समस्याओं की जानकारी थी जिनका सामना वह उस मार्ग पर कर रहा था जिस पर चलने को उसे बुलाया गया था (142:3)। दुष्टों ने उसके मार्ग में फन्दे लगाए थे। परमेश्वर यह भी समझ गया था कि भजनकार सुनसान मार्ग पर चला था। वह परमेश्वर को बताता है कि जिन समस्याओं का सामना वह कर रहा था उसमें कोई भी उसकी सुधि लेनेवाला नहीं था। कोई भी उसकी सहायता के लिए नहीं आया था। किसी को उसके जीवन की चिन्ता नहीं थी (142:4)।

संकट के इन समयों में केवल परमेश्वर ही भजनकार का शरणस्थान था। वास्तव में उसके लिए केवल परमेश्वर ही बचा था। जब मित्रों ने उसे छोड़ दिया था और शत्रु उसके विरोध में आया, भजनकार को पता था कि परमेश्वर उसका भाग था। परमेश्वर उसे कभी नहीं छोड़ेगा (142:5)।

अपनी ज़रूरत के समय में भजनकार ने परमेश्वर को पुकारा। उसने परमेश्वर से उसकी पुकार को सुनने की विनती की। उसने उससे उसकी सहायता के लिए आने और उनसे बचाने की विनती की जो उसका पीछा कर रहे थे। उसे पता था कि वे

उससे अधिक सामर्थी थे (142:6)। उसे यह भी पता था कि परमेश्वर ही उसे स्वतंत्र कर सकता है।

भजन 142:7 में भजनकार की अभिलाषा पर ध्यान दें। वह स्वतंत्र होना चाहता था ताकि प्रभु की स्तुति कर सके। यह उसके मन की पुकार थी। जीवन में वह जिस पीड़ा व दुख का अनुभव कर रहा था वह उसके लिए बहुत अधिक था। इसने उसे भीतर तक फाड़ डाला था और उसकी आत्मा को प्रभु की स्तुति और धन्यवाद करने से रोका था। भजनकार इस स्थान पर बने रहना नहीं चाहता था। वह फिर से खुलकर और आनन्द से प्रभु की आराधना करना चाहता था। वह प्रभु की घनिष्ठ सहभागिता को जानना और उसकी उपस्थिति को अनुभव करना चाहता था। वह चाहता था कि दूसरे उसके जीवन में परमेश्वर की भलाई को देखें। उसकी प्रार्थना केवल पीड़ा व दुख से मुक्ति पाने की नहीं है। उसकी सबसे बड़ी इच्छा यह है कि प्रभु उसके निकट आए और कि उसका मन उस प्रभु के लिए फिर से उत्साह की आग से भर जाए जिससे वह बहुत प्रेम करता था।

भजन 143 में भजनकार इसी विषय को जारी रखता है। वह परमेश्वर से उसकी प्रार्थना को सुनने और उसकी गिड़गिड़ाहट पर कान लगाने को कहता है। वह परमेश्वर से उसे आराम देने के लिए आने को कहता है (143:1)। ध्यान दें कि वह यह निवेदन प्रभु की सच्चाई और धार्मिकता के आधार पर करता है। उसे पता था कि परमेश्वर एक धर्मी परमेश्वर था। पाप और बुराई दण्ड दिये बिना नहीं छोड़े जाएंगे। उसे यह भी पता था कि परमेश्वर न केवल अपनी प्रतिज्ञा के प्रति सच्चा था परन्तु अपनी संतानों के प्रति भी। वह परमेश्वर से ऐसा कुछ भी नहीं करने को कहता जो उसके उद्देश्य या चरित्र के प्रतिकूल हो। उसे भरोसा है कि परमेश्वर सच्चा और धर्मी है, वह उसकी प्रार्थना सुनकर उसकी सहायता के लिए आएगा।

भजन 143:2 में ध्यान दें कि भजनकार अपने पापी होने के बारे में जानता था। उसे पता था कि परमेश्वर उसके पापों का भी न्याय करेगा। वह सहायता की मांग करते हुए परमेश्वर के पास आया क्योंकि उसे पता था कि वह उसकी सहायता पाने के योग्य है। वह समझ गया था कि परमेश्वर उसमें आसानी से गलती का पता लगा सकता है। तौभी, उसकी असफलताओं और पाप के बावजूद भजनकार को अभी भी छुटकारे की पुकार करने का भरोसा है। वह परमेश्वर से कहता है कि अपने दास के पाप के कारण उसका न्याय न करे। वह जानता है कि इस पृथ्वी पर कोई भी परमेश्वर के सम्मुख सिद्ध जीवन नहीं जी सकता। हममें से प्रत्येक परमेश्वर द्वारा हमारे जीवनों के लिए ठहराए मानदण्ड से गिर गया है। क्या यह परमेश्वर की दया, क्षमा और अनुग्रह नहीं थे जिनके कारण हम परमेश्वर की सहायता पाने को उसके पास जा सके।

यद्यपि भजनकार को पता था कि वह हमेशा प्रभु के सम्मुख असफल ही रहा था, तौभी वह उससे सहायता पाने को उसके पास आता है। वह खुलकर अपनी समस्याएं प्रभु परमेश्वर को बताता है। शत्रु उसका पीछा कर रहा था और उसे चूर करके मिट्टी में मिला रहा था (143:3)। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि मानो वह अन्धकार में रह रहा था। परमेश्वर की उपस्थति की रोशनी छिपी हुई दिख रही थी। उसकी आत्मा व्याकुल थी और वह निराशा का अनुभव कर रहा था (143:4)। यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि भजनकार निराशा का अनुभव कर रहा था तौभी उसका भरोसा प्रभु पर ही था। इस जीवन में ऐसे भी समय होंगे जब खुशी और आनन्द लुप्त होते दिखेंगे। ये हमें परमेश्वर पर भरोसा करने और आनंद पाने के लिए उसकी ओर देखने से रोकनेवाले नहीं हों। मेरे जीवन में ऐसे बहुत से समय रहे थे जब तनाव व निराशा के होने पर मुझे प्रभु पर भरोसा करना पड़ा था। यह प्रभु पर विश्वास ही था जिसने मुझे उस समय से बाहर निकाला जब मेरा मन और भावनाएं काम नहीं कर रहे थे। ऐसा लगता है कि भजनकार इस भजन में ऐसा ही अनुभव कर रहा था।

भजन 143:5-6 में ध्यान दें कि निराशा का अनुभव करने पर भजनकार क्या करता है। जो भोग अपने बोझ को उठाने के कारण निरुत्साहित और निराश हैं वह उनके लिए एक अद्‌भुत शिक्षा है। वह यहां इन पदों में हमें दो शिक्षा देता है।

पहली, निराशा का अनुभव करने पर, भजनकार पुराने दिनों को याद करता है (भजन 143:5)। पुराने समय के दिन उसके लिए इस समय कैसे सहायक होंगे? भजनकार अपने जीवन की ओर पीछे देखता और परमेश्वर के लोगों के इतिहास पर दृष्टि करता है, वह यह देख पाता है कि परमेश्व सदा विश्वासयोग्य रहा था। वह अपने जीवन में पलटकर उन समयों को देख सका जब परमेश्वर शत्रु पर विजयी हुआ था। वह अपने देश में दूसरों के जीवनों पर परमेश्वर की आशीष और विजय की कहानियों को स्मरण कर सका। इन कहानियों ने उसे याद दिलाया कि जिस परमेश्वर की वह सेवा करता था वो एक महान और शक्तिशाली परमेश्वर था। जिसका सामना उसने किया उसी चीज़ का सामना दूसरों ने भी किया था और विजयी रहे थे। निराशा और तनाव का अनुभव करने पर कुछ समय यह याद करने में बिताएं कि परमेश्वर ने अतीत में क्या किया था। जो कुछ भी उसने आपके लिए किया था उससे आपका भरोसा और विश्वास बढ़ने पाए।

दूसरी, निराशा का अनुभव करने पर भजनकार ने अपने हाथ परमेश्वर की ओर फैलाने का चुनाव किया (143:6)। निराशा के समय में हमारे लिए परमेश्वर को अनदेखा करना आसान होता है। हमारी समस्याएं उसकी उपस्थिति को हमारी दृष्टि से छिपाने लगती हैं और हमें आशा नहीं रहती। भजनकार हमें यहां यह बताता है कि

संघर्ष और निराशा के इन समयों में उसने परमेश्वर की खोज करने का निर्णय लिया। उसने अपने हाथ उसकी ओर यह विनती करते हुए फैलाए कि उसकी सहायता के लिए आए। उसने अपने हाथ उसकी ओर उससे उसकी उपस्थिति को प्रगट करने की मांग करते हुए फैलाए।

अपनी निराशा में भजनकार ने परमेश्वर को उसकी सुनने और उसे जवाब देने को पुकारा। उसने परमेश्वर को याद दिलाया कि उसकी आत्मा गिर रही है (143:7)। उसे पता था कि यदि प्रभु उसके पास नहीं आता तो उसका सर्वनाश हो गया होता। उसकी एकमात्र आशा प्रभु परमेश्वर में थी। उसे पता था कि उसके प्राण की गहरी प्यास को केवल एक चीज़ ही संतुष्टि दे सकती थी। केवल परमेश्वर ही खालीपन को भर सकता।

भजनकार ने आशा नहीं छोड़ी। उसने परमेश्वर से अपने अटल प्रेम का प्रमाण देने को कहा। वह अपने को प्रभु पर भरोसा करने को समर्पित करता है और उससे उस मार्ग पर से उसे ले चलने को कहता है जिस पर उसे चलना है (143:8)। यह विशेष रूप से उस समय में महत्वपूर्ण था जब शत्रु उससे सता रहा था और उसकी आत्मा व्याकुल थी। इन समयों में उसने अपनी समझ पर भरोसा नहीं रखा। उसे पता था कि अपने मार्गदर्शन के लिए उसे परमेश्वर की ज़रूरत थी।

अन्त में भजनकार प्रभु के सामने चार निवेदन रखता है। उसकी पहली विनती है कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं से बचाएं (143:9)। वह नहीं चाहता कि उसके शत्रु उस पर विजयी हों। वह अपने को शत्रु के प्रति समर्पित करना और हार को स्वीकार करना नहीं चाहता। उसे पता है कि परमेश्वर उसे किसी भी चीज़ से बड़ा है जो शत्रु उसके साथ करना चाहता है। उसे यह भी पता है कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है और वह उसकी सहायता के लिए आएगा। इसलिए वह कहता है कि उसके जीवन में शत्रु का कार्य असफल हो।

भजन 143 के इस अन्तिम भाग में भजनकार की दूसरी विनती यह है कि परमेश्वर उसे सिखाए कि वह उसकी इच्छा को कैसे पूरा करे (143:10)। भजनकार के लिए ये कठिन समय थे। जिन संकटों का सामना वह कर रहा था उनसे उसका मन धुंधला पड़ गया था। वह समझ नहीं पा रहा था कि परमेश्वर क्या कर रहा है या उसकी पीड़ा से परमेश्वर का क्या उद्देश्य है। इसी कारण वह कहता है कि प्रभु इस समय में उसे वह सब सिखाए जिसे सीखने की उसे ज़रूरत है। दुर्घटना के पश्चात् मुझे एक ऐसे समय की स्मृति है कि जब मेरे जीवन में निश्चियता के कारण मैंने परमेश्वर से कहा था: ''प्रभु, मैं इस अनिश्चियता का सामना करने को तैयार हूं परन्तु में तुझसे एक चीज़ मांगता हूँ। मुझे वह सब सिखा जो मुझे सिखाना ज़रूरी है। मुझे

इसके दूसरी ओर न आने दे।'' मैं तब तक इन संघर्षों का सामना करने को तैयार था जब तक कि ये मुझे परमेश्वर की निकटता में ला रहे थे। यही भजनकार की पुकार है। इन कठिनाईयों का सामना किये जाने पर वह चाहता था कि परमेश्वर इनका प्रयोग अपनी महिमा और भजनकार की भलाई के लिए करे।

भजनकार की तीसरी विनती है कि परमेश्वर उसके जीवन को बचाए और उसे इस संकट से बाहर निकाले। ध्यान दें कि वह परमेश्वर से इसमें अपने लिए कुछ नहीं मांगता। वह अपने जीवन को परमेश्वर के नाम के निमित्त बचाने या जिलाने को कहता है (143:11)। भजनकार यहां क्या कह रहा है? वह जीवित रहना चाहता है ताकि वह परमेश्वर की प्रशंसा उसकी भलाई के लिए कर सके। वह जीवित रहना चाहता है ताकि वह दूसरों को परमेश्वर की भलाई के बारे में बता सके। अपने छुटकारे में भी उसकी इच्छा परमेश्वर की महिमा करना है।

अन्त में भजनकार प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को शांत कर उनका नाश करे। वह ऐसा इसलिए करने को कहता है क्योंकि वह परमेश्वर का दास था (143:12)। उसे विश्वास था कि परमेश्वर स्वयं उसकी चिंता करेगा। परमेश्वर के अटल प्रेम के कारण भी उसने ऐसा कहा था। उसने परमेश्वर के उससे प्रेम करने की सच्चाई पर कभी संदेह नहीं किया। अपने जीवन के इस समय में यद्यपि वह बहुत सी बाधाओं का सामना कर रहा था, तौभी उसे अपने लिए परमेश्वर के प्रेम पर बहुत अधिक भरोसा था।

भजनकार द्वारा सामना की जानेवाली समस्याएं बहुत वास्तविक थीं। वह निराशा के स्थान पर पहुंच गया था। उसका प्राण चूर-चूर हो गया था। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का जवाब देने में देरी की थी। उसने प्रभु परमेश्वर पर अपनी आशा को नहीं छोड़ा था। उसे पता था कि केवल उसमें ही संतुष्टि थी। उसे पता था कि जिन बातों से होकर वह जा रहा था उनका प्रयोग यह सर्वसामर्थी प्रभु उसे सिखाने और अपने निकट लाने में करेगा।

विचार करने के लिए:

- भजन 141 में भजनकार किन प्रलोभनों के विरुद्ध प्रार्थना करता है? अपने संघर्ष में क्या आप कभी इन प्रलोभनों का शिकार हुए हैं?
- प्रभु के सुधार और शत्रु के विरोध के बीच क्या अन्तर है?
- आज शत्रु आपके सामने कौन से जाल लगाता है?
- क्या हम इस योग्य हैं कि परमेश्वर हमारी सहायता के लिए आए? इन भजनों में हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? वह हमारी प्रार्थनाएं क्यों सुनता है?
- क्या विश्वासी शत्रु के विरोध के कारण अपने जीवनों में निराशा के स्थान पर

आ सकते हैं? निराशा या तनाव अनुभव करने पर भजनकार हमसे क्या करने को कहता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से जीवन में कठिनाई और संघर्ष के समयों में आपके मुंह की पहरेदारी करने को कहें। उससे आपको बलवंत बनाने को कहें ताकि आप शत्रु के प्रलोभन का शिकार न बनने पाएं।
- जीवन के संकटों के द्वारा परमेश्वर आपके जीवन में जिन सुधारों को लाता है उससे उन्हें ग्रहण करने में आपकी सहायता करने को कहें। जिन दुखों का सामना आप कर रहे हैं उनके माध्यम से परमेश्वर आपको जो भी सिखाना चाहता है उससे आपको सिखाने को कहें।
- आपके जीवन में चीज़ों के कठिन हो जाने पर भी उससे आपको स्तुति करने का अनुग्रह देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह सच्चाई और धार्मिकता का परमेश्वर है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसकी सहायता पाने के योग्य न होने पर भी वह क्षमा और अनुग्रह का परमेश्वर है।

111. चौकसी करनेवाला प्रभु

पढ़े भजन संहिता 144:1-145:21

भजनों की पुस्तक में बार-बार भजनकार इस सच्चाई पर अपने आश्चर्य को व्यक्त करते हैं कि इस्राएल का प्रभु परमेश्वर दया में होकर पापी लोगों तक पहुंचा। इन अगले दो भजनों में हम इस्राएल के अद्‌भुत और पवित्र परमेश्वर तथा उसके पापी लोगों के बीच अन्तर को देखते हैं।

भजन 144:1 में भजनकार ने अपनी चट्‌टान, अपने प्रभु, की स्तुति करते हुए आरम्भ किया। चट्‌टान को बेधा नहीं जा सकता। इसके पीछे छिपनेवालों के लिए चट्‌टान एक सुरक्षित आश्रय होती है। यही प्रभु अपने लोगों के लिए था। जब तक हम इस चट्‌टान के पीछे छिपे हैं तब तक शत्रु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

भजन 144:1 में इस पर भी ध्यान दें कि प्रभु ने भजनकार के हाथों को लड़ने और युद्ध करने के लिए तैयार किया था। अन्य शब्दों में, भजनकार की समस्त युद्ध प्रवीणता प्रभु की ओर से थी। यहां पर इस पर भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि भजनकार स्वयं युद्ध में लिप्त था। धार्मिकता के युद्ध में हम सक्रिय सहभागी हैं। परमेश्वर हमारी सुरक्षा और आश्रय है, परन्तु इस युद्ध में जाने के लिए वह हमें प्रशिक्षित और तैयार भी करता है। प्रयास हमें करना है।

भजनकार अपने पाठकों को आगे याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर उसका परमेश्वर उसका प्रेमी परमेश्वर और गढ़ भी था (144:2)। गढ़ एक आश्रय होता है। इस पर ध्यान दें कि प्रभु भजनकार के लिए गढ़ क्यों था। उसके प्रेमी परमेश्वर होने के कारण उसने उसे अपने गढ़, ऊंचे स्थान, छुड़ानेवाले और ढाल के रूप में चुना था। प्रेम ने ही प्रभु को भजनकार की देखभाल करने को प्रेरित किया था।

इस प्रेम और सुरक्षा पर विचार करने पर भजनकार अभिभूत होने का अनुभव करता है। वह कहता है ''हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, या आदमी क्या है, कि तू उसकी कुछ चिन्ता करता है?'' हम इस प्रेमी सुरक्षा को पाने के योग्य नहीं हैं। भजन 144:4 में ध्यान दें कि भजनकार स्मरण करता है कि मनुष्य तो सांस के समान है और उसके दिन ढलती हुई छाया के समान है। हम आज यहां हैं और कल नहीं होंगे। एक ही क्षण में जीवन नहीं रहेगा। मानव जीवन कुछ समय का

है। अनन्त और अनश्वर इस्राएल के परमेश्वर की तुलना में मनुष्य ढलती छाया के समान हैं। हमारा नाशमान और पापी स्वभाव परमेश्वर को हममें अद्‌भुत रूप से कार्य करने को प्रेरित करता है।

इस्राएल के इस अनन्त परमेश्वर से तुलना किये जाने पर जब भजनकार को छोटेपन की अनुभूति हुई, उसने इस छोटेपन को परमेश्वर से उसे दूर रखने से ठुकरा दिया। सभी सुननेवालों के लिए परमेश्वर का निमंत्रण खुला है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपने को इस योग्य नहीं मानते कि वे इस निमंत्रण को कभी ग्रहण कर पाएंगे। अयोग्यता का अनुभव करने के कारण वे परमेश्वर के निकट नहीं आते। यहां भजनकार के साथ ऐसा नहीं है। भजन 144:5 में ध्यान दें कि भजनकार कैसे परमेश्वर से स्वर्ग को नीचा करके उतर आने को कहता है। उसने प्रभु से पहाड़ों को छूने की प्रार्थना की कि उनसे धुआं उठे। यहां पहाड़ों का संदर्भ उस संदर्भ में भी हो सकता है जब मूसा के दिनों में परमेश्वर सीनै पर्वत पर आया था (देखें निर्गमन 19:18)।

भजनकार की अभिलाषा परमेश्वर की महिमा के प्रगट होने की है। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर स्वयं को पवित्रता में प्रगट करे। उसने परमेश्वर से बिजली कड़काकर उसके शत्रुओं को तितर-बितर कर देने की विनती की। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को घबरा दे (144:6)। भजनकार ने प्रभु से यह कहने में भी संकोच नहीं किया कि अपने हाथ को स्वर्ग पर से बढ़ाकर उसके जीवन को उन लोगों से बचाए जो कि उसका नाश करना चाहते हैं। उसे अपने चारों ओर केवल संकट और भय ही दिखा। वह इसे 'महासागर' कहता है। वह यहां एक ऐसे पुरुष या स्त्री के चित्र को चित्रित करता है जो एक बड़ी नदी के संकट में फंसा/फंसी है। नदी की लहरें उसे बहाकर ले जा रही हैं और अब छुटकारे के लिए वह परमेश्वर को पुकारता/पुकारती है। भजनकार यह जान गया था कि उसकी एकमात्र आशा प्रभु परमेश्वर में थी जो उसकी सहायता के लिए स्वर्ग से नीचे आ रहा था। भजनकार हमें बताता है कि यह संकट परदेशियों के कारण था। अविश्वासी उसका विरोध कर रहे थे।

भजन 144:8 में हम पाते हैं कि भजनकार को संकट में डालने वाले ये अविश्वासी उसके बारे में व्यर्थ बातें बोलते थे। भजनकार इससे निराश नहीं हुआ था। उसने इसके विपरीत अपने प्रभु परमेश्वर पर भरोसा करने का चुनाव किया था। वह अपनी वचनबद्धता को दस तारवाली सारंगी बजाकर प्रभु के लिए एक नया गीत गाने के द्वारा व्यक्त करता है (144:9)। बल 'नया' शब्द पर दिया जाना चाहिए। भजनकार को यह विश्वास था कि वह प्रभु के छुटकारे को देखेगा और उस छुटकारे के बारे में एक नया गीत प्रभु की भलाई और छुटकारे पर एक व्यक्तिगत चिन्तन भी होगा। यह

उस प्रभु के लिए एक गीत होगा जिसने राजाओं को विजय दी और अपने दास को तलवार की मार से बचाया था (144:10)।

पद 12 में ध्यान दें कि भजनकार अपने देश और अपनी संतान की समृद्धि के लिए परमेश्वर की खोज करता है। शत्रु द्वारा संकट दिये जाने और सताए जाने पर उसे कोई खुशी नहीं मिली थी। वह विजय में रहना चाहता था। वह चाहता था कि उसके बेटे अच्छे पौधों के समान बढ़े हुए हों (144:12)। वह अपनी बेटियों को कोनेवाले पत्थरों के समान देखना चाहता था जो मन्दिरों के पत्थरों की नाईं सुन्दर व स्थायी हों। वह अपने भण्डरों को भांति-भांति के अन्न से भरे हुए देखना चाहता था। वह चाहता था कि उसकी भेड़ बकरियां उसके मैदानों में हज़ारों की मात्रा में बच्चों को जन्म दें (144:13) और उसके बैल खूब लदे हुए हों (143:14)। वह चाहता था कि शहरपनाह की सभी दरारें ठीक की जाएं और समस्त बंधुआई और निराशा को रोका जाए (144:14)। जबकि समस्त समृद्धि आशीष नहीं लाती है, भजनकार हमें बड़ी चीज़ों के लिए परमेश्वर की खोज करने के बारे में सिखाता है। वह परमेश्वर की आशीष को अपने समाज और अपनी संतान पर उंडेलते हुए देखना चाहता है। उसे विश्वास था कि परमेश्वर की मनसा भी अपनी संतान को आशीष देने की थी।

हमारे लिए यह याद रखना ज़रूरी है कि भजनकार को अपने मनुष्य होने का पूर्णतया ज्ञान था। वह परमेश्वर की सुरक्षा को हल्के रूप से नहीं लेता। उसे पता है कि एक अनन्त और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सम्मुख वह एक पापी मनुष्य है। इस असीम तुलना के बावजूद भजनकार परमेश्वर की सहायता के लिए उसके पास आया। वह यह जानते हुए उसके प्रेम और दया के लिए विनती करता है कि परमेश्वर उसे बचाने के लिए आएगा और उसे व उसके लोगों को समृद्धि देगा। अपनी अयोग्यता को जानने और तौभी परमेश्वर से आशीष पाने के लिए उसके पास आने के बीच के संतुलन को बनाए रखना सदैव सरल नहीं होता।

परमेश्वर की दया और प्रेम के बदले में भजनकार ने प्रभु के नाम को ऊँचा करने और सदा उसके नाम की स्तुति करने की वचनबद्धता की (145:1)। प्रतिदिन वह अपने प्रभु परमेश्वर की स्तुति करेगा और उसके नाम का भजन गाएगा (145:2)। जिस परमेश्वर की वह सेवा करता था वह एक महान व स्तुति के योग्य परमेश्वर था। कोई भी कभी उसकी महानता की सीमा को नहीं जान सकता (145:3)।

इस भरोसे के साथ कि प्रभु परमेश्वर उसकी संतान व नाती-पोतों की चिन्ता करेगा। भजनकार ने अपने पाठकों को भजन 145:4 में बताया कि परमेश्वर के कामों की प्रशंसा और उसके पराक्रम के कामों का वर्णन पीढ़ी-पीढ़ी होता चला जाएगा। प्रत्येक पीढ़ी उसके महिमामयी ऐश्वर्य और प्रताप को बताएगी। भजनकार स्वयं उसके

भांति भांति के आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करेगा। अर्थात् वह परमेश्वर द्वारा की गई कठिन चीज़ों पर विचार करेगा। वह उन कामों की स्मृति को अपने भीतर रहने देगा जिससे उसका मन सदा अभारी बना रहे। भजनकार अपने लिए परमेश्वर द्वारा किये गये अद्‌भुत कार्यों पर विचार करना नहीं छोड़ेगा। भजन 145:6 में उसने अपने पाठकों को बताया कि वह परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों और उसके बड़े बड़े कामों का वर्णन करेगा। आनेवाली पीढ़ी परमेश्वर की बहुतायत की भलाई की चर्चा करेगी और उसके धर्म का जयजयकार करेगी (145:7)।

परमेश्वर अनुग्रहकारी और दयालु है। वह विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामयी है (145:8)। वह भला है और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है (145:9)। उसकी बनाई गई हर चीज़ उसकी स्तुति करने को ऋणी है (145:10)। परमेश्वर से प्रेम करनेवाले उसके कार्य और दया के कारण उसकी स्तुति और धन्यवाद करेंगे। उसके सभी धर्मी जन उसके राज्य और प्रताप की महिमा को बताएंगे (145:11-12) एक विश्वासी का यह कर्तव्य बनता है कि जहां कहीं भी वह जाएं वह दूसरों को परमेश्वर की भलाई और प्रेम के बारे में बताए।

भजन 145:13 में भजनकार ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि परमेश्वर का राज्य एक अनन्त: कालीन राज्य था और प्रभु की प्रभुता पीढ़ियों तक बनी रहती है। परमेश्वर के राज्य का कभी अन्त न होगा। सर्वशक्तिमान और अनन्त परमेश्वर होने पर भी वह अपने लोगों में प्रसन्न रहनेवाला परमेश्वर भी है। वह उनके व अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति सदैव विश्वासयोग्य रहेगा। वह अपनी समस्त सृष्टि को प्रेम दिखाता है (145:13)। यहां हम पुन: परमेश्वर की महिमा और प्रताप तथा उसकी सृष्टि होने के कारण हमारे प्रति चिंता रखने के बीच अन्तर में पड़ जाते हैं।

यह सर्वशक्तिमान प्रभु जो प्रेमी परमेश्वर भी है, सब गिरते हुओं को संभालता है और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है (145:14)। परमेश्वर की समस्त सृष्टि उस पर आश्रित है। भजन 145:15 में भजनकार अपने लोगों को याद दिलाता है कि सभी की आंखें प्रभु की ओर लगी रहती हैं और वह उनको समय पर भोजन देता है। परमेश्वर अपनी सृष्टि के लिए अपनी मुट्ठी को खोलता है और उसकी अभिलाषा को तृप्त करता है (145:16)। वह उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता और उनके मन की इच्छा को भी पूरा करता है। पुन: हम प्रभु परमेश्वर की अपनी सृष्टि के लिए चिन्ता को देखकर अचम्भे में पड़ जाते हैं। वह जीवन का स्त्रोत है। उसके बिना किसी का कोई अस्तित्व नहीं होगा। वह प्रेम में होकर हमारी प्रत्येक ज़रूरत को पूरा करने को समर्पित होता है। प्रेम में होकर वह हमारी सभी इच्छाओं को तृप्त करता है। भजन 145:17 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया, ''यहोवा अपनी सब गति में धर्मी

और अपने सब कामों में करुणामय है।'' उस पर कभी भी गलत होने का दोष नहीं लगाया जा सकता उसका प्रेम और दया हर कहीं हैं।

भजन 145:18 में ध्यान दें कि भजनकार ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि परमेश्वर उन सभी के निकट रहता है जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं। वह अपने लोगों के साथ-साथ चला। उनके ठोकर खाने पर उसका हाथ उन तक पहुंचने को तैयार रहता था। उसके कान सहायता के लिए की जाने वाली उनकी पुकार के प्रति सदैव सतर्क रहते थे (145:19)।

न केवल परमेश्वर उन लोगों की पुकार को सुनता है जिनके मन उसके साथ सच्चाई से रहते हैं, परन्तु वह उनकी इच्छा को पूरी भी करता और उन्हें बचाता है (145:19)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर हमें हमारी मनचाही हर वस्तु देगा। यहां ध्यान दें कि प्रभु का भय माननेवालों की इच्छा पूरी की जाएगी। पूरी करना या तृप्त करना परमेश्वर का भय मानने के संदर्भ में है। यदि मैं मन से परमेश्वर का भय मानता हूं तो मैं संसार की किसी भी चीज़ से अधिक उसके आदर और महिमा की इच्छा रखूंगा। किसी भी अन्य चीज़ से अधिक उसकी महिमा मेरे लिए महत्वपूर्ण होगी। प्रभु का भय माननेवाले की पुकार परमेश्वर की पुकार होती है। जब हम प्रभु का भय मानते और सबसे पहले उसकी महिमा की खोज करते हैं परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुनकर हमारे मन की इच्छा को पूरा करता है क्योंकि हमारी और उसकी इच्छा समान ही होती है।

परमेश्वर अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता परन्तु सब दुष्टों का सत्यानाश करता है (145:20)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर अविश्वासी की चिन्ता नहीं करता। परमेश्वर विश्वासी के समान अविश्वासी की भी ज़रूरतों को पूरा करता है। यदि परमेश्वर हमारे विमुख हो जाए तो हममें से कोई भी जीवित नहीं रह सकता है। विश्वासी और अविश्वासी दोनों की ज़रूरतों को पूरा किया जाता है परन्तु क्रोध के दिन केवल विश्वासी ही सुरक्षित होगा। न्याय के दिन परमेश्वर दुष्टों और उनके मार्गों को मिटा डालेगा। परमेश्वर एक न्यायी परमेश्वर है। अन्त में दुष्ट के मार्गों का अन्त होगा।

ऐसे परमेश्वर के लिए भजनकार शांत नहीं रहेगा। भजन 145:21 में वह अपने पाठकों को बताता है कि वह अपने मुख से प्रभु की स्तुति करेगा। उसने प्रत्येक प्राणी से ऐसा ही करने को कहा।

इन दो भजनों में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर अद्‌भुत अनुग्रह और दया का परमेश्वर है। वह अपनों पर दया करता है। वह उनकी सेवा करना और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है। वह हमारी चट्टान और हमारा गढ़ है। वह हमारी बहुत

अधिक चिन्ता करता है। हम पूर्णतया उस पर आश्रित हैं। उसकी प्रेमी देखभाल के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। वह एक महान परमेश्वर है तौभी वह हमारी चिन्ता करता है। वह अनन्त और सर्वशक्तिमान है परन्तु वह हमारी सहायता के लिए नीचे आता है। उसकी संतान होने का हमारा सौभाग्य है। हमारा शत्रु हमारा क्या कर सकता है? हमें कितना अधिक उसका धन्यवाद करना व उसकी स्तुति करनी है कि वह हमारी इतनी अधिक चिन्ता करता है।

विचार करने के लिए:

- भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर उसके लिए चट्टान और गढ़ था। परमेश्वर आपके लिए एक चट्टान और गढ़ कैसे रहा है?
- भजनकार हमें बताता है कि परमेश्वर ने उसके हाथों को युद्ध करने के लिए प्रशिक्षित किया है। परमेश्वर आपको क्या सिखा रहा है? वह आपको युद्ध के लिए कितनी अच्छी तरह से तैयार कर रहा है?
- क्या आपने कभी स्वयं को परमेश्वर के प्रेम के अयोग्य पाया है? उसे धन्यवाद दें कि वह तब भी आप से प्रेम करना और आपकी चिंता करना चाहता है।
- आज प्रभु के लिए गाने को आपके पास कौन सा नया गीत है? उस नये गीत का विषय क्या है?
- सच्चाई से प्रभु को पुकारने का क्या अर्थ है? क्या आप ऐसा कर रहे हैं?
- परमेश्वर उसका भय माननेवालों की इच्छा पूरी करने की प्रतिज्ञा करता है। परमेश्वर का भय मानने का क्या अर्थ है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमारी चट्टान और गढ़ है। उस विशिष्ट मार्ग के लिए उसे धन्यवाद दें जिसमें होकर वह आपकी रक्षा करता और आपको सुरक्षित रखता है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपमें प्रसन्न रहता है। उससे आपको उसमें दृढ़ बने रहने का साहस देने और अपने पूरे मन से उसकी खोज करने का साहस देने को कहें।
- प्रभु से आपको उन सभी के साथ उसकी प्रेमी दया को बांटने का साहस देने को कहें जिनसे आप मिलते हैं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपके मन की भीतरी इच्छा को कैसे पूरा करता है। यदि आप निश्चित नहीं हैं तो आप इस बारे में प्रार्थना कर सकते हैं, उससे आपकी सही इच्छा की चाह करने की मांग करते हुए।

112. परमेश्वर की आशीषें

पढ़ें भजन संहिता 146:1-147:20

प्रभु परमेश्वर ने आपके जीवन में जो आशीषें दी हैं क्या अपने कभी उनकी सूची बनाने में समय बिताया है? आप कितनी आशीषों को सूचीगत कर सकते हैं? इन आशीषों पर विचार करने में समय बिताना हम सभी के लिए अच्छा होगा। भजन 146 और 147 में यही हो रहा है।

भजन 146 के आरम्भ में हम भजनकार को अपने मन से परमेश्वर की स्तुति करने को कहते हुए देखते हैं। ध्यान दें कि यह एक ऐसा निर्णय है जिसे भजनकार को लेना था। उसने प्रभु के नाम को ऊंचा करने का चुनाव किया। उसने अपना सारा जीवन अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करने और जीवित रहने तक उसकी स्तुति करने को सौंप दिया था (146:2)। इसके लिए उसका शासन में रहना ज़रूरी होगा। ऐसे भी समय होंगे जब स्तुति और आराधना करना सरल नहीं होगा। संकट और कठिनाई के उद्देश्य और योजना को लेकर उसके कई प्रश्न होंगे। उन समयों में भजनकार कह रहा है कि चाहे कुछ भी हो वह प्रभु के नाम को ऊँचा करेगा। वह भले समय और बुरे समय दोनों में ही ऐसा करेगा।

संकट और सताव के समय की परीक्षाएं सांसारिक सहायता पाना चाहती हैं। मैंने सदैव अपने को अपनी समझ के अनुसार करने या दूसरे लोगों की सहायता पाने की आशा करते पाया है। भजन 146:3 में वह हमें बताता है कि हमें प्रधानों पर और न ही किसी आदमी पर भरोसा रखना है क्योंकि उनमें हमें बचाने की शक्ति नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर हमारी सेवा करने के लिए लोगों का प्रयोग नहीं करेगा। प्राय: परमेश्वर हमारा प्रयोग अपने लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर देने में करता है। मैंने इसे सामान्यता अपने जीवन में देखा है। तौभी एक चीज़ जो परमेश्वर मुझे सिखा रहा है, वह यह कि मुझे उस पर भरोसा रखना है न कि मनुष्यों पर।

भजन 146:4 में भजनकार हमें याद दिलाता है कि मनुष्य चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, तौभी, वे नाशमान हैं। एक दिन वे इस धरती से चले जाएंगे। हमारा छुटकारा और उद्धार स्त्री व पुरुषों के हाथों में नहीं परन्तु परमेश्वर में है। मनुष्यों के उद्देश्यों और योजनाओं का एक दिन अन्त हो जाएगा। उनकी शक्ति जाती रहेगी। उनकी बुद्धि धीमी पड़ जाएगी और वे स्वयं नाश हो जाएंगे। केवल परमेश्वर ही अनन्त

और सर्वशक्तिमान है। केवल वही हमें पूर्णतया बचाने में सक्षम है। केवल उसके ही हाथों में हम सुरक्षित और निश्चिंत हो सकते हैं। उसकी शक्ति कभी धीमी नहीं पड़ेगी। परिस्थितियों या लोगों के द्वारा उसकी योजनाएं कभी भी निष्फल नहीं होंगी। केवल उसमें ही हम सिद्ध उद्धार और छुटकारे को जान सकते हैं।

भजनकार अपने पाठकों को याद दिलाता है कि याकूब के प्रभु परमेश्वर से सहायता पानेवाला धन्य है (146:5)। वह आकश और पृथ्वी और समुद्र और उन में जो कुछ है, उस सब का बनानेवाला है। उसे पता है कि वह क्या कर रहा है। प्रभु द्वारा दी जानेवाली सहायता की तुलना किसी और से नहीं की जा सकती। भजन 146:6 में ध्यान दें कि हमे बनाने बाला प्रभु परमेश्वर विश्वासयोग्य परमेश्वर है। उसकी विश्वासयोग्यता सदा की है। इसका अर्थ है कि वह कभी हमें नीचा नहीं करेगा। वह हमेशा हमारे लिए उपलब्ध होगा। मनुष्यों के विपरीत जिनकी योग्यता और समय निश्चित है, परमेश्वर अनन्त सर्वशक्तिमान और परमप्रधान है। विश्वासयोगय बने रहने की उसकी प्रतिज्ञा सदा की है। प्रभु में सहायता पानेवाले उस सर्वशक्तिमान की सुरक्षा और घेरे में होते हैं जो कभी, असफल नहीं होता। कोई भी शत्रु उसकी सुरक्षा को बेध नहीं सकता। यह सच्चा विश्वास और भरोसा है।

भजन 146:7-9 में भजनकार अपने पाठकों को याद दिलाता है कि याकूब का परमेश्वर पिसे हुओं का न्याय चुकाता है। विशेष रूप से वह भूखों और बन्धुओं के बारे में बताता है (146:7)। बन्धुए का उल्लेख उस व्यक्ति के बारे में बताता है जो अपने से बड़ी एक शक्ति या दबाव से बन्धा होता है। इस संसार में कई तरह के बन्धुए हैं। परमेश्वर हमारा छुड़ानेवाला है। परमेश्वर हमारा चंगाई देनेवाला भी है। वह अन्धों को दृष्टि देता है (146:8)।

भजन 146:8 में हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है। ये लोग वे हैं जो इस जीवन की चिन्ताओं व बोझ से झुके गए हैं। परमेश्वर उन लोगों को प्रोत्साहित करने में सक्षम है जो चिन्ता व तनाव से झुक गए हैं। जो लोग पाप और बुराई के डंक का अनुभव करते हैं वह उनके सिरों को ऊपर उठाता है। वह उन्हें फिर से आनंद करने का कारण देता है।

परमेश्वर धर्मियों से प्रेम रखता है (146:8)। जो लोग उससे प्रेम करते हैं उनसे वह खुश रहता है। यह एक ऐसी चीज़ है जिसके कारण हम उसकी स्तुति करने पाते हैं। यदि आज आप प्रभु यीशु को जानते हैं तो आप उसके विशेष स्नेह व देखरेख की वस्तु हैं।

परमेश्वर परदेशियों की रक्षा करता है (146:9)। भजनकार हमें यहां यह याद दिलाता है कि यद्यपि प्रभु परमेश्वर अपनी संतान से प्रेम करता है, तौभी उसकी रुचि

उन तक ही सीमित नहीं है। वह परदेशियें की भी चिन्ता करता है। परदेशी इब्राहीम के साथ की गई परमेश्वर की वाचा के आधीन नहीं थे। उन्हें परमेश्वर की संतान नहीं माना जाता था, तौभी परमेश्वर की रुचि उनमें थी। उसके मन में उनके लिए एक विशेष स्थान था जो उसे नहीं जानते थे। परमेश्वर एक मिशनरी परमेश्वर है जिसकी रुचि समस्त संसार में है।

अन्ततः भजन 146:9 में हम देखते हैं कि परमेश्वर अनाथों और विधवा को संभालता है। वह उनकी दशा को देखता और उनकी ज़रूरत को पूरा करने के लिए उन तक पहुंचता है। यदि परमेश्वर का ऐसा मन है तो हमारा भी ऐसा ही होना चाहिए। परमेश्वर से प्रेम करनेवाले और उसके उद्देश्यों में आनन्द मनानेवाले विधवा या अनाथ की दुर्दशा देखकर प्रेरित होंगे।

भजन 146 में हम देखते हैं संसार में बहुत सी कठिनाईयां हैं। यह संसार उन लोगों से भरा है जो दुर्व्यवहार, शारीरिक समस्याओं या दुखों को उठाते हैं। बन्धुओं, अनाथों, पाप और तनाव के बोझ से दबे हुओं के साथ-साथ विधवा और परदेशियों को भी उनकी ज़रूरत के समय में सहारे और सहायता के लिए प्रभु के पास आने की चुनौती दी गई है। परमेश्वर सभी बीमारियों, पीड़ा और शत्रु के सताव पर प्रभुत्व करनेवाला है। वह सदा तक राज्य करता है और हमारी स्तुति व सराहना पाने के योग्य है (146:10)।

भजन 147:1 हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर के लोगों के लिए अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा और मनभावना है। भजन 146 में हम उन कारणों को पहले ही देख चुके हैं कि प्रभु स्तुति किये जाने के क्यों योग्य है। ध्यान दें कि परमेश्वर की यह आराधना न केवल अच्छी या उचित है परन्तु मनभावनी भी है। प्रभु की स्तुति प्रसन्नता से करनी है। यद्यपि प्रभु की स्तुति करना हमारा कर्तव्य है, तथापि आभार माने बिना उसकी स्तुति करना उसे आदर नहीं देता। यदि हम इसलिए आराधना करते हैं क्योंकि हमें इसे करना है, या फिर इसलिए क्योंकि हमसे ऐसा करने की आशा की जाती है तब हम परमेश्वर को वह प्रसन्नता नहीं देते जिसके वह योग्य है। प्रभु को आदर देनेवाली स्तुति उस हृदय से आती है जो उसमें मगन और आनन्दित रहता है। स्तुति बड़े आनन्द व प्रसन्नता से की जानी चाहिए। इसी कारण भजनकार हमें बताता है कि परमेश्वर की स्तुति करना न केवल सही चीज़ है, परन्तु यह मनभावना और आनंदायक भी है।

भजन 146 के समान भजनकार इन कारणों की सूची देता है कि प्रभु की स्तुति और धन्यवाद करना सही क्यों है। वह अपने लोगों को यह याद दिलाते हुए आरम्भ करता है कि परमेश्वर ने यरूशलेम को बसाया और निकाले हुए इस्राएलियों को

इक्ट्ठा किया (147:2)। यह परमेश्वर के लोगों का उनकी भूमि से निकाले जाने के संदर्भ में है। परमेश्वर के विरुद्ध पाप और विद्रोह के कारण उन्हें उनके देश से जबरन निकाला गया था। उनके विद्रोह के बावजूद प्रभु परमेश्वर ने उन्हें इक्ट्ठा किया और उनके देश में वापस लेकर आया। उसने यरूशलेम की टूटी शहरपनाह को फिर से बनाया और उनके मन्दिर का पुनर्निमाण किया। एक क्षमा करनेवाला परमेश्वर होने के कारण उसने ऐसा किया क्योंकि वह संबन्धों को फिर से जुड़ते देख कर आनंदित होता है।

परमेश्वर को टूटे मनवालों की भी चिन्ता थी (147:3)। उसने उनकी ज़रूरत के समय में उन पर दृष्टि की और उनके घावों पर मरहम-पट्टी बान्धते हुए आनन्द से उन्हें बसया। मैं एक छोटे बच्चे का चित्र देना चाहता हूँ जिसको गिर जाने से चोट लग गई हो। एक प्रेमी माँ के समान, परमेश्वर अपने बच्चे को आराम से उठाता, उसकी कमीज़ को साफ कर उसके घाव पर पट्टी बान्धता है। बच्चे को आराम मिलता व उसका घाव भी ठीक हो जाता है। यही परमेश्वर हममें से प्रत्येक के साथ करना चाहता है।

हमारे लिए यह याद रखना ज़रूरी है कि शांति और टूटे मन वालों को चंगा करने में आनंदित होनेवाला परमेश्वर वह परमेश्वर है जो आकाश के तारों को गिनता और उन में से एक-एक का नाम रखता है (147:4)। वह एक बड़ा परमेश्वर है, वह तारों को बनानेवाला परमेश्वर है, परन्तु वह टूटे मनवालों को आराम व चंगाई देने में भी समय लगाता है। यह कितना अद्‌भुत है कि ऐसा परमेश्वर अपनी प्रत्येक संतान की कितनी अधिक चिंता करता है। वह एक महान और अति सामर्थी परमेश्वर है और उसकी बुद्धि अपरम्पार है (147:5) परन्तु वह नम्रों को अपनी इच्छा से संभालता है (147:6)। नम्र वे हैं जो प्रभु को अपनी ज़रूरत के रूप में जानते हैं। वे जीवन की सभी समस्याओं को देखकर यह घमण्ड नहीं करते कि ये उनके लिए बड़ी हैं। नम्र लोग सहायता के लिए प्रभु के पास आते हैं। प्रभु को उनके पास जाकर उनकी सेवा करने में खुशी मिलती है। तथापि भजन 147:6 में ध्यान दें कि यद्यपि प्रभु को नम्र लोगों की सहायता करने में खुशी मिलती है, तौभी उसे दुष्टों को भूमि पर गिरा देने में संकोच नहीं होता।

हमारी सहायता करनेवाला और हमें सहारा देनेवाला परमेश्वर हमारी स्तुति और धन्यवाद पाने के योग्य है। वह आकाश को बादलों से ढांक देता है और पृथ्वी पर वर्षा करता है ताकि उस पर घास लगे (147:8)। यही घास पशुओं और आकाश के पक्षियों का आहार बनती है। वह अपनी सृष्टि के सबसे छोटे प्राणी की भी चिन्ता करता है।

भजन 147:10 से हम समझ पाते हैं कि हमारी ओर से बड़ी शक्ति और बल को देखकर वह प्रसन्न नहीं होता परन्तु केवल नम्र समर्पण और भरोसे से हमारे लिए परमेश्वर को यह दिखाना कितना आसान होता है कि हमने उसके लिए क्या किया है। हमारे अपने आंकड़े और कार्यक्रम होते हैं। हम अपने कार्यक्रमों व गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं परन्तु परमेश्वर इन चीज़ों से प्रभावित नहीं होता। इसके विपरीत परमेश्वर उनसे प्रसन्न होता है जो अपनी ज़रूरत को जानकर उसमें अपनी आशा रखते हैं। वह उनसे प्रसन्न होता है जो किसी भी परिस्थिति में उस पर भरोसा करते व उसमें विश्राम को पाते हैं।

विश्वासी होने के कारण हम पर हमेशा हमले होंगे। हम शैतान के हमले के केन्द्र में हैं। हमारे आस-पास शत्रु के बढ़ते आतंक के बावजूद भजनकार हमसे प्रभु के नाम की स्तुति करने को कहता है (147:12)। हम ऐसा इसलिए कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर हमारे फाटकों की ज़ंजीरों को दृढ़ करेगा। चित्र एक बन्द फाटक का है जो मज़बूत ज़ंजीरों से बन्द है। शत्रु के हमला करने पर जब वह फाटक को धकेलता है, तो हर चीज़ उस फाटक पर लगी ज़ंजीरों पर ही निर्भर होती है। यदि ज़ंजीर टूट जाए तो शत्रु को नगर में आने का अवसर मिल जाएगा। परमेश्वर उन ज़ंजीरों को दृढ़ करता है ताकि वे टूटने न पाएं। शत्रु पूरा ज़ोर लगाकर फाटक को खोलने का प्रयास करता है परन्तु ज़ंजीर दृढ़ता से उसे रोके रहेंगी क्योंकि परमेश्वर उन्हें दृढ़ करेगा कि शत्रु भीतर न आ सके।

न केवल हमारे फाटकों की ज़ंजीरें दृढ़ होंगी परन्तु परमेश्वर उन फाटकों के पीछे रहनेवालों को भी आशीष देगा। (147:13)। कितना अद्‌भुत चित्र है। जबकि शत्रु नाश करना चाहता है, तौभी वह भीतर आ नहीं सकता। जबकि वह फाटक पर प्रहार करता है, परमेश्वर के लोग उसकी आशीषों में बने रहते हैं। शत्रु अपने प्रयास में निष्फल रहता है। परमेश्वर के लोग अपने परमेश्वर में आनन्दित और मगन रहते हैं। भजन 147:14 में इस पर भी ध्यान दें कि जबकि शत्रु ने उसे चारों ओर से घेरा हुआ है, परमेश्वर अपने लोगों को शांति देता व उन्हें उत्तम से उत्तम गेहूँ से तृप्त करता है।

यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो शत्रु हमारा क्या कर सकता है? परमेश्वर अपने वचन को भेजता और पृथ्वी उसकी आज्ञा को मानती है (147:15)। परमेश्वर की विधियां बनी रहती हैं। उसके द्वारा निर्धारित चीज़ें अवश्य होती हैं। शत्रु के प्रयास व्यर्थ रहते हैं। उसका सृष्टि के परमेश्वर से कोई मेल नहीं है जिसकी आज्ञाएं दृढ़ रहती हैं। यह अद्‌भुत और अद्वितीय परमेश्वर बर्फ को गिराता है और उसके वचन का पालन कर, यह पृथ्वी को ऊन की नाईं ढांक देती है। वह पृथ्वी पर पाले को राख के समान बिखेरता है (147:17)। क्या कोई कभी उसके विरोध में खड़ा हो सका है? परमेश्वर

आज्ञा देता और बर्फ व ओले पिघल जाते हैं। वह हवा चलाता और बर्फ पिघलाकर जल बहने लगता है (147:18)। ऐसी शक्ति को देखना अद्‌भुत है। प्रकृति की शक्तियां प्रभु के हाथों में हैं। अपने जीवन में मैंने प्रकृति की अद्‌भुत सामर्थ को देखा व सुना है। परमेश्वर की आज्ञा पर तूफान बड़े-बड़े शहरों का नाश कर देते हैं। प्रकृति के इस विकराल रूप को रोकने में मानवीय तकनीक कोई काम नहीं कर पाती। जिन चीज़ों को बनाने में हमें वर्षों लग जाते हैं वे एक ही क्षण में बर्बाद हो जाती हैं। हमारे लिए इस शक्ति को समझना बहुत अद्वितीय है। परमेश्वर की शक्ति का यह केवल एक छोटा सा नमूना है जो परमेश्वर की आज्ञा पर कार्य करता है।

भजन 147 के अन्त में भजनकार अपने लोगों को याद दिलाता है कि प्रभु परमेश्वर ने याकूब पर अपने वचन को और इस्राएल पर अपनी व्यवस्था को प्रगट किया है (147:19)। परमेश्वर की व्यवस्था और विधियों का प्रकाशन एक बहुत ही व्यक्तिगत संबन्ध का प्रमाण था। परमेश्वर ने एक उद्देश्य से अपनी व्यवस्था को प्रकट किया। उद्देश्य यह था कि उसके लोग उसे जानने को उसके पास आएं और उसके साथ एक संबन्ध में आएं। इस्राएल का सौभाग्य था कि परमेश्वर ने उसे अपने लोग होने के लिए चुना था। उसने उन्हें अपना वचन यह दिखाने को दिया कि वह कौन था। उसने उनके लिए अपने हृदय को खोला और व्यवस्था के द्वारा उन्हें अपने मार्गों की शिक्षा दी। इस्राएल को उसकी संतान होने और उसे अपने परमेश्वर के रूप में जानने का सौभाग्य मिला था। किसी भी अन्य देश या जाति को ऐसा अनुभव नहीं मिला था (147:20)। अद्वितीय सामर्थ के परमेश्वर ने अपने को इस्राएल पर व्यक्तिगत रूप से प्रगट करने का चुनाव किया था।

प्रभु यीशु मसीह के आने पर इस सामर्थी और विश्वासयोग्य प्रेम के परमेश्वर का अनुभव पाने को सभी जातियों के लिए द्वारों को खोल दिया गया। हमारे लिए इस परमेश्वर को घनिष्टता से जानना कि उसे हममें खुशी मिलती है, कितने बड़े सौभाग्य की बात है। सबसे बड़ी बात यह जानना है कि उसका हममें आनंदित होना हमारी किसी योग्यता पर आधारित नहीं है। हमने जो कुछ किया या करेंगे, इस कारण वह हमसे प्रेम नहीं करता। वह हमसे बिना शर्त प्रेम करता है और कोई भी चीज़ इस प्रेम को कम नहीं कर पाएगी। हम उसकी देखरेख में निश्चित हो सकते हैं। जब हम उससे दूर भी हो जाते हैं तब भी वह हममें प्रसन्न बने रहता है। इसी कारण उसके नाम को सदा तक ऊंचा करना ज़रूरी है।

विचार करने के लिए:

- क्या संकट के समयों में भी आप परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं? किसी भी परिस्थिति में यह संदर्भ हमें परमेश्वर की आराधना करने के बारे में क्या

सिखाता है?

- परमेश्वर द्वारा दी जानेवाली सहायता की तुलना मनुष्यों द्वारा दी जानेवाली सहायता से करें। क्या अन्तर है?
- इन भजनों से हम सीखते हैं कि परमेश्वर सभी ज़रूरतमंदों के लिए अद्‌भुत दया और करुणा का परमेश्वर है। क्या आपका भी ऐसा ही हृदय है? आपके आस-पास की ज़रूरतें क्या हैं?
- भजनकार हमें बताता है कि हमारे लिए प्रभु की आराधना करना मनभावना है। क्या आपका भी यही अनुभव रहा है? स्पष्ट करें।
- इन भजनों में हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- ऐसे समय के बारे में सोचें जब परमेश्वर आपका सहायक और शांति देनेवाला था। अब कुछ समय के लिए उसे इसके लिए धन्यवाद दें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि जीवन के सबसे कठिन समयों में वह शांति और सुरक्षा को देता है। उसे धन्यवाद दें कि आप उसकी उपस्थिति में सुरक्षित हैं।
- इन भजनों में बताई गई उसकी अद्वितीय सामर्थ के लिए प्रभु की स्तुति करें। उसे धन्यवाद दें कि वह दया व करुणा से भरा रहता है।
- प्रभु से आपको स्तुति और धन्यवाद करने का मन देने को कहें।

113. प्रभु की स्तुति करो

पढ़ें भजन संहिता 148:1 -150:6

भजन 148-150 की सामान्य विषय-वस्तु है। ये सारी पृथ्वी को मिलकर प्रभु की नाम की स्तुति करने व उसे धन्यवाद देने को कहते हैं। भजनों की पुस्तक के अन्त में यह सही दिखता है। इस पुस्तक में हमने प्रभु के हाथ को अपने लोगों के दुख व पीड़ा के मध्य कार्य करते देखा है। हमें इसकी एक झलक मिलती है कि वह अपनी समस्त सृष्टि की कैसे देखभाल करता व कैसे उनकी ज़रूरतों की पूर्ति करता है। अपनी संतान के प्रति हम उसकी गहरी इच्छा को जान पाए हैं। वह एक अद्वितीय व शक्तिशाली परमेश्वर है जो प्रेम व दया में होकर अपने लोगों तक पहुंचता है। भजनकार परमेश्वर के नाम की स्तुति करने और धन्यवाद देने को कहता रहा है। यहां पर हमारे सम्मुख आराधना का अंतिम बुलावा है।

भजन 148 स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को ही प्रभु के नाम को ऊंचा करने की चुनौती देता है। भजनकार स्वर्ग के दूतों को बुलाने के द्वारा आरम्भ करता है (148:2)। वह उन्हें स्वर्ग में अपने स्थान से प्रभु की स्तुति करने की चुनौती देता है। इसके बाद भजनकार सूर्य, चन्द्रमा और तारों से कहता है। आकाश की इन ज्योतियों को भी प्रभु की स्तुति करनी थी (148:3)। उन्हें उसकी सामर्थ व सच्चाई के चमकते हुए उदाहरण बनना था। आकाश और उसमें के जल को स्तुति करनी थी (148:4)। उन्होंने पृथ्वी के लिए उसकी महानता और देखभाल को प्रगट किया था। परमेश्वर आकाश से जल को पृथ्वी पर बरसाकर अपनी सृष्टि को भोजन व समृद्धि देता है। आकाश और उसमें का जल हमें एक बड़े परमेश्वर की अद्‌भुत दया को दिखाता है।

आकाश की ज्योतियों को परमेश्वर ने उनके स्थान पर रखा था। सृष्टि के आरम्भ से ही वे विश्वासयोग्यता के साथ अपने अपने स्थानों पर रही थीं, पृथ्वी पर अपनी रोशनी को चमकते व इसकी ज़रूरतों को पूरा करते हुए। वे एक सर्वशक्तिमान प्रभु की गवाही देती हैं जो सबसे महान है व अपनी रची गई हर वस्तु की चिन्ता करता है। आकाश ऊंची आवाज़ में परमेश्वर की स्तुति करे।

भजन 148:7-14 में यही चुनौती पृथ्वी के लिए भी है। यहां भजनकार पृथ्वी को प्रभु के नाम को ऊँचा करने को कहता है। यदि आकाश परमेश्वर की प्रशंसा करता है तो पृथ्वी को भी वैसा ही करना है भजनकार समुद्र के प्राणियों और गहरे सागर को

परमेश्वर की स्तुति करने को कहता है (148:7)। इन विशालकाय समुद्री जीवों की उपस्थिति परमेश्वर की महान रचनात्मक शक्ति की गवाही देती है। हममें से ऐसा कौन है जो समुद्र की सबसे बड़ी मछली को देखकर उसके बनानेवाले के बारे में न सोचता हो? विशालकाय सागर परमेश्वर की महानता का साक्षी है।

भजन 148:8 में भजनकार हमें याद दिलाता है कि बिजली ओले, बर्फ, बादल और हवा प्रभु परमेश्वर की आज्ञा पर ही कार्यरत होते हैं। वे उसकी सामर्थ और उदाहरण को प्रतिबिम्बित करते हैं। विनाश करनेवाली यही हवा हमें बड़ी सौम्यता के साथ चूमती है। सब कुछ परमेश्वर के हाथों में ही है जो उनकी प्रत्येक गति पर नियंत्रण रखता है। वे उसकी प्रधानता और नियंत्रण के साक्षी हैं।

अपने चारों ओर हम परमेश्वर की सृष्टि की अद्‌भुत सुन्दरता को देखते हैं। पहाड़ और पहाड़ियां अपने को पृथ्वी से ऊपर अपने सृष्टिकर्त्ता की कला की साक्षी के रूप में उठाते हैं। देवदार और फलदायी वृक्ष भूमि को रंगीन कर छोटी से छोटी चीज़ पर भी परमेश्वर के ध्यान को दिखाते हैं (148:9)। जंगली जानवर, घरेलू पशु, छोटे प्राणी और उड़नेवाले पक्षी संपूर्ण दृश्य को जीवन व गति प्रदान करते हैं (148:10)। सृष्टि जीवन से भरपूर है। यह एक महान और अद्वितीय परमेश्वर की साक्षी देती है जो सुन्दरता में प्रसन्न होता है। यह सब परमेश्वर के नाम को ऊँचा कर उसकी सौम्य देखभाल और प्रतापी नियंत्रण को दिखाते हैं।

भजन 148:11-14 में बुलाहट मनुष्यों के लिए है। उन्हें प्रभु की स्तुति करनी है। राजा और राजकुमारों के साथ-साथ जवान पुरुष, कुमारियाँ, बूढ़े पुरुष और बच्चों को प्रभु के नाम को ऊँचा करने के लिए बुलाया गया है, जिन्हें ऐसा दो कारणों से करना था।

पहला, उन्हें प्रभु के नाम की स्तुति इसलिए करनी थी क्योंकि केवल उसी का नाम महान था और उसका ऐश्वर्य पृथ्वी से भी ऊपर था (148:13) अन्य शब्दों में, हमें प्रभु की स्तुति उसके लिए करनी है जो वह है। वह ऐश्वर्य और सामर्थ का परमेश्वर है। आकाश और पृथ्वी परमेश्वर की अद्वितीय सामर्थ और प्रताप की साक्षी देते हैं। वे एक ऐसे महान परमेश्वर के बारे में बताते हैं जो उस किसी भी चीज़ से बड़ा है जिसे मानव मस्तिष्क समझ सकता है। पृथ्वी के स्त्री पुरुषों को स्तुति की इस महान गायन मण्डली में शामिल होने के लिए बुलाया गया है।

दूसरा प्रभु ने मनुष्यों के लिए जो कुछ किया था उस कारण से भी उन्हें उसके नाम को ऊंचा करना था। भजन 148:14 के लिए सींग ऊंचा किया है। पवित्रशास्त्र में सींग सामर्थ और अधिकार का प्रतीक है। यह एक ऐसे व्यक्ति के संदर्भ में हो सकता है जो बचाने या सुरक्षा करने को प्रभु का एक उपकरण है या परमेश्वर की अपने लोगों

पर सुरक्षा के संदर्भ में हो सकता है। चूंकि परमेश्वर अपने लोगों का बचाव था इस कारण उसकी उनके द्वारा स्तुति की जानी थी। परमेश्वर ने अपनी शक्ति के सींग में अपने लोगों की रक्षा की थी। वे उसमें सुरक्षित थे।

भजन 148:14 में इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर न केवल उनके बचाव का सींग था परन्तु उसने अपने लोगों को अपने हृदय के निकट भी रखा था। यह स्तुति करने का कारण था। केवल मनुष्य होने के कारण हम कौन है कि परमेश्वर हमें अपने हृदय के इतने अधिक निकट रखा। वह अपना स्नेह हमें क्यों दिखाएंगा? हम संभवत: इसे कभी नहीं समझ सकते। अत: हम इस सत्य का इन्कार नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर को हमें अपनी संतान के रूप में देखकर खुशी मिलती है और व हम हमेशा हमारी रक्षा करता है। वह हमारे साथ सहभागिता रखना चाहता है। इसके लिए हमें कितना अधिक उसकी स्तुति करने की ज़रूरत है।

भजन 149 इसी विषय पर जारी रहता है। यहां भजनकार अपने लोगों को प्रभु के लिए नया गीत गाने की अपनी बुलाहट को फिर से देता है। एक नया गीत परमेश्वर की स्तुति की ताज़ी अभिव्यक्ति है यह एक ऐसे हृदय की अभिव्यक्ति है जिसे परमेश्वर ने स्पर्श किया हो और आभार व धन्यवाद के साथ प्रतिक्रिया देता है।

इस नये गीत के बारे में दो चीज़ों पर ध्यान दें। पहली, इसे आनन्द और हर्ष के साथ दिया गया था (149:2)। इस्राएल को अपने रचयिता और राजा में आनन्दित और मगन होना था। वे जो कि सच में आराधना करना चाहते हैं उन्हें आनंद व खुशी के साथ ऐसा करना चाहिए। हम या तो कुड़कुड़ाकर दे सकते हैं या फिर हम आनन्द से दे सकते हैं। केवल आनंद से दी जाने वाली चीज़ ही पाने वाले को सच में सम्मान देती है। परमेश्वर हमें ऐसे लोग होने के लिए बुलाता है जिन्हें उसके नाम की आराधना करने में आनन्द आता है।

ध्यान दें दूसरी चीज़ यह है कि परमेश्वर के लोग नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें और डफ व वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएं (149:3)। संगीत आराधना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पुराने नियम में धन्यवाद के प्रतीक के रूप में प्रभु को जानवरों व अनाज को भेंट स्वरूप दिया जाता था। हमारे लिए यहां यह समझना ज़रूरी है कि वीणा और डफ या किसी भी तरह का वाद्य यंत्र प्रभु के प्रति धन्यवाद व स्तुति की भेंट हो सकता है। भजनकार हमें बताता है कि नृत्य व गीत परमेश्वर की पसंदीदा भेंट हैं। परमेश्वर को हमारी स्तुति की अभिव्यक्ति के रूप में संगीत व नृत्य को ग्रहण करना अच्छा लगता है। परमेश्वर अपने लोगों और उनकी स्तुति में प्रसन्न रहता है (149:4)। जिस तरह से हमारे बच्चों के गीत हमारे मन को खुशी देते हैं वैसे ही परमेश्वर बड़ी खुशी से हमारे संगीत की भेंट को स्वीकार करता

है। चूंकि उसने हमें उद्धार का मुकुट पहनाया है इस कारण से वह इन भेंटों को पाने के योग्य है (149:4)।

भजनकार प्रभु के सभी भक्तों को संगीत के इन दानों को भेंट में देने के सौभाग्य पर आनन्द मनाने को कहता है। वह हमें बताता है कि हमारे उद्धार देनेवाले परमेश्वर की स्तुति करना व उसे धन्यवाद देना आदर की बात है (149:5)। वह हमारे बिछौने पर हमसे आनन्द से गाने को कहता है। (149:5)। हमें सभी अवसरों पर प्रभु परमेश्वर में आनन्दित होना सीखना है।

भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि परमेश्वर उनके मुंह में अपने नाम की स्तुति को रखने के साथ-साथ उनके हाथों में दोधारी तलवारों को रखेगा (149:6-9)। इन दोधारी तलवारों के साथ वे जाति-जाति के लोगों से पलटा लेकर उनके राजाओं और अधिकारियों को बांध देंगे। ऐसा करके वे उनके विरुद्ध लिखित दण्ड को आगे लाएंगे। यह भक्तों की महिमा थी। भजनकार कह रहा है कि भक्तों की महिमा दो तरफा है। सर्वप्रथम है अपने होंठों से प्रभु की स्तुति करनी है, और दूसरा अपने शत्रुओं की ओर विजय के साथ बढ़ना है। विजय और स्तुति एक विश्वासी के जीवन में साथ-साथ चलते हैं। दोधारी तलवार ही शत्रु के उद्देश्य से बचाती और हमारे प्रभु परमेश्वर को महिमा दिलाती है। भजनों की पुस्तक के भजन 150 में निष्कर्ष निकालते हुए भजनकार हमें फिर से आराधना करने को कहता है। वह अपने लोगों को परमेश्वर के पवित्रस्थान में और स्वर्गदूतों को स्वर्ग में उसकी आराधना करने की चुनौती देता है। (150:1)। इस अंतिम भजन में वह हमें स्तुति करने के कई कारण देता है।

हमें परमेश्वर की आराधना उसके पराक्रम के कामों के कारण करनी है (150:2)। इन पराक्रम के कामों को कई तरह से देखा जा सकता है। इन्हें सृष्टि में देखा जाता है परन्तु इन्हें हमारे अपने जीवनों में भी व्यावहारिक तरीकों से देखा जाता है। इस्राएल की संतान ने परमेश्वर को समुद्र को दो भागों में विभाजित करते और उन्हें उनके शत्रुओं की सामर्थ से आज़ाद करते देखा था। हमें भी अपने जीवनों में उसकी सामर्थ और शक्ति के स्पष्ट प्रदर्शन को देखना है।

हमें परमेश्वर की आराधना उसकी अत्यंत बड़ाई के कारण भी करनी है (150:2)। इस बड़ाई का उसके चरित्र के साथ संबन्ध है। चाहे परमेश्वर ने हमारे लिए कुछ किया हो या नहीं, तौभी वह ऐसा परमेश्वर है जो इस कारण से हमारी स्तुति पाने के योग्य है जो वह है। वह प्रधानता और पवित्रता में महान है। वह प्रताप और महिमा में महान है। एक महान परमेश्वर के रूप में जो वह है, हमें उस कारण उसकी आराधना करनी है। किसी भी अन्य ईश्वर की तुलना उससे नहीं की जा सकती। केवल वही स्तुति पाने के योग्य है क्योंकि वह एक महान व अद्वितीय परमेश्वर है।

फिर से ध्यान दें कि भजनकार यहां जानवरों के बलिदान या सेवा के कार्यों पर बल नहीं देता है। इन चीज़ों के महत्वपूर्ण होने पर भी, परमेश्वर के लोगों के लिए भजनकार की बुलाहट संगीत की भेंट चढ़ाने के द्वारा उसकी सामर्थ और महानता की आराधना करने की है। उन्हें उसके सामने अपने हाथों में वाद्ययंत्र लेकर आते हुए उसके महत्व और योग्यता को बताना है। उन्हें नरसिंगा, सारंगी, वीणा, डफ, तारवाले बाजे और बांसुरी के साथ उसकी स्तुति करनी थी। भजन 105:5 में ध्यान दें कि परमेश्वर की स्तुति हमेशा शांत या खामोश रहने से नहीं होती। यहां भजनकार ऊंचे शब्द से जयजयकार करने को कहता है। वह ऊंचे शब्दावाली की झांझ बजाने को कहता है। जबकि खामोशी से भी आराधना करने का समय होता है, तौभी यहां बुलाहट इस तरह से आराधना की है कि एक बाहरी व्यक्ति का भी ध्यान परमेश्वर की ओर जाने पाए। सार्वजनिक रूप से और बिना किसी शर्मिन्दगी के इस तरह से की जानेवाली आराधना सभी सुननेवालों के सामने प्रभु के नाम को ऊंचा करती है। यह सार्वजनिक रूप से उन सभी को परमेश्वर की योग्यता को बताना है जिन्होंने अब तक इसे नहीं जाना है।

भजनकार इस पुकार के साथ अपने भजन का अन्त करता है कि सभी प्राणी प्रभु की स्तुति करें (150:6)। यह उसकी इच्छा है। वह अपने परमेश्वर के महत्व को जानता था। वह जानता था कि उसका परमेश्वर अपनी समस्त सृष्टि से स्तुति व प्रशंसा पाने के योग्य है न कि केवल उनसे जो उससे प्रेम करते थे।

हम इन भजनों से यह समझ पाते हैं कि परमेश्वर को हमारी आराधना से खुशी मिलती है। हमारी संगीत भेंटों को वह खुशी से ग्रहण करता है। भजनकार अपने लोगों को आराधना और स्तुति में प्रसन्न रहने को कहता है। वह उनसे ऐसे परमेश्वर की सक्रिय और उत्तेजक आराधना करने को कहता है जो न कि केवल इस कारण से इसके योग्य हैं जो वह है, परन्तु इसके लिए भी जो उसने किया है।

विचार करने के लिए:

- स्वर्ग और पृथ्वी परमेश्वर की बड़ाई या महानता को कैसे प्रमाणित करते हैं? वे हमें परमेश्वर के बारे में क्या दिखाते हैं?
- इन भजनों से हम देखते हैं कि दो कारणों से परमेश्वर की आराधना की जानी है। पहला, क्योंकि जो वह है, और दूसरा, जो उसने किया है। कुछ समय के लिए इस पर विचार करें कि परमेश्वर कौन है। उसके चरित्र के लिए उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर ने आपके लिए व्यक्तिगत रूप से क्या किया है? आपके जीवन में उसके शक्ति प्रदर्शन के लिए कुछ समय के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

- इन भजनों से हम आराधना में आनंद मनाने के महत्व के बारे में क्या सीखते हैं?
- प्रभु के लिए हमारी स्तुति की भेंट कितनी महत्वपूर्ण है? हमारी संगीत भेंटों के बारे में परमेश्वर को कैसा लगता है?
- भजनकार हमें बताता है कि विश्वासी की दो तरफा महिमा उनकी आराधना और विजयी जीवन में है। क्या यह आपकी कलीसिया या आपके बारे में व्यक्तिगत रूप से बताता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर अपनी सृष्टि के द्वारा आप पर जो प्रगट करता है कुछ समय के लिए इस कारण से उसकी स्तुति करें।
- परमेश्वर से आपकी एक महान आराधक बनने में सहायता करने को कहें। उससे आपको आराधना में आनन्द से भरने को कहें।
- क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र है जहां आप विजय में नहीं चल रहे हैं? परमेश्वर से आपको उन क्षेत्रों में विजय देने को कहें ताकि आप उसके नाम को बड़ी महिमा दिला सकें।
- परमेश्वर से आपकी कलीसिया की सहायता परमेश्वर के नाम में स्तुति और आराधना करने के ऐसे दर्शन में लेने को करने के लिए कहें जो इस बड़ी समझ पर आधारित हो कि वह कौन है और प्रत्येक सदस्य में वह व्यक्तिगत रूप से क्या कर रहा है।

'लाईट टू माय पाथ' पुस्तक वितरण

'लाईट टू माय पाथ' एल.टी.एम.पी. पुस्तक वितरण एक पुस्तक लेखन व विवरण सेवकाई है जो एशिया, लेटिन अमेरिका और अफ्रीका के ज़रूरतमंद मसीही कर्मियों तक पहुंच रही है। विकासशील देशों में अधिकांश मसीही कर्मियों के पास अपनी सेवकाई और व्यक्तिगत प्रोत्साहन के लिए बाइबल प्रशिक्षण पाने या बाइबल अध्ययन सामग्री को प्राप्त करने के संसाधन नहीं हैं। एम.वायन मैक लियोड एक्शन इंटरनेशनल मिनिस्ट्रीज के एक सदस्य हैं और इन पुस्तकों को इस लक्ष्य के साथ लिख रहे हैं कि इनका वितरण संसार भर के ज़रूरतमंद पास्टरों और कर्मियों में नि:शुल्क या लागत मूल्य पर किया जा सके।

आज की तिथि से तीस से भी अधिक देशों में हजारों पुस्तकों का प्रयोग स्थानीय विश्वासियों के बीच प्रचार, शिक्षण और प्रोत्साहन देने में किया जा रहा है। इस शृंखला की पुस्तकों का अब हिन्दी, फ्रेंच, स्पैनिश और हेतियन स्रिओल में अनुवाद किया गया है। लक्ष्य इन्हें अधिक से अधिक विश्वासियों के लिए संभव बनाने का है।

'लाईट टू माय पाथ' पुस्तक वितरण सेवकाई एक विश्वास पर आधारित सेवकाई है और संसार भर के विश्वासियों को प्रोत्साहित करने व मज़बूत बनाने को पुस्तकों के वितरण के लिए जरूर संसाधनों हेतु हमारा भरोसा प्रभु पर है। क्या आप प्रार्थना करेंगे कि प्रभु इन पुस्तकों के अनुवाद व भावी वितरण के लिए द्वार खोले?

'लाईट टू माय पाथ' के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी बेबसाइट को देखें: www.ltmp.com